नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचार



● हेमन्त कुमार आर्य

एवं

● राजीव अग्रवाल

नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचार

हेमन्त कुमार आर्य

एम.एस-सी. (रसायनशास्त्र), एम.एड.

एनटीए यूजीसी नेट (शिक्षाशास्त्र)

एवं

डॉ0 राजीव अग्रवाल

सह आचार्य

शिक्षक – शिक्षा विभाग

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचार

हेमन्त कुमार आर्य एवं राजीव अग्रवाल

प्रथम संस्करण : **2020**

मूल्य : ₹ 500.00

E-Book

ISBN : 978-93-5407-275-8

प्रकाशक -

हेमन्त कुमार आर्य
ग्राम व पोस्ट कटेरा, तहसील मऊरानीपुर,
जिला झाँसी - 284205 (उ0प्र0)
Mob- 09795203429
ई-मेल : hkarya332@gmail.com

प्राक्कथन

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की कार्यक्षमता एवं शैली बेजोड़ है। उनकी बातें एवं लेखन हर भारतीय में ऊर्जा, जोश एवं आत्मविश्वास का संचार करता है। प्रस्तुत पुस्तक में उनके व्यक्तित्व, कृतित्व एवं शैक्षिक दर्शन को सहेजने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक को सात अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में शिक्षा के विकास की प्रकिया, शिक्षा एवं दर्शन, शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण एवं भारतीय शैक्षिक विचारकों का वर्णन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की गयी है।

तृतीय अध्याय में नरेन्द्र मोदी जी के जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। जिसमें उनके सार्वजनिक एवं राजनैतिक जीवन, सम्मान और पुरस्कार तथा महत्वाकांक्षी सरकारी योजनाओं का विश्लेषण किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों का वर्णन किया गया है। जिसमें शिक्षा, समाज, पर्यावरण, नारी शिक्षा आदि पर उनके दिये गए शैक्षिक विचारों का संकलन किया गया है।

पंचम अध्याय में नरेन्द्र मोदी जी द्वारा "मन की बात" आकाशवाणी पर प्रसारित किया जाने वाले एक कार्यक्रम का वर्णन किया गया है। जिसमें शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन, पर्यावरण आदि पर दिये गए विचारों का संकलन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का वर्णन किया गया है।

सप्तम अध्याय में अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव, भावी शोध हेतु सुझाव, समाज के लिए सुझाव, शिक्षकों के लिए सुझाव, प्रशासन के लिए सुझाव आदि बिन्दुओं का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघुशोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं

जब तक की वह जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक हर एक पाठक में सकारात्मकता का संचार करने एवं ऊर्जावान बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

26 मई, 2020

हेमन्त कुमार आर्य
राजीव अग्रवाल

विषय-सूची

चित्र सूची

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय



अध्याय : प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा वह है जो केवल जानकारी नहीं देती बल्कि हमें सामन्जस्यपूर्ण ढंग से जीवन बिताना सिखाती है।

- रविन्द्रनाथ टैगोर

शिक्षा विकास की वह प्रक्रिया है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा पथ प्रदर्शन करती है। एक भटकते राही को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली एक अनवरत प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत कुछ ना कुछ सीखता रहता है और जीवन के इन अनुभवों से सीखना ही शिक्षा है।

मानव जीवन एक जटिल प्रक्रिया है। प्रारम्भ में उसकी एक ही समस्या थी कि जीवन की रक्षा कैसे की जाए? कालान्तर में मनुष्य जीवन जटिलतम होता गया और उसके सामने अनेक समस्याएँ आने लगी समय-समय पर इन समस्याओं में निहित प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने के लिए दर्शन का सहारा लिया गया। दर्शन द्वारा निर्धारित उद्देश्य एवं जीवन की समस्याओं के लिए सुझाए गए समाधानों को व्यवहारिक रूप में प्राप्त करने हेतु शिक्षा द्वारा प्रयत्न किया जाता है। शिक्षा एक मृत्यु पर्यंत चलने वाली आध्यात्मिक प्रक्रिया भी है। जिसमें मनुष्य को अपने यथार्थ का बोध होता है। जीवन जगत के प्रति उसके व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं संशोधन होता रहता है। अतः कहा जा सकता है कि जीवन जगत के प्रति उसके व्यवहार तथा विचारों में निरन्तर परिवर्तन, परिमार्जन एवं संशोधन होता रहता है। अतः कहा जा सकता है। जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। क्योंकि शिक्षा एक बहुअर्थी शब्द है। अतः इसे पूर्णता परिभाषित करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी होने के कारण अपने जीवन का अस्तित्व बनाए रखने और उसे निरन्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर रखने हेतु सभ्यता के आदिकाल से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड उसके निर्माता और स्वयं के

जीवन स्वरूप समस्याओं रहस्यों एवं लक्ष्यों पर अनवरत चिन्तन करता रहता है। चिन्तन के परिणाम स्वरूप इसके सम्बन्ध से उसे जो तथ्य निष्कर्ष विश्वास एवं सत्य प्राप्त हुए उन्हें शिक्षा द्वारा क्रियान्वित रूप देता आ रहा है। मनुष्य कि इन प्रयासों के फलस्वरूप ही दर्शन और शिक्षा का अभ्युदय हुआ है। जो सदैव से मानव जीवन का अभिन्न अंग रहा है। दर्शन मनुष्य की चिन्तन की उच्चतम सीमा है। दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है जबकि शिक्षा क्रियात्मक पक्ष।

1.1.1 शिक्षा विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारम्भ कर देता है। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है। प्रारम्भिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फलस्वरुप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूलन हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है जिसके परिणाम स्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है। शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं विकसित इन्सान के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है। संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनाने की प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं जिससे बालक के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में उच्च शिक्षा अपना महत्वपूर्ण

योगदान देती है। उच्च शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक, व्यवसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है। जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है।

समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है। ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिन्तक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे। क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा, शासक-प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भृत्यों या नौकरी की पूर्ति करते थे। इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिन्तन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया। सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आन्तरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गयी। वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के घोतक हैं- ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय-काम, वैश्य-अर्थ, शुद्र-धर्म। कालान्तर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ।

जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितान्त आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुँचा सके और इस सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि शिक्षा के सन्दर्भ में भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है।

1.1.2 शिक्षा दर्शन की प्रकृति एवं महत्व

शिक्षा मानव जीवन की एक महत्वपूर्ण इकाई है। इसके बिना मनुष्य का अस्तित्व किसी भी प्रकार से सुरक्षित नहीं है। शिक्षा के द्वारा ही एक मानव सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान का अर्जन कर जगत के विभिन्न प्राणियों से पृथक अपनी सत्ता को कायम करता है। वह नर से नारायण की प्राप्ति के लिए शिक्षा के उपयोगी उपागमों का सदुपयोग करते हुए उन्हें अपने नैतिक जीवन में उतारने का कार्य करता है। शिक्षा की प्राप्ति पूर्णता दार्शनिक अवधारणाओं से संलिप्त है। यह मात्र वाहय अभिव्यक्ति का उपागम नहीं है, अपितु मनुष्य की आन्तरिक सत्ता से जुड़ी चेतनात्मक अवस्था के सृजन की

मूलभूत प्रक्रिया है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए जब मनुष्य अपनी आत्मा से सजग हो जाता है तब सांसारिक विकृतियों का परित्याग कर चेतना सत्ता की महत्ता के वास्ते उन्मुख होता है तब उसकी योजना शिक्षा दर्शन की सार्वभौमिकता का निर्धारण करती है।

वर्तमान परिवेश में विभिन्न माध्यमों से शिक्षा की अर्जन की प्रविधि अंगीकृत की जा रही है, किन्तु उन सबों में दार्शनिक पद्धति सर्वोपरि है। शायद यही कारण है कि आज तक की शिक्षा के इतिहास में जितने भी शिक्षाशास्त्री हुए हैं, प्राय: सभी दार्शनिक थे और जितने भी दार्शनिक हुए हैं, वे सबके सब किसी न किसी कोण से शिक्षाशास्त्रीय सन्दर्भ के संपोषक रहे हैं। शिक्षा ही वह लोकाचार की सत्यनिष्ठ अन्वेषणात्मक अवस्था है, जो सामाजिक कर्तव्यों के प्रति मानवीय जागरूकता के अतिरिक्त नैतिकता पोषित मानव चरित्र का निर्माण भी सुनिश्चित करती है। शिक्षक को प्रत्येक बालक का अध्ययन करना होगा और यह पता लगाना होगा कि वह प्रगति कर रहा है, वह किस ढंग से पढ़ लिख रहा है।

शिक्षा का कार्य ऐसे मनुष्य तैयार करना है जो पूर्ण एवं समन्वित हो तथा याँत्रिक रूप से सक्षम हो। ऐसे नागरिक प्रज्ञाशील हुआ करते हैं, जो अपने विशेष ज्ञान से अधिगम एवं सम्प्रेषण की अवधारणाओं से परिचित होते हैं। प्रज्ञाशीलता का अर्थ तथ्य संग्रह नहीं, वह पुस्तकों से नहीं आती है और न चालाक आत्मसमर्थक प्रतिक्रियाओं या आक्रमण आग्रहों में निहित होती है। विद्वानों की अपेक्षा एक साधारण आदमी जिसने अध्ययन नहीं किया है, अधिक विवेकपूर्ण हो सकता है। हमने परीक्षाओं व उपाधियों को प्रज्ञा का मापदण्ड बना लिया है और चालाकी से भरे ऐसे मन को विकसित किया है जो महत्वपूर्ण मानवीय समस्याओं की उपेक्षा करता है उनसे बच निकलता है। मौलिक सार स्वभाविक है, जो पूर्ण रूप से देख पाने की क्षमता को जगाने का कार्य करता है और इसी का अर्थ शिक्षा है।

भारतीय शिक्षा के इतिहास में अनेक शिक्षाशास्त्रियों के शैक्षिक विचारों का अवलोकन करने पर उनके महानतम देनदारियों का क्रम सुनिश्चित होता है। इन्होंने लोगों को मात्र सांसारिक ज्ञानार्थी शिक्षा की अपरिहार्यता नहीं बतलाई अपितु यह सिद्ध करने का कार्य किया कि शिक्षा मनुष्य को अच्छे से जीवन जीने की कला सिखलाती है तथा उसे स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की अवस्था में पहुँचाती है। उनकी मान्यता रही है कि स्वास्थ्य मानव का सर्वप्रमुख तत्व है। यदि मनुष्य आत्मा और मन से अस्वस्थ होता है तो उसका

विकास किसी भी प्रकार से सम्भव नहीं हो सकता। उसके जीवन के सर्वांगीण विकासार्थ तन, मन और आत्मा के स्वास्थ्य होने की नितान्त आवश्यकता होती है। इन्होंने शारीरिक शिक्षा के प्रति विशेष रूप से जागरूकता का सन्देश दिया तथा लोगों को उनके कर्तव्य पथ से कभी विचलित न होने देने के लिए शिक्षा के दार्शनिक रूप को अपनाया है। इन्होंने जहाँ एक ओर सबके लिए शिक्षा की समान व्यवस्था पर बल दिया, वहीं दूसरी ओर समाज के उस वर्ग के प्रति भी विशेष सहानुभूति दर्शायी, जो पूर्णतया उपेक्षित था।

स्वामी विवेकानन्द की भाँति गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द, महात्मा गाँधी, अम्बेडकर और नरेन्द्र मोदी ने भी शिक्षा के प्रति समाज को सजग करने का कार्य किया। इन्होंने अपने दार्शनिक सन्दर्भों के प्रभावी रूप में अभिव्यक्तिकरण के साथ-साथ सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त उन तमाम सन्दर्भों को अभिव्यक्त करने का सार्थक प्रयत्न किया, जो मानव के जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकें।

1.1.3 शिक्षा एवं दर्शन

शिक्षा और दर्शन में गहरा सम्बन्ध है। अनेक महान शिक्षाशास्त्री स्वयं महान दार्शनिक भी रहे हैं। इस सह-सम्बन्ध से दर्शन और शिक्षा दोनों का हित सम्पादित हुआ है। शैक्षिक समस्या के प्रत्येक क्षेत्र में उस विषय के दार्शनिक आधार की आवश्यकता अनुभव की जाती है। फिहते अपनी पुस्तक 'एड्रेसेज टु दि जर्मन नेशन' में शिक्षा तथा दर्शन के अन्योन्याश्रय का समर्थन करते हुए लिखते हैं दर्शन के अभाव में 'शिक्षण-कला' कभी भी पूर्ण स्पष्टता नहीं प्राप्त कर सकती। दोनों के बीच एक अन्योन्य क्रिया चलती रहती है और एक के बिना दूसरा अपूर्ण तथा अनुपयोगी है। डीवी शिक्षा तथा दर्शन के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि दर्शन की जो सबसे गहन परिभाषा हो सकती है, यह है कि 'दर्शन शिक्षा-विषयक सिद्धान्त का अत्यधिक सामान्यीकृत रूप है।'

दर्शन जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शिक्षा उपाय प्रस्तुत करती है। दर्शन पर शिक्षा की निर्भरता इतनी स्पष्ट और कहीं नहीं दिखाई देती जितनी कि पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याओं के सम्बन्ध में। विशिष्ट पाठ्यक्रमीय समस्याओं के समाधान के लिए दर्शन की आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ प्रश्न उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों के चुनाव का है और इसमें भी दर्शन सन्निहित है।

जो बात पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में है, वही बात शिक्षण-विधि के सम्बन्ध में कही जा सकती है। लक्ष्य विधि का निर्धारण करते हैं, जबकि मानवीय लक्ष्य दर्शन का विषय हैं। शिक्षा के अन्य अंगों की तरह अनुशासन के विषय में भी दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालय के अनुशासन निर्धारण में राजनीतिक कारणों से भी कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण कारण मनुष्य की प्रकृति के सम्बन्ध में हमारी अवधारणा होती है। प्रकृतिवादी दार्शनिक नैतिक सहज प्रवृत्तियों की वैधता को अस्वीकार करता है। अतः बालक की जन्मजात सहज प्रवृत्तियों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्ति के लिए छोड़ देता है। प्रयोजनवादी भी इस प्रकार के मापदण्ड को अस्वीकार करके बालक व्यवहार को सामाजिक मान्यता के आधार पर नियंत्रित करने में विश्वास करता है, दूसरी ओर आदर्शवादी नैतिक आदर्शों के सर्वोपरि प्रभाव को स्वीकार किए बिना मानव व्यवहार की व्याख्या अपूर्ण मानता है, इसलिए वह इसे अपना कर्त्तव्य मानता है कि बालक द्वारा इन नैतिक आधारों को मान्यता दिलवाई जाये तथा इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाए कि वह 'शनैःशनैः' इन्हें अपने आचरण में उतार सके।

शिक्षा का क्या प्रयोजन है और मानव जीवन के मूल उद्देश्य से इसका क्या सम्बन्ध है, यही शिक्षा दर्शन का विजिज्ञास्य प्रश्न है। चीन के दार्शनिक मानव को नीतिशास्त्र में दीक्षित कर उसे राज्य का विश्वासपात्र सेवक बनाना ही शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। प्राचीन भारत में सांसारिक अभ्युदय और पारलौकिक कर्मकाण्ड तथा लौकिक विषयों का बोध होता था और परा विद्या से नि:श्रेयस की प्राप्ति ही विद्या के उद्देश्य थे। अपरा विद्या से अध्यात्म तथा रात्पर तत्व का ज्ञान होता था। परा विद्या मानव की विमुक्ति का साधन मान जाती थी। गुरुकुलों और आचार्यकुलों में अंतेवासियों के लिये ब्रह्मचर्य, तप, सत्य व्रत आदि श्रेयों की प्राप्ति परमाभीष्ट थी और तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय प्राकृतिक विषयों के सम्यक् ज्ञान के अतिरिक्त नैष्ठिक शीलपूर्ण जीवन के महान उपस्तंभक थे। भारतीय शिक्षा दर्शन का आध्यात्मिक धरातल विनय, नियम, आश्रममर्यादा आदि पर सदियों तक अवलम्बित रहा।

1.1.3.1 पाश्चात्य शिक्षा दर्शन

प्लेटो (अफलातून) और अरस्तू दार्शनिक विचिन्तन के समर्थक थे किन्तु सांसारिक कर्म की उपेक्षा उन्हें इष्ट नहीं थी। प्लेटो का कहना है, बीस वर्ष की उम्र तक भावी

राज्यशासकों को शारीरिक उन्नति, साहित्य, धर्मशास्त्र, पुरातत्व और संगीत की शिक्षा मिलनी चाहिए। बीस से तीस वर्ष तक रेखागणित, अंकगणित, ज्योतिर्गणित आदि का पारदर्शी ज्ञान उन्हें प्राप्त करना है। तीस से पैंतीस वर्ष तक उन्हें गम्भीर दार्शनिक ऊहापोह कर प्रत्ययों का और शिवप्रत्यय का प्रकृष्ट ज्ञान प्राप्त करना है। गणित और दर्शन का इतना विशद ज्ञान प्राप्त करने पर भी सिर्फ चिन्तन में निरत रहना उनका उद्देश्य नहीं है। दर्शन के उत्तुंग शिखर से उतरकर उन्हें फिर अज्ञानावृत्त संसार में आकर राज्य और समाज की बुराइयों का निराकरण करना है। पैंतीस से पचास वर्ष की अवस्था तक अवश्य ही उन्हें फिर अज्ञानावृत्त संसार में आकर राज्य और समाज की बुराइयों का निराकरण करना है। पैंतीस से पचास वर्ष की अवस्था तक अवश्य ही उन्हें राजकीय कर्मयोग का मार्ग अपनाना है और सामष्टिक कल्याण की सिद्धि करनी है। राजनीतिक दृष्टिकोण, प्लेटो की अपेक्षा अरस्तू में अधिक प्रबल है। मानव को राजनीतिक प्राणी मानकर शिक्षा को सदभ्यास प्राप्ति का वह परम साधन मानता है। विभिन्न नागरिकों में शिक्षा से ही राज्यनिमित्तक शील का विकास सम्भव है। शिक्षा से मानसिक उन्नयन तथा अवकाश का सदुपयोग होता है, ऐसा अरस्तू ने स्वीकार किया है किन्तु प्लेटो के समान तात्विक और दार्शनिक शिक्षा पर उसने ध्यान नहीं दिया है। फिर भी प्लेटो की भाँति अरस्तू भी राज्य का पूरा नियंत्रण शिक्षा पर मानता है।

मध्ययुगीन यूरोप में देववाद की प्रधानता थी। संत अगस्तीन ने दिव्य नगर का सन्देश दिया और टॉमस अक्वायनास ने सनातन नियम और नैसर्गिक नियम का उद्बोध किया। मध्ययुग के अन्तिम चरण में ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज, पेरिस विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई और उनमें भी प्रारम्भ में धर्मशास्त्र के अध्ययन का ही महत्व रखा गया था। भारतवर्ष में भी मध्ययुग में शंकर, रामानुज, निंबार्क, मध्व, वल्लभ आदि ने ज्ञान, भक्ति और वैराग्य का ही सन्देश प्रतिपादित किया।

मध्ययुग का अन्त होने पर यूरोपीय पुनरुत्थान आन्दोलन से पुनरपि प्रकृतिवाद और मानववाद पर बल पड़ा। यदि दाँते और कुसा के निकोलास दैवी विचिन्तन और आध्यात्मिक संध्वनि के सन्देशवाहक थे तो इरेसमस, मोर और मोंटेन ने मनुष्य पर ध्यान आकृष्ट किया। केपलर, गेलिलियो और न्यूटन ने भौतिकी के विकास कर क्रान्तिकारी वैज्ञानिक दृष्टिकोण दिया। बेकन, डेकार्ट और लायब्नित्स ने ज्ञान को शक्तिप्रद माना। लॉक ने सदभ्यास के द्वारा चारित्रिक उत्थान पर बल दिया तथापि उसने शिक्षा में अभिजाततंत्री दृष्टिकोण

समर्थित किया, यद्यपि वह राजनीतिक विचारों में नैसर्गिक अधिकारवाद का पोषक था। रूसो ने पूँजीवाद, सभ्यता और बुद्धिवाद का खण्डन कर प्रकृतिवाद और शिशुशिक्षा का पोषण किया किन्तु उसका ग्रन्थ 'एमिल' दार्शनिक शिक्षा के प्रश्न पर बिल्कुल मौन है। मनोविज्ञान का महत्व स्वीकार कर पेस्टालोजी ने शिशुओं के पूर्ण विकास को गौरव दिया। स्वत: प्रेरित विकास और निजाभिव्यक्ति को मूलोद्देश्य मानकर फ्रोबेल ने किंडरगार्टन पद्धति का सूत्रपति किया।

हेगेल शिक्षा का आध्यात्मिक प्रयोजन स्वीकार करता था। शिक्षा का नियंत्रण वह राज्य के हाथ में न देकर नागरिक समाज को सुपुर्द करता था। तथापि उसने स्वतंत्रता पर बल नहीं दिया। हेगेल के अध्यात्मवादी दृष्टिकोण को अपनाकर शिक्षा को व्यक्तित्व के चैतन्य का अभिप्रकाशन जेंटीले ने माना है। समस्त विषयों का अध्यापन आध्यात्मिक उन्मेष के लिये ही वह अभीष्ट मानता है। प्रकृतिवादी और व्यवहारवादी जॉन डिवी शिक्षा और जीवन का अत्यन्त निकट सम्बन्ध मानता है। ईश्वरवाद, आत्मवाद या अनुशासन को लोगों पर लादना उसे पसन्द नहीं है। शिक्षा की प्रक्रिया को वह इतना आकर्षक और वृत्तियों को तन्निष्ठ कराने वाला बनाना चाहता है कि भयोत्पादक बाह्य अनुशासन लादना न पड़े। शिक्षा और लोकतंत्र में गहरा सम्बन्ध मानकर सामाजिकता प्राप्ति पर उसने जोर दिया है। ह्वायटहेड शिक्षा के द्वारा सतत जागरूकता, सर्जनात्मकता, जीवनोत्साह, ओजस्विता आदि का संचार करना चाहता है। बर्ट्रेंड रसल के अनुसार शिक्षा तथ्य संग्रह न होकर ऐसी प्रक्रिया है जिससे मानव, समाज और जगत में अपना वास्तविक स्थान समझ सके। राज्य और चर्च के आधिपत्य और पुछल्ले से शिक्षा विनिर्मुक्त रहनी चाहिए। शिक्षा में स्वातंत्र्य और वैज्ञानिक दृष्टि बिंदु का समर्थन रसल की बड़ी विशेषता है।

संश्लिष्ट एवं पूर्ण शिक्षा वही कही जा सकती है जो सदस्यों के अन्नमय कोष को तृप्त और बौद्धिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक आदर्शों का अभिज्ञापन भी करा सके। समस्त व्यापारों का मूलाधार शरीर है अत: इसकी मजबूती परमावश्यक है। पहलवानी या दंगलीपन कुछ व्यक्तियों के लिये ही ठीक है किन्तु समस्त नागरिकों का शरीर अवश्य ही कष्ट सहिष्णु बन सके, ऐसी शिक्षा आवश्यक है। मानववादी साहित्य और ललित कला की शिक्षा अधिक लोगों को मिलनी चाहिए। इससे बर्बरता का नाश और भावनाओं का संशोधन होता है। साहित्य का प्रयोजन वासनाओं का विलास नहीं किन्तु स्वस्थ आनन्द की सृष्टि और

चारित्रिक उन्नयन है। वैयक्तिक और सामाजिक जीवन नैतिकता के बिना नहीं चल सकता। अत: नैतिक शिक्षा प्रारम्भिक अवस्था से ही मिलनी चाहिए और इस कार्य में धर्म ग्रन्थों के चुने हुए स्थलों का शिक्षण होना चाहिए। वर्तमान सभ्यता वैज्ञानिक और यॉंत्रिक है और आज कोई भी राष्ट्र उद्योग और विज्ञान की उपेक्षा कर न तो नागरिकों के जीवन स्तर को उठा सकता है और न अपनी सत्ता ही कायम कर सकता है। डार्विन, हक्सले, स्पेंसर आदि ने भी वैज्ञानिक शिक्षा का पक्ष ग्रहण किया था। एक अंश तक आरम्भिक विज्ञान की शिक्षा समस्त नागरिकों को मिलनी चाहिए और कुछ नागरिक इसे प्रमुख व्यवसाय बनाकर इसमें परम वैशारद्य प्राप्त करें। बुद्धि की उन्मुक्ति सतत जागरूकता के द्वारा व्यक्त होती है अत: विश्व प्रवाह की नानामुख अभिव्यक्तियों के विषय में जिज्ञासा पूर्ण कुतूहल सर्वदा सम्वर्धित रखना शिक्षित मानव का लक्ष्य है। किन्तु कुछ नागरिक इतने से ही संतुष्ट न हो, निखिल देश और मानवता की सेवा में अपने स्वार्थ का विसर्जन ही शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य मानेंगे। मनुष्य एक सावयव इकाई है अत: शरीर, मन, बुद्धि, चरित्र, हृदय और आत्मा इन सभी की पूर्णता परमाभिप्रेत है। जीविका प्राप्ति और समाज के साथ सामंजस्य तथा भद्र व्यक्तित्व की शिक्षा की इयत्ता नहीं बताते। मानव का सर्व विध विनिर्मुक्त विकास और पूर्णता प्राप्ति ही समग्र शिक्षा का उद्देश्य है।

1.1.3.2 प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन

जीवन-दर्शन और शिक्षा-दर्शन के मध्य वैषम्य की कोई कल्पना नहीं की जा सकती है। वे एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। जीवन-दर्शन की दृष्टि से प्राचीन भारतीय दर्शन के विभिन्न कालों के बीच गहरी रेखायें नहीं खींची जा सकती हैं। प्राचीन भारत की संस्कृति शाश्वत और सतत् रही है, अविभाज्य रही है। विद्वानों ने वैदिक संस्कृति से महाकाव्य (रामायण और महाभारत) कालीन संस्कृति में प्राथक्य स्थापित करने के प्रयत्न किये हैं किन्तु बाद वाले काल में भी वैदिक संस्कृति और जीवन शैली का स्पष्ट प्रभाव है, साम्य भी है। वैदिक जीवन शैली महाकाव्यकालीन जीवन शैली में प्राचुर्य है। यह सत्य है कि रामायण और महाभारत में वर्णित कुछ जीवन पद्धतियाँ वैदिक काल में नहीं हैं। अत: वेदकालीन जीवन-दर्शन का अस्तित्व पृथक से स्वीकार किया जा

सकता है। इसी तारतम्य में यदि हम महाकाव्य कालीन युग का पृथक अस्तित्व भी स्वीकार करते हैं तब भी वैदिक संस्कारों का युग में भी विद्यमान होना स्वीकार करना ही होगा।

इस परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारत के इतिहास को एक इकाई के रूप में होना चाहिए। इसी तारतम्य में प्राचीन भारतीय शिक्षा-दर्शन को भी सर्वप्रथम एक इकाई के रूप में ही मान्य किया जाना चाहिए। यह हो सकता है कि सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने के लिए उपर्युक्त दोनों युगों की सीमायें निर्धारित की जायें किन्तु विशेषकर बाद वाले युग में प्रथम युग की इतनी अधिक विशेषतायें विद्यमान हैं कि दोनों युगों के जीवन-दर्शन और शिक्षा-दर्शन पर एक साथ विचार करना भी उपयोगी होगा।

प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शन धर्ममय था। जीवन के सभी कार्यकलाप धर्म से ओत प्रोत थे, धर्म से नियंत्रित थे। धर्म द्वारा, धर्म के लिए और धर्ममय जीवन शैली प्राचीन भारत की विशेषता थी। वर्तमान जीवन में राजनीति का प्रभुत्व है। धर्म, समाज, अर्थ आदि सभी में राजनीति का प्रवेश है। सभी पर राजनीति हावी है। प्राचीन युग की प्रधानता होने से राजनीति में हिंसा और शत्रुता, द्वेष और ईर्ष्या, परिग्रह और स्वार्थ का बहुल्य न होकर, प्रेम, सदाचार त्याग और अपरिग्रह महत्वपूर्ण थे। उदात्त भावनायें बलवती थी। दिव्य सिद्धान्त जीवन के मार्गदर्शक थे। सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति प्रधान नहीं था, अपितु वह परिवार और समाज के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ का त्याग करने को तत्पर था। उदात्त वृत्ति की सीमा सम्पूर्ण वसुधा थी। जीवन का आदर्श 'वसुधैवकुटुम्बकम्' था। जीवन का उद्देश्य धर्म था। धर्ममय जीवन भौतिक उपलब्धियों से श्रेष्ठ माना जाता था।

प्राचीन भारत का शिक्षा-दर्शन भी धर्म से ही प्रभावित था। शिक्षा का उद्देश्य धर्माचरण की वृत्ति जाग्रत करना था। शिक्षा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए थी। इनका क्रमिक विकास ही शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य था। धर्म का सर्वप्रथम स्थान था। धर्म से विपरीत होकर अर्थ लाभ करना मोक्ष प्राप्ति का मार्ग अवरुद्ध करना था। मोक्ष जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य था और यही शिक्षा का भी अन्तिम लक्ष्य था। प्राचीन काल में जीवन-दर्शन ने शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित किया था। जीवन की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का प्रभाव शिक्षा दर्शन पर भी पड़ा था। उस काल के शिक्षकों, ऋषियों आदि ने चित्त वृत्ति निरोध को शिक्षा का उद्देश्य माना था। शिक्षा का लक्ष्य यह भी था कि आध्यात्मिक मूल्यों का विकास हो। उस समय भौतिक सुविधाओं के विकास की ओर ध्यान देना किंचित भी आवश्यक नहीं था क्योंकि भूमि धन-धान्य से पूर्ण थी, भूमि पर

जनसंख्या का भार नहीं था। किन्तु इसका यह भी अर्थ नहीं था कि लोकोपयोगी शिक्षा का आभाव था। प्रथमत: लोकोपयोगी शिक्षा परिवार में, परिवार के मध्यम से ही सम्पन्न हो जाती थी। वंश की परम्पराएँ थी और ये परम्पराएँ पिता से पुत्र को हस्तान्तरित होती रहती थी। व्यवसायों के क्षेत्र में प्रतियोगिता नहीं के बराबर थी। सभी के लिए काम उपलब्ध था। सभी की आवश्यकताएँ पूर्ण हो जाती थी।

चाहे वैदिक युग में हो अथवा महाकाव्य काल में हो, प्राचीन भारतीय जीवन पद्धति में ऋषिगण समाज के मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थे। वे सभी शिक्षक के समधर्मी थे। वे सदा ही आध्यात्मिक सत्ता के गुण गाते थे। उनका जीवन भौतिकता से मुक्त और आध्यात्मिकता में लिप्त रहता था। समाज को भी वे यही शिक्षा और मार्गदर्शन देते थे। वैदिक काल से प्रारम्भ होकर, महाकाव्य काल में यह जीवन-दर्शन परवान चढ़ा। इस प्रकार प्राचीन काल में भारतीय जीवन-दर्शन पूर्णत: आध्यात्मिक रहा और शिक्षा को भी यही दिशा मिली। गुरु परम्परा अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रही। वेदों का प्रादुर्भाव भी गुरु परम्परा से ही हुआ। तत्पश्चात भी शिक्षा गुरु परम्परा के माध्यम से ही दी जाती रही।

यद्यपि व्यवसायों का शिक्षण अधिकतर गृह प्रांगण में ही होता था किन्तु गुरु गृह भी गृहस्थी की शिक्षा के समुन्नत केन्द्र थे। भारत उस काल में भी कृषि प्रधान देश था। कृषि, वनोपज और पशुपालन का शिक्षण प्राय: गुरु-गृह में निवास कर प्राप्त होता था। मानव प्रकृति की गोद से दूर नहीं रहता था। गुरु-गृह अधिकतर बस्तियों से दूर रहते थे। उनमें रहने वाले विद्याभ्यामी प्रकृति के प्रांगण में निवास करते थे, विचरते थे, शिक्षा प्राप्त करते थे और अभ्यास एवं अनुप्रयोग करते थे। चाहे धनवान पुत्र हो या निर्धन पुत्र, कृषि कार्य एवं वनवास और वन विचरण के कार्यों एवं प्रवृत्तियों द्वारा शिक्षा प्राप्त करते थे। दोनों ही वर्ग के शिष्यों के लिए ऐसे कार्यों द्वारा श्रम का गौरव आत्मसात करना और व्यवहार में लाना उपयोगी माना जाता था। श्रम का गौरव समाज में पूर्णरूपेण प्रतिष्ठित और महिमा मण्डित था। इसके अतिरिक्त सेवा-कार्य को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। गुरु-गृह में गुरु, गुरु-परिवार तथा सहपाठियों की सेवा को उत्कृष्ठ कार्य माना जाता था। गुरु की गायों की सेवा भी शिष्य का कर्त्तव्य था। गुरुकुल में मानवोपयोगी पशुओं की संख्या सैकड़ों और हजारों में होती थी।

सामूहिकता का अत्याधिक महत्व था। गुरु सैकड़ों की संख्या में गौ पालन इसलिए नहीं करता था कि उसे निजी लाभ हो और उसका परिवार भौतिक सुविधायें भोग सके अपितु इस उद्यम का लाभ गुरुकुल में निवास करने वाले सभी शिष्य आदिवासियों को मिलता था। छान्दोग्य उपनिषद् में महासन्त सत्यकाम की कथा का वर्णन है। प्रारम्भ में तो वे गुरु की गौवों की रक्षा में रत रहते थे। बाद में उनकी देख-रेख में सहस्त्र गायों का पालन करते थे। विभिन्न प्रकार के दानों में गौदान का सार्वाधिक महत्व था। गौदान को स्वर्णदान से भी अधिक महान माना जाता था। शिक्षा की आर्थिक व्यवस्था में गौदान सर्वोपरि था। गृहस्था श्रम के लिए उपयुक्त इस शिक्षा की पृष्ठभूमि में वही सिद्धान्त था जिसको वर्तमान में हम 'क्रिया से शिक्षा' की संज्ञा देते हैं। उच्चतम शिक्षा में भी 'शारीरिक श्रम' और क्रिया का अत्याधिक महत्व था। आध्यात्मिक उन्नति में संलग्न ऋषि एवं शिष्य भी शारीरिक श्रम से दूर नहीं रहते थे।

इसका यही अर्थ है कि शिक्षा केवल सैद्धान्तिक नहीं थी। व्यवहार और वास्तविकता का भी शिक्षा से उतना ही गहन सम्बन्ध था जितना सैद्धांतिक अध्ययन-अध्यापन का। किसी भी कार्य को छोटा नहीं समझा जाता था। ऋग्वेद में ऐसे उदाहरण हैं कि ऋषि स्वयं कवि थे। उनके पिता चिकित्सक थे। उनकी माता उपल प्रक्षिणी अर्थात् आटा पीसने वाली थी और परिवार के तीनों ही सदस्य शिक्षा दान में कार्यरत थे।

क्रिया द्वारा शिक्षा के लिए जीवन एक प्रयोगशाला के समान था। ऋषि कुल में जीवनयापन के मध्य शिक्षा सम्बन्धी प्रयोग और परीक्षण सम्पन्न होते थे। इन प्रयोगों के आधार पर ही शिक्षाशास्त्र विकसित हुआ था। यहाँ तक शिक्षण विधि का प्रश्न है, श्रवण, मनन और चिन्तन, प्रयोग और व्यवहार को समुचित स्थान प्राप्त था। स्मरण शक्ति का यथोचित उपयोग किया जाता था। गुरु परम्परा का महत्व भी अत्यधिक था। यह गुरु परम्परा की ही देन है कि वेद आज तक जीवित हैं। प्राचीन भारतीय शिक्षा का विकास, आध्यात्मिकता, चित्त वृत्ति निरोध, लोकोपयोग, गृहस्थ जीवन प्रशिक्षण, श्रम की पूजा, कृषि का प्रायोगिक ज्ञान आदि को सम्मिलित कर हुआ था।

ऋषिकुल अथवा गुरुकुल में निवास करने वाले किसी भी शिष्य या उसके परिवार से शुल्क लेने की प्रथा नहीं थी। प्राय: वे आश्रम आत्म-निर्भर होते थे। पशुपालन या कृषि उत्पादन से इन आश्रमों या गुरुकुल का सम्पूर्ण व्यय वहन होता था। अनेक आश्रम ऐसे भी थे जिनके लिए इस प्रकार से व्यय पूर्ति सम्भव

नहीं थी। उनके लिए भिक्षा प्राप्त करने का उपाय था। शिष्यगण और स्वयं गुरु भी भिक्षा माँगने को अधम अथवा हीन नहीं मानते थे। भिक्षा स्वयं माँगने वाले के लिए नहीं होकर समूह के लिए होती थी। वे भिक्षा प्राप्त करने में किसी प्रकार की लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं करते थे। निर्धन और धनिक दोनों ही प्रकार के परिवारों से आये शिष्य भिक्षा प्राप्ति में समान रूप से भाग लेते थे। 'एक सब के लिए और सब एक के लिए' वाले सिद्धान्त पर सम्पूर्ण व्यवस्था आधारित थी।

गुरु भी भिक्षा माँगने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करते थे। भिक्षा उनके स्वयं के उदर पोषण या भौतिक सुविधाओं के लिए नहीं होती थी अपितु आश्रम के संचालन और विकास के लिए वे राजा या धनिकों के द्वार पर दान प्राप्त करने के लिए भिक्षु के रूप में उपस्थित होते थे। वे दान में गौएँ और स्वर्ण प्राप्त करते थे। जब शिष्य अपने ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति पर अपने परिवार में पहुँचते थे और गृहस्थ का जीवन अपनाते थे तब उन्हें इस भिक्षा की वृत्ति की उपादेयता ज्ञात रहती थी। उनके पास उनका स्वयं का अनुभव होता था कि किस प्रकार उनके शिष्य काल में प्राप्त भिक्षा सर्वा हिताय होती थी। अत: वे मुक्त हृदय से दान देने में पीछे नहीं रहते थे।

ऋषि की ख्याति के अनुरूप आश्रम चयन की सुविधा शिष्य के परिवार को रहती थी किन्तु आश्रम, धनवानों के आश्रम और निर्धनों के आश्रम में बंटे नहीं थे। आश्रम में सभी स्तर के शिष्य एक साथ शिक्षा प्राप्त करते थे। राजा और रंक में किसी प्रकार का भेद नहीं था। सभी एक साथ गुरु की छत्र छाया में निवास करते थे, विद्याभ्यास करते थे। महाकाव्य काल में संपादिनी ऋषि के आश्रम में कृष्ण और सुदामा राजपुत्र और रंक पुत्र के एक साथ शिक्षा प्राप्त करने और जीवन पर्यन्त मित्रता निभाने का उदाहरण स्मरणीय है। गुरु का महत्व अत्यधिक था। शिक्षा, शिल्प-केन्द्रित थी। ऋषियों के अपने आश्रम थे। आश्रम उनके ही नाम से विख्यात थे। उनके स्थान निश्चित थे। गुरु परम्परा में एक पीढ़ी के पश्चात् दूसरी पीढ़ी आती रहती थी।

1.1.4 शिक्षा के प्रति भारतीय दृष्टिकोण

अतीत काल से शिक्षा के प्रति भारतीय दार्शनिकों का विशेष भाव केन्द्रित रहा है। इन्होंने समय-समय पर अपनी दार्शनिक धारणाओं के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ताओं के सम्बर्धन में विशेष योगदान दिया है। मूलतः देखा जाए तो शिक्षा और दर्शन का अटूट सम्बन्ध

रहा है, दोनों एक दूसरे के सम्पूरक होकर सामाजिक विकास में लोकनिर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहे क्योंकि शिक्षा के बिना दर्शन को समझना दुर्लभ है तो दर्शन के बिना शिक्षा की पराकाष्ठा तक पहुँच पाना आसान नहीं है। शिक्षाविदों ने शिक्षा को मात्र ज्ञान संग्रह की प्रवृत्ति तक ही सीमित नहीं रखा है बल्कि उन्होंने इसे विद्या की पराकाष्ठा तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है, जिसमें विनयावत होकर नियम संयम के साथ व्यक्तित्व के आन्तरिक एवं वह पक्ष के विकास की गति पर बल दिया है। सभी शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय दार्शनिक धारणाओं को सहजता पूर्वक जनमानस तक पहुँचाने के लिए शिक्षा को ही अपना माध्यम बनाया। सबका मात्र एक ही उद्देश्य रहा है कि मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो। वह जीवन के एकल पक्ष की उन्नति को ही अपना सब कुछ न समझे बल्कि वह सभी विषयों का समानुपातिक विकास करता रहे। इस दिशा में मानवीय संस्कृति के विकास काल से ही अनवरत प्रयत्न जारी है आज वर्तमान परिवेश में भी इस परम्परा को आगे बढ़ाते रहने का प्रयास किया जा रहा है और इस परिधि में सफलता भी प्राप्त हो रही है।

शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय शिक्षा के विकास में अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उन्होंने सामान्य जन को सहजता पूर्वक जीवन व्यतीत करने का समय-समय पर निर्देशन दिया है, क्योंकि जीवन की गति सत्य है, समय के चक्र में वह चलता ही जाता है जीवन जीने की जिसकी जितनी अद्भुत कला होती है वह उतना ही प्रवीनता से जीवन की मूलभूत सुखों को अर्जित करने में सफलता हासिल करता है। इसीलिए जीवन की कला को सीखने समझने व उस पृष्ठभूमि में पारंगत होने की अनोखी कला का समुचित प्रदर्शन शिक्षा दर्शन में प्रयुक्त किया है, जो भारतीय आदर्शों को स्थापित करते हुए जीवन के यथार्थ एवं मानववादी अद्भुत दृष्टिकोणों के विकास पर सतत बल देता है। उन्होंने आन्तरिक शुद्धता के साथ-साथ सामाजिक समरसता को जीवन का प्रमुख बतलाया है, जो भारतीय दृष्टिकोण का पक्षधर है।

राष्ट्रीय आवश्यकताओं को देखते हुए शिक्षा शास्त्रियों ने भारतीय आदर्शवादी पृष्ठभूमि को बड़ी सहजता के साथ लोक सम्मुख प्रस्तुत किया है। उन्होंने पाश्चात्य चमत्कार से परे, भारतीय मर्यादावाद के यथार्थ पृष्ठभूमि को अपने साधन की कसौटी बनाया और उस अनुभूतियों की सच्चे विकास पर अपनी धारणाओं को कसते हुए जन जीवन के उद्धार हेतु सामाजिक यथार्थ के सच्चे आदर्शरूप की परिकल्पना की है। इसके अन्तर्गत उन्होंने एक और शारीरिक स्वस्थ की बात की है तो दूसरी ओर आत्मीय शुद्धता पर बल

दिया है। उनकी मान्यता रही है कि व्यक्ति की आत्मा की शुद्धता से उसका अन्तर्मन सबल होता है तथा उसकी चेतनात्मक अवधारणा नवीन सन्दर्भों का संस्पर्श प्राप्त करती है जो मनुष्य की सदाचारी, सदविवेकी, अनुभव शील व सरल लोक व्यवहारी होने पर बल देता है तथा दूसरी ओर शारीरिक स्वास्थ्य की श्रेष्ठता पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए उन्होंने खानपान की उपयुक्तता व खेलकूद तथा व्यायाम के महत्व पर बल देते हुए जीवन के नियम संयम की गुण ग्रहणता को रेखांकित किया है।

इस प्रकार से शिक्षा शास्त्रियों ने अनवरत भारतीय शिक्षा के विकास में अपनी भावनाओं का विशेष योग दिया है। जो भारतीय दृष्टिकोण को सहजता से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। इसमें आनन्दवाद के प्रबल प्रवृत्ति का प्रदर्शन सन्निहित है। पश्चात सुखवादी अवधारणा इसके किसी भी सन्दर्भ को प्रभावित नहीं करती है।

1.1.5 भारतीय शैक्षिक विचारक

शिक्षा में स्वामी दयानन्द (1824-1883), स्वामी विवेकानन्द (1873-1902), श्रीमती एनी बेसेन्ट (1847-1933), गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941), महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय (1861-1945), महात्मा गाँधी (1869-1948) महर्षि अरविन्द (1872-1950) और भीमराव अम्बेडकर (1891-1956) आदि शैक्षिक विचारक आधुनिक भारत के महान शिक्षाशास्त्री माने जाते हैं। वे अन्य विचारकों द्वारा की हुई भारतीय शिक्षा से सम्बन्धित विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ भारतीय शिक्षाशास्त्रियों की मुख्य विचारधारा का अवलोकन किया जाएगा और यह भी बतलाने का प्रयत्न किया जाएगा कि भारतीय विचारकों के शिक्षा सम्बन्धी विचारों में पाश्चात्य शिक्षा दर्शन की छाप कहाँ तक पाई जाती है।

1.1.5.1 स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1883)

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती (1824-1863) आधुनिक भारत के महान चिन्तक, समाज-सुधारक व देशभक्त थे। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। वे महान ईश्वर भक्त थे। उन्होंने मुंबई में एक समाज सुधारक संगठन आर्य समाज की स्थापना की। वे एक संन्यासी तथा एक महान चिन्तक थे। उन्होंने वेदों की सत्ता को सदा सर्वोपरि माना। वेदों की ओर लौटो यह

उनका प्रमुख नारा था। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों का भाष्य किया इसलिए उन्हें ऋषि कहा जाता है। कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म, ब्रह्मचर्य तथा सन्यास को अपने दर्शन के चार स्तम्भ बनाया। उन्होंने ही सबसे पहले 1876 में 'स्वराज्य' का नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया। आज स्वामी दयानन्द के विचारों की समाज को नितान्त आवश्यकता है।

महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढियों बुराइयों को दूर करने के लिए, निर्भय होकर उन पर आक्रमण किया। वे संन्यासी योद्धा कहलाए। उन्होंने जन्मना जाति का विरोध किया तथा कर्म के आधार वेदानुकूल वर्ण निर्धारण की बात कही। वे दलितोद्धार के पक्षधर थे। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा के लिए प्रबल आन्दोलन चलाया। उन्होंने बाल विवाह तथा सती प्रथा का निषेध किया तथा विधवा विवाह का समर्थन किया। उन्होंने ईश्वर को सृष्टि का निमित्त कारण तथा प्रकृति को अनादि तथा शाश्वत माना। वे तैत्रवाद के समर्थक थे। उनके दार्शनिक विचार वेदानुकूल थे। उन्होंने यह भी माना कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र हैं तथा फल भोगने में परतन्त्र हैं। महर्षि दयानन्द सभी धर्मानुयायियों को एक मंच पर लाकर एकता स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील थे। उन्होंने इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) दरबार के समय 1878 में ऐसा प्रयास किया था। उनके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में उनके मौलिक विचार सुस्पष्ट रूप में प्राप्य हैं। वे योगी थे तथा प्राणायाम पर उनका विशेष बल था। वे सामाजिक पुनर्गठन में सभी वर्णों तथा स्त्रियों की भागीदारी के पक्षधर थे। राष्ट्रीय जागरण की दिशा में उन्होंने सामाजिक क्रान्ति तथा आध्यात्मिक पुनरुत्थान के मार्ग को अपनाया। उनकी शिक्षा सम्बन्धी धारणाओं में प्रदर्शित दूरदर्शिता, देशभक्ति तथा व्यवहारिकता पूर्णतया प्रासंगिक तथा युगानुकूल है। महर्षि दयानन्द समाज सुधारक तथा धार्मिक पुनर्जागरण के प्रवर्तक तो थे ही, वे प्रचण्ड राष्ट्रवादी तथा राजनैतिक आदर्शवादी भी थे। विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विधान पढना-पढाना व बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषावादि, कुलक्षण, वेद-विद्या का प्रचार आदि कुकर्म हैं, जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं और तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। उन्होंने राज्याध्यक्ष तथा शासन की विभिन्न परिषदों एवं समितियों के लिए

आवश्यक योग्यताओं को भी गिनाया है। उन्होंने न्याय की व्यवस्था ऋषि प्रणीत ग्रन्थों के आधार पर किए जाने का पक्ष लिया।

1.1.5.2 गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर (1861-1941)

रबीन्द्रनाथ ठाकुर अथवा रविन्द्रनाथ टैगौर (जन्म 7 मई 1861 कलकत्ता, पश्चिम बंगाल, मृत्यु 7 अगस्त 1941, कलकत्ता) एक बांग्ला कवि, कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार, निबन्धकार और चित्रकार थे। भारतीय संस्कृति के सर्वश्रेष्ठ रूप से पश्चिमी देशों का परिचय और पश्चिमी देशों की संस्कृति से भारत का परिचय कराने में टैगोर की बड़ी भूमिका रही तथा आमतौर पर उन्हें आधुनिक भारत का असाधारण सृजनशील कलाकार माना जाता है।

दो-दो राष्ट्रगानों के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर के पारम्परिक ढांचे के लेखक नहीं थे। वे एकमात्र कवि हैं, जिनकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बनी। भारत का राष्ट्रगान जन-गण-मन और बांग्लादेश का राष्ट्रीय गान आमार सोनार बांग्ला गुरुदेव की ही रचनाएँ हैं। वे वैश्विक समानता और एकांतिकता के पक्षधर थे। ब्रह्म समाजी होने के बावजूद उनका दर्शन एक अकेले व्यक्ति को समर्पित रहा। चाहे उनकी ज्यादातर रचनाएँ बांग्ला में लिखी हुई हों। वह एक ऐसे लोक कवि थे जिनका केन्द्रीय तत्त्व अन्तिम आदमी की भावनाओं का परिष्कार करना था। वह मनुष्य मात्र के स्पन्दन के कवि थे। एक ऐसे कलाकार जिनकी रगों में शाश्वत प्रेम की गहरी अनुभूति है, एक ऐसा नाटककार जिसके रंगमंच पर सिर्फ ट्रेजडी ही जिन्दा नहीं है, मनुष्य की गहरी जिजीविषा भी है। एक ऐसा कथाकार जो अपने आस-पास से कथालोक चुनता है, बुनता है, सिर्फ इसलिए नहीं कि घनीभूत पीड़ा के आवृत्ति करे या उसे ही अनावृत करे, बल्कि उस कथालोक में वह आदमी के अन्तिम गंतव्य की तलाश भी करता है।

1901 में टैगोर ने पश्चिम बंगाल के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित शान्ति निकेतन में एक प्रायोगिक विद्यालय की स्थापना की। जहाँ उन्होंने भारत और पश्चिमी परम्पराओं के सर्वश्रेष्ठ को मिलाने का प्रयास किया। वह विद्यालय में ही स्थायी रूप से रहने लगे और 1921 में यह विश्व भारती विश्वविद्यालय बन गया। 1902 तथा 1907 के बीच उनकी पत्नी तथा दो बच्चों की मृत्यु से उपजा गहरा दु:ख उनकी बाद की कविताओं में परिलक्षित होता है, जो पश्चिमी जगत में गीतांजलि, साँग ऑफरिंग्स (1912) के रूप में पहुँचा।

शान्ति निकेतन में उनका जो सम्मान समारोह हुआ था उसका सचित्र समाचार भी कुछ ब्रिटिश समाचार पत्रों में छपा था। 1908 में कोलकाता में हुए कांग्रेस अधिवेशन के सभापति और बाद में ब्रिटेन के प्रथम लेबर प्रधानमंत्री रेम्जे मेक्डोनाल्ड 1914 में एक दिन के लिए शान्ति निकेतन गए थे। उन्होंने शान्ति निकेतन के सम्बन्ध में पार्लियामेंट के एक लेबर सदस्य के रूप में जो कुछ कहा वह भी ब्रिटिश समाचार पत्रों में छपा। उन्होंने शान्ति निकेतन के सम्बन्ध में सरकारी नीति की भर्त्सना करते हुए इस बात पर चिन्ता व्यक्त की थी कि शान्ति निकेतन को सरकारी सहायता मिलना बंद हो गई है। पुलिस की ब्लेक लिस्ट में उसका नाम आ गया है और वहाँ पढ़ने वाले छात्रों के माता-पिता को धमकी भरे पत्र मिल रहे हैं। पर ब्रिटिश समाचार पत्र बराबर रवीन्द्रनाथ ठाकुर के इस प्रकार प्रशंसक नहीं रहे।

गुरुदेव ने जीवन के अन्तिम दिनों में चित्र बनाना शुरू किया। इसमें युग का संशय, मोह, क्लान्ति और निराशा के स्वर प्रकट हुए हैं। मनुष्य और ईश्वर के बीच जो चिरस्थायी सम्पर्क है उनकी रचनाओं में वह अलग-अलग रूपों में उभरकर सामने आया। टैगोर और महात्मा गाँधी के बीच राष्ट्रीयता और मानवता को लेकर हमेशा वैचारिक मतभेद रहा। जहाँ गाँधी पहले पायदान पर राष्ट्रवाद को रखते थे, वहीं टैगोर मानवता को राष्ट्रवाद से अधिक महत्व देते थे। लेकिन दोनों एक दूसरे का बहुत अधिक सम्मान करते थे। टैगोर ने गाँधी जी को महात्मा का विशेषण दिया था। एक समय था जब शान्ति निकेतन आर्थिक कमी से जूझ रहा था और गुरुदेव देश भर में नाटकों का मंचन करके धन संग्रह कर रहे थे। उस समय गाँधी जी ने टैगोर को 60 हजार रुपये के अनुदान का चेक दिया था।

जीवन के अन्तिम समय 7 अगस्त 1941 से कुछ समय पहले इलाज के लिए जब उन्हें शान्ति निकेतन से कोलकाता ले जाया जा रहा था तो उनकी नातिन ने कहा कि आपको मालूम है हमारे यहाँ नया पावर हाउस बन रहा है। इसके जवाब में उन्होंने कहा कि हाँ पुराना आलोक चला जाएगा और नए का आगमन होगा। टैगोर के गीतांजलि (1910) समेत बांग्ला काव्य संग्रहालयों से ली गई कविताओं के अंग्रेजी गद्यानुवाद की इस पुस्तक की डब्ल्यू.बी.यीट्स और आंद्रे जीद ने प्रशंसा की और इसके लिए टैगोर को 1913 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

1.1.5.3 स्वामी विवेकानन्द (1873-1902)

स्वामी विवेकानन्द वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। उनका वास्तविक नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। उन्होंने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में स्वामी विवेकानन्द की वक्तृता के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी अपना काम कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। उन्हें प्रमुख रूप से उनके भाषण की शुरुआत 'मेरे अमरीकी भाइयो एवं बहनो' के साथ करने के लिये जाना जाता है। उनके सम्बोधन के इस प्रथम वाक्य ने सबका दिल जीत लिया था।

कलकत्ता के एक कुलीन बंगाली परिवार में जन्मे विवेकानन्द आध्यात्मिकता की ओर झुके हुए थे। वे अपने गुरु रामकृष्ण देव से काफी प्रभावित थे जिनसे उन्होंने सीखा कि सारे जीवो मे स्वयं परमात्मा का ही अस्तित्व हैं इसलिए मानव जाति की सेवा द्वारा परमात्मा की भी सेवा की जा सकती है। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद विवेकानन्द ने बड़े पैमाने पर भारतीय उपमहाद्वीप का दौरा किया और ब्रिटिश भारत में मौजूदा स्थितियों का प्रत्यक्ष ज्ञान हासिल किया। बाद में विश्व धर्म संसद 1893 में भारत का प्रतिनिधित्व करने, संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए प्रस्थान किया। विवेकानन्द ने संयुक्त राज्य अमेरिका, इंग्लैंड और यूरोप में हिन्दू दर्शन के सिद्धान्तों का प्रसार किया। सैकड़ों सार्वजनिक और निजी व्याख्यानों का आयोजन किया। भारत में विवेकानन्द को एक देशभक्त संन्यासी के रूप में माना जाता है और उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानन्द मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के विरोधी थे, क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके। बालक की शिक्षा का उद्देश्य उसको आत्मनिर्भर बनाकर अपने पैरों पर खड़ा करना है। स्वामी विवेकानन्द ने प्रचलित शिक्षा को 'निषेधात्मक शिक्षा' की संज्ञा देते हुए कहा है कि आप उस व्यक्ति को शिक्षित मानते हैं जिसने कुछ परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर ली हों तथा जो अच्छे भाषण दे सकता हो, पर वास्तविकता यह है कि जो शिक्षा जनसाधारण को जीवन संघर्ष के लिए तैयार नहीं करती, जो चरित्र

निर्माण नहीं करती, जो समाज सेवा की भावना विकसित नहीं करती तथा जो शेर जैसा साहस पैदा नहीं कर सकती, ऐसी शिक्षा से क्या लाभ?

अतः स्वामी जी सैद्धान्तिक शिक्षा के पक्ष में नहीं थे, वे व्यावहारिक शिक्षा को व्यक्ति के लिए उपयोगी मानते थे। व्यक्ति की शिक्षा ही उसे भविष्य के लिए तैयार करती है, इसलिए शिक्षा में उन तत्वों का होना आवश्यक है, जो उसके भविष्य के लिए महत्वपूर्ण हो। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में, तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा। सिद्धान्तों के ढेरों ने सम्पूर्ण देश का विनाश कर दिया है।

स्वामी जी शिक्षा द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार करना चाहते हैं। लौकिक दृष्टि से शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति स्वावलम्बी बने। पारलौकिक दृष्टि से उन्होंने कहा है कि 'शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'

स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त निम्नलिखित हैं –

- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास हो सके।
- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के चरित्र का निर्माण हो, मन का विकास हो, बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने।
- बालक एवं बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए।
- धार्मिक शिक्षा, पुस्तकों द्वारा न देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिए।
- शिक्षा, गुरू गृह में प्राप्त की जा सकती है।
- शिक्षक एवं छात्र का सम्बन्ध अधिक से अधिक निकट का होना चाहिए।
- सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार किया जान चाहिये।

- देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था की जाय।
- मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू करनी चाहिए।

1.1.5.4 श्रीमती एनी बेसेण्ट (1847-1933)

एनी बेसेन्ट (1 अक्टूबर 1847-20 सितम्बर 1933) अग्रणी आध्यात्मिक, थियोसोफिस्ट, महिला अधिकारों की समर्थक, लेखक, वक्ता एवं भारत प्रेमी महिला थी। सन 1917 में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षा भी बनीं। डॉ0 बेसेन्ट के जीवन का मूलमंत्र था 'कर्म'। वह जिस सिद्धान्त पर विश्वास करती उसे अपने जीवन में उतार कर उपदेश देती। वे भारत को अपनी मातृभूमि समझती थी। वे जन्म से आयरिश, विवाह से अंग्रेज तथा भारत को अपना लेने के कारण भारतीय थी। तिलक, जिन्ना एवं महात्मा गाँधी आदि ने उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा की। वे भारत की स्वतंत्रता के नाम पर अपना बलिदान करने को सदैव तत्पर रहती थी। वे भारतीय वर्ण व्यवस्था की प्रशंसक थी। परन्तु उनके सामने समस्या थी कि इसे व्यवहारिक कैसे बनाया जाय ताकि सामाजिक तनाव कम हो। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा का समुचित प्रबन्ध होना चाहिए। शिक्षा में धार्मिक शिक्षा का समावेश हो। ऐसी शिक्षा देने के लिए उन्होंने 1898 में वाराणसी में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना की। सामाजिक बुराइयों जैसे बाल विवाह, जाति व्यवस्था, विधवा विवाह, विदेश यात्रा आदि को दूर करने के लिए उन्होंने 'ब्रदर्स ऑफ सर्विस' नामक संस्था का संगठन किया। इस संस्था की सदस्यता के लिये आवश्यक था कि उसे नीचे लिखे प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करना पड़ता था।

- मैं जाति पाँति पर आधारित छुआछूत नहीं करुँगा।
- मैं अपने पुत्रों का विवाह 18 वर्ष से पहले नहीं करुँगा।
- मैं अपनी पुत्रियों का विवाह 16 वर्ष से पहले नहीं करूँगा।
- मैं पत्नी, पुत्रियों और कुटुम्ब की अन्य स्त्रियों को शिक्षा दिलाऊँगा, कन्या शिक्षा का प्रचार करुँगा। स्त्रियों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करुँगा।
- मैं जन साधारण में शिक्षा का प्रचार करुँगा।

- मैं सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में वर्ग पर आधारित भेद-भाव को मिटाने का प्रयास करुँगा।
- मैं सक्रिय रूप से उन सामाजिक बन्धनों का विरोध करुँगा जो विधवा स्त्री के सामने आते हैं तो पुनर्विवाह करती हैं।
- मैं कार्यकर्ताओं में आध्यात्मिक शिक्षा एवं सामाजिक और राजनीतिक उन्नति के क्षेत्र में एकता लाने का प्रयत्न भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व व निर्देशन में करूँगा।

डॉ0 एनी बेसेन्ट की मान्यता थी कि बिना राजनैतिक स्वतंत्रता के इन सभी कठिनाइयों का समाधान सम्भव नहीं है।

1.1.5.5 महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय (1861-1945)

महामना मदन मोहन मालवीय (25 दिसम्बर 1861-1946) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रणेता तो थे ही इस युग के आदर्श पुरुष भी थे। वे भारत के पहले और अन्तिम व्यक्ति थे जिन्हें महामना की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया। पत्रकारिता, वकालत, समाज सुधार, मातृ भाषा तथा भारतमाता की सेवा में अपना जीवन अर्पण करने वाले इस महामानव ने जिस विश्वविद्यालय की स्थापना की उसमें उनकी परिकल्पना ऐसे विद्यार्थियों को शिक्षित करके देश सेवा के लिये तैयार करने की थी जो देश का मस्तक गौरव से ऊँचा कर सकें। मालवीय जी सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, देशभक्ति तथा आत्मत्याग में अद्वितीय थे। इन समस्त आचरणों पर वे केवल उपदेश ही नहीं दिया करते थे अपितु स्वयं उनका पालन भी किया करते थे। वे अपने व्यवहार में सदैव मृदुभाषी रहे। कर्म ही उनका जीवन था। अनेक संस्थाओं के जनक एवं सफल संचालक के रूप में उनकी अपनी विधि व्यवस्था का सुचारु सम्पादन करते हुए उन्होंने कभी भी रोष अथवा कड़ी भाषा का प्रयोग नहीं किया। भारत सरकार ने 24 दिसम्बर 2014 को उन्हें भारत रत्न से अलंकृत किया।

सनातन धर्म व हिन्दू संस्कृति की रक्षा और सम्बर्धन में मालवीय जी का योगदान अनन्य है। जनबल तथा मनोबल में नित्यश: क्षयशील हिन्दू जाति को विनाश से बचाने के लिये उन्होंने हिन्दू संगठन का शक्तिशाली आन्दोलन चलाया और स्वयं अनुदार सहधर्मियों के तीव्र प्रतिवाद झेलते हुए भी कलकत्ता, काशी, प्रयाग और नासिक में भंगियों को धर्मोपदेश और मन्त्रदीक्षा दी। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रनेता मालवीय

जी ने, जैसा स्वयं पं0 जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, अपने नेतृत्वकाल में हिन्दू महासभा को राजनीतिक प्रतिक्रिया वादिता से मुक्त रखा और अनेक बार धर्मो के सहअस्तित्व में अपनी आस्था को अभिव्यक्त किया।

प्रयाग के भारती भवन पुस्तकालय, मैकडोनेल यूनिवर्सिटी हिन्दू छात्रालय और मिण्टो पार्क के जन्मदाता, बाढ़, भूकम्प, साम्प्रदायिक दंगों व मार्शल ला से त्रस्त दु:खियों के आँसू पोंछने वाले मालवीय जी को ऋषिकुल हरिद्वार, गोरक्षा और आयुर्वेद सम्मेलन तथा सेवा समिति, ब्वॉय स्काउट तथा अन्य कई संस्थाओं को स्थापित अथवा प्रोत्साहित करने का श्रेय प्राप्त हुआ, किन्तु उनका अक्षय कीर्ति स्तम्भ तो काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ही है जिसमें उनकी विशाल बुद्धि, संकल्प, देशप्रेम, क्रियाशक्ति तथा तप और त्याग साक्षात मूर्तिमान हैं। विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में हिन्दू समाज और संसार के हित के लिये भारत की प्राचीन सभ्यता और महत्ता की रक्षा, संस्कृत विद्या के विकास एवं पाश्चात्य विज्ञान के साथ भारत की विविध विद्याओं और कलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दी गयी। उसके विशाल तथा भव्य भवनों एवं विश्वनाथ मन्दिर में भारतीय स्थापत्य कला के अलंकरण भी मालवीय जी के आदर्श के ही प्रतिफल हैं।

म्योर कालेज के मानसगुरु महामहोपाध्याय पं० आदित्यराम भट्टाचार्य के साथ 1880 ई० में स्थापित हिन्दू समाज में मालवीय जी भाग ले ही रहे थे कि उन्हीं दिनों प्रयाग में वाइसराय लार्ड रिपन का आगमन हुआ। रिपन जो स्थानीय स्वायत्त शासन स्थापित करने के कारण भारतवासियों में जितने लोकप्रिय थे उतने ही अंग्रेजों के कोपभाजन भी। इसी कारण प्रिन्सिपल हैरिसन के कहने पर उनका स्वागत संगठित करके मालवीय जी ने प्रयाग वासियों के हृदय में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया।

1.1.5.6 महात्मा गाँधी (1869-1948)

मोहनदास करमचन्द गाँधी (2 अक्टूबर 1869-30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव सम्पूर्ण अहिंसा के सिद्धान्त पर रखी गयी थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतन्त्रता के प्रति आन्दोलन के लिये प्रेरित किया। उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गाँधी के नाम से जानती है। संस्कृत भाषा में महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान

सूचक शब्द है। गाँधी को महात्मा के नाम से सबसे पहले 1915 में राजवैद्य जीवराम कालिदास ने संबोधित किया था। उन्हें बापू के नाम से भी याद किया जाता है। सुभाष चन्द्र बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से गाँधी जी के नाम जारी प्रसारण में उन्हें राष्ट्रपिता कहकर सम्बोधित करते हुए आजाद हिन्द फौज के सैनिकों के लिये उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ माँगीं थी। प्रति वर्ष 2 अक्टूबर को उनका जन्म दिन भारत में गाँधी जयन्ती के रूप में और पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। गाँधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिये वकालत भी की। उन्होंने साबरमती आश्रम में अपना जीवन गुजारा और परम्परागत भारतीय पोशाक धोती व सूत से बनी शाल पहनी जिसे वे स्वयं चरखे पर सूत कातकर हाथ से बनाते थे। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि के लिये लम्बे लम्बे उपवास रखे।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक मत्वपूर्ण योगदान होता है।

अतः गाँधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूलमंत्र था शोषण विहीन समाज की स्थापना करना। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असम्भव है। अतः गाँधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या की तथा प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षा दर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्वितीय था। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत में बच्चों को 3H की शिक्षा अर्थात् Head Hand Heart की शिक्षा दी जाए। शिक्षा उन्हें स्वावलंबी बनाये और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। गाँधीजी ने शिक्षा के अधोलिखित आधारभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है-

- 7 से 14 वर्ष की आयु के बालकों की निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा हो।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

- साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता।
- शिक्षा बालक के मानवीय गुणों का विकास करना है।
- शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक के शरीर, हृदय, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास हो।
- सभी विषयों की शिक्षा स्थानीय उत्पादन उद्योगों के माध्यम से दी जाए।
- शिक्षा ऐसी हो जो नवयुवकों को बेरोजगारी से मुक्त कर सके।

अतः गाँधीजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में जाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुंमुखी विकास करना है। अतः बालक के सर्वांगीण विकास हेतु उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास करना।

गाँधीजी ने शिक्षा के उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया है।

1- शिक्षा का तात्कालिक उद्देश्य।

2- सर्वोच्च उद्देश्य तात्कालिक उद्देश्य जिनकों नियमित शिक्षा के माध्यम से शीघ्र प्राप्त किया जा सकता है। जो कि इस प्रकार है-

- **जीविकोपार्जन का उद्देश्य**: गाँधी जी के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके बालक आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्त हो।
- **सांस्कृतिक उद्देश्य**: गाँधी जी ने संस्कृति को शिक्षा का आधार माना। उनके अनुसार मानव के व्यवहार में संस्कृति परिलक्षित होनी चाहिए।
- **पूर्ण विकास का उद्देश्य**: उनके अनुसार सच्ची शिक्षा वह है जिसके द्वारा बालकों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो सके।
- **नैतिक अथवा चारित्रिक विकास**: गाँधी जी ने चारित्रिक एवं नैतिक विकास को शिक्षा का उचित आधार माना है।

- **मुक्ति का उद्देश्य**: गाँधी जी का आदर्श ''सा विधा या विमुक्तये'' अर्थात शिक्षा ही हमें समस्त बंधनों से मुक्ति दिलाती है। अतः गाँधीजी शिक्षा के द्वारा आत्मविकास के लिये आध्यात्मिक स्वतंत्रता देना चाहते थे। शिक्षा के सर्वोच्च उद्देश्य के अन्तर्गत वे सत्य अथवा ईश्वर की प्राप्ति पर बल देते थे। अतः मनुष्य का अन्तिम एवं सर्वोच्च उद्देश्य आत्मानुभूति करना है।

सन् 1937 में गाँधी जी ने वर्धा में हो रहे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे 'वर्धा शिक्षा सम्मेलन' कहा गया था। उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की नयी योजना को प्रस्तुत किया। जो कि मेट्रिक स्तर तक अंग्रेजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित थी। जामिया मिलिया के तत्कालिक प्रिन्सिपल डॉ0 जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में 'जाकिर हुसैन समिति' का निर्माण किया गया तथा गाँधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विद्यायें तथा सम्मेलन द्वारा पारित किये गये प्रस्तावों के आधार पर 'नई तालिम' (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई। तथा 1938 में हरिपुर के अधिवेशन ने इन रिपोर्ट को स्वीकृति दी। जो कि 'वर्धा शिक्षा योजना' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार है।

1.1.5.7 महर्षि अरविन्द (1872-1950)

महर्षि अरविन्द घोष या श्री अरविन्द (जन्म 1872, मृत्यु 1950) एक योगी एवं दार्शनिक थे। वे 15 अगस्त 1872 को कलकत्ता में जन्मे थे। इनके पिता एक डाक्टर थे। इन्होंने युवा अवस्था में स्वतन्त्रता संग्राम में क्रान्तिकारी के रूप में भाग लिया, किन्तु बाद में यह एक योगी बन गये और इन्होंने पांडिचेरी में एक आश्रम स्थापित किया। वेद, उपनिषद ग्रन्थों आदि पर टीका लिखी। योग साधना पर मौलिक ग्रन्थ लिखे। उनका पूरे विश्व में दर्शन शास्त्र पर बहुत प्रभाव रहा है और उनकी साधना पद्धति के अनुयायी सब देशों में पाये जाते हैं। यह कवि भी थे और गुरु भी।

श्री अरविन्द ने भारतीय शिक्षा चिन्तन में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने सर्वप्रथम घोषणा की कि मानव सांसारिक जीवन में भी दैवी शक्ति प्राप्त कर सकता है। वे मानते थे कि मानव भौतिक जीवन व्यतीत करते हुए तथा अन्य मानवों की सेवा करते हुए अपने मानस को 'अति मानस' तथा स्वयं को 'अति मानव' में परिवर्तित कर सकता है। शिक्षा द्वारा यह सम्भव है।

आज की परिस्थितियों में जब हम अपनी प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं परम्परा को भूल कर भौतिकवादी सभ्यता का अंधानुकरण कर रहे हैं, अरविन्द का शिक्षा दर्शन हमें सही दिशा का निर्देश करता हैं। आज धार्मिक एवं अध्यात्मिक जागृति की नितान्त आवश्यकता है। श्री वी आर तनेजा के शब्दों में "श्री अरविन्द का शिक्षा दर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आदर्शवादी, उपागम की दृष्टि से यथार्थवादी, क्रिया की दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वाकांक्षा की दृष्टि से मानवतावादी है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा में अपनाना चाहिए।"

राष्ट्रीय आन्दोलन में लगे हुए विद्यार्थियों को शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करने हेतु कलकत्ता में एक राष्ट्रीय महाविद्यालय स्थापित किया गया। श्री अरविन्द को 150 रु प्रति माह के वेतन पर इस कॉलेज का प्रधानाचार्य नियुक्त किया गया। इस अवसर का लाभ उठाते हुए श्री अरविन्द ने 'राष्ट्रीय शिक्षा' की संकल्पना का विकास किया तथा अपने शिक्षा-दर्शन की आधारशिला रखी। यही कॉलेज आगे चलकर जादवपुर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ। प्रधानाचार्य का कार्य करते हुए श्री अरविन्द अपने लेखन तथा भाषणों द्वारा देशवासियों को प्रेरणा देते हुए राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेते रहे।

1908 ई0 में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने के कारण श्री अरविन्द गिरफ्तार हुए व जेल में रहे। उन पर मुकदमा चलाया गया तथा अदालत में दैवयोग से उनके मुकदमे की सुनवाई सैशन जज सी पी बीचक्राफ्ट ने की जो अरविन्द के ICS के सहपाठी रह चुके थे तथा अरविन्द की कुशाग्र बुद्धि से प्रभावित थे। अरविन्द के वकील चितरंजन दास ने जज बीचक्राफ्ट से कहा 'जब आप अरविन्द की बुद्धि से प्रभावित हैं तो यह कैसे सम्भव है कि अरविन्द किसी षडयन्त्र से भाग ले सकते हैं?' बीच क्राफ्ट ने अरविन्द को जेल से मुक्त कर दिया। जेल की अवधि में श्री अरविन्द ने आध्यात्मिक साधना की तथा उन्हें ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके पूर्व वे 1907 ई0 में जब बड़ौदा में थे तो एक प्रसिद्ध योगी विष्णु भास्कर लेले के संपर्क में आये और योग साधना में प्रवृत्त हुए। जेल से मुक्त होकर वे 4 अप्रैल 1910 को पांडिचेरी चले गये और उन्होंने अपना जीवन अनन्त सत्य की खोज में लगा दिया। सतत् साधना द्वारा उन्होंने अपनी आध्यामिक दार्शनिक विचारधारा का विकास किया।

श्री अरविन्द के दार्शन का लक्ष्य 'उदात्त सत्य का ज्ञान' है जो 'समग्र जीवन दृष्टि' द्वारा प्राप्त होता है। समग्र जीवन दृष्टि मानव के ब्रह्म में लीन या एकाकार होने पर विकसित होती है। ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण द्वारा मानव 'अति मानव' बन जाता है अर्थात् वह सत, रज व तम की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर ज्ञानी बन जाता है। अतिमानव की स्थिति में व्यक्ति सभी प्राणियों को अपना ही रूप समझता है। जब व्यक्ति शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक दृष्टि से एकाकार हो जाता है तो उसमें दैवी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है।

समग्र जीवन-दृष्टि हेतु अरविन्द ने योगाभ्यास पर अधिक बल दिया है। योग द्वारा मानसिक शान्ति एवं सन्तोष प्राप्त होता है। अरविन्द की दृष्टि में योग का अर्थ जीवन को त्यागना नहीं है बल्कि दैवी शक्ति पर विश्वास रखते हुए जीवन की समस्याओं एवं चुनौतियों का साहस से सामना करना है। अरविन्द की दृष्टि में योग कठिन आसन व प्राणायाम का अभ्यास करना भी नहीं है बल्कि ईश्वर के प्रति निष्काम भाव से आत्म समर्पण करना तथा मानसिक शिक्षा द्वारा स्वयं को दैवी स्वरूप में परिणित करना है।

अरविन्द ने मस्तिष्क की धारणा स्पष्ट करते हुए कहा है कि मस्तिष्क के विचार स्तर चित्त, मनस, बुद्धि तथा अन्तर्ज्ञान होते हैं जिनका क्रमश: विकास होता है। अन्तर्ज्ञान में व्यक्ति को अज्ञान से सन्देश प्राप्त होते हैं जो ब्रह्म ज्ञान के आरम्भ की परिचायक है। अरविन्द ने अन्तर्ज्ञान को विशेष महत्त्व दिया है। अन्तर्ज्ञान द्वारा ही मानवता प्रगति की वर्तमान दशा को पहुँची है। अत: अरविन्द का आग्रह है कि शिक्षक को अपने शिष्य की प्रतिभा का नैत्यिक-कार्य करना चाहिए। वर्तमान शिक्षा पद्धति से अरविन्द का असन्तोष इसी कारण था कि उनमें विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास का अवसर नहीं दिया जाता। शिक्षक को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास हेतु उनके प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

अरविन्द की मस्तिष्क की धारणा की परिणति 'अति मानस' की कल्पना व उसके अस्तित्व में है। अति मानस चेतना का उच्च स्तर है तथा दैवी आत्म शक्ति का रूप है। अति मानस की स्थिति तक शनै: शनै: पहुँचना ही शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। अरविन्द के अनुसार भारतीय प्रतिभा की तीन विशेषताएँ हैं आत्मज्ञान, सर्जनात्मकता तथा बुद्धिमत्ता। अरविन्द ने देशवासियों में इन्हीं प्राचीन आध्यात्मिक शक्तियों के विकास करने का सन्देश देकर भारतीय पुनर्जागरण करना चाहा है। अरविन्द के शब्दों में "भारतीय

आध्यात्मिक ज्ञान जैसी उत्कृष्ट उपलब्धि बगैर उच्च कोटि के अनुशासन के अभाव में सम्भव नहीं हो सकती जिसमें कि आत्मा व मस्तिष्क की पूर्ण शिक्षा निहित है"।

इस प्रकार श्री अरविन्द के दर्शन की चरम परिणति उनके शैक्षिक दर्शन में होती है।

प्रत्येक दार्शनिक अन्तत: एक शिक्षाविद् होता है क्योंकि शिक्षा, दर्शन का गत्यात्मक पक्ष है। जैसा कि अभी हम देख चुके हैं। अरविन्द के दर्शन की चरम परिणति उनके शिक्षा-दर्शन में हुई है। वे वर्तमान शिक्षा-पद्धति से असन्तुष्ट थे। उनका कहना था 'सूचनात्मक ज्ञान कुशाग्र बुद्धि का आधार नहीं हो सकता।'

अरविन्द की शिक्षा पद्धति की संकल्पना- अरविन्द इस प्रकार की शिक्षापद्धति चाहते थे जो विद्यार्थी के ज्ञान-क्षेत्र का विस्तार करे, जो विद्यार्थियों की स्मृति, निर्णयन शक्ति एवं सर्जनात्मक क्षमता का विकास करे तथा जिसका माध्यम मातृभाषा हो। श्री अरविन्द राष्ट्रीय विचारों के थे, अत: वे शिक्षा-पद्धति को भारतीय परम्परानुसार ढालना चाहते थे। उन्होंने शिक्षा द्वारा पुनर्जागरण का सन्देश दिया था। यह पुनर्जागरण तीन दिशाओं की ओर उन्मुख होना चाहिए-

- प्राचीन आध्यात्म-ज्ञान की पुर्नस्थापना।
- इस आध्यातम-ज्ञान की दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान व विवेचनात्मक ज्ञान में प्रयोग।
- वर्तमान समस्याओं का भारतीय आत्म-ज्ञान की दृष्टि से समाधान की खोज तथा आध्यात्म प्रधान समाज की स्थापना।

1.1.5.8 भीमराव अम्बेडकर (1891-1956)

भीमराव रामजी अम्बेडकर (14 अप्रैल 1891 – 6 दिसंबर 1956) डॉ0 बाबासाहब अम्बेडकर नाम से लोकप्रिय, भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाजसुधारक थे। उन्होंने दलित बौद्ध आन्दोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मंत्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माता थे।

अम्बेडकर विपुल प्रतिभा के छात्र थे। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स दोनों ही विश्वविद्यालयों से अर्थशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधियाँ प्राप्त की तथा विधि, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में शोध कार्य भी किये थे। व्यावसायिक जीवन के आरम्भिक भाग में ये अर्थशास्त्र के प्रोफेसर रहे एवं वकालत भी की तथा बाद का जीवन राजनीतिक गतिविधियों में अधिक बीता। तब अम्बेडकर भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार और चर्चाओं में शामिल हो गए और पत्रिकाओं को प्रकाशित करने, राजनीतिक अधिकारों की वकालत करने और दलितों के लिए सामाजिक स्वतंत्रता की वकालत और भारत के निर्माण में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

1956 में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया। 1990 में, उन्हें भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था। 14 अप्रैल को उनका जन्म दिवस अम्बेडकर जयन्ती एक त्यौहार के रूप में भारत समेत दुनिया भर में मनाया जाता है। अम्बेडकर की विरासत में लोकप्रिय संस्कृति में कई स्मारक और चित्रण शामिल हैं।

मेधा के बीज स्वरुप को सम्यक वातावरण प्रदान करता है राष्ट्र। राष्ट्र की भावी पीढ़ी को राष्ट्रीय जीवन मूल्यों व राष्ट्रीय संस्कृति के अनुरूप संस्कारित करते हुए उसे राष्ट्रीय चेतना से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण साधन का काम करती है शिक्षा। प्रत्येक राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ताना बाना उपरोक्त पावन उद्देश्य को लेकर ही बुनता है परन्तु दुर्भाग्य है इस भारत देश का जो हजारों वर्षों की परकीय दासता से स्वतंत्र होने के छः दशक बाद भी अपनी राष्ट्रीय शिक्षा नीति तय नहीं कर पाया, व्यावहारिक धरातल देने में अम्बेडकर के दिशा निर्देश को समझ नहीं पाया। राजनैतिक वितण्डावादों की झंझाओं के झकझोरों से अपने मूल्यों से हिली हुई हमारी शिक्षा नीति मैकाले और मदरसाई कुबुद्धिजीवियों के हाथ खिलौना बन भावी पीढ़ी का आत्म गौरव शून्य, आत्म विश्वास शून्य, राष्ट्र भाव शून्य और परमुखीपेक्षता के अंधगर्त में धकेलती हुई दिखाई दे रही है, ऐसी स्थिति में डॉ0 भीम राव अम्बेडकर व उनका शिक्षा दर्शन ही एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में दीख पड़ रहा है।

भीमराव अम्बेडकर को अधिकांश लोग एक महान राजनीतिज्ञ और अछूतोद्धारक मानते हैं किन्तु उन्होंने मानव जीवन और समाज की प्राण ऊर्जा के रूप में जो महत्वपूर्ण कार्य किया वह भारतीय

संविधान का सैद्धान्तिक रूपेण आधार बना, जहाँ राजनैतिक क्षेत्र ने उनकी बुद्धिमत्ता का लोहा माना वहीं वे सामाजिक परिवर्तन के पुरोधा बने और अपने इस कार्य में उन्होंने शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया। उन्होंने वर्णाश्रम का विरोध किया शिक्षा को प्रगति का मूल आधार बताया। उनके द्वारा बुद्धिवाद के व्यावहारिक धरातल पर अनुभव की झंझाओं से गुजर कर जो मार्ग बनाया वही पथ यथार्थ में शिक्षा दर्शन का आधार बना।

अम्बेडकर के शिक्षा दर्शन के मूलभूत आधार-

- शिक्षा मानवता को प्रबुद्ध करने का साधन होना चाहिए जो वर्णाश्रम व अज्ञान की दीवार का भेदन कर सके।
- शिक्षा बौद्धिक प्रवृत्ति के विकास का मार्ग तैयार करने वाली कारक बने जो श्रेष्ठ स्वधर्म स्वयं तय करने की योग्यता पैदा करे।
- शिक्षा को अन्धविश्वास, रूढ़ियों को तोड़ने का सबल आधार होना चाहिए, यह ऐसा कारक हो जिससे कम से कम अपने ही बन्धुओं के बीच मित्रता, समानता, सहयोग और सहभागिता के सम्बन्ध बन पाएँ और जाति, सम्प्रदाय, धन, जन्म स्थान आदि के बन्धन का ह्रास हो सके।
- अम्बेडकर के अनुसार शिक्षा का प्रमुख सन्देश मानव सेवा होना चाहिए इससे मानव मानव के बीच एकता और सम्यक सम्बन्धों के विकास को बल मिलना चाहिए।
- इनके अनुसार शिक्षा सड़ी गली अव्यवहारिक धारणाओं को कुचलने में इतनी समर्थ होनी चाहिए जिससे दोषयुक्त व्यवहारों में परिवर्तन हो सके।
- शिक्षा का स्वरुप भ्रामक न होकर सरल होना चाहिए। यह छल , प्रपञ्च का आधार न रखने वाली व मानवता के बीच प्रेम प्रसारित करने वाली होनी चाहिए।
- शिक्षा वह कारक बने जो मनुष्य के स्वयं की भूमिका के महत्त्व को समझाने में समर्थ हो।
- शिक्षा स्वतन्त्र बुद्धि के विकास का कारण बने व बौद्धिक प्रतिभा को निर्धन व निकृष्ट होने से बचाए।

- शिक्षा पारलौकिक मूल्य स्थापन की जगह वास्तविक समाजोपयोगी मूल्यों के सृजन व स्थापन में सहयोगी बने।
- शिक्षा मानव सिद्धान्त के रूप में प्रतिष्ठित हो व मानव व्यक्तित्व विकास में समर्थ बने।
- शिक्षा वास्तविक जीवन पर अवलम्बित हो जिससे सामाजिक,राजनैतिक ,सौन्दर्यात्मकता और नैतिकता के सही मानदण्ड विद्यार्थी में विकसित हो सकें।
- शिक्षा को नवीन चुनौती से लड़ने की योग्यता देने की क्षमता हासिल करनी चाहिए जिससे सामाजिक परिवर्तन की यात्रा सुगम हो सके।
- शिक्षा के द्वारा शिक्षार्थी में सदगुण धारण करने की शक्ति का विकास होना चाहिए इससे न्याय व समानता के सिद्धान्त को भी पोषण मिलना चाहिए।

पिछले हजारों वर्षों की दास्ता के दौरान भारत की परम्परागत शिक्षा प्रणाली ध्वस्त हो गई थी और उसके स्थान पर लॉर्ड मैकाले द्वारा परिकल्पित तथा ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा प्रारम्भ की हुई प्रणाली ही प्रयोग की जा रही थी। भारतीय समाज संकीर्णता तथा अन्य धाराओं की केंचुली से मुक्त होकर विज्ञान एवं बुद्धिमान की नवस्फूर्ति प्रेरणाओ से संयुक्त होने का प्रयास कर रहा था। ऐसे समय पर एक ऐसे आन्दोलन की आवश्यकता थी जो सनातन पंथी की सृजनशीलता और सुधारवादी की प्रगतिशीलता के बीच समन्वय एवं सामंजस्य स्थापित कर सके एवं भारतीय धर्म एवं संस्कृति को पुनर्जीवित करने में समर्थ हो।

भारत में समाज एवं शिक्षा के पुनरुत्थान में जीवन समर्पित कर देने वाले मनीषियों में मोदी जी का नाम मुख्य रूप से उभरकर सामने आता है। इन्होंने अपने दार्शनिक स्पूर्तिप्रद विचारों एवं धार्मिक मतों के आधार पर भारत वर्ष को विश्व के सर्वोच्च शिखर पर लाकर खड़ा कर दिया है।

नरेन्द्र मोदी जी का व्यक्तित्व ओजपूर्ण एवं प्रगतिशील है। उन्होंने अपने शैक्षिक विचारों में यह प्रतिपादित किया है कि आज भारत को मानवता तथा चरित्र का निर्माण करने वाली शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। उनके अनुसार मानव की कुछ शक्तियाँ पूर्व निहित होती हैं। यह शक्तियाँ ही व्यक्ति को पूर्ण मानव बनाती हैं अतः इन शक्तियों को विकसित करना ही शिक्षा है।

'मन की बात' कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में मोदी जी ने कहा, हमारे देश में सभी सरकारों ने शिक्षा पर बल दिया है और हर किसी सरकार ने अपने अपने तरीके से प्रयास भी किया है। और सच्चाई यह है कि काफी अरसे तक हम लोगों का ध्यान इसी बात पर रहा है कि शिक्षण संस्थान खड़े हो, शिक्षा व्यवस्था का विस्तार हो, स्कूल बने कॉलेज बने, शिक्षकों की भर्तियों, अधिकतम बच्चे स्कूल आए। एक प्रकार से शिक्षा को चारों तरफ फैलाने का प्रयास हों।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने शिक्षा के विस्तार से ज्यादा महत्वपूर्ण शिक्षा में सुधार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है तथा बच्चों को अच्छी योग्य शिक्षा मिलनी चाहिए और अच्छी शिक्षा पर बल देने का प्रयास किया है। नरेन्द्र मोदी जी ने कहा इसलिए मैं सभी अभिभावकों से, मां-बाप से सबसे पहले यह आग्रह करूँगा कि बच्चों के साथ स्कूल में हो रही गतिविधियों पर विस्तार पूर्वक समय देकर बात करें। नरेन्द्र मोदी ने कहा कि जितना महत्व शिक्षा का है उतना ही महत्व कौशल का है। उसी प्रकार से शिक्षा में प्रौद्योगिकी बहुत बड़ी भूमिका अदा करेगी। दूरस्थ शिक्षा प्रौद्योगिकी यह हमारी शिक्षा को सरल भी बनाएगी और यह बहुत ही निकट भविष्य में इसके परिणाम नजर आएँगे ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के शिक्षा के मूलभूत आधार-

- समुदाय स्तर पर युवाओं के लिए सर्वश्रेष्ठ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर देना महत्वपूर्ण है।
- स्कूली शिक्षा हो या फिर उच्च शिक्षा समाज के युवाओ साथियों को हर प्रकार की सहायता दी जा रही है।
- शब्द भंडार बढाएँ- छात्रों को नए नए शब्द सीखने चाहिए इससे ढेर सारे लाभ है।
- एप से भाषा सीखे- अब कई भाषाओं के मोबाइल एप आ गए है। उन एप की मदद से हिन्दी, इंग्लिश या अन्य भाषाओं पर पकड़ मजबूत बना सकते है।
- लक्ष्य है जरूरी- जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य का होना जरूरी है पहले एक लक्ष्य तय कर लें और फिर उसको हासिल करने के लिए रणनीति बनाए।

- मॉक टेस्ट- आपको ढेरों सारे ऑनलाइन मॉक टेस्ट मिल जायेगे। मॉक टेस्ट की मदद से आप आपनी तैयारी का स्तर और कमियों को पता कर सकते है।
- तकनीकी समस्या- इण्टरनेट का सही इस्तेमाल करें कई वेबसाइट और एप्स है जहाँ आप कमजोर टॉपिक को मजबूत बना सकते है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

किसी भी क्षेत्र में समस्या उत्पन्न होने पर उस समस्या पर विचार किया जाता है। जो कि बालक को जीवन की परिस्थितियों का सामना करने में समर्थ बनाने के लिए शारीरिक तथा मानसिक प्रशिक्षण देकर उसका इस प्रकार से विकास करना है कि वह वास्तव में एक अच्छा नागरिक बन सकें। हमारे देश में शिक्षा का प्रसार जितना पिछले कुछ वर्षो में हुआ उतना पहले कभी नहीं हुआ, परन्तु आज हमारी पुरानी मान्यताएँ एवं मूल वर्तमान के सन्दर्भ में अपनी सार्थकता एवं उपादेयता लगभग खो चुकी है। परिणामतः पूरा समाज एक द्वन्द की स्थिति में है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। इन परिस्थितियों के फलस्वरुप शिक्षा के क्षेत्र में दो विचारधाराएँ जन्म ले रही हैं। पहली विचारधारा के अनुसार हमारी समस्त समस्याओं का समाधान अतीत की ओर लौटने में है और दूसरी विचारधारा पश्चिमी विचारधारा है जो वैज्ञानिक तकनीकी शिक्षा को ही अहम शिक्षा मानती है।

किन्तु यह दोनों विचारधारा ही मानव की समस्याओं का समाधान करने में असफल सिद्ध हो रही है। आज मानव की सबसे बड़ी समस्या भय की समस्या है, प्रतियोगिता की समस्या है और इस समस्या का समाधान स्व ज्ञान के अन्तर्गत ही छिपा हुआ है। इसलिए आज प्रधानमंत्री मोदी का शिक्षा दर्शन हमारे आपके और सभी के जीवन का दर्शन है। प्रधानमंत्री मोदी का शिक्षा दर्शन सभी आदर्श, सिद्धान्तों एवं प्रतिबद्धताओं से दूर हटकर हमारे वास्तविक जीवन की गम्भीर समस्याओं के मूल कारणों का पता लगाने में हमारी सहायता करता है।

वर्तमान समय में शिक्षा का स्तर तो नीचा है ही, शिक्षा के लाभों से वंचित समाज का एक बड़ा वर्ग इससे दूर होते-होते काफी पीछे छूट गया है। प्रत्येक संवेदनशील प्रबुद्ध व्यक्ति का कर्तव्य यह विचार करना है कि इस वर्ग के उत्थान के लिए क्या कुछ किया जा सकता है। वर्तमान में शिक्षा एक व्यवसाय के अलावा

कुछ नहीं रह गया है। समाज का यह वर्ग जिसकी आर्थिक स्थिति अपना पेट भरने की भी नहीं है तो वह इस समय में अच्छी शिक्षा के बारे में कैसे सोच सकता है। ऐसी स्थिति से निपटने की दिशा में सार्थक प्रयास करने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं जिन्होंने अपने अथक एवं सफल प्रयासों से देश के विभिन्न राज्यों में शैक्षिक एवं सामाजिक सुधारों द्वारा समाज को एक नई दिशा देने का सफल प्रयास किया। इस समय में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रति चारों और असन्तोष की भावना है। समाज की सामान्य धारणा यह भी है कि वर्तमान शिक्षा द्वारा तैयार की जा रही जनशक्ति समाज के अनुकूल नहीं है तथा विद्यालय में सीखे गए ज्ञान का वास्तविक जीवन से कोई ताल-मेल नहीं है। सबको अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप विकास के समान अवसर उपलब्ध नहीं है। हमारी शिक्षा नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से सर्वथा विहीन हो गई है। छात्रों में असन्तोष, कुंठा, निराशा, मर्यादाहीनता व आतंकवाद जैसी प्रवृत्तियों के विकास से देश की दशा एवं दिशा चिंतनीय है। शिक्षा से समाज की अपेक्षाएँ अधूरी और निराशाजनक है।

भारत में वर्तमान शिक्षा व्यवस्था अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। छात्रों में अनुशासनहीनता, अध्यापकों में अपने उत्तरदायित्व के प्रति गैर गम्भीरता, आगे चलकर बेरोजगारी और ऐसी अनेक समस्याएँ भारतीय शिक्षा जगत में व्याप्त होंगी। इनके कारणों का गहनता से अध्ययन करने पर प्रतीत होता है कि इन समस्याओं के मूल में प्रारम्भिक शिक्षा की उपेक्षा, नींव की कमजोरी, अयोग्य अध्यापकों की नियुक्ति, ध्येयहीनता तथा विद्यार्थियों में नित्य प्रतिदिन के अध्ययन कार्य की अवहेलना जैसे कई कारण है।

छात्रों की अनुशासनहीनता और उसके कारण बढ़ी अयोग्यता तथा अकर्मण्यता का कारण खोजने पर यही विदित होता है कि आज के विद्यार्थी में शिक्षक तथा शिक्षा के प्रति घोर अश्रद्धा पैदा हो गई है। इसका बहुत कुछ दोष विगत पराधीनता की दी हुई प्रवृत्तियों को तो दिया ही जा सकता है किन्तु वर्तमान की बहुत सी परिस्थितियाँ भी कम जिम्मेदार नहीं है।

आज शिक्षा एक व्यवसाय का रूप ले चुकी है। शिक्षण संस्थाएँ देश एवं छात्रों की कल्याण भावना से खड़ी नहीं की जा रही है, उनके पीछे कुछ स्वार्थमय मंतव्य रहा है। इसलिए संस्थापकों तथा संचालकों का ध्यान छात्रों की हित, उनकी पढ़ाई तथा योग्यता की ओर नहीं दिया जाता उनका ध्यान केवल अपने स्वार्थ तथा हितों को दिया जाता है। वर्तमान समय में शिक्षक भी अपने आपको छात्रों का गुरु अथवा शिक्षक

अभिभावक न समझ कर संस्था का नौकर समझते हैं। उन्हें जितनी चिन्ता संस्था के अधिकारियों को प्रसन्न रखने की रहती है उतनी चिन्ता छात्रों के विकास की नहीं रहती है। शिक्षकों में उत्तरदायित्व तथा गुरुता का यह अभाव विद्यार्थियों में व्याप्त अनुशासनहीनता, अयोग्यता तथा अकर्मण्यता का एक बड़ा कारण है।

आज अधिकांश लोगों में निराशा, कुंठा, असन्तोष, असुरक्षा की भावना उत्पन्न हो गई है। यह शिक्षा में नैतिक मूल्यों की व्यक्तित्व को परिष्कृत करने वाले तत्वों की अनिवार्यता को शुद्ध करता है। वास्तव में नैतिक मूल्य एवं शिक्षा अपने स्वाभाविक स्वरूप में एक दूसरे से गूथे हुए हैं। इनमें से एक को अलग कर देने से उसका स्वरूप स्वाभाविक ना रहकर विकृत हो जाता है। नैतिक मूल्यों के अभाव में शिक्षा में विकृति आना स्वाभाविक है। आज छात्रों में व्याप्त हो रही चरित्रहीनता, अनुशासनहीनता, मर्यादाओं का आभाव इसी विकृति को दर्शाता है। आज की शिक्षा के सम्बन्ध में सभी की यह धारणा है शिक्षा सार्थक नहीं है। इसमें परिवर्तन की आवश्यकता है। परन्तु इस सम्बन्ध में मूल प्रश्न उठते हैं कि शिक्षा में क्या और कैसे परिवर्तन किया जाए। वास्तव में शिक्षा के सम्बन्ध में बड़े महत्वपूर्ण प्रश्न है। शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो राष्ट्र, समाज और व्यक्तित्व के विकास में योगदान दे सके और ऐसे नागरिक तैयार करें जो समाज में स्थान ले सकें। इस दृष्टि से शिक्षा का स्वरूप अधिक व्यापक है।

आज समाज को एक नई दिशा-धारा की आवश्यकता है और वह दिशा-धारा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचारों में निहित है। इसीलिए शोधकर्ता ने अपने शोध का विषय **"माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन"** को रखा है जो इस देश को नई दिशा देकर पुनः भू-भाग को शान्ति एवं सादगी से भरकर स्वर्गमयी बनाने में समर्थ होगा। भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा विभागों में हुए शोधकार्य को देखने से विदित होता है कि अधिकांश शोधार्थियों द्वारा प्रयोगात्मक अनुसंधान के प्रति कम ही रुचि दिखाई गई है। दार्शनिक क्षेत्र में महर्षि अरविन्द, महात्मा गाँधी, डॉ राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानन्द, आचार्य विनोवा भावे, रविन्द्र नाथ टैगोर, पण्डित मदन मोहन मालवीय आदि पर शोधकार्य अवश्य हुए है परन्तु अभी और शोधकार्य की आवश्यकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हमारे सम्मुख मात्र एक दार्शनिक अथवा विचारक के रूप में ही आते अपितु उन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व द्वारा एक विशिष्ट प्रकार के शिक्षा दर्शन को प्रस्तुत करने का गुरुत्तर कार्य

भी किया है। उनका शिक्षा-दर्शन आज के युग में भारत के लिए ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व के लिए भी सार्थक होगा। ऐसा शोधकर्ता का विश्वास है इसलिए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन को शोध कार्य के लिए चुना है।

1.3 समस्या कथन

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन के माध्यम से शोधकर्ता ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों को जानना चाहा है इसलिए शोध समस्या को निम्नलिखित रूप में रखा है– "**माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन।**"

1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

दर्शन और शिक्षा का बहुत नजदीकी रिश्ता है। दर्शन मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करता है तथा जीवन के उद्देश्यों का निर्धारण करता है। इन लक्ष्यों को पाना ही मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य होता है। शिक्षा इन लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक है। शिक्षा द्वारा ज्ञान तथा कौशल का विकास होता है। शिक्षा हमेशा से ही दर्शन से प्रभावित रही है। शिक्षा के पाठ्यक्रम, पाठन विधि, इसके उद्देश्यों को निश्चित करने में दार्शनिक विचारधाराओं तथा मान्यताओं का ही हाथ रहा है। दर्शन शिक्षा के सभी अंगों को प्रभावित करता है। जब-जब दार्शनिक विचारों में परिवर्तन हुआ है तब तब शिक्षा के विभिन्न अंगों में भी परिवर्तन हुआ है दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। दर्शन जीवन का विचार करता है तो शिक्षा उसका क्रियात्मक पहलू है, कहने का तात्पर्य है कि दर्शन विचार को जन्म देता है तो उसे उस विचार को व्यावहारिक रूप प्रदान करती है। दर्शन और शिक्षा की इसी घनिष्ठता के कारण ही महान शिक्षाशास्त्री, महान दार्शनिक हुए हैं।

प्लूटो, सुकरात, लॉक, कमीनियस, डीवी, गाँधी, टैगोर तथा अरविन्द घोष आदि महान दार्शनिकों के उदाहरण इस बात की पुष्टि करते हैं। इन सभी दार्शनिकों ने अपने दर्शन को क्रियात्मक अथवा व्यवहारिक रूप देने के लिए अन्त में शिक्षा का सहारा लिया है।

जेंटाइल ने कहा है कि दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा सही मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकती। दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा का उद्देश्य कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है। किसी भी देश की संस्कृति में परिवर्तन उस देश के सामाजिक परिवर्तन से प्रभावित होती है। बदलती सामाजिक परिस्थितियों व वातावरण का प्रभाव

सांस्कृतिक मूल्यों व परम्पराओं पर भी पड़ता है जिसके कारण पुरानी परम्पराओं के स्थान पर नई परम्पराओं को स्थान दिया जाता है। पुरानी एवं नवीन परम्पराओं में परस्पर विरोध के कारण शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में भी कभी-कभी सन्देह भी पैदा हो जाता है। इन सन्देहों का निवारण दर्शन ही करा सकता है।

आज विद्यालयों व अनौपचारिक साधनों के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा रही है फिर भी वांछित परिणाम नहीं निकल रहे हैं। इसके लिए आवश्यक है कि बालकों को शिक्षा के प्रति जागरूक बनाएँ तथा शिक्षा के उद्देश्यों की उपयोगिता के आधार पर निर्धारण करके बालकों को उनकी ओर उन्मुख करें व प्रेरित करें। इन सबके लिए शिक्षा दर्शन महत्वपूर्ण कार्य करती है। क्योंकि दर्शन जीवन के उस वास्तविक लक्ष्य को निर्धारित करती है जिससे शिक्षा को प्राप्त करना है शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसको उचित रूप से संचालित करने के लिए उचित मार्गदर्शन की परम आवश्यकता है। दर्शन जीवन के वास्तविक लक्ष्य को निर्धारित करता है। क्योंकि दर्शन जीवन के वास्तविक लक्ष्य को बनाता है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे और विद्वान हो या गूढ, सभी अपना जीवन दर्शन रखते है और उसी जीवन के लिए शिक्षा की आवश्यकता है तो स्वाभाविक है कि शिक्षा के लिए दर्शन की आवश्यकता है। उस जीवन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दर्शन का उचित मार्गदर्शन कराता है बिना दर्शन की शिक्षा की कोई योजना सफल नहीं हो सकती है। दर्शन हमारी भावनाओं तथा मनोदशाओं को प्रतिबिम्बित करता है और वे भावनाएँ हमारे कार्यों को नियंत्रित करती है। शिक्षा का एक प्रमुख कार्य स्वास्थ्य मनोवृतिओं का निर्माण करना है अतः दर्शन से शिक्षा को प्रेरणा ग्रहण करनी पड़ती है।

दर्शन जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है तथा विचार विश्लेषण करके सिद्धान्तों का निर्माण करता है। शिक्षा इन सिद्धान्तों को व्यवहार अथवा प्रयोग में लाती है कहने का आशय है कि शिक्षा सैद्धांतिकता को व्यवहारिकता में बदलती है। इस प्रकार दर्शन जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है, तो शिक्षा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है। हरबार्ट का भी यही मत है "कि जब तक समस्त दार्शनिक समस्याओं को व्यवहारिक रूप नहीं दिया जाएगा तब तक शिक्षा को चैन नहीं आयेगा।" इस प्रकार दर्शन के लिए शिक्षा आवश्यक है और शिक्षा के लिए दर्शन।

चाहे पाश्चात्य दर्शन हो या भारतीय दर्शन। सभी दर्शनों में शिक्षा पर विचार किया गया है। दर्शन एवं दर्शनिकों की शैक्षिक विचारधाराओं आदि पर भारत में कई शोध एवं विश्लेषणात्मक चिन्तन हुए हैं।

जिनमें दुबे, ऊषा (2009), ने “रामचरित मानस के अन्तर्निहित शैक्षिक विचारधारा एवं मूल्य”, जैन, धीरज (2009), ने “विश्व समस्याओं के सन्दर्भ में जैन सिद्धांत”, खोसला, डी एन (1983), ने “सिख गुरु के शिक्षा दर्शन”, महेश्वरी, ज्योति और श्रीवास्तव, नलिनी (2008), ने “अरविन्द के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण”, जमाल, रशीद (2009), ने “विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन”, विश्नोई, नीलम (2008), ने “महात्मा गाँधी का शैक्षिक चिन्तन”, शर्मा, चंद्रकांता (2008), ने “रविन्द्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन”, कोठारी, दौलत सिंह (2007), ने “दौलत सिंह कोठारी का शिक्षा दर्शन”, सिंह, राजेश्वर (2005), ने “स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा दर्शन”, पाठक, आर पी (2006), ने “पतंजलि योगदर्शन में शिक्षा का स्वरूप”, जैन, सपना (2013), ने “आचार्य विद्यासागर के शैक्षिक विचार” आदि शीर्षकों पर अध्ययन कार्य हुआ है।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि किसी दार्शनिक व्यक्तित्व के विचारों धर्म या संप्रदाय के शैक्षिक विचारों तथा दर्शन पर कई शोध कार्य हुए है इनके साहित्य में शिक्षा कि प्रासंगिकता बताई गई है। जिनके विभिन्न आयामों में शिक्षा भी एक है इसकी भी व्याख्या कि गई है। जिसका अध्ययन करना भी प्रासंगिक है। इस दौरान निरन्तर जीवन दर्शन एवं शिक्षा दर्शन पर आधारित साहित्य का सृजन पाली, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में किया गया है। इन साहित्यों में शैक्षिक विचार क्या निहित है? साहित्य में निहित शैक्षिक तत्वों के प्रति अध्यापकों के क्या विचार है? बदलते हुए सामाजिक, आर्थिक परिदृश्य में जीवन के मूल्य एवं शिक्षा कि संकल्पनाए भी परिवर्तनशील रहती है। शैक्षिक और सामाजिक विकास को दिशा दी जा सकती है। ये सब दार्शनिक, शोधकर्ता तथा शिक्षाविद के साथ-साथ नीति निर्धारकों के लिए महत्वपूर्ण है।

इन सन्दर्भों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन का विषय निर्धारित किया है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्य एक पूर्व दर्शित लक्ष्य है जो किसी क्रिया को संचालित करता है अथवा व्यवहार को प्रेरित करता है। यदि लक्ष्य निश्चित तथा स्पष्ट होता है तो व्यक्ति उसे उत्साह पूर्वक प्राप्त करने में लग जाता है और तब तक लगा रहता है जब तक लक्ष्य प्राप्त ना कर ले। उसका उत्साह एवं लगन लक्ष्य की प्राप्ति कराता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने को ही उद्देश्य की प्राप्ति कहते हैं। मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष तथा दैनिक जीवन की प्रत्येक क्रिया को सफल बनाने के लिए उद्देश्य का विशेष महत्व होता है। बिना उद्देश्य के

जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकते क्योंकि उद्देश्य के बिना शिक्षक उस नाविक की भाँति है जिसे अपने लक्ष्य का ज्ञान नहीं है तथा उसके विद्यार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान है जो समुद्र की लहरों के थपेड़े खाती तट की ओर बढ़ती जा रही है। इसके विपरीत उद्देश्यों के सामने होने पर मनुष्य में कार्य करने की अपार शक्ति का विकास होता है।

इसी सन्दर्भ में यदि शोध कार्य की बात करें तो पाते हैं कि एक शोध कार्य किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु किया जाता है। शोध कार्य के उद्देश्य निर्धारित करते हैं कि शोध कार्य में क्या-क्या किया जाना है क्योंकि इनकी भूमिका अनुसंधान कार्य में अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। सही तथा उपयुक्त उद्देश्य अनुसंधान कार्य को उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं। प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं ने अग्र लिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है।

मुख्य उद्देश्य– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

सहायक उद्देश्य– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों का निम्न के सन्दर्भ में अध्ययन करना–

- शिक्षा की संकल्पना
- शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा का पाठ्यक्रम
- शिक्षण विधियाँ
- विद्यार्थी सम्बन्धी अवधारणा
- शिक्षक का प्रत्यय
- विद्यालय सम्बन्धित
- गुरु शिष्य सम्बन्ध
- अनुशासन की संकल्पना
- स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचार

- पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी विचार

1.6 शोध विधि

किसी भी अनुसंधान को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए आवश्यक है कि समस्या की प्रकृति के अनुरूप विधि का प्रयोग किया जाए। शोधकर्ता द्वारा किए जाने वाले शोध कार्य में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है। जिसमें शिक्षा की अवधारणा, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, अनुशासन, शिक्षण विधियाँ यह सभी दर्शन द्वारा निर्धारित होते हैं। किसी बिंदु पर किए जाने वाले शोध की विधि उसकी समस्या अथवा तथ्यों पर निर्भर करती है। शोध की प्रकृति दार्शनिक होने के कारण शोधकर्ता ने शोध हेतु दार्शनिक विधि का चयन किया है। शोधकर्ता ने अपने शोध की प्रकृति से सम्बन्धित अन्य शोध प्रमाण का अध्ययन किया। जिन्होंने दार्शनिक विधि को अपनाया जिसके अन्तर्गत प्रेमजी झवेरी चावड़ा (1991) ने दौलाराम मनकड़े की शैक्षिक विचारों का अध्ययन एवं भागवंती (1988) ने डॉ राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन तथा उनका सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव तथा सपना जैन (2013) ने आचार्य विद्यासागर के शैक्षिक विचार आदि थे। अतः शोधकर्ता ने भी अपने पूर्वानुमान को सिद्ध करने के लिए दार्शनिक शोध विधि को अपनाया है।

1.6.1 दार्शनिक शोध विधि

दार्शनिक शोध विधि वह विधि है जिसमें नवीन सत्य का प्रतिपादन किया जाता है। दार्शनिक विधि में अनुभवों का अध्ययन बौद्धिक स्तर पर ही किया जाता है। जिससे सत्य के नियमों तथा अस्तित्व के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जा सके। दार्शनिक शोध विधि के अन्तर्गत शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में मुख्य रूप से दो प्रकार से अध्ययन किया जाता है।

- **विचार प्रणाली का विवेचन**– इसके अन्तर्गत किसी विशिष्ट दार्शनिक प्रणाली के विशिष्ट पक्षों का विवेचन किया जाता है। इस प्रणाली में ज्ञान मीमांसा तत्व मीमांसा वाह मूल्य मीमांसा तथा नीति शास्त्र क्या है? को जाना जाता है साथ ही इसके अन्तर्गत किसी विशेष युग की उपलब्धियों तथा उनके साहित्य का अध्ययन किया जाता है।

- **किसी महान विचारक के दर्शन का आलोचनात्मक विवेचन**– इसके अन्तर्गत दार्शनिक शोध कार्य प्रचुर मात्रा में किया जाता है। इसमें किसी महान दार्शनिक के विचारों उनके साहित्य जीवन का आलोचनात्मक अध्ययन किया जाता है। जिसमें प्रमुख रूप से उनकी ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा का विवेचन होता है तथा शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम शिक्षण विधि अनुशासन तथा शैक्षिक प्रसारण का निर्धारण किया जाता है।

1.6.2 शोध क्षेत्र

शोधकर्ता ने अपने द्वारा किए जाने वाले शोध कार्य को उद्देश्यों के आधार पर सीमित किया है। जिसमें शोधकर्ता द्वारा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों के अध्ययन के लिए उनकी रचनाओं का, विभिन्न अवसरों पर दिए जाने वाले भाषणों व चर्चा में शैक्षिक तत्वों का संकलन तथा उनके व्यक्तित्व कृतित्व सृजन कृतियों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि तक अपने शोध कार्य को परिसीमित किया है।

1.6.3 तार्किक विश्लेषण

शोधकर्ता द्वारा किए जाने वाले शोध में विषय वस्तु का तार्किक विश्लेषण किया गया है। क्योंकि विषय वस्तु के तार्किक विश्लेषण के पश्चात माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता एवं उपादेयता के बारे में ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी शोध में साधन, शक्ति और समय सीमित होने के कारण समस्या के सभी पक्षों का गहन अध्ययन करना कठिन होता है। इसीलिए सम्बन्धित विषय वस्तु का परिसीमन करना आवश्यक हो जाता है। परिसीमन से पर शोध समस्या को सीमा में रखकर देखने से है। प्रधानमंत्री जी साहित्यिक यात्रा बिन्दु से सिंधु की ओर रही है। जिसमें विभिन्न पक्ष समाहित है। अतः शोधकर्ता ने उनके प्रसिद्ध लघु वृहद पुस्तकों में से तथा विद्वानों से विचार-विमर्श करके निम्न पुस्तकों का अध्ययन हेतु सम्मिलित किया– सेतुबंध, कर्मयोग, आपातकाल में गुजरात, एक भारत श्रेष्ठ भारत, ज्योति पुंज, सामाजिक समरसता, कुशल सारथी नरेन्द्र मोदी, दूरदृष्टा नरेन्द्र मोदी, नरेन्द्र मोदी– एक आश्वास नेतृत्व, नरेन्द्र मोदी- एक

झंझावात, नरेन्द्र मोदी का राजनैतिक सफर, स्पीकिंग द मोदी वे, नरेन्द्र मोदी : एका कर्मयोग्याची संघर्षगाथा, एक्जाम वॉरियर्स,भाषणों एवं साथ ही प्रधानमंत्री जी ने समय-समय पर विभिन्न चर्चा के दौरान अपने जो शैक्षिक विचार प्रकट किए उनकी ऑडियो वीडियो कैसेट सीडी टीवी आदि को शोध का विषय बनाया गया। शोधकर्ता ने साहित्य की जानकारी रखने वाले विद्वानों से चर्चा की जिससे ज्ञात हुआ कि इन पुस्तकों में शैक्षिक तत्वों का समावेश है।

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

आधुनिक युग में शिक्षा तथा दर्शन, जीवन और समाज से पूर्ण रूप से सम्बन्धित है। समाज की राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और नैतिक सभी बातों का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। अतएव मनुष्य इस प्रकार की संस्थाओं, आदर्शों एवं दृष्टिकोण का निर्माण करता है जो समाज के संचालन में और प्रगति में सहायक हो। इस कार्य में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा दर्शन इस सम्बन्ध में मानव का पथ प्रदर्शन करता है। शिक्षा दर्शन उन आदर्शों और मूल्यों को प्रस्तुत करता है जिनका अनुसरण करके व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के निर्माण को ऊंचा उठा सकता है।

हमारे देश में अनेक वर्षों तक विदेशी शासन होने के कारण दो प्रकार की संस्कृतियों ने जन्म लिया है, जिनके कारण हम दो पाटो के बीच फंस गए हैं। इस समय हम ऐसी स्थिति में खड़े हैं कि हमें भविष्य का मार्ग नहीं सूझ रहा है। भारत लंबी दास्तां से उभरा है, विदेशी संस्कृति ने यहाँ की सामाजिक स्थिति को विषाक्त कर दिया है। व्यक्ति भोग विलास वाली संस्कृति की ओर भाग रहा है। शिक्षा दर्शन ही ऐसे समय में यह बतलाता है कि वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक हमारे लिए एक सीमा तक लाभदायक हो सकती हैं, यदि वे साध्य न होकर मात्र साधन हो। आज शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना माना जाता है। इसकी प्राप्ति हेतु शिक्षा दर्शन ही मार्ग प्रशस्त करता है।

जेंटाइल ने कहा है कि शिक्षा, दर्शन की सहायता के बिना सही मार्ग पर अग्रसर नहीं हो सकती है। इसी प्रकार फिकटे का कहना है कि शिक्षा, दर्शन की सहायता के बिना पूर्णता एवं स्पष्टता प्राप्त नहीं कर सकते है।

जेंटाइल और फिकटे उपर्युक्त कथनों से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा प्राप्त करने वाले तथा शिक्षा प्रदान करने वाले व्यक्तियों के लिए शिक्षा दर्शन की कितनी अधिक आवश्यक है। वास्तविकता यह है कि दार्शनिक विचारधाराओं को समझे बिना शैक्षिक विचारों को समझना अंधकार में मार्ग में चलने के समान है। यदि हम बालकों को लाभप्रद तथा उचित ढंग से शिक्षा देना चाहते हैं तो हमें शिक्षा सम्बन्धी विचारों में स्पष्टता लानी होगी और यह स्पष्टता दार्शनिक आधार के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। बिना ठोस दार्शनिक आधार के शिक्षा व्यवस्था या शिक्षा का ढांचा निर्मित नहीं किया जा सकता।

आज शिक्षा में सैद्धांतिक पक्ष की अपेक्षा व्यवहारिक पक्ष पर अधिक बल दिया जा रहा है। परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई क्रिया किन्ही सिद्धान्तों के आधार पर ही की जाती है। यदि सिद्धांत न हो तो कार्य भी नही होगा। फलत: शिक्षा के महत्व के साथ ही शिक्षा के दर्शन के महत्त्व का बढ़ना भी स्वाभाविक है। जैसे-जैसे शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जाती है, वैसे-वैसे दर्शन की आवश्यकता बढ़ती जाती है, क्योंकि शिक्षा की व्यवस्था की व्यवहारिक पक्ष में प्रेरणा स्रोत शिक्षा दर्शन ही है।

आज शिक्षा के अर्थ में व्यापक परिवर्तन हुआ है। अब विद्यार्थी जीवन में विद्यालय की पाठ्य पुस्तकों का चारदीवारी में सीमित रहकर अध्ययन करना या विषय का ज्ञान अर्जन करना ही शिक्षा नहीं माना जाता है, बरन शिक्षा को जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया तथा जीवन के समस्त अनुभवों के योग के रूप में स्वीकार किया जाता है। शिक्षा की अवधारणा के फलस्वरूप भी शिक्षा दर्शन के अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गई है। शिक्षा दर्शन से इस बात का ज्ञान होता है कि शिक्षा का वास्तविक स्वरूप क्या हो? विभिन्न युगों में शिक्षा का रूप क्या था? और किस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन हुए है? आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था किस प्रकार की गई है? इस व्यवस्था में किन-किन विद्वानों ने योगदान दिया है, आदि विषयों पर शिक्षा दर्शन में विचार किया जाता है।

प्रत्येक शिक्षक की यह कामना होती है कि वह अपने कार में सफलता प्राप्त करें। कार्य में सफलता, कार्य के स्वरूप पर निर्भर रहती है। शिक्षक अपने कार्य में तभी सफल हो सकता है जब वह शिक्षण के स्वरूप ठीक से पहचाने। शिक्षण का स्वरूप शिक्षा दर्शन निश्चित करता है, अतः शिक्षक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह शिक्षा दर्शन से परिचय प्राप्त करें।

साधारणत: प्रत्येक शिक्षक किसी विषय का अध्यापन करता है और उस विशिष्ट विषय के व्याख्याता, प्रवक्ता, प्राध्यापक, अध्यापक आदि कहने में वह गर्व का अनुभव करता है। गर्व की अपेक्षा यह चिन्ता का विषय है। अध्यापक को जीवन का शिक्षक होना चाहिए, न कि किसी विषय का। किसी विषय का पण्डित यदि जीवन की समस्याओं से अपरिचित है तो वह विषय का सच्चा ज्ञाता भी नहीं हो सकता, शिक्षा को दूर की बात है।

शिक्षक का शिक्षात्व इसी में है कि वह बालक के सम्पूर्ण जीवन के रहस्यों से परिचित हो और जीवन के सन्दर्भ में अपने विषय को सम्पूर्ण ज्ञान की एक शाखा के रूप में पढ़ाएँ। तभी वह सफल शिक्षक हो सकता है अन्यथा नहीं। जीवन के रहस्यों से यह अनुभव की एकता से परिचय शिक्षा दर्शन के अध्ययन से प्राप्त होता है। इसीलिए तो हरबर्ट स्पेंसर ने कहा है कि- सच्चा दार्शनिक एक अच्छा शिक्षक भी होता है। एक अच्छा शिक्षक अपनी शिक्षण विधि में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करता रहता है। कोई भी पद्धति प्रत्येक परिस्थिति में उपयुक्त नहीं हो सकती है। यदि ऐसा होता है तो विभिन्न शिक्षण विधियों का निर्माण न होता। शिक्षण विधियों में परिवर्तन लाने में दर्शन बड़ा सहायक होता है। उद्देश्य के अनुसार विधि में परिवर्तन हो जाता है। शिक्षा पद्धति में अभीष्ट परिवर्तन करने में समर्थ हो जाता है। किसी एक शिक्षण पद्धति का अंध भक्त बनना ठीक नहीं है। बहुत से शिक्षक शिक्षा समस्याओं से अनभिज्ञ रहते हैं। वे सोचते है- जैसा चल रहा है, वैसा ही ठीक है। परन्तु शिक्षा में समय के प्रवाह के साथ-साथ कुछ दोष आ जाते हैं। प्रत्येक प्रक्रिया में गुण दोष रहते हैं। शिक्षा पर देश और काल का प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी शिक्षक में परम्परागत प्रणाली की ही बहुत दिनों तक चलती रहती है। इससे अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। शिक्षक को वर्तमान शिक्षा के गुणों दोषों से परिचित होना भी आवश्यक है। गुण दोष का विवेचन करना, शिक्षा दर्शन का कार्य है, अत: शिक्षक के लिए इसका ज्ञान आवश्यक है।

शिक्षा में जब दोष आ जाते हैं तो शिक्षा सुधार की बात चल पड़ती है। शिक्षा में सुधार करना समय-समय पर आवश्यक हो जाता है। आजकल भी शिक्षा सुधार की प्राय: चर्चा चलती रहती है। भारत में तो शिक्षा सुधार का नारा जोरो से लगाया जा रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अनेक आयोग बैठे और अनेक समितियाँ नियुक्त हुई किन्तु सुधार के नाम पर काम बहुत कम हो पाया है। आज भी शिक्षा के स्तर में कोई

सुधार नहीं हुआ है। शैक्षिक परिणामों से पहले से कमी हुयी है। अभी तक हम किसी राष्ट्रीय शिक्षा का विकास नहीं कर सकते हैं। इस अभाव की पूर्ति के लिए डॉ0 कोठारी की अध्यक्षता में भारत सरकार ने एक शिक्षा आयोग की नियुक्ति की जिसने शैक्षिक समस्याओं पर विस्तार से विचार किया है। किन्तु शिक्षा सुधार की कोई भी योजना अब तक सफल नहीं हो सकी, जब तक कि शिक्षक का दृष्टिकोण न बदले। शिक्षक शिक्षा सुधार की धुरी है। शिक्षक का दृष्टिकोण शिक्षा दर्शन से बनता है, अत: उसे शिक्षा दर्शन का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

शिक्षा-दर्शन के ज्ञान के अभाव में शिक्षक साध्य और साधन का भेद नहीं समझ पाता है और कभी-कभी तो वह इन दोनों में उलट फेर कर देता है। ऐसी स्थिति से सदा बचना चाहिए। शिक्षा दर्शन सामान्यत: ज्ञान के विभिन्न विषयों में एवं विशेषत: शिक्षा की विभिन्न शाखाओं में समन्वय स्थापित करता है। यदि इस समन्वय की ओर ध्यान न दिया जाए तो शिक्षक कार्य प्रभावहीन हो जाता है। इसलिए रश्क महोदय ने कहा- जो शिक्षक दर्शन की उपेक्षा करते हैं, उन्हें अपने कार्य को प्रभावहीन बना डालने के रूप में इस उपेक्षा का दण्ड भुगतना पड़ता है।

आज के परिवर्तन युग में शिक्षा का प्रभावित होना स्वभाविक है। शिक्षा दर्शन भी इस परिवर्तन से प्रभावित होता है। पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान अब अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण स्थान पाने लगे हैं। संकुचित व्यवसायिक शिक्षा के स्थान पर साधारण सांस्कृतिक शिक्षण पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। प्रौढ़ शिक्षा को महत्ता दी जाने लगी है तथा बालिकाओं की शिक्षा को उनके स्वभाव व जीवन में उत्तरदायित्व के अनुकूल बनाने की माँग की जा रही है। गणतंत्रात्मक समाज के विचारों के अनुरूप सिद्धान्तों के निरूपण व प्रसार पर बल दिया जा रहा है। इन सबके लिए आज तक व्यवहारिक शिक्षा दर्शन की उपादेयता बढ़ती जा रही है। अतः आज दर्शन, समाज और शिक्षा एक दूसरे से अनन्यरूपेण सम्बन्धित हो गए हैं। समाज, शिक्षा दर्शन को अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रभावित करता है और शिक्षा दर्शन सामाजिक जीवन को दिशा प्रदान करता है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण



अध्याय : द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं महत्व

किसी भी शोध के लिए सम्बन्धित साहित्य एक नींव के समान है। जिसके आधार पर भावी अध्ययन रूपी भवन का निर्माण किया जाता है। जिस प्रकार गहरी व मजबूत नींव पर खड़ा भवन कभी भी डगमगा नहीं सकता, चाहे उसे कितनी ऊंचाई दे दी जाए, ठीक उसी प्रकार सम्बन्धित साहित्य के गहन अध्ययन के आधार पर किया गया शोध कार्य उच्चस्तरीय होता है। सम्बन्धित साहित्य शोधकर्ता के ज्ञान में बढ़ोतरी करता है । इसके अलावा सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन द्वारा शोधकर्ता को यह ज्ञात हो जाता है कि सम्बन्धित क्षेत्र में अब तक कितने शोध हो चुके हैं तथा उसके द्वारा किया जा रहा अध्ययन पुनरावृत्ति तो नहीं है। साहित्य पुनरावलोकन के सन्दर्भ में थॉमस एडिसन का कथन है कि जब मैं कुछ चीजों का अन्वेषण करना चाहता हूँ तो मैं भूतकाल में सम्पादित किए गए सभी कार्यों का रसास्वादन करता हूँ।

किसी भी शोध कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व यह ज्ञात होना अतिआवश्यक है कि उस क्षेत्र में कितना, कहाँ, कब एवं किस प्रकार का क्या-क्या शोधकार्य हो चुके है। क्योंकि अनुसंधान के विषय से सम्बन्धित प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य का गहनता से अध्ययन करना होता है। विषय अथवा समस्या से सम्बन्धित सन्दर्भ साहित्य, शोध पत्र-पत्रिकाएँ, लेखों, पुस्तकों आदि का अध्ययन करना होता है। ऐसा करने से विषय की समस्या से सम्बन्धित जो भी अध्ययन हुए हैं, उसकी जानकारी मिल जाती है तथा आगे किस समस्या पर अनुसंधान किया जा सकता है, इसका भी पता चल जाता है। अतः एक अनुसंधानकर्ता के लिए यह आवश्यक हो जाता है, कि वह अपने क्षेत्र या विषय से सम्बन्धित साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करें। कभी-कभी विवरण पढ़कर उसके प्रति हम उत्सुक हो उठते हैं, कि पठित विवरण सही है, अथवा नहीं। ऐसी स्थिति में उन पर पुनः शोध किया जा सकता है। इस स्थिति में प्रकाशित अनुसंधान की प्रक्रिया की ज्यों-

की-त्यों पुनरावृति की जा सकती है। कभी-कभी पूर्व प्रकाशित अनुसंधान की विधि अथवा प्रदत्त संग्रह की प्रक्रिया दोषयुक्त प्रतीत होती है अथवा चरों का प्रभावशाली नियमन नहीं किया होता। इन सारी स्थितियों में अनुसंधानकर्ता पुनः उसी समस्या पर अध्ययन कर सकता है। ऐसे पूर्व प्रकाशित शोध यद्यपि समस्या के सरलतम स्रोत होते हैं किन्तु परिणामों की वैधता, मापन विधि अथवा प्रदत्त संग्रह प्रक्रिया में संदेह होने पर इनसे सम्बन्धित नवीन समस्या की उत्पत्ति की जा सकती है। अतः लघुशोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन का कार्य बहुत महत्वपूर्ण होता है। अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान कार्य को सही दिशा नहीं प्रदान कर सकता जब तक उसे यह पता नहीं हो, कि इस विषय पर या किस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? इसके निष्कर्ष क्या है? एवं किस विधि से कार्य किया गया है? तब तक उसके अनुसंधान कार्य को सही मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हो सकता।

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन के दो पक्ष होते हैं। प्रथम पक्ष के अन्तर्गत समस्या के क्षेत्र में प्रकाशित सामग्री को पहचानना तथा जिस भाग से हम पूरी तरह अवगत नहीं हैं, उसको पढ़ना आता है। इसके अन्तर्गत हम उन विचारों तथा परिणामों का विकास करते हैं, जिसके आधार पर हमारा अध्ययन किया जाएगा। द्वितीय पक्ष में शोध अभिलेख के भाग में इन विचारों को लिखना निहित है। यह भाग शोधकर्ता और पढ़ने वाले व्यक्तियों के लिए लाभकारी है जो शोधकर्ता के लिए उस क्षेत्र की भूमिका स्थापित करता है, और पढ़ने वालों के लिए आवश्यक शोधों का सारांश प्रस्तुत करता है।

अतः स्पष्ट है कि सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान प्रक्रिया का प्राथमिक आधार है तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। इस दृष्टि से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन आगामी अध्ययन का न केवल एक योजना पथ है, बल्कि आधारभूत ढांचा भी है। उपयुक्त विश्लेषण के उपरान्त हम सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन की अनुसंधान के क्षेत्र में निम्न बिन्दुओं के अनुसार उपयोगिता निश्चित करते हैं।

- इससे अनुसंधान में अनावश्यक दोहराव की क्रिया नहीं होती है।
- अब तक किए गए शोध कार्यो के सम्बन्ध में अनुसंधानकर्ता को पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।
- शोध कार्य के वास्तविक प्राप्त तथ्यों की सूचना मिल जाती है।

- इससे क्षेत्र विशेष में सूझ एवं अन्तर्दृष्टि विकसित होती है।
- समस्या की परिसीमाएँ भी सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से ही निश्चित की जा सकती हैं।
- नए विचार, सिद्धान्त और परिकल्पनाओं का ज्ञान हो जाता है।
- अनुसंधानकर्ता को भावी अनुसंधान के क्षेत्रों का पता लगाने के सम्बन्ध में उचित निर्देशन मिलता है।
- सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से शोध कार्य के अध्यायों को महत्वपूर्ण एवं शैक्षिक बनाने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किसी भी अनुसंधान की नींव होती है, जिसके आधार पर अनुसंधान रूपी भावी भवन खड़ा होता है। समस्याएँ आना, समस्याओं के आधार पर उनके मूल समाधानों को खोजना मनुष्य की प्रकृति है। आवश्यकता, समस्या व विषय वस्तु के प्रति संवेदनशीलता है। मनुष्य की संवेदनशीलता की समस्या व उसके सोपान निश्चित करती है। इस दृष्टि से अनुसंधान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में अनुसंधानकर्ता की संवेदनशीलता का बहुत महत्व होता है। जिसके कारण अनुसंधानकर्ता पूर्व में हुई गलतियों एवं अपूर्णताओं को अपनी पैनी निगाह से आगामी अध्ययनों में नवीन स्वरूप देकर सुधार सकता है।

2.2 शैक्षिक विचारधारा के सन्दर्भ में शोध अध्ययन

शोधकर्ता द्वारा अपने लघुशोध कार्य हेतु इस क्षेत्र में पूर्व में हुए शोध कार्यों का अध्ययन किया। जिसका सारांश प्रस्तुत किया जा रहा है।

अतुल कनक (2000) ने गाँधी जी के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश गाँधी जी के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों को जानना था। उन्होंने पाया कि गाँधी जी ने कर्मयोग का पाठ गीता से पढा था। गीता से ही उन्होंने अल्प संयम एवं निष्काम कर्म के महत्व को समझा। उनके जीवन दर्शन से शिक्षा दर्शन स्पष्टत: दिखाई देता है। दोनों का लक्ष्य एक ही है। व्यापक समाज बोध से कल्याण को सार्थक बनाना।

मुनेन्द्र शर्मा (2000) ने स्वामी दयानन्द सरस्वती का शैक्षिक चिन्तन पर शोध कार्य किया। यह अध्ययन ऐतिहासिक शोध विधि पर आधारित है। इस शोध के मुख्य उद्देश्य स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारों को जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत करना है। जिसमें उन्होंने पाया है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती महान शिक्षाशास्त्री थे। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्टत: उनके शैक्षिक विचारों का वर्णन किया गया है। उनकी दार्शनिक विचारधारा का प्रभाव उनकी शैक्षिक पद्धति पर स्पष्टत: दिखाई देता है।

सुनीता दुबे (2002) ने आचार्य विद्यासागर की लोक दृष्टि और उनके काव्य का कलागत अनुशीलन पर शोध किया। यह शोध आचार्य विद्यासागर के व्यक्तित्व एवं रचनाओं पर आधारित कार्य है। जिसके निष्कर्ष में उन्होंने पाया है कि आचार्य विद्यासागर का काव्य साहित्य जीवन को प्रेरित करने वाला है। इनके काव्यों के जीवन दर्शन में ऐसी सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चेतना, मानवीय निष्ठा से प्रतिफलित हुई है जो अनन्तकाल तक मानव जाति की प्रेरणा का स्रोत बन कर उसे आप्लावित करती रहेगी।

रश्मि जैन (2003) ने आचार्य विद्यासागर जी के साहित्य के उदात्त मूल्यों का अनुशीलन पर शोध कार्य किया। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में आचार्य श्री विद्यासागर के साहित्य में निहित उदात्त मूल्यों जैसे उदत्त कथ्य, भाव, शैली, भाषा, शिल्प तथा साहित्य का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। जिसमें उन्होंने पाया है कि आचार्य श्री विद्यासागर उदात्त भावों के उन्नायक हैं। उनकी रचनाएँ सुप्त उपतित मनोभावों को छूकर लक्ष्य तक पहुँचाने का प्रयास करती हैं तथा उनका चिन्तनपरक साहित्य मानवीय मूल्यों की पहचान कराता है। आचार्य प्रवर ने आत्मिक मलों के प्रक्षालन हेतु साहित्य का गंगाजल प्रस्तुत किया है। आयामों का विस्तृत विवेचन किया गया है। शिक्षा के विषयों में जीव और जगत को केन्द्र बनाकर सम्पूर्ण प्राणी मात्र और जगत के सम्पूर्ण विषयों को समाहित किया गया है। आदिपुराण में लौकिक के साथ परालौकिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए भौतिक विषयों के साथ धर्म, दर्शन और नैतिक शिक्षा को स्थान दिया है। वस्तुतः इनके समन्वय से सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास होता है। जो एक निश्चिंत तनाव रहित शान्त और सम्पूर्ण जीवन जीने की सही दिशा निर्धारित करता है। शिक्षा जगत के लिए इस कृति का प्रणयन आचार्य जिनसेन का एक अनुपेक्षनीय अनुदान है।

लोखण्डे (2004) ने डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शिक्षा दर्शन का अध्ययन पर शोध कार्य किया। शोध अध्ययन का उद्देश्य अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों का विश्लेषण सामाजिक मूल्यों के आधार पर करना था। इस शोध में विचार विश्लेषण विधि अपनाई गई। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि अब्दुल कलाम एक आदर्श शैक्षिक प्रशासन की कल्पना करते हैं, जिसमें तीक्ष दृष्टि, धैर्य, सूझ-बूझ हो, छात्रों के समक्ष शिक्षक एक आदर्श स्थापित करें। विद्यार्थी को ऊँचे सपने व ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। पाठ्यक्रम में कला व विज्ञान के साथ मानव मूल्यों व संस्कृतिक कार्यक्रमों को सम्मिलित करने की वकालत भी करते हैं।

हरि ओम निरंजन (2004) ने आचार्य कौटिल्य के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य शिक्षार्थी, पात्रता, राजपुत्रों की विशिष्ट शिक्षा, परीक्षा के भेद, शिक्षण विधियाँ, समय सारणी, अनुशासन को जानना था। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि कौटिल्य की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा में सैद्धांतिक शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, भौतिक शिक्षा व आध्यात्मिक शिक्षा के बीच अभूतपूर्व सामंजस्य स्थापित है। अर्थात कौटिल्य की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा की वर्तमान समय में भी प्रासंगिकता है।

आशा जैन (2005) ने श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी के शैक्षणिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य वर्णी जी की के उपलब्ध साहित्य एवं उनके द्वारा किए गए कार्य क्षेत्र का अध्ययन करना तथा वर्णी के शैक्षणिक योगदान का आंकलन व विचार उनके समकालीन एवं वर्तमान शैक्षिक विचारों के आधार पर विश्लेषण करना था। वर्णी जी ने भारत में शिक्षा की स्थिति एवं जैन साहित्य में शिक्षा के तत्वों को प्रस्तुत किया है। उनके शैक्षिक विचारों के अन्तर्गत सामान्य शिक्षा के सामाजिक विचारों को प्रस्तुत किया है। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि वर्णी जी के व्यक्तित्व के विविध रूपों में समाज सुधारक, देशभक्त साहित्यकार तथा साहित्य उद्वारक, परोपकारी तथा आध्यात्मिक सन्त के रूप में सामने आए।

सन्देश आचार्य (2005) ने सन्त कबीर का शैक्षिक दर्शन एक अध्ययन पर शोध कार्य किया। यह शोध दार्शनिक विश्लेषण विधि पर आधारित है। जिसका मुख्य उद्देश्य कबीर के जीवन दर्शन का अध्ययन करना तथा कबीर जी के साहित्य में अन्तर्निहित शैक्षिक विचारों में से शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विधि, शिक्षक, शिष्य, गुरु-शिष्य सम्बन्ध आदि की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता पर अध्ययन करना था। जिसके निष्कर्ष में पाया गया है कि कबीर पर मुख्य रूप से अद्वैतवाद का भी प्रभाव देखने को मिलता है।

उनके ब्रह्म, ज्ञान, माया, संसार, सत्य आदि पर विचार बहुत कुछ शंकराचार्य के विचारों से एवं गीता के विचारों से मेल खाते हैं। ब्रह्म प्राप्ति को उससे एकाकर होने कबीर ने मनुष्य जीवन का मुख्य उद्देश्य बताया, परन्तु इस मार्ग में अज्ञान, माया, संसार को उन्होंने एक अड़चन बताएँ, जिसके चक्कर में आकर मनुष्य वहाँ तक नहीं पहुँच पाता। इस तक पहुँचने के लिए कबीर ने सच्चे गुरु की आवश्यकता के साथ भक्ति, नाम स्मरण, जीवन के आदर्शों एवं जीवन के मूल्यों को स्थापित करने पर जोर दिया।

वूंटीम देवेन्द्र चन्द्र (2006) ने बौद्ध साहित्य की शिक्षाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया। शोध प्रबन्ध का उद्देश्य बौद्ध साहित्य की शिक्षाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान शिक्षा की अवधारणा में बौद्ध साहित्य की शिक्षाओं को जोड़ना। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि बौद्ध कालीन शिक्षा वर्तमान में अधिक प्रसांगिक है। इसके द्वारा समाज की स्थिति में सुधार किया जा सकता है। बौद्ध कालीन शैक्षिक परम्परा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में लागू किया जाना चाहिए।

प्रेम शंकर जोशी (2007) ने संस्कृत साहित्य में गुरु शिष्य संकल्पना का अध्ययन शोध प्रबन्ध किया। शोध का उद्देश्य उपनिषद एवं गीता में निहित गुरु शिष्य संकल्पना का अध्ययन करना था। गुरु शिष्य कर्तव्यों का अध्ययन करना। उपनिषद एवं गीता के सन्दर्भ में वर्तमान में शैक्षिक निहितार्थ ज्ञात करना। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि उपनिषद में गुरु को श्रद्धेय व आदरणीय माना गया है। अतः गुरु को शास्त्रोक्त आचरण करना चाहिए। गुरु ही शिष्य का मार्गदर्शन व ब्रह्म प्राप्ति का माध्यम होता है। आदर्श गुरु बालक को सत्य व कर्तव्य पथ की ओर ले जाता है और सफलता दिलाता है।

राजेश सिंह (2008) ने बौद्ध दर्शन में शिक्षा कि स्थिति, विस्तार एवं वर्तमान में प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। जिसमें उन्होंने बौद्ध दर्शन के तत्व मीमांसा, मूल्य मीमांसा एवं ज्ञान मीमांसा का संक्षिप्त अध्ययन किया साथ ही बौद्ध शिक्षा के पाठ्यक्रम उद्देश्य शिक्षण विधि पर प्रकाश डाला। जिसके निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि वर्तमान शिक्षा में बौद्ध शिक्षा का समावेश कर उन कमियों को दूर करके समाज को पुन: सुशिक्षित किया जा सकता है।

दुबे ऊषा (2008) ने रामचरितमानस में अन्तर्निहित शैक्षिक विचारधारा एवं मूल्य एक अध्ययन पर शोध कार्य किया। जिसका मुख्य उद्देश रामचरितमानस के मूल्यों का अध्ययन करना था। शोध अध्ययन में

निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि रामचरित मानस में वर्णित शैक्षिक विचारधारा वर्तमान शिक्षा व समाज के लिए आदर्श स्वरूप प्रदर्शित करती है। रामचरित मानस में वर्णित मूल्यों की वर्तमान में महती आवश्यकता है।

गायत्री बैरवा (2009) ने प्रसिद्ध अट्ठारह स्मृति ग्रन्थों में उपलब्ध शैक्षिक तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन पर शोध कार्य किया। जिसका उद्देश्य प्राचीनकाल में आज तक शिक्षा में व्यापक अर्थ का प्रचार व शैक्षिक तत्वों का परिचय प्रस्तुत करना, स्मृति ग्रन्थों का परिचय व समीक्षा करना, स्मृति ग्रन्थों में प्रतिपादित शैक्षिक तत्वों की तुलना करना एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्मृति ग्रन्थों में प्रतिपादित शैक्षिक तत्वों की उपादेयता का अध्ययन करना था। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि शिक्षा का उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना है। संयम व तपस्या के माध्यम से शिक्षा को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षण विधियों में अन्तर, मौखिक विधियों का प्रचलन अधिक पाया गया है। इससे स्मृति ग्रन्थों में निहित शैक्षिक तत्वों की वर्तमान समय में उपयोगिता सिद्ध होती है।

भावना पारिक (2011) ने ओशो के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता एक अध्ययन पर शोध कार्य किया। उन्होंने इस शोध कार्य में दार्शनिक विधि का प्रयोग किया। जिसका मुख्य उद्देश्य वर्तमान में ओशो के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता को जानना था। निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि ओशो के शिक्षा दर्शन की वर्तमान में विद्यार्थी, शिक्षण विधि, व पाठ्यक्रम की वर्तमान में प्रासंगिकता पूर्णता देखने मिलती है। किन्तु आज का शिक्षक ओशो के शिक्षा दर्शन से भिन्नता रखता है तथा अनुशासन की संकल्पना वर्तमान में प्रासंगिक नहीं है।

शशि जैन (2011) ने जैन मुनि तरुणसागर के शैक्षिक विचारों का अध्ययन पर शोध कार्य किया। यह शोध कार्य दार्शनिक विधि पर आधारित है। इस शोध में शोधकर्त्री ने यह जानने का प्रयास किया कि मुनि तरुणसागर के शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी, स्कूल, अनुशासन, स्त्री शिक्षा सम्बन्धी क्या विचार है? निष्कर्ष स्वरूप उन्होंने पाया कि मुनि श्री तरुणसागर ने भगवान महावीर द्वारा स्थापित जैन दर्शन के सिद्धांत, नियम, तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा व आचार मीमांसा में प्रतिपादित बातों को यथावत स्वीकार किया है, जो हमें उनके दार्शनिक विचारों के रूप में साहित्य के अन्तर्गत परिलक्षित होते हैं और इन्ही दार्शनिक विचारों पर आधारित उनके शैक्षिक विचार भी परिलक्षित होते है, जो वर्तमान में प्रासंगिकता सिद्ध होते है।

श्रुति शर्मा (2011) ने रामचरित मानस में निहित नैतिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन पर शोध कार्य किया। इसमें ऐतिहासिक विधि अपनाई गई है। जिसका मुख्य उद्देश्य रामचरित मानस में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य अध्ययन करना था। शोध अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि रामचरित मानस में वर्णित शैक्षिक मूल्यों के अनुरूप वर्तमान शिक्षा में परिवर्तन करने पर न केवल शिक्षार्थी को लाभ होगा अपितु शिक्षक, शिक्षा प्रशासन, समाज एवं सम्पूर्ण विश्व को भी व्यापक लाभ मिलेगा। इसमें सर्वत्र भारतीयता की सही झलक देखने मिलेगी।

सावित्री सिंगवाल (2011) ने श्री मदभागवत गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। इस शोध प्रबन्ध में दार्शनिक विधि का प्रयोग किया है। इसके निष्कर्ष में पाया गया कि मानव को फल की इच्छा किए बिना लगातार कर्म करते रहना चाहिए। श्री मदभागवत गीता में गुरु एवं शिष्य के मध्य पिता-पुत्र के समान मित्रतापूर्वक व आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध पाए गए। जिससे युगों युगों तक शिक्षा एवं मानव समाज के लिए मार्गदर्शन देगा।

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें इत्यादि

पत्र-पत्रिकाएँ मानव समाज की दिशा-निर्देशिका मानी जाती हैं। समाज के भीतर घटती घटनाओं से लेकर परिवेश की समझ उत्पन्न करने का कार्य पत्रकारिता का प्रथम व महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य है। राजनीतिक सामाजिक चिन्तन की समझ पैदा करने के साथ विचार की सामर्थ्य पत्रकारिता के माध्यम से ही उत्पन्न होती है। पत्रकारिता ने युगों से अपने इस दायित्व का निर्वाह किया तथा दायित्व-निर्वहन की समस्त कसौटियों को पूर्ण करते हुए समय-समय पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। यह अध्ययन करना अपने आप में अत्यंत रोचक है कि पत्रकारिता की यह यात्रा कब और कैसे आरम्भ हुई और किन पड़ावों से गुजरकर राष्ट्रीयता के मिशन से व्यावसायिकता तक की यात्रा को उसने सम्पन्न किया।

आजादी से पूर्व का युग राष्ट्रीयता और राष्ट्रीय चेतना की अनुभूति के विकास का युग था। इस युग का मिशन और जीवन का उद्देश्य एक ही था स्वाधीनता की चाह और प्राप्ति का प्रयास। इस प्रयास के तहत ही हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का आरम्भ हुआ। इस सन्दर्भ में इस तथ्य को भी ध्यान में रखना होगा कि हिन्दी क्षेत्रों के बाहर भी विशेषकर हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में भाषा को राष्ट्रीय अस्मिता का वाहक मानकर सभी पत्रकारों ने

हिन्दी को ही अपनी भाषा के रूप में चुना और हिन्दी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं के सम्वर्धन में अपना योगदान दिया।

अतः अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख, पत्र-पत्रिकायें, पुस्तकें इत्यादि का वर्णन निम्नलिखित है-

पुस्तकें

- मोदी, नरेन्द्र एवं नेने, राजा भाई (2007), सेतुबंध, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- मोदी, नरेन्द्र (2012), सामाजिक समरसता, प्रभात पेपरबैक्स 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- मोदी, नरेन्द्र (2008), ज्योतिपुंज, उल्हास चिन्तामणि लाटकर अमेय प्रकाशन, 207 बिझनेस गिल्ड, लॉ कॉलेज रोड, पुणे-411004
- मोदी, नरेन्द्र (2004), आपातकाल में गुजरात, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- मोदी, नरेन्द्र (2015), साक्षी भाव, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- मोदी, नरेन्द्र (2007), श्री गुरुजी एक स्वयंसेवक, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- कुमार, पंकज (2008), दूरद्रष्टा नरेन्द्र मोदी, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2 नई दिल्ली-110020
- कामथ, एम. वी. एवं रांदेरी, कालिंदी (2010), विकास-शिल्पी नरेन्द्र मोदी, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- Modi, Narendra (2018), Exam Warriors, Penguin Random House India Pvt. Ltd., 7th Floor Infinity Tower C, DLF Cyber City Gurgaon-122002

- Modi, Narendra (2014), A Journey:Poems, Rupa Publications India Pvt. Ltd., 7/16 Ansari Road Daryaganj New Delhi-110002
- मोदी, नरेन्द्र (2014), प्रेमतीर्थ, राजपाल एण्ड सन्ज, 1590 मदरसा रोड कश्मीरी गेट दिल्ली-110006
- Gokhale, Nitin A (2017), Securing India The Modi Way, Bloombury Publishing India Pvt. Ltd. DDA Complex LSC building No 4, 2nd Floor Pocket 6 & 7 Sector C Vasant Kunj New Delhi-110070
- शर्मा, महेश (2015), मैं नरेन्द्र मोदी बोल रहा हूँ, प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
- शुक्ला, संगीता (2016), प्रेरणामूर्ति नरेन्द्र मोदी, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2 नई दिल्ली-110020
- कुमार, पंकज (2014),महानायक नरेन्द्र मोदी, डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2 नई दिल्ली-110020

समाचार, लेख, पत्र-पत्रिकाएँ

पन्ना लाल (आजतक 10 मई 2019)- अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका टाइम ने 20 मई के अपने नए संस्करण में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को कवर पेज पर जगह दी है। हालांकि पत्रिका ने पीएम नरेन्द्र मोदी को विवादित उपाधि दी है और उन्हें 'India's Divider in Chief' यानी की 'भारत का प्रमुख विभाजनकारी' बताया है। टाइम पत्रिका के एशिया एडिशन ने लोकसभा चुनाव 2019 और पिछले पाँच सालों में नरेन्द्र मोदी सरकार के काम काज पर लीड स्टोरी की है। इसका शीर्षक है "Can the World's Largest Democracy Endure Another Five Years of a Modi Government?" प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कामकाज पर सख्त आलोचनात्मक टिप्पणी करते हुए पत्रिका ने नेहरू के समाजवाद और भारत की मौजूदा सामाजिक परिस्थिति की तुलना की है। आतिश तासीर नाम के पत्रकार द्वारा लिखे गए इस आलेख में कहा गया है कि

नरेन्द्र मोदी ने हिन्दू और मुसलमानों के बीच भाईचारे की भावना को बढ़ाने के लिए कोई इच्छा नहीं जताई। इस आलेख में कहा गया है कि नरेन्द्र मोदी ने भारत के महान शख्सियतों पर राजनीतिक हमले किए जैसे कि नेहरू। वह कांग्रेस मुक्त भारत की बात करते हैं, उन्होंने कभी भी हिन्दू मुसलमानों के बीच भाईचारे की भावना को मजबूत करने के लिए कोई इच्छाशक्ति नहीं दिखाई। आगे इस लेख में कहा गया है कि नरेन्द्र मोदी का सत्ता में आना इस बात को दिखाता है कि भारत में जिस कथित उदार संस्कृति की चर्चा की जाती थी वहाँ पर दर असल धार्मिक राष्ट्रवाद, मुसलमानों के खिलाफ भावनाएँ और जातिगत कट्टरता पनप रही थी।

सुधांशु गुप्त (जागरण, 31 मई 2019)- विपक्ष ही नहीं इस चुनाव में हार गए बुद्धिजीवी भी, उनकी सोच के विपरीत हुआ सब कुछ। सत्रहवीं लोकसभा के चुनावों में नरेन्द्र मोदी केवल जीते ही नहीं, बल्कि प्रचण्ड बहुमत से दोबारा सत्ता में उनकी वापसी हुई है। विपक्ष और क्षेत्रीय पार्टियों की ऐसी हार हुई जिसकी शायद कल्पना भी उन्होंने नहीं की होगी। लेकिन हार और जीत के केवल यही दो पक्ष नहीं हैं। एक और पक्ष भी है जिसकी हार हुई है इन चुनावों में। जी हाँ वह पक्ष है लेखक, कवि, बुद्धिजीवी और अभिनेताओं की बिरादरी। अगर चुनाव प्रक्रिया व मतदान के उस कालखण्ड पर नजर डालें, तो कुछ बातें साफ दिखाई पड़ती हैं। सोशल मीडिया पर रचनाकारों की आपसी बातचीत में और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं के कार्यालयों में भी प्रधानमंत्री मोदी पर जोर था।

पाञ्चजन्य (26 जून 2018)- आपातकाल के दिनों में मोदी भी थे भूमिगत, कर रहे थे संघ कार्य। आजाद भारत के इतिहास में आपातकाल एक काले अध्याय की तरह है। आपातकाल लागू होने के बाद देश में नेताओं को जेल में ठूंसने का दौर चला। दो साल तक देश में नेताओं और कांग्रेस के विपरीत विचार रखने वाले लोगों को गिरफ्तार कर जेलों में बंद कर दिया गया। प्रेस की आजादी पर रोक थी। देश में लोगों की जबरन नसबन्दी कराई जा रही थी। आपातकाल के दौर में इन्दिरा गाँधी के खिलाफ संघर्ष कर रहे कई नेता आज देश में बड़े नेता हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी इनमें से एक हैं। वह आपातकाल के दौरान वेश बदलकर सक्रिय थे और संघ कार्य करने में जुटे थे। कई बार अपने भाषणों में मोदी आपातकाल के बारे में बोलते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की वेबसाइट narendramodi.in पर इमरजेंसी के दौर की कुछ कहानियाँ बताई गई हैं।

वेब दुनिया- स्वच्छ भारत अभियान गाँधी जी के सपने को पूरा करने में जुटे मोदी। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का मानना था कि साफ सफाई ईश्वर भक्ति के बराबर है और इसलिए उन्होंने लोगों को स्वच्छता बनाए रखने सम्बन्धी शिक्षा दी थी और देश को एक उत्कृष्ट सन्देश दिया था। उनका कहना था कि उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था जिसके लिए वे चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गाँधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी जी ने 2 अक्तूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। इस अभियान का उद्देश्य 5 वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू की 150 वीं जयन्ती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके। स्वच्छ भारत अभियान सफाई करने की दिशा में प्रति वर्ष 100 घण्टे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

सत्याग्रह- नरेन्द्र मोदी की लगातार दूसरी पारी पर यूरोपीय मीडिया ने क्या-क्या कहा है? 2014 में नरेन्द्र मोदी के पहली बार प्रधानमंत्री बनने पर यूरोपीय मीडिया के कुछ दिग्गज चिन्ता में घुले जा रहे थे। भारत के आम चुनाव के परिणाम जिन दिनों आ रहे थे, उन्हीं दिनों यूरोपीय संघ के सभी 28 देशों में संघ की यूरोपीय संसद के लिए चुनाव हो रहे थे। लेकिन इस उपेक्षा की बड़ी वजह यह है कि ये नतीजे यूरोपीय मीडिया की चाह के विपरीत रहे। 2014 में जब नरेन्द्र मोदी पहली बार प्रधानमंत्री बने थे तो भारत के अल्पसंख्यकों के शुभ चिंतक यूरोपीय मीडिया के कुछ दिग्गज इस चिन्ता से अध मरे हुए जा रहे थे कि भारत में अब अल्पसंख्यकों के खून की होली खेली जायेगी। भारत में ऐसा तो कुछ हुआ नहीं। जबकि यूरोप में हो रहे जिहादी आतंकवादी हमलों से परेशान खुद यूरोप की जनता और सरकारें अपने अल्पसंख्यकों पर शकसंदेह करने और उनके कान ऐंठने लगी हैं। आत्म मुग्ध यूरोपीय मीडिया अब अटकलें लगा रहा है कि नरेन्द्र मोदी का बहुमत इतना प्रचण्ड और विपक्ष इतना दुर्बल है कि उन्हें एक तानाशाह बनते और भारत को एक 'हिन्दू राष्ट्र' बनाते देर नहीं लगेगी। इसी मीडिया को 'हिन्दू राष्ट्र' होने में तब कोई बुराई नजर नहीं आती थी, जब नेपाल एक 'हिन्दू राष्ट्र' हुआ करता था।

रवीश कुमार (28 सितम्बर2017)- भारत के प्रधानमंत्री को मेरा पत्र

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आप सकुशल होंगे। मैं हमेशा आपके स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूँ। आप असीम ऊर्जा के धनी बने रहें, इसकी दुआ करता हूँ। पत्र का प्रयोजन सीमित है। विदित है कि सोशल मीडिया के मंचों पर भाषाई शालीनता कुचली जा रही है। इसमें आपके नेतृत्व में चलने वाले संगठन के सदस्यों, समर्थकों के अलावा विरोधियों के संगठन और सदस्य भी शामिल हैं। इस विचलन और पतन में शामिल लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। दुख की बात है कि अभद्र भाषा और धमकी देने वाले कुछ लोगों को आप ट्वीटर पर फोलो करते हैं। सार्वजनिक रूप से उजागर होने, विवाद होने के बाद भी फोलो करते हैं। भारत के प्रधानमंत्री की सोहबत में ऐसे लोग हों, यह न तो आपको शोभा देता है और न ही आपके पद की गरिमा को। किन्हीं खास योग्यताओं के कारण ही आप किसी को फोलो करते होंगे। मुझे पूरी उम्मीद है कि धमकाने, गाली देने और घोर साम्प्रदायिक बातें करने को आप फोलो करने की योग्यता नहीं मानते होंगे। मुमकिन है कि ये लोग आपके विश्वास का लाभ उठाकर ऐसी भाषा का इस्तमाल करते हों। चूँकि आप प्रधानमंत्री हैं इसलिए यह देखना आपका काम है। आपकी व्यस्तता समझ सकता हूँ मगर आपकी टीम यह सुनिश्चित कर सकती है कि आप ऐसे किसी शख्स को ट्वीटर पर फोलो न करें। ये लोग आपकी गरिमा को ठेस पहुँचा रहे हैं। भारत की जनता ने आपको असीम प्यार दिया है, कोई कमी रह गई हो, तो आप उससे माँग सकते हैं, वो खुशी खुशी दे देगी, मगर यह शोभा नहीं देता कि भारत के प्रधानमंत्री ऐसे लोगों को फोलो करें जो किसी नागरिक को गालियाँ देता हो, अल्पसंख्यक समुदाय के प्रति साम्प्रदायिक बातें करता हो और आलोचकों के जीवित होने पर दुख जताता हो।

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

इस प्रकार शोधकर्ता ने सम्बद्व साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात पाया कि उपनिषद, प्रसिद्ध अट्ठारह स्मृति ग्रन्थों, अथर्ववेद, भगवतगीता, रामचरितमानस, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन, सिख, गीता, कुरान आदि के साथ प्राचीन से लेकर आज तक के अधिकांश विचारकों की साहित्यिक कृतियों पर शैक्षिक कार्य हुए जिनमें इन ग्रन्थों के आधार पर शैक्षिक विचारधारा, शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा के अन्य आयामों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए है। सभी ग्रन्थों ने माना की शिक्षा की सार्थकता मानव के समग्र विकास पर निहित है। दार्शनिक परिपेक्ष्य में प्रधानमंत्री मोदी, जैन मुनि तरुणसागर, ओशो, स्वामी विवेकानन्द, आचार्य

कौटिल्य, काकासाहेब कालेलकर, जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। शिक्षा को ही अपना परम कर्तव्य मानने वाले महापुरुषों में पण्डित ईश्वरचंद्र विद्यासागर, डॉ हरिसिंह गौर, गुरु रामदास आदि के शिक्षा के प्रति समर्पण को शोध के माध्यम से प्रकट करने का प्रयास किया गया है। पुस्तकों पर आधारित शोध में तुलसीदास द्वारा रचित ग्रन्थ रामचरितमानस, स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी, समर्थ रामदास स्वामी के द्वारा रचित दासबोध, हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य एवं शरद जोशी के गद्य साहित्य में निहित शैक्षिक तत्वों के आधार पर शैक्षिक एवं दार्शनिक अध्ययन किया गया। इसी प्रकार भाषण व आत्मकथा पर आधारित शोध कार्य में डॉ राजेंद्र प्रसाद और उनके विचार आधुनिक भारत के सन्दर्भ में तथा स्वामी दयानन्द के विचारों का अध्ययन उनके साहित्य तथा जनरल्स के आधार पर किया गया, साथ ही श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी के शैक्षणिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन उनके उपलब्ध साहित्य पर आधारित शोध कार्य किया गया। इन महापुरुषों ने जीवन मूल्यों को सिद्ध करने का प्रयास किया है।

वर्तमान प्रणाली में प्रासंगिकता की दृष्टि से गौतम अक्षपाद का शिक्षा दर्शन, आचार्या जिनसेन कृत आदिपुरण में प्रतिपादित शिक्षा शास्त्रीय मान्यताओ का वर्तमान में परिशीलन में न्याय दर्शन की मुख्य अवधारणा का अध्ययन किया गया। डॉ राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों में पाश्चात्य और भारतीय विचारकों को प्रभावी बनाने हेतु दृष्टांत प्रस्तुत किए गए। दौलारम मनकड़े, डॉ राधाकृष्णन, मनुभाई पंचोली के आलोचनात्मक अध्ययन में उनके शिक्षा सम्बन्धी महत्वपूर्ण विचारों को जानने का प्रयास किया गया। इसी प्रकार तुलनात्मक अध्ययन में महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ एवं महर्षि अरविन्द के शैक्षिक विचारों के मध्य तुलना की गई, परन्तु शोध अध्ययन में सभी के विचारों में समानता देखी गयी।

जीवन में चरित्र धर्म और ज्ञान की भावना को बल देने वाले इन महापुरुषों के क्रम में प्रधानमंत्री मोदी भी वर्तमान के शिखर पुरुष है। जो समाज में व्याप्त कुरीतियों को अपने शैक्षिक वचनामृत से दूर कर रहे है। सम्बद्व साहित्य के अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला, यद्यपि उनके विपुल वाडमय पर अनेक शोधकार्य हो चुके है। सबसे प्रसिद्व मूकमाटी महाकाव्य पर सर्वाधिक कार्य देखे गए। उनके साहित्य के उदत्त मूल्यों का अनुशीलन वर्तमान के गिरते जीवन मूल्यों को दिशा प्रदान कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी के व्यक्तित्व एवं

कृतित्व के विविध आयामों पर भी प्रकाश डाला गया, परन्तु उनके शैक्षिक विचारों पर अभी तक कोई भी शोध कार्य देखने में नहीं आया। इसलिए शोधकर्ता द्वारा शोध समस्या का चयन उचित एवं न्याय संगत प्रतीत होता है। सचेतन शिक्षालय के शैक्षिक विचारों व कार्यों से अवगत कराना एवं विभिन्न क्षेत्रों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की सेवाओं को प्रकाश में लाना व राष्ट्रीय जीवन के विकास को आध्यात्मिक शिक्षा विकास से जोड़ने सम्बन्धी योगदान को जनमानस के सामने लाना इस शोध का प्रयोजन है।

तृतीय अध्याय

जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व



अध्याय : तृतीय

जीवनवृत्त, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

भारत एक सांस्कृति प्रधान देश है। युगों-युगों से भारतीय संस्कृति विश्व में अपनी अमिट छाप बनाए हुए है। समस्त सृष्टि का जगतगुरु यह भारत वर्ष ऋषि-महर्षिओं की पुण्य व कर्म भूमि रहा है। इन ऋषि-महर्षियों ने भारतीय संस्कृति एवं आचरणात्मक नैतिक मूल्यों की अजस्र धारा अनवरत प्रवाहित की जिसमें, अवगाहन कर अनेक जीवो ने अपने जीवन को सफल बनाया। यह पश्चिमी देश अपनी प्रारम्भिक स्थिति में थे, तब भारत अपने आत्मबल और आध्यात्मिक शक्तियों के द्वारा उनका मार्गदर्शन करता था। बड़े-बड़े महापुरुषों को जन्म देने वाली भारत माता सदैव से पूज्यनीय वन्दनीय रही है। सम्पूर्ण विश्व में इनका अपना एक विशिष्ट स्थान है। तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों में विदेशी ज्ञान पिपासु अध्ययन करने आया करते थे। ईसा मसीह ने स्वयं अपनी शिक्षा की विद्यापीठ भारत को ही बनाया था। कथनी करनी में साम्य रखने वाले भारतीय दार्शनिक एवं साधकों ने इस विश्व को अपने ज्ञानरूपी आलोक से आलोकित किया है। विकृति के परे सुकृति का जीवन प्रदान करने वाली वीर प्रसूती भारत माता ने विवेकानन्द, तिलक, दयानन्द और गाँधी जैसे युग दृष्टाओं, वाल्मीकि, कालिदास, कबीरदास, नानक जैसे सन्त कवियों, आचार्य कुंद-कुंद, चाणक्य, भद्रबाहु जैसे महामना महापुरुषों, भगवान महावीर, बुद्ध, राम जैसे आत्म जेताओं व साधकों को जन्म देती रही है।

आधुनिक युग में प्रधानमंत्री मोदी जी इसी परम्परा के एक जीवन्त प्रतीक श्रुत और शील से सम्पन्न है। उनमें ज्ञान की गरमा है किन्तु उसका अहंकार नहीं है। आगम साहित्य के गम्भीर ज्ञाता एवं तलस्पर्शी विद्वान होने के बाद जिज्ञासा वृत्ति सदैव प्रवाहमान रहती है। ज्ञान के आगर होते हुए भी वे ज्ञान के जिज्ञासु है। आप जगत के प्रपंचों से विरत, निस्पृह, निराकांक्षी, आत्मदृष्टा तथा ध्यान योगी है। वाणी में ऋजुता, व्यक्तित्व में समता, जीने में सादगी की त्रिवेणी है। आपके व्यक्तित्व में विश्व बन्धुत्व तथा मानवता की

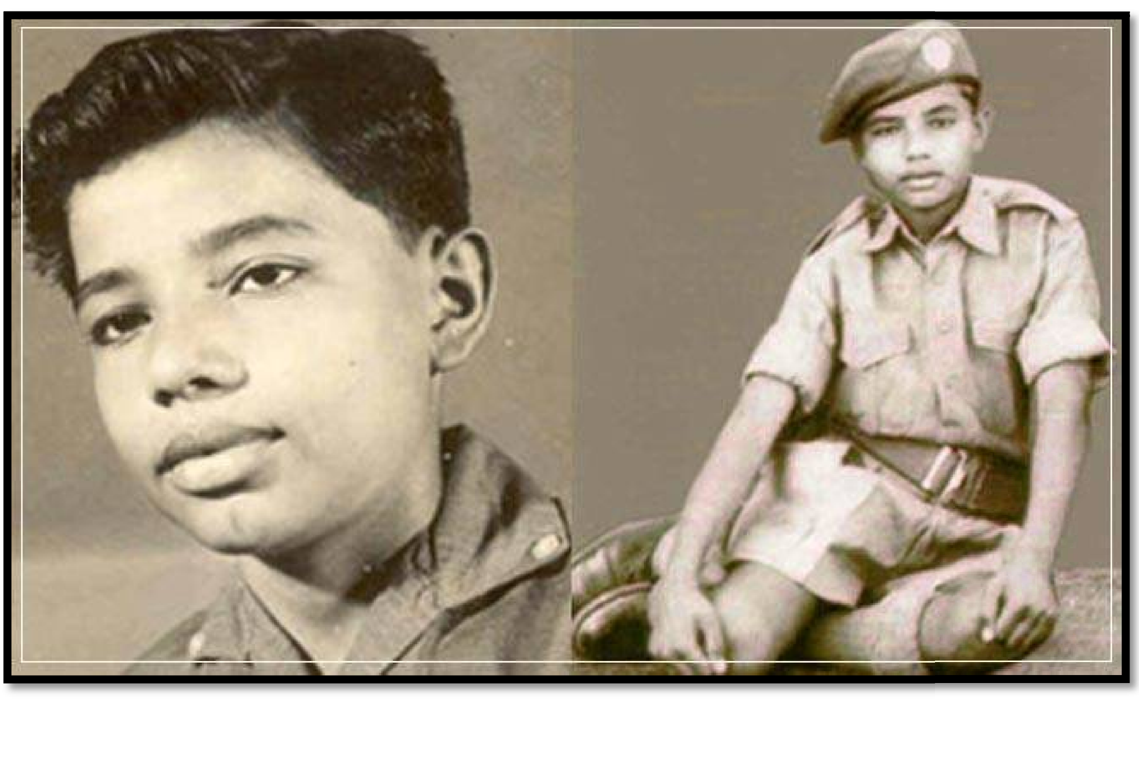
गंध है। आपकी सरलता, सहजता एवं स्नेह सौहार्द से आह्लादित करने वाली मुख मुद्रा किसी भी दर्शक को अनायास अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है।

अनुवांशिक परिचय

व्यक्तित्व व्यक्ति का सर्वस्व है, गुणी व्यक्तित्व की गणना में जिस नर पुंगव का नाम अंगुलियों पर अंकित होता है उसी मानव भूषण के जन्म की सार्थकता है। लोक में मानव जन्म की उपलब्धि दुर्लभ है क्योंकि मानक्तेर योनियों में उन अपरिमेय ऊर्ध्वगामिनी संभावनाओं का द्वार अनावृत नहीं होता जो इस योनि में होता है, पर यह संभावना तभी उपलब्धि बनती है, जब विद्या धैर्यमान होती है, पता नहीं किन अज्ञात कारणों से माता पिता ने बन्धपाद शिशु का नामकरण 'विद्याधार' किया, वह नाम तप, ध्यान और शास्त्रनिष्ठा पूर्वक अर्जित विद्या से अंवर्थ बन गया।

शिवपथ के सौम्य पथिक, संयम राह के अविरल राही, नर जन्म को धन्य करने वाले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा वड़नगर की गलियों से शुरू होती है। उत्तरी गुजरात के मेहसाणा जिले का एक छोटा-सा कस्बा। भारत के स्वतंत्र होने के 3 साल और भारत में गणतंत्र की स्थापना के कुछ महीने बाद 17 सितम्बर 1950 को जन्मे नरेन्द्र मोदी, दामोदरदास मोदी और हीराबेन की 6 संतानों में से तीसरी संतान थे।

चित्र- 3.1 प्रधानमंत्री मोदी जी के बचपन की तस्वीर



वड़नगर इतिहास के टापू पर खड़ा हुआ एक शहर है। पुरातत्व खुदाई से पता चलता है कि यह अध्ययन और आध्यात्मिकता का एक जीवन्त केन्द्र था। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने वड़नगर का दौरा किया था। वड़नगर का एक है समृद्ध बौद्ध इतिहास भी रहा है। शताब्दियों पूर्व 10 हजार से अधिक बौद्ध भिक्षुओं ने इस भूमि को अपना निवास स्थान बनाया था।



चित्र-3.2 प्रधानमंत्री मोदी जी की चाय की दुकान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जीवन के आरम्भिक वर्ष एक आदर्श और सामान्य परवरिश से कोसों दूर थे। उनका परिवार समाज के उस कमजोर तबके से था, जिसे दो वक्त का भोजन जुटाने के लिए भी संघर्ष करना पड़ता था। पूरा परिवार एक बेहद छोटे से घर में रहता था, जो कि लगभग 40×12 फुट के आकार का था। उनके पिता स्थानीय रेलवे स्टेशन पर बनी चाय की दुकान पर चाय बेचते थे। अपने प्रारम्भिक वर्षों में नरेन्द्र मोदी इस चाय की दुकान पर अपने पिता का हाथ बंटाते थे।

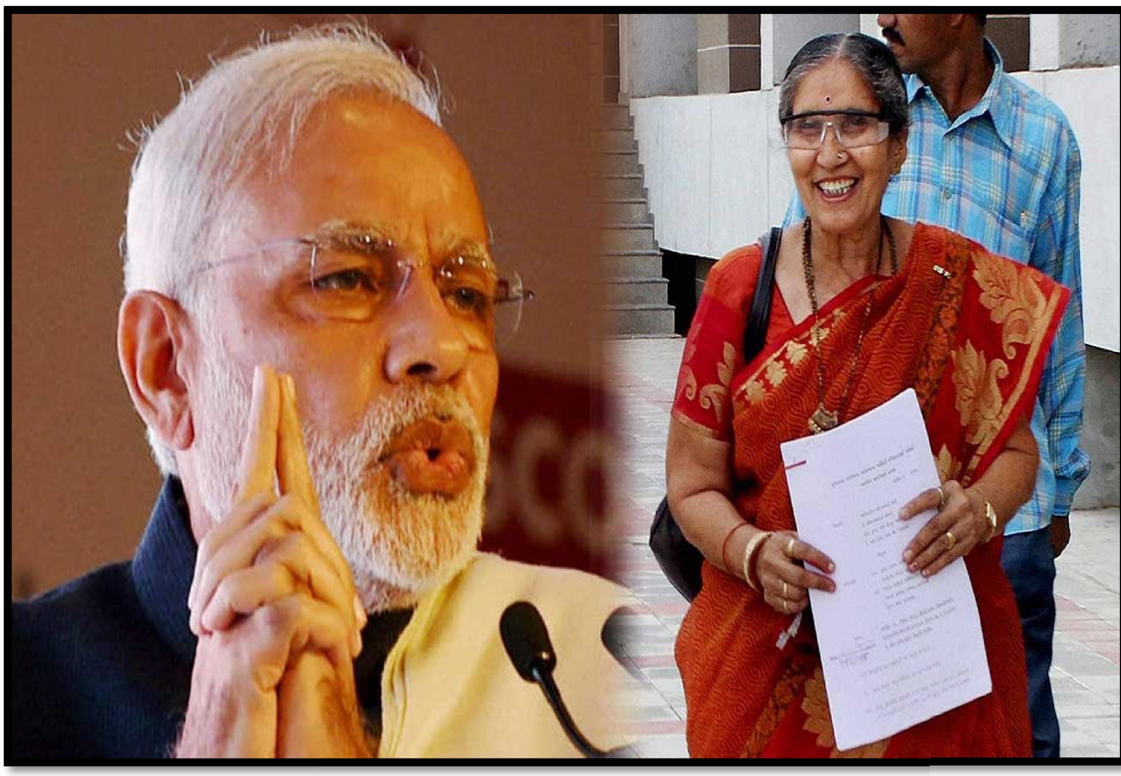
इन प्रारम्भिक वर्षों ने नरेन्द्र मोदी पर एक मजबूत छाप छोड़ी। एक बच्चे के रूप में नरेन्द्र मोदी ने अपनी पढ़ाई, पाठ्योत्तर जीवन और पिता के चाय स्टाल में उनके योगदान के बीच सन्तुलन स्थापित किया। उनके सहपाठी नरेन्द्र को एक तर्कशील, मेधावी और मेहनती छात्र के रूप में याद करते है, जिसमें तर्क-वितर्क

और अध्ययन करने का अदभुत कौशल था। वह स्कूल के पुस्तकालय में अध्ययन हेतु घण्टों समय व्यतीत किया करते थे। खेलों में उन्हें तैराकी का बहुत शौक था। नरेन्द्र मोदी का सभी समुदायों में मित्रों का व्यापक दायरा था। एक बच्चे के रूप में वह अक्सर हिन्दू और मुस्लिम दोनों समुदायों के त्योहारों मनाया करते थे, क्योंकि उनके पड़ोस में उनके बहुत सारे मित्र मुस्लिम समाज से थे। फिर भी उनके विचार और स्वप्न विद्यालय की कक्षा में शुरू होकर किसी दफ्तर के माहौल में खत्म हो जाने वाले पारम्परिक जीवन में नहीं बंधे, बल्कि कहीं आगे निकल गए। वे लीक से हटकर चलना चाहते थे और समाज में एक परिवर्तन देखना चाहते थे। समाज और व्यवस्था के हाशिये पर पड़े लोगों के दुःख-दर्द को खत्म करना चाहते थे। युवावस्था में ही उनका झुकाव त्याग और तप की ओर बढ़ रहा था। उन्होंने नमक, मिर्च, तेल और गुड़ खाना छोड़ दिया था। स्वामी विवेकानन्द के कार्यों का गहन अध्ययन नरेन्द्र मोदी को आध्यात्म की यात्रा की ओर ले गया और उन्होंने भारत को जगत गुरु बनाने के स्वामी विवेकानन्द के सपनों को पूरा करने के लिए अपने मिशन की नींव रखी।



चित्र 3.3 रेलवे स्टेशन जहाँ प्रधानमंत्री मोदी जी चाय बेचते थे

अगर कोई एक शब्द है जो नरेन्द्र मोदी के जीवन का चरित्र चित्रण कर सकता है और जो जीवन भर उनके साथ रहा है, वह है ‘सेवा’। जब ताप्ती नदी ने बाढ़ का कहर ढाया था, नौ वर्ष के नरेन्द्र और उनके मित्रों ने खाने के स्टाल लगाये और राहत कार्यों हेतु धन जुटाने का कार्य किया था। जब पाकिस्तान के साथ युद्ध अपने चरम पर था, उन्होंने रेलवे स्टेशन पर सीमा की ओर जाने और वहाँ से लौटने वाले जवानों के लिए चाय वितरित करने का कार्य किया। यह एक छोटा कदम था लेकिन उन्होंने बेहद कम उम्र में भारत माता के आह्वान पर अपने सामर्थ्य का दृढ़ संकल्पित होकर प्रदर्शन किया।



चित्र 3.4 प्रधानमंत्री मोदी जी और उनकी पत्नी जशोदा बेन

एक बालक के तौर पर नरेन्द्र मोदी का एक सपना था भारतीय सेना में जाकर देश की सेवा करने का। उनके समय के तमाम युवाओं के लिए, भारत माता की सेवा के लिए सेना सर्वोत्कृष्ट माध्यम था। हालाँकि उनके परिजन उनके इस विचार के सख्त खिलाफ थे। नरेन्द्र मोदी जामनगर के समीप स्थित सैनिक स्कूल में पढ़ने के बेहद इच्छुक थे, लेकिन जब फीस चुकाने की बात आई तो घर पर पैसों का घोर अभाव सामने आ गया। निश्चित तौर पर नरेन्द्र बेहद दुखी हुए। लेकिन जो बालक सैनिक की वर्दी न पहन सकने के कारण बेहद

निराश था, भाग्य ने उसके लिए कुछ अलग ही सोच कर रखा था। इन वर्षों में उसने एक अद्वितीय पथ पर यात्रा आरम्भ की, जो उन्हें मानवता की सेवा के लिए बड़े मिशन की खोज के लिए भारत भर में ले गया।



चित्र 3.5 प्रधानमंत्री मोदी जी अपनी माता जी के साथ

3.2 सार्वजनिक जीवन

महापुरूषों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व समय एवं स्थान की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता। प्रधानमंत्री मोदी की महिमा ऐसी विलक्षण है कि आज भी न केवल भारतवासी अपितु विदेशी भी उनका नमन स्नेह एवं आदर से करते है। प्रधानमंत्री मोदी का जीवन एवं उनकी विचारधारा सम्पूर्ण विश्व के असंख्य लोगों को प्रेरणा देती आ रही है। उनके ओजस्वी शब्दों ने न जाने कितने हतोत्साहित एवं निराश लोगों को आशा की किरण दिखाई है। उनके जीवन के प्रेरक प्रसंगों ने जिस प्रकार विचारशील एवं जागरूक अंतः स्थलों को झकझोरा और प्रेरित किया है। उससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे वे अपने जीवनकाल की अपेक्षा आज के वर्तमान युग में और भी अधिक प्रासंगिक हो गए है।

वर्तमान पीढ़ी परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। जीवनशैली, नैतिक मूल्यों एवं आदर्शों में बदलाव आ रहा है। आज की युवा पीढ़ी विकास एवं आर्थिक उन्नयन के बोझ तले इतनी अधिक दब गई है कि वह अपने पारम्परिक आधारभूत उच्च आदर्शों से समझौता तक करने में हिचक नहीं रही है। परिणामतः सर्वत्र असन्तोष, प्रेरणा का अभाव एवं बिना प्रयत्न किए ही बेईमानी के 'शार्टकट' से समृद्धशाली बनने की प्रवृत्ति जन्म ले रही है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में भ्रष्टाचार और बुजुर्गों की आयु एवं उनकी राय के प्रति अनादर एक आम बात हो गई है। संक्षेप में, समाज में भ्रष्टाचार एवं अनाचार बढ़ता ही जा रहा है। आम जनता प्रकाश में आने वाले नित नए घोटालों एवं अपराधों से अचंभित एवं आक्रांत है। राजनीतिक दलों में भ्रष्टाचार अपनी जड़े जमा चुका है। साम्प्रदायिकता एवं जातिवाद समाप्त होने की बजाय अपना सिर उठा रहे है। आदर्शों की परवाह किए बगैर लोग अनैतिक तरीकों से सहित सम्प्रदान में लगे हुए है। ऐसे समय में, समाज को पतन से बचाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी के ओजस्वी प्रेरक विचारों की महती आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी एक सच्चे राष्ट्रभक्त है और उन्हें अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व भी है। भारतीय संस्कृति एवं भारतीय धर्म के प्रति उनका गर्व एवं आदर धर्म संसद में उनके द्वारा दिए गए संभाषण से ज्ञात होता है। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि जीवन में एक व्यक्ति ऐसा होना चाहिए, जिसको आप अपने मन के हर अच्छे और बुरे विचार को बता सकें। जिससे आप अपने साथ हुए अच्छी और बुरी दोनों घटनाओं को बता सकें जिससे आप कुछ भी न छिपाएँ।

इस उम्र में भी वे युवा जोश, अदम्य ऊर्जा और प्रतिबद्धता से लबरेज व्यक्तित्व के धनी है। प्रधानमंत्री के रूप में बीते करीब पाँच वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने देश का नेतृत्व करने की अपनी क्षमता और कुशलता का परिचय दिया है। उनकी राजनीतिक धारा और प्रशासनिक नीतियों से किसी को मतभेद हो सकते है, लेकिन इस हकीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उनके कतिपय चारित्रिक गुण सार्वजनिक जीवन के मौजूदा वातावरण में उन्हें विशिष्ट बनाते है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के निर्वाचित प्रधानमंत्री होने के बावजूद उन्होंने अपने को परिवारवाद की राजनीति से बचाये रखा है। ऐसे राजनेता न सिर्फ भारत में, बल्कि समूचे दक्षिण एशिया में गिनेचुने ही है। भाई भतीजावाद ने देश के राजनैतिक परिवेश को बुरी तरह से अपने चंगुल में ले रखा है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी का परिवार आज भी मामूली आय वर्ग का है।

3.2.1 लेखक और कवि

प्रधानमंत्री मोदी के बारे में बहुत से लोग यही जानते है कि वह केवल एक राजनीतिज्ञ है। लेकिन सच्चाई यह है कि पीएम मोदी जी केवल राजनीतिज्ञ नहीं है। अगर वह राजनीतिज्ञ नहीं होते तो एक बहतरीन कवि और लेखक जरूर होते। लेकिन राजनीतिज्ञ होने के साथ साथ पीएम मोदी एक बेहतरीन लेखक और कवि दोनों है। उनकी रचनाओं में जो विचार प्रकट होता है वह बहुत ही कम लेखकों में देखने को मिलता है। लोगों के सामने यह भी प्रश्न खड़ा होता होगा कि आखिर पीएम मोदी कब लिखते है। लेकिन जी हाँ वह लिखते है और उन्होंने करीब एक दर्जन ऐसी पुस्तक लिखी है जो की खूब चर्चा में रही। उनकी गुजराती में लिखी कविताएँ आज भी लोग पढ़ते है और पढ़ना चाहते है। अब भले ही वह कम लिख पाते है लेकिन उन्होंने जो कुछ भी लिखा उसकी चर्चा होती रहती। 1972 में जब मोदी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े उसके कुछ ही सालों बाद देश में आपातकाल लग गया। उस समय भूमिगत रहते हुए मोदी ने आपातकाल के हालात को बड़ी नजदीक से देखा और उस दृश्यों को शब्दों में पिरोने का काम किया। मोदी की पहली पुस्तक ‘संघर्ष माँ गुजरात’ गुजराती में प्रकाशित हुई जिसकी चारों ओर सहारना हुई। इसी पुस्तक का हिन्दी संस्करण ‘आपातकाल में गुजरात’ का प्रकाशन भी हुआ। इसके अलावा मोदी की प्रमुख पुस्तकों में श्री गुरुजी एक स्वयंसेवक, यथार्थ धर्म, पत्रों में श्री गुरुजी प्रमुख है। इसके अलावा उनकी लिखी कविताएँ जो चर्चा के चर्चा में रही और समय समय पर जब वह बुद्धिजीवियों के बीच बैठते है तो अपनी कविताओं का पाठ करना नहीं भूलते।

पीएम मोदी के जीवन के कई ऐसे पहलू है जिनके बारे में केवल पीएम मोदी जानती है और दूसरा कोई नहीं। लेकिन जो भी उनके जीवन की खूबियों के बारे में पता चल पाया है। उसमें मोदी जी के व्यक्तित्व के कई पक्ष दिखाई पड़ते है। पीएम मोदी ने अपने ज्ञान जिज्ञासा को बढ़ाने के लिए दुनिया के कई देशों की यात्राएँ की और उन देशों से बहुत कुछ सीखा। सबसे मजेदार बात तो यह रही कि उन यात्राओं के दौरान विकास की जो योजनाएँ सामने दिखाई पड़ी उनको पीएम मोदी ने गुजरात में दिखाने का प्रयास किया।

एक जुझारु राजनेता और गुजरात के सफल मुख्यमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी से सभी परिचित है। लेकिन बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि नरेन्द्र मोदी एक लेखक भी है। अपनी युवावस्था में लिखी संवेदना से भरी उनकी ये कहानियाँ प्रेम और अनुराग के अलग-अलग पहलुओं को दर्शाती है। नरेन्द्र मोदी जी का

मानना है कि मातृप्रेम ही समस्त प्रेम का स्रोत है और उससे बढ़कर कोई सच्चा प्रेम नहीं है। मनुष्य के बीच अलग रूप है अलग प्रेम इसी मातृ प्रेम के विभिन्न चाहे वह प्रेम दो दोस्तों में हो, एक अध्यापक का अपने छात्र के लिए, एक डॉक्टर का अपने मरीज के लिए या फिर एक पति का अपने पत्नी के लिए हो। ये कहानियाँ पढ़कर आश्चर्य होता है कि इतने शक्तिशाली राजनीतिक व्यक्तित्व के पीछे इतना कोमल हृदय धड़कता है। ये कहानियाँ नरेन्द्र मोदी के बहुआयामी व्यक्तित्व का एक और पहलु उजागर करती है।

3.2.2 जिज्ञासु

प्रधानमंत्री मोदी हमेशा जिज्ञासु बने रहे और बने रहना चाहते है। नित नए प्रयोग करना उनकी आदत में शुमार है। वह नए प्रयोगों को बड़ी ही चुनौती के साथ लेते है और उस पर प्रयोग करने में जुट जाते है। ज्ञान विज्ञान के नए विषयों पर उनकी गहरी रुचि है। इसलिए वह अपनी यात्राओं के दौरान भी इस प्रकार की खोज में लगे रहते है कि यहाँ नया क्या है? क्योकि वह कहते है जब तक मनुष्य कुछ नया नहीं प्राप्त करता है तब तक न तो उसके कहीं जाने का कोई अर्थ है और न ही कोई काम करने कि सोच। इसलिए वह नए प्रयोगों को करते रहने में हमेशा प्रयत्नशील रहते है।

3.2.3 कुशल संगठनकर्ता

ये बात जग जाहिर है कि मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बनने से पहले नरेन्द्र मोदी एक कुशल जमीनी संगठनकर्ता थे। वो पंचायत चुनावों से लेकर संसदीय चुनावों तक संगठन के कार्यों में शामिल थे। उनके इनोवेटिव संगठन कौशल को एक उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है कि गुजरात भाजपा के प्रमुख सदस्य के रूप में उन्होंने किस तरह 1980 के दशक में अहमदाबाद नगर निगम का चुनाव जीतने में भाजपा की मदद की। संगठन की कार्य पद्धति में उनके नए प्रयोगों में दो बातों पर फोकस किया गया। पहला ये कि कार्य का विभाजन हो, ताकि ये सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक कार्यकर्ता के पास को एक काम हो, और प्रत्येक कार्य की जिम्मेदारी किसी एक कार्यकर्ता की हो। दूसरा पहलू ये सुनिश्चित करन को लेकर था कि प्रचार अभियान में एक भावनात्मक जुड़ाव हो। उन्होंने शहर और उसके प्रशासन पर अधिकार की बात करके भावनात्मक सम्बन्ध बनाया।

अहमदाबाद में चुनाव प्रचार के दौरान सामुदायिक आयोजनों की खासियत यह थी कि कार्यकर्ताओं के साथ जमीनी स्तर पर जुड़ाव स्थापित किया गया और 1000 मोहल्ला स्तर की सभाओं के जरिए नागरिकों के साथ सम्बन्ध जोड़ा गया। इन 1000 सामुदायिक स्तर की सभाओं की तैयारियों के लिए उन्होंने 100 कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रशिक्षण में इस बात पर ध्यान दिया गया कि कार्यकर्ताओं को सामुदायिक स्तर की बैठकों में क्या करना है? किन मुद्दों को उठाना है और क्या दलीलें देनी है ? एक चुनाव रणनीति के लिहाज से ये एक अनोखा और मौलिक कदम था। सामुदायिक स्तर की बैठकों में 25 से 30 लोगों का समूह होता था, जिनमें से मुखर वक्ताओं को नगर की समस्याओं के बारे में बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। इस प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी के लिए दोपहर 2 बजे के बाद सिर्फ महिलाओं की बैठक की शुरुआत की गई। यहाँ तक कि वो एक नगर निगम चुनाव प्रचार के लिए अटल बिहारी वाजपेई जी को लाने में कामयाब रहे। जमीनी स्तर पर संगठन के लिए नरेन्द्र मोदी के तरीके के अनूठेपन के बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है। इसमें वालंटियर्स की ट्रेनिंग, एक भावनात्मक लोकल कनेक्ट के साथ स्वयंसेवकों की लामबंदी ने अहमदाबाद निकाय चुनावों में भाजपा की जीत के लिए आधार तैयार किया। इसके साथ ही नरेन्द्र मोदी ने जमीनी स्तर पर फोकस के साथ पूरे राज्य में संगठन को मजबूत करने का एक नमूना प्रस्तुत किया। ये कहानी एक के बाद एक चुनावों में दोहराई गई, चाहें गुजरात के चुनाव हों, या एक महासचिव के रूप में लोकसभा चुनाव हों या फिर जब श्री मोदी 2001 में चुनावी राजनीति में शामिल हुए तब। लोगों के साथ जुड़ाव कायम करने और उनकी जरूरतों तथा आकांक्षाओं को समझने की उनकी योग्यता बहुत लाभदायक रही।

3.2.4 सेवा : ईश्वर का प्रसाद

समग्र देश में राज्य सरकारें दिव्यांगों के लिए अपने बजट में कुछ धनराशि रखती है और दिव्यांगों के विकास के लिए योजनाएँ बनाती है। देशभर में इस क्षेत्रों में काम करने में गुजरात के अग्रसर होने के उपरान्त भी एक पीड़ा है कि अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है।

ईश्वर ने जिसे कुछ नहीं दिया, वह दया का पात्र है। यह बात हमें स्वीकार नहीं है। सम्भव है, शेष लोगों की संवेदना कुंठित न हो जाए, इस कारण भेद स्वरूप इस संवेदना को जन्म दिया होगा। इन सब बातों

को ईश्वर के प्रसाद के रूप में स्वीकार करना चाहिए। भक्ति भाव से जब देखे तो ही इस समग्र बात का इसके सही परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन कर सकते है।

समाज के लिए कुछ करना है, यह भाव प्रत्येक में जागे बहुत ही आवश्यक है। आजादी के बाद हमारा देश दो शब्दों के जाल में फँस गया। इन दो शब्दों ने हम सबको उत्तरदायित्वहीन बना दिया है। ये दो शब्द अपने जीवन में पूर्ण रूप से स्थापित हो गए है। इन्होंने एक रोग का स्वरूप धारण कर लिया है और इसका हमें अंदाजा भी नहीं है। उन्होंने एकदम स्वाभाविक रूप से हमारे जीवन में स्थान बना लिया है। ये दो शब्द है मुझे क्या? और मेरा क्या? कुछ भी हो जाए तो बस कह देते है मुझे क्या? पत्थर पड़ा होगा, मुझे क्या भाई? भले ही ईश्वर ने इन्हें दिव्यांग बनाया है। काम तो चलेगा, पर मेरा क्या है?

मुझे क्या? मेरा क्या? इससे बाहर आने के लिए अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह के सात फेरों की लड़ाई लड़नी पड़ेगी। स्वयं के साथ लड़ना पड़ेगा, परिवार के साथ लड़ना पड़ेगा, मित्रों के साथ लड़ना पड़ेगा। मानसम्मान, बड़प्पन इन सबके साथ लड़ना पड़ेगा और उसमें से सिर ऊँचा करके बाहर आना पड़ेगा।

मुझे स्मरण है, मोरबी में मच्छु डैम टूटने पर जो बाढ़ आई थी, तब मै मोरबी में काम करता था। सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो गई थी। बहुत बड़ी अनहोनी हुई थी। अच्छे-अच्छों का कलेजा काँप जाए, यह ऐसी घटना थी। उस समय हम आर.एस. एस. के स्वयं सेवक मोरबी में काम करते थे। काम इतना बड़ा था कि विभिन्न जिलों से कार्यकर्ताओं की टुकड़िया बुलाई गई थी, जो मोरबी में पाँच सात दिन तक सफाई का काम करती थी। मुर्दे उठाना, मुर्दों का अग्नि संस्कार करना, लोगों के लिए रोजीरोटी की व्यवस्था करना, खाने पीने की व्यवस्था करना, ऐसे बहुत से काम हम लोग करते थे। फिर भी वहाँ छिद्रान्वेषी लोग आ जाते थे। हम जहाँ काम करते थे वहाँ ये गलती, दोष देखने वाले लोग आ जाते और हमारे छोटे-छोटे बाल किशोर स्वयं सेवकों को पकड़ते और कितनों के ऊपर आरोप लगाते थे कि तुम मुर्दे के ऊपर के गहने चुराने के लिए आए हो। हमारे देश में ऐसे दिमागों की भरमार है और उनके आरोप भी एकदम मौलिक होते है। सुबह से शाम तक ऐसे एकाध दर्जन नमूने आ जाते। मेरे मन में एक विचार आता है कि ऐसे आरोपों का एक शब्दकोश बनाया जाए कि कपोल-कल्पना रखने वाले दिमाग आकर कहाँ-कहाँ से ऐसे आरोपों को पैदा कर सकते है।

नाम नहीं बताऊंगा, परन्तु एक बहुत ही बड़े व्यक्ति थे। हमारे दो तीन स्वयंसेवक एक बालक की मृत देह को लेकर जा रहे थे। बालक की मृत देह का वजन बहुत हो गया था। सामान्य रूप से उसे कोई उठा नहीं सके, उसकी देह इतनी भारी हो गई थी। उक्त भाई ने स्वयं सेवकों से पूछा यह काम मिलिट्री वाले नहीं करते है, पुलिस वाले भी नहीं करते है, ग्राम रक्षक दलवाले नहीं करते है, इस गाँव के लोग नहीं करते है, जिनका बच्चा मर गया है, वे भी नहीं करते है, तो तुम किस लिए कर रहे हो? तब उन आठवीं-नवीं कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी आरएसएस के स्वयंसेवक उनकी आँख से आँख मिलाते हुए थोड़ी देर उन्हें देखते रहे कि ऐसा सवाल भी क्या कोई कर सकता है? फिर स्वयंसेवकों ने उनसे प्रश्न पूछा- अरे, हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? यह हमारा समाज है। हमारे भाई-बन्धु है। चाहे हम अमरेली से आए है, सूरत से आए, वलसाड से आए है, परन्तु ये अपने समाज के है, अपने भाइयों के समान है। हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? यह है समाज के लिए एकात्मकता की अनुभूति। उनका दु:ख मेरा दु:ख, उनका सुख मेरा सुख। यह भावना मनुष्य को सेवा करने के लिए प्रेरित करती है।

कई बार लोग दया की भावना से काम करते है। हमें स्कूल में पढ़ाया गया होगा या पढ़ते समय निबन्ध में लिखा हुआ कि मैंने आज एक अन्धे मनुष्य को रास्ता पार कराने में मदद की। सेवाकार्य के लिए लिखने को कहा गया हो तो हम सबने लगभग यही बात लिखी होगी, तब मेरे मन में एक प्रश्न उठता है कि हमारे गाँव में इतने अधिक अन्धे लोग है तो क्या स्कूल के 300 बालकों ने उनको रास्ता पार कराया होगा? उससे कोई संवेदना नहीं जाएगी। दु:ख-दर्द की अनुभूति तो करनी पड़ती है। अपने आपको उस स्थिति में रखना पड़ता है, उसकी व्यवस्था करनी पड़ती है। सही अर्थों में जिसे ईश्वर ने संकट में रखा है, संकट दिया है, उसके प्रति दयाभाव नहीं, उपकार का भाव नहीं, आत्मीयता का भाव चाहिये। यह दया भाव तो हमारे अपने अहं के पोषण के लिए है। उपकार भाव भी हमारे अहं के पोषण के लिए ही है और इसमें तो सामने वाले की भावना को कुंठित करने का एक सुन्दर, अच्छा, मजेदार, गुलाबी आवरण का छुपा हुआ षड्यंत्र है। यह मेरे समाज का अंग है। इससे दया का भाव नहीं, उपकार भाव नहीं, बल्कि आत्मीयता का भाव, अपनेपन का भाव हो, इसकी आवश्यकता है। यह एक समाज का उत्तरदायित्व है। हम सब लोगों की सामाजिक जवाबदेही है। जैसे गाँव में यदि कोई घर आग से जलता है तो सारा गाँव उस आग को बुझाने के लिए दौड़ कर आ जाता

है। उस घर के साथ किसी के सम्बन्ध अच्छे नहीं हो तो भी आ जाता है। उसमें एक सामाजिक उत्तरदायित्व का अनुभव होता है। ठीक इसी प्रकार ये सब हमारे समाज के अंग है, उससे सामाजिक उत्तरदायित्व की अनुभूति हो तो कभी भी, किसी कारण से जिनके जीवन में यह स्थिति आ जाती है, उन्हें किसी भी चीज की कमी महसूस न हो। उन्हें समाज की कृपा की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़े। उन्हें यह विश्वास हो कि यह समाज तो ईश्वर रूप है। यह समाज मेरी देखभाल अवश्य करेगा और इससे उनके आत्मविश्वास में हजार गुना वृद्धि होगी। इस आत्मविश्वास से भरा हुआ हमारा स्वजन हमारे राष्ट्र के विकास में सहभागी बनने की सामर्थ्य रखता है।

3.2.5 संवेदना की अनुभूति

अपने समाज में दिव्यांगों के लिए कैसा भाव होना चाहिए? किसी भी परिवार में एकाध सदस्य दिव्यांग है तो यह दायित्व उस परिवार का ही नहीं, समग्र समाज का होना चाहिए। समाज यदि परिवार बनकर एक कुटुम्ब की सहायता और उसका साथ ठीक वैसे ही जैसे अपने स्वजनों का देता है तो सारी व्यवस्थाएँ एकदम सहज और हल्की फुल्की हो जाती है। कभी भी भार रूप में नहीं लगती है। सारी बात दया भाव और करुणा भाव से नहीं बल्कि कर्तव्य भावना से जुड़ी हुई होनी चाहिए। अगर यह दया भाव से या करुणा भाव से जन्मे तो इसे तपस्या नहीं कह सकते है। ईश्वर जब हमें यह कार्य सौपता है, तब उसके प्रति सहानुभूति चाहिए, संवेदना चाहिए। जिस वेदना का वह अनुभव करता है, उसे जो वेदना मिलती है, जो मेरा भाव विश्वास है, ठीक वैसा ही भाव-विश्वास उसका है। उसके भाव विश्वास का साक्षात्कार हो, आदर हो और हमें यदि ऐसा भाव नहीं होता है तो निश्चय ही हमें ईश्वर ने दिव्यांग बनाया है। जो दिखाई देती हुई शरीर की क्षति है, उसे दिव्यांग मानने की भूल नहीं करनी चाहिए। दिव्यांग व्यक्ति की किसी कमी से यदि संवेदना का भाव मेरे अन्दर नहीं जागता है तो हाथ पाँव, आँख, नाक सब कुछ सहज होने के बाद भी मैं दिव्यांग हूँ। मुझमें इन संवेदनाओ का अभाव है और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अन्दर अपना परीक्षण करना चाहिए कि मैं अन्दर से कहीं दिव्यांग तो नहीं हूँ। कोई भी समाज यदि अन्दर से दिव्यांग हो तो कभी भी प्रगति नहीं कर सकता है। उसका मन परत्व की रचना समाज की सर्वांगीण उदारता से यदि जुड़ा हो तो भी मेरा भाई है, ऐसा भाव सरल रूप में प्रकट होता है। परिवार में एक की भी यदि ऐसी स्थिति हो तो उसे सहेजने में, संभालने में माँ-बाप, भाई-बहन को कितना प्रयत्न करना पड़ता है, जिसके परिवार में कोई दिव्यांग हो, इसे

वही जान सकता है। एक संस्था के रूप में जब ऐसा होता है, तब उसमें काम करने वाला प्रत्येक व्यक्ति एक साधक है, साधना करता है, मैं नहीं मानता हूँ कि इससे बड़ा कोई पुण्य का यज्ञ हो सकता है। इसके साथ जुड़ा हुआ प्रत्येक व्यक्ति जो भी छोटा बड़ा कोई भी योगदान करता है, वह सही अर्थों में साधक है।

पप्पाजी (स्वर्गीय प्राणलाल ब्रजलाल दोशी, जो गुजरात प्रान्त के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघ चालक थे) के जीवन में से एक बात सतत धाराप्रवाह रूप में देखने को मिलती है 'करुणा और कर्तव्य का एक विरल संगम'। राजकोट के जीवन के बारे में जानना चाहें तो बहरे और गूंगे लोगों की पाठशाला का परिचय देना ही पड़ेगा। बहरे और गूंगों की पाठशाला के विषय में विचार करते ही संस्था रूप जीवन अर्थात पप्पाजी की करुणा और कर्तव्य की धारा के स्पर्श की अनुभूति। पप्पाजी की बेटी को ईश्वर ने शारीरिक कमी दी थी। व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन की इस कमी को समाज के साथ जुड़कर, समाज के ऐसे सभी बच्चों को अपना मानकर मेरी बेटी को जो कुछ मिलता है, वही सबको मिले, ऐसी करुणा का विस्तार करने वाले पप्पाजी जैसी करुणा की मूर्ति भाग्य से ही देखने को मिलती है। राजकोट की बहरों गूँगों की पाठशाला पप्पाजी में प्रकटी करुणा का जीता जागता स्मारक ही है।

पप्पाजी ने अपने अन्तर्मन का व्यापक विस्तार किया था। परिणाम स्वरूप राजकोट की बहरों और गूँगों की यह पाठशाला उनके लिए मंदिर से भी अधिक महत्वपूर्ण थी। पप्पाजी के पारस रूप व्यक्तित्व का सीधा प्रभाव इस बहरे गूँगों की पाठशाला में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति मानो साधक रूप ही लगता है। इसका कारण पप्पाजी का पारस जैसा व्यक्तित्व ही है।

बहरे गूँगों की इस पाठशाला के लिए पप्पाजी की ममता, उसके लिए प्रवृति का लगाव गजब का था। कभी-कभी ऐसा लगता है कि पप्पाजी को परिवार की अपेक्षा इस पाठशाला का मोह अधिक है। दिव्यांग की तरफ देखने का पप्पाजी का दृष्टिकोण संघ संस्कार का व्यावहारिक रूप ही लगता है। स्वस्थ समाज परिवार भाव से दिव्यांगों का दायित्व उठाए तो दिव्यांग व्यक्ति उसके परिवारजनों और समाज को हल्के फूल जैसा ही लगेगा। उनके प्रति मात्र सहानुभूति नहीं, बल्कि संवेदना चाहिए। संवेदना की अनुभूति हो, जिस वेदना को दिव्यांग अनुभव करता है वैसी ही वेदना समाज भी अनुभव करें।

3.2.6 अपनेपन का एहसास

दुर्घटनाएँ नही घटनी चाहिए, परन्तु घट ही जाएँ तो जो इसका भोगी बनता है, वह अकेला पड़ जाता है। उसे ऐसा लगता है अरे, यह सब ईश्वर मेरे साथ ही करता है, मेरी ही परीक्षा लेता है। जीवन समाज का लक्षण है कि दु:ख एक के घर में आया हो, परन्तु इसकी अनुभूति सभी को हो कि हम सब साथ है, यह हम सबकी सामूहिक तकलीफ है। शायद इस दु:ख को झेलने के लिए ईश्वर ने आपको पसन्द किया या निमित्त बनाया है, परन्तु यह पीड़ा हम सबकी है। हम कंधे से कंधा मिलाकर आपके साथ खड़े है। यह कोई मुआवजा नहीं, यह मौत का मूल्य नहीं है। यह मात्र और एकमात्र अपनेपन का एहसास है और किसी भी समाज में यह अपनेपन की, अपना होने की शक्ति बहुत बड़ी होती है। ऐसे प्रसंग जब घट जाते है, बन जाते है, तब समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा जागती है। एक अच्छा काम करने की बात ही दूसरा अच्छा काम करने की प्रेरणा देती है। इस शक्ति के भरोसे पर समाज आगे बढ़ सकता है।

घर में भी बालक को सतत ऐसी तकलीफ हो, इस विषय में जो लोग मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में काम करते है, अपंग बालकों की सेवा करते है अथवा बहरे गूंगे बच्चों की सेवा करते है, उन्हें ही सही बात का पता होता है। यहाँ आपने देखा कि वह बहन ट्रे में चेक लेकर आ रही थी, वह चेक उस युवक ने ट्रे के साथ ही उठाने का प्रयत्न किया और हम सब हंस पड़े। हमें पता नहीं था कि वह युवक न तो सुन सकता है, न ही बोल सकता है। उसे ईश्वर ने शक्ति नहीं दी, इसके बावजूद वह इस लड़ाई के मैदान में है। अभी उसने एक छोटी सी भूल की और हमारे लिए वह भूल मनोरंजन का साधन बन गई, क्योंकि हमको इसका एहसास नहीं। हमको इस युवक की स्थिति का अंदाजा नहीं था और अंदाज हो जाने के बाद आप सबके मन पर जो बीती होगी, उसका मैं अनुमान लगा सकता हूँ। आपके भीतर भी संवेदना है, आपके दिल में अपार प्रेम और स्नेह है। इसी कारण इस अनुभूति का साक्षात्कार हो सका है। अपंग अथवा बहरे गूंगे की पाठशाला के जो संचालक होते है, उन्हें विशेष प्रशिक्षण मिलता है। वे एक ऐसा वातावरण पैदा करती है कि भाई, उसे कभी भी कमी या कमजोरी का अनुभव मत होने दो कि तुझमें कुछ कमी है। उसे हमेशा उसमें स्थित शक्ति का अनुभव कराएँ तो वह उसकी प्रगति का पूरक बनेगा। सामाजिक जीवन में यह आवश्यक है।

हमारा देश विकसित नहीं, विकासशील है। हम विकासशील है। इसका तात्पर्य है कि हममें बहुत कमियाँ है, जैसे एक बहरे गूंगे बालक में होती है। एक मानसिक रूप से अपंग बालक में होती है। कोई

बालक शारीरिक रूप से अपंग होता है। 21वीं सदी में राष्ट्र को जितनी शक्तियाँ चाहिए, वे सारी शक्तियाँ अपने यहाँ, अपने पास नहीं है, परन्तु कमियाँ है। हम सतत इन कमियों को कोस-कोस कर इस राष्ट्र को निराश करने में गौरव महसूस करते है। अपनी कमियाँ है, परन्तु शक्तियों का विचार कर हम इस राष्ट्र को शक्तिशाली बनाना चाहते है? इस विचारधारा को बदलने की आवश्यकता है। जो सही है, उसे लेकर एक बार अच्छेपन का एहसास कर हम परिस्थिति को बदल सकते है। हम सब मिलकर मेहनत करें तो ही यह होगा। सभी एक दिशा में मिलकर काम करें तो होगा। आधा अभी और आधा बाद में करें तो नहीं होगा। जहाँ खड़े है वहीं खड़े रहेंगे। सब साथ मिलकर काम करें तो इस देश में आगे बढ़ने की अपार शक्ति है। भूकम्प के बाद जो हुआ, उसे देखो। समग्र देश हाथ बढ़ाकर सहायता के लिए गुजरात में पहुँच गया। इस देश का कोई कोना ऐसा नहीं था, जब गुजरात मौत की चादर ओढ़ कर सोया हुआ था। जहाँ से मदद करने यहाँ नहीं पहुँचा हो। समाज में इतनी शक्ति होती है। तब उसकी अच्छाई को उजाकर करें तो कितना बड़ा परिवर्तन आएगा।

3.2.7 स्वास्थ्य समाज का निर्माण

हम अपने देश के मूल चिंतन को छोड़कर अन्य स्थानों पर उपाय ढूंढते रहते है, इस कारण से समस्याओं में फँस जाते है। हमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम स्वीकार नहीं, इसका सीधा-सादा अर्थ है कि राम का रास्ता स्वीकार नहीं। उसके निवारण के लिए समारोह करने पड़े। हमारे यहाँ तो प्रत्येक प्राणी में ईश्वर का निवास है। समग्र सृष्टि में जीव मात्र का निवास है। यह हमारा तत्वज्ञान है। इससे अलग दूर गए अर्थात वृक्ष को काट डाले, कारण कि वृक्ष में हम प्राण नहीं देखते है। हम मूल विचार और आदर्शों से दूर जा रहे है। हजारों वर्षों का जीवन होने के उपरान्त पर्यावरण की समस्या आई है। हमने प्राकृतिक जीवन को श्रदाजलि दे दी है और उसका परिणाम यह रहा कि हमने सारे जीवन को रौंद डाला।

एक समय ऐसा था कि हमारे पूर्वज घर में भोजन करते थे और शौच क्रिया के लिए बाहर जंगल में जाते थे। आज हम भोजन बाहर करते है और शौच क्रिया घर के अन्दर करते है। आप देखिए, कैसे सहज रूप से जीवन को बदल डालते है। गणेश बीड़ी, विवेकानन्द प्रसूत अस्पताल, हम इसकी कल्पना कर सकते है? इसका मूल कारण है कि हम अपने जीवन का मूल और अर्थ भूल गए है। अर्थ जहाँ भूल गए तो अनर्थ होगा

ही। अनर्थ को न्योता देने के लिए हम स्वागत में खड़े है। कोई भी समस्या के मूल में जो मूलभूत कारण है, उन्हें भूल जाते है, तभी अर्थ में से अनर्थ और अनर्थ में से विनाश के मार्ग को न्योता देते है।

कई बार लोग कहते है कि आज के समय में समाचार माध्यमों का बहुत प्रभाव है। मेरा एक मित्र दिल्ली में रहता है और एक टीवी चैनल में काम करता है। मैं जब भी उससे मिलता हूँ तो उसके मुँह में 100-50 ग्राम मसाला भरा ही होता है। मैंने कहा कि तुम टीवी में एँकर के रूप में काम करते हो, टीवी पत्रकार की तरह काम करते हो। तुम टीवी प्रोग्राम का संपादन करने के लिए जाते होंगे, परन्तु तुम्हारे ऊपर टीवी का कोई भी प्रभाव दिखाई नहीं देता है। मैं रोज टीवी पर देखता हूँ कि तम्बाकू खाना हानिकारक है। इसके बाद भी तुम तम्बाकू खाना बन्द क्यों नहीं करते? टीवी पर रोज आता है कि सिगरेट पीना शरीर के लिए बहुत हानिकारक है। समाचार पत्रों में भी आता है। इसके बावजूद मनुष्य के ऊपर इसका कोई प्रभाव क्यों नहीं पड़ता है? इस विषय में चिंतन करने की आवश्यकता है।

कैंसर के मरीज, पीड़ा देने वाली उनकी तस्वीरें, परिवार से स्वजन खोने से पैदा होती वेदना इस कारण से जिंदगी में छाए ये धुएँ के बादल मानो इस आतंकवाद ने समग्र युवा पीढ़ी को समाप्त करने का बीड़ा उठाया है। सही और अच्छा जीवन जीने वाली युवा शक्ति को तहसनहस करने का यह एक योजनाबद्ध प्रयास चल रहा है। देश के दुश्मन युवकों में नशे की लत डालते है।

पुरुष घर का मुखिया हो और वह शराब या सिगरेट जैसी व्यसनों की लत से ग्रस्त हो तो घर में तबाही आ जाती है। जिनके भरोसे बचे हुए है, वही भरोसे टूट जाए तो कितना बड़ा नुकसान होगा। इसके लिए आवश्यक है प्रतिबद्धता की, जागृति की मुझे कोई उपदेश देने का अधिकार नहीं है, परन्तु हमें आने वाली पीढ़ी को बचाने का प्रयास करना चाहिए। समाज में सामर्थ का जागरण हो। ऐसी शक्ति की संगठित सामर्थ ही सदाचार को आएगी। इससे ही आने वाले कल में एक स्वस्थ समाज खड़ा होगा और इसका लाभ आने वाली पीढ़ी को प्राप्त होगा।

3.2.8 महात्मा गाँधी का मार्ग

जो सही अर्थों में हिन्दुस्तान की आत्मा को पहचानता है और वास्तव में हिन्दुस्तान की धरती में पलकर बड़ा हुआ है। सबका ध्यान स्पर्धा के इस युग में गाँधीनगर की ओर जाए

बिना नहीं रहेगा। गाँधी के प्रति श्रद्धा गाँधी थे, उससे अधिक दृढ़ अब बनने की संभावनाएँ है। महात्मा गाँधी का ग्राम अर्थकरण का विचार, महात्मा गाँधी का समाज में वर्गभेद को दूर कर एक समरस समाज निर्माण करने का प्रयास, गाँधी का स्वावलंबन का विचार इस 100 करोड़ के देश को समृद्ध करने के लिए आज पहले की अपेक्षा अधिक प्रसांगिक है। यह मेरी दृढ़ मान्यता है, मेरी श्रद्धा है। इसी कारण गुजरात ने आर्थिक विकास के क्षेत्र में ग्राम विकास को प्राथमिकता दी है। राज्य सरकार ने ज्योति ग्राम योजना शुरू की है। अहमदाबाद या गाँधीनगर के निवासी जब इच्छा हो तब बिजली बत्ती जलाकर पुस्तक पढ़ सकते है।

क्या कारण है कि गाँव का व्यक्ति बिजली के लिए परेशान होता है। क्या आजादी के इतने वर्षों बाद महात्मा गाँधी की एक छोटी सी इच्छा पूरी नहीं हो सकती है कि समाज के प्रत्येक स्तर के बीच का अन्तर घटे, शहर और गाँव के बीच का अन्तर कम हो। राज्य सरकार ने ज्योति ग्राम योजना का द्वारा गाँवों में 24 घण्टे थ्री फेज बिजली देने का एक अभियान शुरू किया है। मेरा प्रयत्न है कि 18000 गाँवों में 24 घण्टे थ्री फेस बिजली मिले, गाँव का जीवन स्तर सुधरे, गाँव का अर्थकरण मजबूत बने, गाँव की पैदावार और आमदनी में वृद्धि हो। गाँव में कृषि आधारित उद्योगों का विकास हो। बालक को अहमदाबाद शहर में जैसी कम्प्युटर की शिक्षा मिलती है, वही कम्प्युटर शिक्षा गाँव में बिजली आने के बाद गाँव के स्कूल के बालक को भी मिले। अहमदाबाद में बैठा हुआ आदमी इण्टरनेट पर शिकागो स्थित अपने साथी से बात कर सकता है। गाँव का आदमी या बालक भी वाशिंगटन में रहते अपने किसी मित्र के साथ इण्टरनेट पर बात क्यों नहीं कर सकता है? इस बिजली का लाभ उसे भी मिलना चाहिए। यह गाँधी जी के सपने को साकार करने का प्रयास है।

मैं भ्रष्टाचार पर कुछ भी कहना नहीं चाहता हूँ। इसके बारे में इतना कुछ कहा जा चुका है। इसी कारण मैं इस विषय पर बोलने की हिम्मत नहीं करता हूँ, परन्तु मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि क्या भ्रष्टाचार का अन्त सम्भव है? मेरी आत्मा कहती है कि महात्मा गाँधी के विचारों में भ्रष्टाचार को समाप्त करने की पूरी-पूरी सकती है। महात्मा गाँधी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त लीजिए। देश आजाद हुआ, तब से गाँधी के मार्ग पर चलना प्रारम्भ किया होता तो यह ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त समग्र समाज रचना की रीढ़ बन गया होता। आज भ्रष्टाचार समाज को दीमक की तरह खा रहा है, अन्दर से खोखला कर रहा है। इससे समाज को बचाया जा

सकता था। राज्य सरकार ने इस ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त पर अमल करने का एक छोटा सा प्रयास किया है और उसका अद्भुत परिणाम प्राप्त हुआ है। इस अद्भुत परिणाम की ओर मैं सबका ध्यान खींचना चाहता हूँ। भूकम्प के बाद पुनर्वास का कार्य चल रहा था। उस समय सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा जो कमरे बनाए जाने थे, उसके लिए गाँव-गाँव में स्थानीय लोगों की एक समिति बनाई गई। उन्हें एक नक्शा दिया गया और स्कूल द्वारा कमरे बनाने में सब मिलकर कितना व्यय होगा, इसका हिसाब बनाया गया। उसी हिसाब के अनुसार उन्हें रुपए दिए गए और कहा गया आप इसके ट्रस्टी है। ये स्कूल के कमरे अच्छे बने, जल्दी बनें, अपने गाँव में से भूकम्प का असर शीघ्रता शीघ्र समाप्त हो जाए और बच्चे पढ़ने लगें, यह उत्तरदायित्व आप सबका है। अब आपको सब सौंप दिया इतना कहकर वहाँ से सरकार ने अपना हाथ खींच लिया। इस ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त के आधार पर अनेक गाँवों में ये रुपए गाँव के लोगों के हाथ में दिए गए थे। पाँच-सात लोगों की समिति बना दी गई और रुपए दे दिया गया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा, गौरव होगा कि पहले जो कमरे बनाने थे, उससे अधिक मजबूत कमरे बने। जिस आकार के बनाने थे, उससे बड़े बनाए गए। कभी जरूरत पड़ी तो गाँव के लोगों ने ही 200, 500 बार अपने खेत की जमीन भेंट में दे दी। कई लोगों ने इसमें अपने श्रम का योगदान दिया। इस प्रकार जो कमरे इन लोगों ने बनाए, वे समय से तीन चार माह पूर्व ही बन गए। इतना ही नहीं, करोड़ों करोड़ों रुपए जो यह काम करते हुए बचे, उन्हें सरकारी कोष में जमा करवा दिया। हिन्दुस्तान की आजादी के इतने वर्षों में सरकार के पास रुपए वापस आए है, ऐसी यह पहली घटना थी। इसका कारण महात्मा गाँधी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त था। इस सिद्धान्त को यदि अमल में लाया जाए तो कितना बड़ा परिणाम आ सकता है, इसका यह जीवन्त उदाहरण है।

यह सत्य है कि इस जीवन में शक्ति है। इस विचार में जीने वाले लोगों का शायद अभाव हो तो भी कम ज्यादा प्रमाण में दम्भ के बिना इस बात को लोगों तक पहुँचाएँ तो इस सिद्धान्त में आज भी परिवर्तन लाने की ताकत है। श्रद्धा रखना बहुत ही आवश्यक है। जो श्रद्धा हो तो सिद्ध चरण धोती है। इस भूमिका को ध्यान में रखकर जो भी काम करेंगे तो अच्छा परिणाम प्राप्त कर सकते है।

सारे विश्व के मानव समुदाय में हमारा पालन पोषण अलग प्रकार से हुआ है। ऋषि मुनियों के समय में हमारे पूर्वजों का पालन पोषण प्रकृति की गोद में हुआ था। उनका जीवन नदी के किनारे पर पल्लवित हुआ

था। भारतीय संस्कृति का विकास पूर्णतया नदी के किनारे हुआ था। हमारे पूर्वज उस समय के स्थल, काल और परिस्थिति के अनुसार एक विषय के बारे में विशेष आग्रही थे। यह आग्रह परम्परागत रूप से आज भी जन्म घुट्टी में मिलता है और ये व्यक्तिगत स्वच्छता के संस्कार। स्वच्छता के विषय में शौच से लेकर पेशाब करने जाने तक, फिर आकर स्नान करने से जूते उतार देने तथा हाथ धोने तक की व्यक्तिगत आरोग्यलक्षी शिक्षा अपने परिवार और समाज में स्वाभाविक रूप से विस्तृत है। दुनिया के अन्य देशों में देखने को मिलती यह बात भारत में परम्परागत स्वरूप में आई है। विश्व के अन्य देशों में सामाजिक स्वच्छता के बारे में पूर्ण जागृति है। सामाजिक आरोग्य की उपेक्षा हो तो एक प्रकार की घृणा का वातावरण पैदा होता है। कागज का एक टुकड़ा फाड़ा तो उसे अपनी जेब में रख लेते है। जहाँ तक कचरा पेटी नहीं मिले, उसे बाहर नहीं फेंकते है। ऐसी सामाजिक सजगता का स्वभाव अन्य देशों में विकसित हुआ है। उनका व्यक्तिगत स्वच्छता का विज्ञान कैसा है, उसकी टीका करने का अधिकार नहीं है, परन्तु सामाजिक स्वच्छता के विषय में विश्व के अनेक देशों से हमें सीखना चाहिए। अपने पास में सिंगापुर है, उसने स्वच्छता के बारे में सारे विश्व में एक नया मार्गदर्शन किया है। वहाँ रहने वालों में समाज का एक बड़ा हिस्सा हिन्दुस्तान से गया हुआ है। उन्होंने कानूनी व्यवस्था खड़ी कर सामाजिक आरोग्य के विषय में एक जबरदस्त सजगता खड़ी की है। सिंगापुर ने आर्थिक समृद्धि के क्षेत्र में भी उसकी स्वच्छता के कारण ही एक नई पहचान बनाई है।

आने वाले दिनों में गुजरात सारे विश्व को प्रभावित करें, ऐसा एक नया मेडिकल प्रवास का क्षेत्र यहाँ खुल रहा है। गुजरात की स्वास्थ्य संस्थाएँ सारे विश्व के मेडिकल प्रवास के लिए गुजरात के आँगन में लाने की सामर्थ्य रखती है। परन्तु इसमें सफलता प्राप्त करना है यह पहली शर्त है। सामाजिक स्वच्छता विज्ञान, सार्वजनिक स्वच्छता, सार्वजनिक सफाई। इस बारे में हमें एक उत्तरदायी समाज के रूप में जवाबदेही उठानी पड़ेगी। यह नहीं चल सकता कि सुबह सफाई कर्मचारी आएगा, तब सफाई करेगा। इससे बात नहीं बनेगी। हमारी अपनी सामाजिक जवाबदेही होनी चाहिए। अपने घर की गन्दगी, मैं गाँव में नहीं फेंकूंगा, अपने घर की गन्दगी मैं मोहल्ले में नहीं डालूँगा। मेरे द्वारा गन्दगी करने में कोई भी सहयोग नहीं होगा, बढ़ोतरी नहीं होगी। हम लोग भारत माता की जय, भारत माता की जय, बोल बोलकर गला दुखा लेते है। वंदेमातरम कहते-कहते अपना गला फट जाता है। इतने नारे लगाते है और एक घण्टे के बाद इसी भारत माता के ऊपर पान की

पिचकारी मारते है। भारत माता के ऊपर हम गुटका खाकर अभिषेक करते है। इस कृत्य ने माँ की पूजा के ऊपर पानी फेर दिया, ऐसा कहना चाहिए। ऐसे तो हमारी भारत माता की पूजा अधूरी रह जाती है। इस कारण हमें सामाजिक स्वच्छता विज्ञान के विचार को विकसित करने की आवश्यकता है।

एक दूसरा विचार हमने किया है समरसता का। महात्मा गाँधी ने अस्पृश्यता दूर करने के लिए अलख जगाई थी। वर्गभेद को दूर किए बिना, एकरस समाज का निर्माण किए बिना किसी भी समाज का भला नहीं होगा। समाज की शक्ति समाज की एकता में रहती है। यह ऊँच-नीच का भाव, स्पृश्य-अस्पृश का भाव, अच्छी नौकरी के प्रति आकर्षण। इस प्रकार की ग्रन्थियों से समाज को बाहर लाना होगा। समरस गुजरात के इस मंत्र के आधार पर हम सबको बहुत प्रयास करना पड़ेगा। हमारे देश में गाँधी-विचार के पूर्णता पर नहीं पहुँचने के कारण हमने समता का सिद्धान्त तो स्वीकार किया, परन्तु समरसता के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं कर पाए। समता के सिद्धान्त से हमें ऐसा लगा कि समता होगी तो समरसता तो आ ही जाएगी। एक सवर्ण का लड़का बैंक में अधिकारी है और एक दलित का बेटा भी बैंक में अधिकारी है। दोनों को समान वेतन मिलना है। समता तो आ जाएगी, परन्तु इस समता के आने से समरसता भी आ जाएगी, इसकी कोई गारंटी नहीं होती। समता के लिए शायद आर्थिक बराबरी हो, जीवन शैली में बराबरी हो, परन्तु समरसता के लिए तो मन को बड़ा करना पड़ता है। मन बड़ा हो तब समरसता आती है। महात्मा गाँधी ने मन को बड़ा करने के लिए प्रयास किया था। मन बड़ा कैसे हो? मन की ऊँचाई कैसे बढ़े, इसके लिए हम प्रयत्न करें और राज्य सरकार इस समरसता के सिद्धान्त द्वारा मन को बड़ा करने का, मन की ऊँचाई को बड़ा करने का प्रयास कर रही है। 'अहं ब्रह्मसिम' की बात करने वाले लोग, तुम मेरे घर के अन्दर नहीं आ सकते हो, तुम्हें वहीं बैठना पड़ेगा। इस प्रकार की ग्रन्थि से ग्रस्त जीवन जीने वाला समाज किस प्रकार से विश्व की आशा व आकांक्षाओं को पूरा कर सकता है। महात्मा गाँधी ने जो प्रयास किए थे, उन प्रयासों को पूर्ण करने के लिए जो भी माध्यम मिले, उस माध्यम के सहारे आगे बढ़ने का प्रयास इस राज्य सरकार ने आरम्भ किया है। मुझे विश्वास है कि यह स्वच्छता व समरसता का अभियान राज्य के अन्दर एक नई चेतना लाने का पूरक अवश्य बनेगा। राज्य यह सब कर रहा है, ऐसा कोई भी दावा सरकार ने नहीं किया है। राज्य सब कुछ करेगा, ऐसा भी हम कभी नहीं कहते है। हमारा तो प्रयत्न आओ, सब मिलकर कुछ करें और इसी कारण मैं बार बार कहता हूँ कि विकास के सहभागी बनो,

विकास के भागीदार बनो। आपकी जो भी शिकायत होगी, वह समयानुसार दूर हो जाएगी। मात्र एक जगह बैठकर उपदेश भर देने से परिस्थिति नहीं बदलती है। हम सबको कुछ न कुछ करना पड़ेगा। हमारा प्रयत्न है कि सब साथ मिलकर प्रयास करें।

राज्य सरकार स्वच्छता आन्दोलन में 'स्वच्छ गुजरात समरस गुजरात' का सूत्र लेकर आगे बढ़ रही है। अपने राज्य को स्वच्छ रखने के लिए कार्य करने वालों को, जिसे दुनिया सफाई कर्मचारी के रूप में पहचानती है, ऐसे भाई बहनों की पीड़ा में भागीदार बनने का हमने संकल्प किया है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे यहाँ आमतौर से औसतन आयु स्तर बढ़ता जा रहा है, परन्तु सफाई कर्मचारी मित्रों की औसतन आयु मात्र 50 वर्ष की है। नगरपालिकाओं में, महानगरपालिकाओं में सफाई के काम के साथ जुड़े हुए कर्मचारियों को आरोग्य की समस्या होगी। उनके काम के कारण उन्हें बडी मुश्किलें आती होंगी। यह एक उत्तरदायित्व हम सबको निभाना है और इसके सहभागी के रूप में मेरे मन में एक विचार आया है। इस विचार के एक भाग में पूज्य बापू को अंजलि देने के एक संकल्प के भाग के रूप में इस राज्य से ज्यादा सफाई कर्मचारी मित्र है। इन सब भाई बहनों का 1 लाख रुपए का बीमा राज्य सरकार कराएगी। उनके जीवन में कोई कष्ठ आए, उन्हें कोई शारीरिक क्षति हो जाए तो उनके परिवारजन असहाय न हो जाएँ, निराश्रित न हो जाएँ, इन दरिद्र नारायणों की सेवा के भाग स्वरूप प्रत्येक कर्मचारी के एक लाख रुपए के बीमे की रकम राज्य सरकार भरेगी और इनके जीवन में कोई आपत्ति आए तो इनके परिवार को यह रकम बड़ा सम्बल देगी। ऐसी योजना का प्रारम्भ राज्य सरकार कर रही है।

3.2.9 सेवा भाव : अपनी संस्कार प्रक्रिया

अपने देश में वानप्रस्थ जीवन की कल्पना की गई है। आज तो शायद अपनी सभी व्यवस्थाएँ टूट गई है। यह वानप्रस्थ व्यवस्था सामाजिक जीवन के अन्दर सेवा करने के एक स्वाभाविक गुण को विकसित करती थी। हर एक को ऐसा लगता था कि भाई, इतने वर्षों तो कमाई की है, परिवार के लिए सब कुछ किया है, अब समाज के लिए भी कुछ न कुछ करना चाहिए। अपने यहाँ यह एक स्वाभाविक व्यवस्था थी। अब प्रयत्नपूर्वक इस व्यवस्था को पुनः लाने की आवश्यकता महसूस होने लगी है।

हमारे यहाँ अब वृद्ध आश्रमों की संख्या बढ़ने लगी है। कोई मुझे वृद्ध आश्रम के उद्घाटन के लिए बुलाता है तो मैं मना कर देता हूँ। क्या वृद्ध आश्रम एक स्वस्थ समाज का लक्षण है? पश्चिमी देशों की अस्वस्थता ने ही वृद्ध आश्रम को जन्म दिया है। वहाँ पुत्र पिता को सहारा देने, उसे साथ रखने को तैयार नहीं है। माता की सेवा करने के लिए बेटा तैयार नहीं। समाज का दुर्भाग्य देखो कि जिन भाइयों के पास पाँच बंगले हों, उनके घर में पिता जनवरी में कहाँ रहेगा, फरवरी में कहाँ रहेगा, इसका झगड़ा होता है। गरीब की झोपड़ी में पिता जीवन पर्यंत घर की श्रेष्ठ व्यवस्था का उपभोग कर करता है, यह अपने समाज की मूलभूत प्रकृति रही है। आज भी यह मूलभूत प्रकृति ही अपने समाज को बचा सकती है।

कई बार अमेरिका की अर्थव्यवस्था को आधार मानकर हमारे यहाँ अर्थ रचना का अभ्यास किया जाता है। परन्तु आने वाले समय में अमेरिका की अर्थ तंत्र पर अन्दर से एक बड़ा प्रहार होने वाला है। इसकी चिन्ता अमेरिका के अर्थशास्त्री कर रहे है। उनकी चिन्ता है कि अमेरिका के अर्थतंत्र का एक बड़ा भाग वहाँ के वरिष्ठ नागरिकों की सेवा में खर्च हो रहा है। वरिष्ठ नागरिकों को कैसे रखा जाए, कैसे उनकी परवरिश हो और इस परवरिश के लिए उनको बजट के बड़े हिस्से का उपयोग करना पड़ रहा है। हमारे देश में परिवार के अन्दर एक जीवन्त एकता होने के कारण आज भी समाज के ऊपर इसका कोई बोझ नहीं पड़ता है। यह अपनी समाज रचना है। इस सामाजिक रचना की को कैसे परिपक्व बनाएँ, कैसे उसे अधिक प्रतिष्ठित करें, इसे कैसे और अधिक शक्ति प्राप्त हो इसका विस्तार करने की आवश्यकता है।

सेवा तो हमारे यहाँ प्रकृति में ही थी। दुनिया की किसी भी संस्कृति में एक चबूतरा देखने में नहीं आता है। अपने यहाँ तो गाँव-गाँव में, मोहल्ले-मोहल्ले में चबूतरा देखने को मिलता है। मनुष्य की प्रकृति में था कि मुझे तो इस निर्द्वंद्व आकाश में उड़ने वाले पक्षियों की चिन्ता करनी है। हमारे यहाँ कई लोग सुबह घर से आटा लेकर रास्ते में चीटियों के घरों में डालने के लिए निकलते है। यह मात्र जीव दया नहीं है, यह तो इन्हें बचपन से मिला हुआ संस्कार है। भारत की सदियों पुरानी वंश परम्परा का यह परिणाम है। कुत्तों के विषय में भी पसन्द नापसन्द के अनेक भाव लोगों में है। एक कुत्ता ऐसा है, जिसके लिए वातानुकूलित कमरा है। उसके लिए वातानुकूलित मोटर गाड़ी है। दूसरा कुत्ता ऐसा है, जिसे सुबह शाम भूखा है तो भी लोगों की लात खानी पड़ती है। यह देश ऐसा था कि प्रत्येक मोहल्ले में कुत्ते को खाने के लिए एक कटोरे की व्यवस्था होती थी। घर

में सबके खाने के बाद कुत्ते के लिए भी खाने की व्यवस्था थी। सेवा तो हमारा स्वभाव है। इस प्रकृति को सामाजिक प्रतिष्ठा कैसे मिले और इस सेवा भाव की प्रकृति को समाज के अन्दर समाज के निम्न से निम्न मानव तक हम कैसे पहुँचा सकते है, इसका विचार करना चाहिए।

कई बार हमारे यहाँ एक भ्रम का प्रचार भी किया जाता है कि यह देश तो एकदम निकम्मा और बेकार है। अनेक वर्षों तक गुलाम रहने के कारण हमें गुलामी का ग्रहण लग गया है। हमारी मानसिकता भी ऐसी हो गई है कि हम अच्छे है। हमारे यहाँ भी बहुत कुछ अच्छा है, ऐसा कहने की हिम्मत ही नहीं है। जगत को दिखाने के लिए हमारे पास अनेक श्रेष्ठ वस्तु है, परन्तु हम डरते रहते है। इस कारण वे भी कहती है कि उदाहरण स्वरूप जब तक मिशनरियाँ यहाँ नहीं आई थी तब तक सेवा जैसा कुछ भी नहीं था और ऐसा हमारे यहाँ सहज रूप से में कहा भी जाता है। यथार्थ में तो हमारे यहाँ इस प्रकार की व्यवस्था थी कि कोई गरीब आदमी भूखा नहीं सोए, इसके लिए प्रत्येक 20 किलोमीटर पर कहीं न कहीं अन्न क्षेत्र आज भी देखने को मिलते है। इसका अर्थ है कि कोई परम्परा अवश्य है।

चेन्नई या कोयंबटूर में अस्पताल के बाहर एक अन्नलक्ष्मी की व्यवस्था है। मलेशिया में दक्षिण भारत के एक सन्यासी निवास करते है। उन्होंने अस्पताल के पास में यह अन्नलक्ष्मी का प्रकल्प चलाया है। उन्होंने वहाँ जमीन लेकर पाँच सितारा होटल को भी पीछे छोड़ दें, ऐसा एक भोजनालय बनाया है। वहाँ रोगी के सगे सम्बन्धियों और रोगी को बहुत ही कम पैसों में भोजन मिलता है। न्यायाधीश, बड़े बड़े डॉक्टर, बड़े बड़े प्रतिष्ठित नागरिक वहाँ भोजन परोसने की सेवा देने आते है। हमें परोसने की सेवा करने को मिले, इसीलिए लोगों की लम्बी-लम्बी कतारें लगती है। भोजन के बाद थाली उठाने तक का दायित्व यही लोग निभाते है, संभालते है। अच्छा अच्छा परोसा जाने के बाद वहाँ मात्र हाथ बाँधकर खड़े रहते हो, ऐसा भी नहीं है। अन्त तक की प्रक्रिया यही लोग करते है। अनेक लोगों को मुश्किल से वर्ष 2 वर्ष में एकाध बार ही एक घण्टे के लिए परोसने का अवसर मिलता है। कितना बड़ा और अच्छा सामाजिक सहयोग है। आने वाले व्यक्ति को भी सन्तोष हो कि चलो भाई, मैंने यह एक अच्छा काम किया। कभी चेन्नई या कोयंबटूर जाना पड़े तो यह सभ्यता व संस्कृति देखने योग्य है। अरे, पाँच सितारा होटल में भी ऐसी कार्य संस्कृति देखने को नहीं मिलेगी।

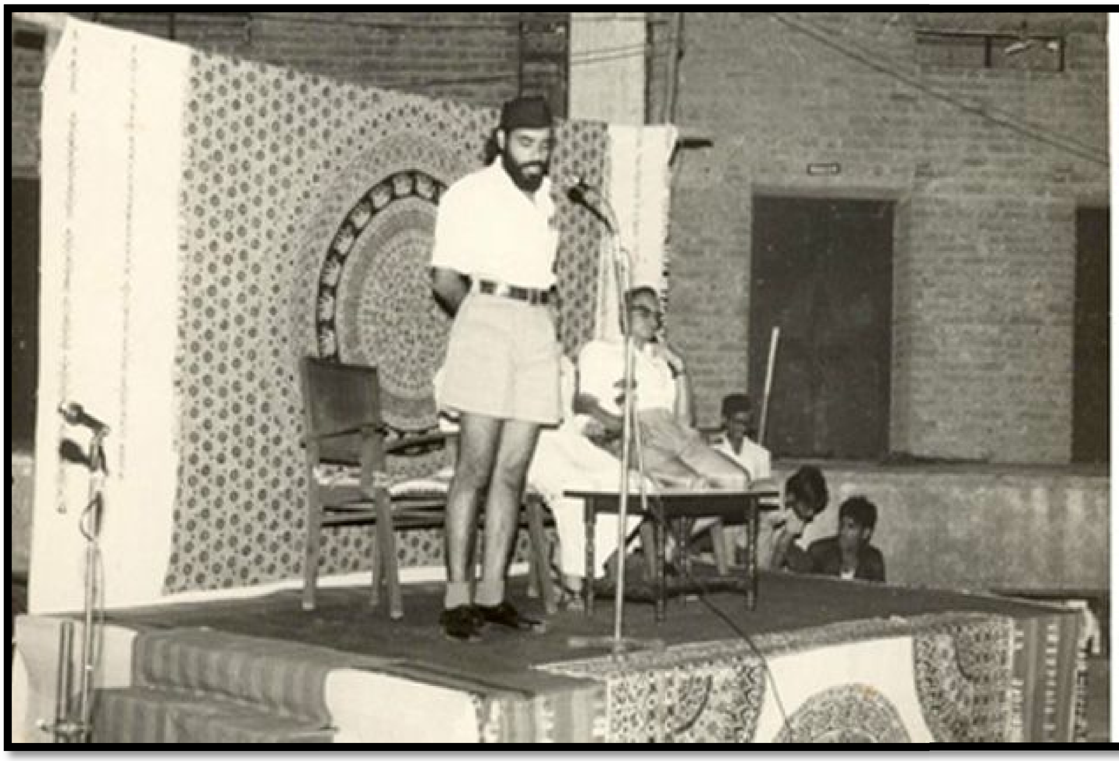
कई बार हम प्रवास की चर्चा करते है। अपने यहाँ मूलभूत तंत्र सुविधा नहीं है। 32 कमरों का कहीं होटल हो तो सारी दुनिया के समाचार पत्रों में पहले पृष्ठ पर यह समाचार छापेगा, परन्तु अपने इस देश में अनेक ऐसे मठ है। इन मठों में सैकड़ों कमरे है। आज भी आप काली कमली वालों के यहाँ जाएँ, हरिद्वार ऋषिकेश जाएँ। हमारे पूर्वजों ने यात्रियों के लिए कितनी व्यवस्थाएँ खड़ी की थी, इसका सीधा सा अर्थ है समाज सेवा के लिए मूलभूत तंत्र सुविधा खड़ी करना, उनकी व्यवस्था बनाना, यह समाज की प्रवृत्ति थी। कालक्रम से गुलामी के कालखंड में हमारा यह सब कुछ लुप्त हो गया। अब फिर से इसे जीवित करना पड़ेगा। सेवा का कार्यक्रम करना पड़ेगा, सेवा की व्यवस्था करनी पड़ेगी, सेवा को एक लक्ष्य बनाना पड़ेगा। यह सब धीरे-धीरे हमें करना है। ऐसा करके हमें अपने पुराने स्वभाव की ओर जाने की आवश्यकता है। कम से कम सेवा के क्षेत्र में तो यह करने की आवश्यकता है।

3.3 राजनैतिक जीवन

नरेन्द्र मोदी जी जब विश्वविद्यालय के छात्र थे तभी से वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा में नियमित जाने लगे थे। इस प्रकार उनका जीवन संघ के एक निष्ठावान प्रचारक के रूप में प्रारम्भ हुआ। उन्होंने शुरुआती जीवन से ही राजनीतिक सक्रियता दिखलाई और भारतीय जनता पार्टी का जनाधार मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाई। गुजरात में शंकर सिंह वाघेला का जनाधार मजबूत बनाने में नरेन्द्र मोदी की रणनीति थी।

अप्रैल 1990 में जब केन्द्र में मिली जुली सरकारों का दौर शुरू हुआ। मोदी की मेहनत रंग लाई। जब गुजरात में 1995 के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने अपने बलबूते दो तिहाई बहुमत प्राप्त कर सरकार बना ली। इसी दौरान दो राष्ट्रीय घटनाएँ और इस देश में घटी। पहली घटना थी सोमनाथ से लेकर अयोध्या तक की रथ यात्रा जिसमें आडवाणी के प्रमुख सारथी की भूमिका में नरेन्द्र का मुख्य सहयोग रहा। इसी प्रकार कन्याकुमारी से लेकर सुदूर उत्तर में स्थित कश्मीर तक की मुरली मनोहर जोशी की दूसरी रथ यात्रा नरेन्द्र मोदी की देख रेख में आयोजित हुई। इसके बाद शंकर सिंह वाघेला ने पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। जिसके परिणाम स्वरूप केशुभाई पटेल को गुजरात का मुख्यमंत्री बना दिया गया और नरेन्द्र मोदी को दिल्ली बुलाकर भाजापा में संगठन की दृष्टि से केन्द्रीय मंत्री का दायित्व सौंपा गया। 1995 राष्ट्रीय मंत्री के नाते उन्हें

पाँच प्रमुख राज्यों में पार्टी संगठन का काम दिया गया। जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। 1998 में उन्हें पदोन्नत करके राष्ट्रीय महामंत्री का उत्तरदायित्व दिया गया। इस पद पर वह अक्टूबर 2001 तक काम करते रहे। भारतीय जनता पार्टी ने अक्टूबर 2001 में केशुभाई पटेल को हटाकर गुजरात के मुख्यमंत्री पद की कमान नरेन्द्र मोदी को सौंप दी।



चित्र 3.6 राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की शाखा में शपथ लेते हुए

3.3.1 गुजरात के मुख्यमंत्री

गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में, मोदी ने राज्य को 'वाइब्रेंट गुजरात' के रूप में प्रचारित किया और दावा किया कि राज्य ने बुनियादी ढाँचे के विकास और आर्थिक विकास के सन्दर्भ में तेजी से प्रगति की है। हालांकि, कुछ आलोचकों ने गरीबी, कुपोषण और राज्य में उचित शिक्षा की कमी को भी इंगित किया। आंकड़ों के मुताबिक, सितम्बर 2013 को राज्य गरीबी के मामले में 14वें स्थान पर और 2014 में साक्षरता दर के मामले में 18 वें स्थान पर रहा। वहीं दूसरी ओर, राज्य के अधिकारियों का दावा

है कि राज्य ने महिलाओं की शिक्षा के मामले में अन्य राज्यों से बेहतर प्रदर्शन किया है। इसके अलावा, विद्यार्थियों के स्कूल छोड़ने की दर और मातृ मृत्यु दर में कमी आई है।

राज्य के अधिकारियों द्वारा किए गए दावों के विपरीत, एक राजनीतिक वैज्ञानिक क्रिस्टोफ जाफ्रेलोट, एक राजनीतिक वैज्ञानिक ने कहा कि राज्य में विकास केवल शहरी मध्यम वर्ग तक ही सीमित था। ग्रामीण लोगों और निचली जातियों के लोगों को सरकार द्वारा अनदेखा किया गया। जाफ्रेलोट के अनुसार, मोदी के शासन के तहत गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों की संख्या में वृद्धि हुई और साथ ही, जनजातीय और दलित समुदायों को अधीनस्थ माना गया। विख्यात अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन सहित कई अन्य आलोचकों का भी ऐसा ही मानना है।

3.3.1.1 प्रथम कार्यकाल (2001-2002)

- 7 अक्टूबर 2001 को नरेन्द्र मोदी गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री नियुक्त किए गए थे।
- दिसम्बर 2002 के चुनावों के लिए उन्हें पार्टी तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई थी।
- मुख्यमंत्री के रूप में मोदी ने छोटे सरकारी संस्थानों के निजीकरण पर बल दिया।



चित्र 3.7 प्रथम बार गुजरात के मुख्यमंत्री की शपथ लेते हुए

- गुजरात हिंसा 27 फरवरी को साम्प्रदायिक हिंसा की एक बड़ी घटना देखने को मिली, जिसके परिणामस्वरूप 58 लोगों की हत्या हुई, जब सैकड़ों यात्रियों को ले जाने वाली ट्रेन, जिसमें ज्यादातर तीर्थयात्री हिन्दू थे, को गोधरा के पास आग लगा दी गई। इस घटना के परिणामस्वरूप मुस्लिम विरोधी हिंसा हुई, जिसने कुछ ही समय के भीतर लगभग पूरे गुजरात को अपनी गिरफ्त में ले लिया। अनुमान के अनुसार मरने वालों की संख्या 900 और 2,000 के बीच रही। नरेन्द्र मोदी की अगुआई वाली गुजरात सरकार ने हिंसा में वृद्धि को रोकने के लिए राज्य के कई शहरों में कर्फ्यू लगाया। मानवाधिकार संगठनों, मीडिया और विपक्षी दलों ने मोदी सरकार पर हिंसा को रोकने के लिए अनुचित और अपर्याप्त कदम उठाने का आरोप लगाया। सरकार और मोदी द्वारा निभाई गई भूमिका की जाँच के लिए अप्रैल 2009 में सुप्रीम कोर्ट ने एक विशेष जाँच दल (एसआईटी) नियुक्त किया था। एसआईटी ने दिसम्बर, 2010 में अदालत को एक रिपोर्ट सौंपी जिसमें कहा गया कि उन्हें मोदी के खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला। हालांकि, एसआईटी पर जुलाई, 2013 में साक्ष्य छिपाने का आरोप लगाया गया था।
- इसके फलस्वरूप, विभिन्न विपक्षी दलों और सहयोगियों ने भाजपा पर मुख्यमंत्री के पद से मोदी के इस्तीफे की माँग के साथ दबाव डाला। लेकिन बाद के चुनावों में बीजेपी ने 182 सीटों में से 127 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत हासिल किया।

3.3.1.2 द्वितीय कार्यकाल (2002-2007)

- मोदी ने गुजरात के आर्थिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जिसके परिणामस्वरूप राज्य एक निवेश गंतव्य के रूप में उभरा।
- उन्होंने राज्य में प्रौद्योगिकी और वित्तीय पार्कों की स्थापना की।
- 2007 में गुजरात में हुए वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन में 6600 अरब रुपये के रियल एस्टेट निवेश सौदे पर हस्ताक्षर किए गए।

- जुलाई 2007 में मोदी जी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में लगातार 2063 दिन पूरे किए और गुजरात के मुख्यमंत्री के पद पर अधिकतर दिनों तक बने रहने का रिकॉर्ड बनाया।



चित्र 3.8 द्वितीय बार गुजरात के मुख्यमंत्री की शपथ लेते हुए

3.3.1.3 तृतीय कार्यकाल (2007-2012)

- बुनियादी ढाँचे के क्षेत्र में विकास परियोजनाओं ने 2008 में 5,00,000 संरचनाओं का निर्माण देखा, जिनमें से 1,13,738 चेक बाँध थे। 2010 में, 112 तहसीलों में से 60 ने सामान्य भूजल स्तर हासिल किया। इसके परिणामस्वरूप आनुवंशिक रूप से संशोधित बीटी कपास के उत्पादन में वृद्धि हुई। 2001-2007 के दौरान गुजरात में कृषि वृद्धि दर 9.6 प्रतिशत बढ़ी और 2001-2010 के दशक में गुजरात में वार्षिक वृद्धि दर 10.97 प्रतिशत तक पहुँच गई, जो कि भारत के सभी राज्यों में सबसे ज्यादा थी।

- ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली की आपूर्ति प्रणाली में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन करने से कृषि को बढ़ावा देने में मदद मिली।
- सद्भावना मिशन या गुडविल मिशन का आयोजन 2011 के अन्त में और 2012 के शुरुआत में राज्य में मुस्लिम समुदाय तक पहुँचने के लिए किया गया था। मोदी जी ने विश्वास किया कि यह कदम शांति, एकता और सद्भाव से गुजरात के पर्यावरण को और मजबूत करेगा।

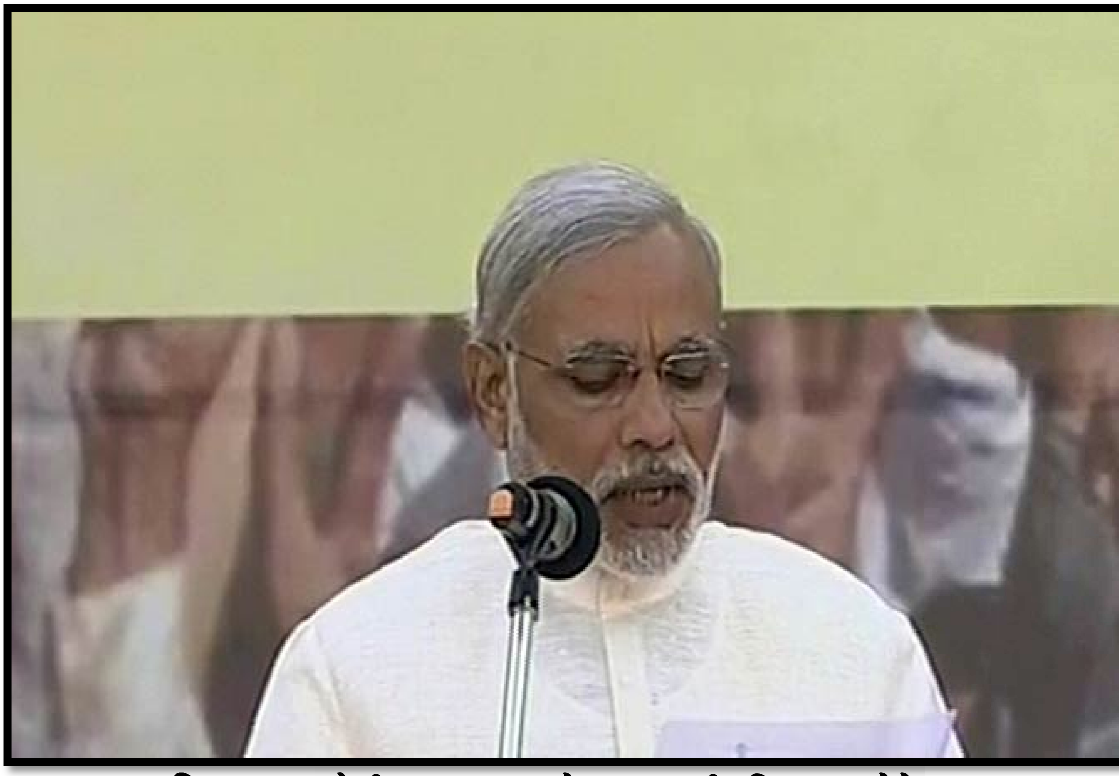


चित्र 3.9 तृतीय बार गुजरात के मुख्यमंत्री की शपथ लेते हुए

3.3.1.4 चतुर्थ कार्यकाल

वर्ष 2012 में मोदी जी का तीसरी बार मुख्यमंत्री का कार्यकाल समाप्त हो गया। और इस साल फिर से गुजरात में विधानसभा चुनाव आयोजित हुए। और हर साल की तरह इस साल भी मोदी जी ने ही जीत हासिल की और उन्हे चौथी बार भी गुजरात के मुख्यमंत्री का पदभार संभालने के लिए नियुक्त कर दिया। इसलिए मोदी जी को राज्य में समृद्धि और विकास लाने का श्रेय दिया गया। इसके चलते गुजरात सरकार के प्रमुख के रूप में उस दौरान मोदी जी ने एक सक्षम शासक के रूप में अपनी पहचान बना ली थी।

उन्हें राज्य की अर्थव्यवस्था के तेजी से विकास के लिए भी श्रेय दिया जाता है। इसके अलावा मोदी जी को उनकी और पार्टी के चुनावी प्रदर्शन में सबसे आगे रखा गया। क्योंकि वे न केवल पार्टी के सबसे प्रतिभाशाली नेता थे बल्कि उनके अन्दर प्रधानमंत्री के उम्मीदवार के रूप में प्रतिभा थी। हालांकि कुछ लोगों का मानना था कि राज्य लोगों के विकास, शिक्षा, पोषण और गरीबी मिटाने में बहुत अच्छी रैंक पर नहीं है। लेकिन फिर भी उनके कार्यों एवं उनकी नीतियों के कारण लोग उन्हे पसन्द करते थे।



चित्र 3.10 चौथी बार गुजरात के मुख्यमंत्री की शपथ लेते हुए

नरेन्द्र मोदी जी के चौथी बार गुजरात के मुख्यमंत्री बनने के एक साल बाद जून में उन्हें भारतीय जनता पार्टी का अध्यक्ष बना दिया गया और वे इस तरह से वर्ष 2014 में होने वाले आम चुनाव में प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में दिखाई दिए। जिसके चलते मोदी जी को अपना गुजरात का मुख्यमंत्री पद त्यागना पड़ा।

3.3.2 भारत के प्रधानमंत्री

भारत गणराज्य के प्रधानमंत्री का पद भारतीय संघ के शासन प्रमुख का पद है। भारतीय संविधान के अनुसार, प्रधानमंत्री केन्द्र सरकार के मंत्रिपरिषद् का प्रमुख और राष्ट्रपति का मुख्य

सलाहकार होता है। वह भारत सरकार के कार्यपालिका का प्रमुख होता है और सरकार के कार्यों के प्रति संसद को जवाबदेह होता है। भारत की संसदीय राजनैतिक प्रणाली में राष्ट्र प्रमुख और शासन प्रमुख के पद को पूर्णतः विभक्त रखा गया है। सैद्धांतिक रूप में संविधान भारत के राष्ट्रपति को देश का राष्ट्र प्रमुख घोषित करता है और सैद्धांतिक रूप में, शासनतंत्र की सारी शक्तियों को राष्ट्रपति पर निहित करता है तथा संविधान यह भी निर्दिष्ट करता है कि राष्ट्रपति इन अधिकारों का प्रयोग अपने अधीनस्थ अधिकारियों की सलाह पर करेगा। संविधान द्वारा राष्ट्रपति के सारे कार्यकारी अधिकारों को प्रयोग करने की शक्ति, लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित, प्रधानमंत्री को दी गयी है। संविधान अपने भाग 5 के विभिन्न अनुच्छेदों में प्रधानमंत्री पद के संवैधानिक अधिकारों और कर्तव्यों को निर्धारित करता है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 74 में स्पष्ट रूप से मंत्रिपरिषद की अध्यक्षता तथा संचालन हेतु प्रधानमंत्री की उपस्थिति को आवश्यक माना गया है। उसकी मृत्यु या पदत्याग की दशा मे समस्त परिषद को पद छोड़ना पडता है। वह स्वेच्छा से ही मंत्री परिषद का गठन करता है। राष्ट्रपति मंत्रिगण की नियुक्ति उसकी सलाह से ही करते है। मंत्रीगण के विभाग का निर्धारण भी वही करता है। कैबिनेट के कार्य का निर्धारण भी वही करता है। देश के प्रशासन को निर्देश भी वही देता है तथा सभी नीतिगत निर्णय भी वही लेता है। राष्ट्रपति तथा मंत्रीपरिषद के मध्य सम्पर्क सूत्र भी वही है। मंत्रिपरिषद का प्रधान प्रवक्ता भी वही है। वह सत्तापक्ष के नाम से लड़ी जाने वाली संसदीय बहसों का नेतृत्व करता है। संसद मे मंत्रिपरिषद के पक्ष मे लड़ी जा रही किसी भी बहस मे वह भाग ले सकता है। मन्त्रीगण के मध्य समन्वय भी वही करता है। वह किसी भी मंत्रालय से कोई भी सूचना आवश्यकतानुसार मंगवा सकता है।

प्रधानमंत्री लोकसभा में बहुमत धारी दल का नेता होता है और उसकी नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा लोकसभा में बहुमत सिद्ध करने पर होती है। इस पद पर किसी प्रकार की समय सीमा निर्धारित नहीं की गई है। एक व्यक्ति इस पद पर केवल तब तक रह सकता है जब तक लोकसभा में बहुमत उसके पक्ष में हो।

संविधान विशेष रूप से प्रधानमंत्री को केन्द्रीय मंत्रिमण्डल पर पूर्ण नियंत्रण प्रदान करता है। इस पद के पदाधिकारी को सरकारी तंत्र पर दी गयी अत्यधिक नियंत्रणात्मक शक्ति, प्रधानमंत्री को भारतीय गणराज्य का सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्ति बनाती है। विश्व की छठी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था,

दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या, सबसे बड़े लोकतंत्र और विश्व की तीसरी सबसे बड़ी सैन्य बलों समेत एक परमाणु शस्त्र राज्य के नेता होने के कारण भारतीय प्रधानमंत्री को विश्व के सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्तियों में गिना जाता है। वर्ष 2010 में फोर्ब्स पत्रिका ने अपनी विश्व के सबसे शक्तिशाली लोगों की, सूची में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को 18वीं स्थान पर रखा था तथा 2012 और 2013 में उन्हें क्रमशः 19वें और 28वें स्थान पर रखा था। उनके उत्तराधिकारी, नरेन्द्र मोदी जी को वर्ष 2014 में 15वें स्थान पर तथा वर्ष 2015 में विश्व का 9वाँ सबसे शक्तिशाली व्यक्ति नामित किया था।

इस पद की स्थापना वर्तमान कर्तव्यों और शक्तियों के साथ 26 जनवरी 1947 में संविधान के प्रवर्तन के साथ हुई थी। उस समय से वर्तमान समय तक इस पद पर कुल 15 पदाधिकारियों ने अपनी सेवा दी है। इस पद पर नियुक्त होने वाले पहले पदाधिकारी जवाहरलाल नेहरू थे जबकि भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी है। जिन्हें 26 मई 2014 को इस पद पर नियुक्त किया गया था।

3.3.2.1 प्रथम कार्यकाल

भारतीय जनता पार्टी के संसदीय अध्यक्ष नरेन्द्र मोदी का 26 मई 2014 से भारत के 14वें प्रधानमंत्री का कार्यकाल आरम्भ हुआ। मोदी के साथ 45 अन्य मंत्रियों ने भी समारोह में पद और गोपनीयता की शपथ ग्रहण की। मोदी सहित कुल 46 में से 36 मंत्रियों ने हिन्दी में शपथ ली जबकि अन्य 10 ने अंग्रेजी में शपथ ग्रहण की।

16 मई 2014 को आम चुनावों के परिणाम घोषित होने के बाद 20 मई को मोदी भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी से मिले। मुखर्जी ने मोदी को अगली सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। भाजपा ने इस चुनाव में 282 सीटें जीती है जबकि उनके गठबंधन राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ने कुल 336 लोक सभा सीटों पर जीत दर्ज की। यह 1984 के चुनाव के बाद अब तक का सबसे अधिक बहुमत है जो किसी एक पार्टी अथवा दल को मिला हो। 1984 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस विजयी रही थी। मोदी जी ने 26 मई 2014 को शाम 6 बजे शपथ ग्रहण करने की घोषणा की।

शपथ ग्रहण समारोह दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन प्रांगण में हुआ। इससे पहले केवल पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर (1990 समाजवादी जनता पार्टी) और अटल बिहारी बाजपेयी (1996 और 1998

भाजपा) ने शपथ ग्रहण की। दरबार हाल एक अन्य संभावित स्थान था लेकिन इसकी दर्शक क्षमता 500 तक सीमित होने के कारण अस्वीकृत कर दिया गया। भाजपा ने संकेत दिया कि समारोह खुले मैदान पर किया जा सकता है। इससे पहले नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री पद की शपथ भी खुले मैदान में ले चुके है। अतिथि सूची में विभिन्न राज्यों और राजनीतिक पार्टियों के अध्यक्ष सहित सार्क देशों के राष्ट्राध्यक्षों को आमंत्रित किया गया है। अतः इस घटना को प्रमुख राजनयिक घटना के रूप में भी देखा जा रहा है।



चित्र 3.11 भारत के 14 वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए

इस समारोह में भारत के सभी राज्यों के मुख्यमंत्रीयों को आमंत्रित किया गया था। इसमें से कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, केरल के मुख्यमंत्री उमन चांडी ने भाग लेने से माना कर दिया। भाजपा और कांग्रेस के बाद सबसे अधिक सीटों पर विजय प्राप्त करने वाली तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जय ललिता ने समारोह में भाग न लेने का निर्णय लिया जबकि पश्चिम बंगाल के मुख्यमन्त्री ममता बनर्जी ने अपनी जगह मुकुल रॉय और अमित मित्रा को भेजने का निर्णय लिया। मध्य प्रदेश के मुख्यमन्त्री, शिवराज सिंह चौहान आदि बड़े नेता उपस्थित हुए। आमंत्रित हस्तियों में अनुपम खेर, मधुर भंडारकर, विवेक ओबेरॉय, रजनीकान्त और अमिताभ बच्चन शामिल है। वड़ोदरा के एक चाय विक्रेता किरण महिदा जिन्होंने मोदी की उम्मीदवारी प्रस्तावित की

थी को भी समारोह में आमंत्रित किया गया। इनके अलावा मोदी की माँ हीराबेन और अन्य तीन भाई भी समारोह में उपस्थित रहेंगे। इसके अतिरिक्त उद्योग जगत के लोग सपरिवार मुकेश अंबानी, उनके भाई अनिल अंबानी, कुमार मंगलम बिड़ला और गौतम अदानी भी समारोह में उपस्थित रहे।

3.3.2.2 द्वितीय कार्यकाल

लोकसभा चुनाव 2019 में प्रचंड जीत के बाद **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी** दूसरे कार्यकाल के लिए गुरुवार यानि 30 मई 2019 नये मंत्रिपरिषद के साथ शपथ लेंगे। इस बीच इसको लेकर रहस्य बना हुआ है कि चार प्रमुख प्रभार गृह, वित्त, रक्षा और विदेश किसे मिलेंगे। **राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद** 68 वर्षीय मोदी और उनके मंत्रिमंडलीय सहयोगियों को राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में शपथ दिलाएँगे।

इस मौके पर कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गाँधी और एनडीए अध्यक्ष सोनिया गाँधी सहित शीर्ष विपक्षी नेता, उद्योग जगत के दिग्गज, फिल्मी सितारे, विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्री और बिम्सटेक सदस्य देशों के नेता मौजूद रहें।



चित्र 3.12 भारत के 15 वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेते हुए

3.3.3 विभिन्न देशों का प्रवास

- प्रधानमंत्री की भूटान यात्रा, 15-16 जून 2014
- प्रधानमंत्री की ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के लिए ब्राजील यात्रा, 13-17 जुलाई 2014
- प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा, 03-04 अगस्त 2014
- प्रधानमंत्री की जापान यात्रा, 30 अगस्त-03 सितम्बर 2014
- प्रधानमंत्री की संयुक्त राज्य अमेरिका यात्रा, 26-30 सितम्बर 2014
- प्रधानमंत्री की म्यांमार, ऑस्ट्रेलिया और फिजी यात्रा, 11-19 नवंबर 2014
- प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा, 25-27 नवंबर 2014
- प्रधानमंत्री की सेशेल्स, मॉरीशस और श्रीलंका की यात्रा, 10-14 मार्च 2015
- प्रधानमंत्री की सिंगापुर यात्रा, 29-29 मार्च 2015
- प्रधानमंत्री की फ्रांस, जर्मनी और कनाडा की यात्रा, 10-18 अप्रैल 2015
- प्रधानमंत्री की चीन, मंगोलिया और दक्षिण कोरिया यात्रा, 14-19 मई 2015
- प्रधानमंत्री की बांग्लादेश यात्रा, 06-07 जून 2015
- प्रधानमंत्री की पाँच मध्य एशियाई देशों और रूस की यात्रा, 06-13 जुलाई 2015
- प्रधानमंत्री की संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा, 16-17 अगस्त 2015
- प्रधानमंत्री की आयरलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा, 23-29 सितम्बर 2015
- प्रधानमंत्री की यूनाइटेड किंगडम (ब्रिटेन) और तुर्की की यात्रा, 12-16 नवंबर 2015
- प्रधानमंत्री की मलेशिया और सिंगापुर की यात्रा, 21-24 नवंबर 2015
- प्रधानमंत्री की फ्रांस की यात्रा, 29-30 नवंबर 2015
- प्रधानमंत्री की रुस की यात्रा, 23-24 दिसम्बर 2015

- प्रधानमंत्री की बेल्जियम, संयुक्त राज्य अमेरिका और सऊदी अरब की यात्रा, 30 मार्च-03 अप्रैल 2016
- प्रधानमंत्री की ईरान यात्रा, 22-23 मई 2016
- प्रधानमंत्री की अफगानिस्तान, कतर, स्विट्ज़रलैंड, अमेरिका और मेक्सिको की यात्रा, 04-08 जून 2016
- प्रधानमंत्री की उजबेकिस्तान यात्रा, 23-24 जून 2016
- प्रधानमंत्री की मोजांबिक, दक्षिण अफ्रीका, तंजानिया और केन्या यात्रा, 07-11 जुलाई 2016
- प्रधानमंत्री की वियतनाम और चीन यात्रा, 02-05 सितम्बर 2016
- प्रधानमंत्री की लाओस यात्रा, 07-08 सितम्बर 2016
- प्रधानमंत्री की जापान यात्रा, 11-12 नवंबर 2016
- प्रधानमंत्री की श्रीलंका यात्रा, 11-12 मई 2017
- प्रधानमंत्री की जर्मनी, स्पेन, रूस और फ्रांस यात्रा, 29 मई-03 जून 2017
- प्रधानमंत्री की कजाखस्तान यात्रा, 08-09 जून 2017
- प्रधानमंत्री की पुर्तगाल, अमेरिका और नीदरलैंड यात्रा, 24-27 जून 2017
- प्रधानमंत्री की इजरायल और जर्मनी की यात्रा, 04-08 जुलाई 2017
- प्रधानमंत्री की चीन और म्यांमार यात्रा, 03-07 सितम्बर 2017
- प्रधानमंत्री की फिलीपींस यात्रा, 12-14 नवंबर 2017
- प्रधानमंत्री की दावोस (स्विटजरलैंड) यात्रा, 22-23 जनवरी 2018
- प्रधानमंत्री की जॉर्डन, फिलिस्तीन, संयुक्त अरब अमीरात और ओमान की यात्रा, 09-12 फरवरी 2018

- प्रधानमंत्री की स्वीडन, ब्रिटेन और जर्मनी यात्रा, 16-20 अप्रैल 2018
- प्रधानमंत्री की चीन यात्रा, 26-28 अप्रैल 2018
- प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा, 11-12 मई 2018
- प्रधानमंत्री की रूस यात्रा, 21-22 मई 2018
- प्रधानमंत्री की इंडोनेशिया, मलेशिया और सिंगापुर यात्रा, 29 मई-02 जून 2018
- प्रधानमंत्री की चीन यात्रा, 09-10 जून 2018
- प्रधानमंत्री की रवांडा, युगांडा और दक्षिण अफ्रीका यात्रा, 23-28 जुलाई 2018
- प्रधानमंत्री की नेपाल यात्रा, 30-31 अगस्त 2018
- प्रधानमंत्री की जापान यात्रा, 27-30 अक्तूबर 2018
- प्रधानमंत्री की सिंगापुर यात्रा, 13-15 नवंबर 2018
- प्रधानमंत्री की मालदीव यात्रा, 17-17 नवंबर 2018
- प्रधानमंत्री की अर्जेंटीना यात्रा, 28 नवंबर-03 दिसम्बर 2018
- प्रधानमंत्री की दक्षिण कोरिया की यात्रा, 21-22 फरवरी 2019
- प्रधानमंत्री की मालदीव और श्रीलंका की यात्रा, 08-09 जून 2019
- प्रधानमंत्री की कीर्गीस्तान यात्रा, 13-14 जून 2019
- प्रधानमंत्री की जापान यात्रा, 27-29 जून 2019

3.4 महत्वाकांक्षी सरकारी योजनाएँ

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने 2014 में सत्ता संभालने के बाद से अब तक कई योजनाओं की शुरुआत की है। इनका सीधा-सीधा लाभ भारत की जनता को मिल रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना, मुद्रा योजना, जन धन योजना, उज्ज्वला योजना, अटल पेंशन योजना, स्टार्टअप इंडिया और

प्रधानमंत्री कौशल विकास जैसी कई ऐसी योजनाएँ है जिनके जरिए नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने भारत की जनता को तमाम तरह की सुविधाएँ उपलब्ध कराई है।

इस प्रकार की लगभग 135 से ज्यादा सरकारी योजनाएँ है। इन्हें नरेन्द्र मोदी की सरकार ने शुरू की है या पुरानी बन्द योजनाओं को दोबारा से शुरू किया है। ऐसी योजनाओं की पूरी सूची नीचे दी गई है। इस सूची में न सिर्फ सामाजिक कल्याण वाली योजनाएँ शामिल है बल्कि कई ऐसे पहल भी शामिल है जिनके जरिए देश में एक सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश की है। इनमें से कई योजनाएँ ऐसी भी है जिन्हें राज्य सरकारों के साथ मिलकर लागू किया गया है। अत: निम्न महत्वाकांक्षी योजनाएँ है-

- प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना
- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
- प्रधानमंत्री जन धन योजना
- प्रधानमंत्री आवास योजना
- प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना
- आयुष्मान भारत
- सांसद आदर्श ग्राम योजना
- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
- प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
- अटल पेंशन योजना
- प्रधानमंत्री नेशनल नूट्रीशन मिशन राष्ट्रीय पोषण मिशन
- प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना
- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजनाएँ
- प्राइम मिनिस्टर इम्प्लॉयमेंट जनरेशन प्रोग्राम
- प्राइम मिनिस्टर रिसर्च फेलोशिप स्कीम

- ऑपरेशन ग्रीन्स मिशन
- सोलर चरखा स्कीम
- प्रधानमंत्री जन औषधि योजना
- प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना
- स्त्री स्वाभिमान
- साइबर सुरक्षित भारत प्रोग्राम
- जीएसटी ई-बिल
- कुसुम स्कीम
- गोबर धन स्कीम
- नेशनल हेल्थ प्रोटेक्शन स्कीम
- उजाला स्कीम
- खेलो इण्डिया स्कूल गेम्स 2018
- सोशल सिक्योरिटी स्कीम
- स्कीम फॉर एडोलसेंट गर्ल्स
- फेम इंडिया स्कीम
- मार्केट एश्योरेंस स्कीम
- अटल भूजल योजना
- कंडोनेशन ऑफ डिले स्कीम
- सृष्टि स्कीम
- लिवेबिलिटी इंडेक्स प्रोग्राम
- मेक इन इंडिया

- स्वच्छ भारत अभियान
- किसान विकास पत्र
- सॉइल हेल्थ कार्ड स्कीम
- डिजिटल इंडिया
- स्किल इंडिया
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना
- मिशन इन्द्रधनुष
- नेशनल बायोफ्यूल पॉलिसी 2018
- दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना
- दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना
- पण्डित दीनदयाल उपाध्याय श्रमेव जयते योजना
- अटल मिशन फॉर रेजुवेनशन एँड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन (अमृत योजना)
- स्वदेश दर्शन योजना
- प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना
- पिल्ग्रिमेज रेजुवेनशन एँड स्पिरिचुअल ऑग्मेंटेशन ड्राइव (प्रसाद योजना)
- नेशनल हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एँड ऑग्मेंटेशन योजना (हृदय योजना)
- स्मार्ट सिटी मिशन
- गोल्ड मोनेटाईजेशन स्कीम
- स्टार्टअप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया
- डिजिलॉकर
- इंटीग्रेटेड पावर डेवलपमेंट स्कीम

- उड़ान स्कीम
- नेशनल बाल स्वछता मिशन
- वन रैंक वन पेंशन स्कीम
- श्यामा प्रसाद मुखेर्जी शहरी मिशन
- ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर स्कीम
- राइज स्कीम
- सागरमाला प्रोजेक्ट
- प्रकाश पथ– वे टू लाइट
- उज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना
- विकल्प स्कीम
- नेशनल स्पोर्ट्स टैलेंट सर्च स्कीम
- राष्ट्रीय गोकुल मिशन
- पहल– डायरेक्ट बेनिफिट्स ट्रांसफर फॉर LPG (DBTL) कंज्यूमर्स स्कीम
- नेशनल इंस्टीटूशन फॉर ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया (नीति आयोग)
- प्रधानमंत्री खनिज क्षेत्र कल्याण योजना
- नमामि गंगे प्रोजेक्ट
- सेतु भारतं प्रोजेक्ट
- रियल एस्टेट बिल
- आधार लिंकिंग
- राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना

- प्रधानमंत्री ग्रामीण आवास योजना (इंदिरा आवास योजना का बदला हुआ नाम)
- उन्नत भारत अभियान
- टीबी मिशन 2020
- धनलक्ष्मी योजना
- नेशनल अप्रेंटिसशिप प्रमोशन स्कीम
- गंगाजल डिलीवरी स्कीम
- प्रधान मंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान
- विद्यांजलि योजना
- स्टैंड अप इंडिया लोन स्कीम
- ग्राम उदय से भारत उदय अभियान
- सामाजिक अधिकारिता शिविर
- रेलवे यात्री बीमा योजना
- स्मार्ट गंगा सिटी
- मिशन भागीरथ (तेलंगाना में)
- विद्यालक्ष्मी लोन स्कीम
- स्वयं प्रभा
- प्रधान मंत्री सुरक्षित सड़क योजना
- शाला अश्मिता योजना
- प्रधानमंत्री ग्राम परिवहन योजना
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा अभियान
- राईट टू लाइट स्कीम

- राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव
- डिजिटल ग्राम
- ऊर्जा गंगा
- सौर सुजाला योजना
- एक भारत श्रेष्ठ भारत
- शहरी हरित परिवहन योजना
- 500 और 1000 के नोट बन्द
- प्रधान मंत्री युवा योजना
- अमृत OR AMRIT अफोर्डेबल मेडिसिन एँड रिलाएबल इम्प्लांट्स फॉर ट्रीटमेंट
- राष्ट्रीय आदिवासी उत्सव
- प्रवासी कौशल विकास योजना
- प्रधानमंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना
- गर्भवती महिलाओं के लिए आर्थिक सहायता योजना प्रधान मंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान
- वरिष्ठ नागरिकों के लिए Fixed Deposit स्कीम– वरिष्ठ पेंशन बीमा योजना 2017
- प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान
- यूनिवर्सल बेसिक इनकम स्कीम– विचाराधीन
- जन धन खाता धारकों के लिए बीमा योजना
- महिला उद्यमियों के लिए स्टार्ट योजना अप इण्डिया
- मछुआरों के लिए मुद्रा लोन योजना
- ग्रीन अर्बन मोबिलिटी स्कीम
- राष्ट्रीय वयोश्री योजना

- MIG के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना लोन स्कीम
- व्यापारियों के लिए भीम आधार एप
- भीम रेफेरल बोनस स्कीम और कैशबैक स्कीम
- शत्रु सम्पति कानून
- ट्रिपल तलाक कानून
- पॉवेरटेक्स इंडिया स्कीम
- भारत के वीर पोर्टल
- खाद्य संसाधन उद्योग के लिए सम्पदा योजना
- विदेश में काम करने वाले भारतीय मूल के वैज्ञानिकों के लिए वज्रा योजना
- प्रधानमंत्री वय वंदन योजना
- प्रधानमंत्री ग्राम परिवहन योजना
- मुस्लिम लड़कियों के लिए शादी शगुन योजना
- संकल्प से सिद्धि
- प्रधान मंत्री सहज बिजली हर घर योजना
- पॉवरलूम योजना उद्योग के लिए सौर ऊर्जा (विद्युत से चलने वाला करघा)
- राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान
- राइज योजना– सभी सरकारों उच्च शिक्षा संस्थानों में बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए योजना
- नमो योजना केन्द्र योजना – सेवा सहायता/केन्द्र
- स्कीम फॉर कैपेसिटी बिल्डिंग इन टेक्सटाइल सेक्टर– स्किल डेवलपमेंट
- कृषि में मशीनरी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए योजना
- गर्भवती महिलाओं और बच्चों के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय पोषण मिशन

- प्राइम मिनिस्टर रिसर्च फेलोशिप स्कीम
- आयुष्मान भारत योजना – राष्ट्रीय स्वास्थ्य संरक्षण मिशन और स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्र
- स्त्री स्वाभिमान योजना
- ड्राइवर्स के लिए ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर योजना
- GST E-Way Bill
- ग्रैच्युटी भुगतान के लिए संशोधित बिल 2018
- जैविक खेती पोर्टल
- wep.gov.in – महिला उद्यमिता मंच
- Nasscom FUTURE SKILLS Platform
- ऑपरेशन ग्रीन्स मिशन

3.5 सम्मान और पुरस्कार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अब तक विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। विश्व के अलग अलग मंचों पर प्रधानमंत्री मोदी को दिये गए इन पुरस्कारों के कारण न केवल उनकी बल्कि भारत की साख में भी बढ़ोतरी हुई है। प्रधानमंत्री मोदी को हल ही में संयुक्त अरब अमीरात ने अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान जायेद मेडल से नवाजने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री मोदी को यह सम्मान भारत और यूएई के आपसी सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए दिया गया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अब तक प्राप्त हुए प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार इस प्रकार है-

- **यूएई का सर्वोच्च नागरिक सम्मान-** संयुक्त अरब अमीरात ने (यूएई)04 अप्रैल 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'जायेद मेडल' से नवाजने का फैसला किया है। प्रधानमंत्री मोदी को यह सम्मान भारत और यूएई के आपसी सम्बन्धों को मजबूत करने के लिए दिया गया है। यूएई के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन जायेद ने ट्वीट कर इसका घोषणा किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय है।

- **फिलिप कोटलर पुरस्कार-** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 14 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में पहली बार फिलिप कोटलर प्रेसिडेंसियल सम्मान से सम्मानित किया गया था। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी एक बयान में बताया गया था कि हर वर्ष राष्ट्रीय नेता को दिए जाने वाले इस सम्मान से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस बार सम्मानित किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का चयन 'देश को उत्कृष्ट नेतृत्व' प्रदान करने के लिये किया गया था। इसके अनुसार, अथक ऊर्जा के साथ भारत के लिये उनकी निःस्वार्थ सेवा की वजह से देश ने बेहतरीन आर्थिक, सामाजिक और प्रौद्योगिकीय विकास किया है। फिलिप कोटलर नॉर्थवेस्टरन यूनिवर्सिटी, केलॉग स्कूल ऑफ मेनेजमेंट में मार्केटिंग प्रोफेसर है। इन्हीं के सम्मान में हर वर्ष यह पुरस्कार देश के सबसे लोकप्रिय नेता को दिया जाता है।
- **सियोल शांति पुरस्कार-** सियोल शांति पुरस्कार-2018 के चेयरमैन क्वॉन ई हायोक की अध्यक्षता में सियोल के जंग यू में चयन समिति की बैठक के बाद 24 अक्तूबर 2018 को यह फैसला लिया गया कि भारत मे अमीर और गरीब के बीच के सामाजिक और आर्थिक अन्तर को कम करने हेतु प्रधानमंत्री मोदी ने मोदीनोमिक्स द्वारा सराहनीय कार्य किया है जिसके चलते उन्हे सियोल शांति पुरस्कार दिया जाएगा। बारह सदस्यीय चयन समिति ने विश्व भर के 100 से ज्यादा प्रत्याशियों के बीच से एक कड़ी, उद्देश्यपरक और गहन मंत्रणा के बाद विजेता का चुनाव किया है।
- **चैंपियंस ऑफ द अर्थ 2018 पुरस्कार-** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सितम्बर 2018 को संयुक्त राष्ट्र का सबसे बड़ा पर्यावरण सम्मान भी दिया गया था। यूएन ने मोदी और फ्रांसीसी राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों को संयुक्त रूप से 'चैंपियंस ऑफ द अर्थ' अवॉर्ड से सम्मानित किया था। यह पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन को लेकर अग्रणी एवं उत्साही कार्यों के लिए और पर्यावरणीय कार्यों में सहयोग के नये क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और इमैनुएल मैक्रों को नीति नेतृत्व श्रेणी के तहत प्रदान किया गया।
- **फिलिस्तीन ग्रैंड कॉलर पुरस्कार-** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 10 फरवरी 2018 को फिलिस्तीन में ग्रैंड कॉलर सम्मान से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार विदेशी मेहमानों को दिया जाने वाला फिलिस्तीन का सर्वश्रेष्ठ सम्मान है। प्रधानमंत्री मोदी को भारत और फिलिस्तीन के रिश्तों की बेहतर

के लिए पीएम द्वारा उठाए गए कदमों के लिए यह सम्मान दिया गया था। पीएम मोदी को यह सम्मान फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने प्रदान किया। फिलिस्तीन सरकार द्वारा ग्रैंड कॉलर सम्मान किसी विदेशी मेहमान को दिए जाने वाला सबसे बड़ा सम्मान है। यह किसी देश के राजा, राज्य के प्रमुख या ऐसे ही किसी पद पर मौजूद सम्मानित लोगों को दिया जाता है। यह सम्मान प्रधानमंत्री मोदी से पहले साउदी अरब के किंग सलमान, बहरीन के किंग हामाद, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग आदि को दिया गया है।

- **आमिर अमानुल्लाह खान पुरस्कार-** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को 04 जून 2016 को अफगानिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान आमिर अमानुल्लाह खान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ऐतिहासिक अफगान भारत मैत्री बाँध के उदघाटन के बाद राष्ट्रपति अशरफ गनी द्वारा प्रधानमंत्री मोदी को इस सम्मान से नवाजा गया। अफगानिस्तान के नागरिकों के साथ साथ विदेशी नागरिकों को उनकी सेवाओं कि प्रशंसा में अफगान सरकार द्वारा दिया जाने वाला यह सर्वोच्च नागरिक सम्मान है।

- **किंग अब्दुलअजीज सैश पुरस्कार-** प्रधानमंत्री मोदी को 03 अप्रैल 2016 को सऊदी अरब के सर्वोच्च नागरिक सम्मान किंग अब्दुल अजीज सैश से सम्मानित किया गया। एक विशेष सम्मान के तौर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सऊदी अरब के सर्वोच्च नागरिक सम्मान किंग अब्दुलअजीज सैश से सम्मानित किया गया। इस सम्मान से अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री डेविड कैमरुन, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे और इंडोनेशिया के राष्ट्रपति जोको विडोडो को सम्मानित किया जा चुका है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अन्य पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ- नरेन्द्र मोदी जी ने अपने अभी तक के जीवन में निम्न उपलब्धियाँ हासिल की है –

- वर्ष 2007 में इंडिया टुडे मैगजीन द्वारा किए गए एक सर्वे में मोदी जी को देश के सर्वश्रेष्ठ मुख्यमंत्री के रूप में नामित किया गया था।

- वर्ष 2009 में एफडी मैगजीन में उन्हें एफडीआई पर्सनालिटी ऑफ द ईयर पुरस्कार के एशियाई विजेता के रूप में सम्मानित किया गया था।
- इसके बाद मार्च 2012 में जारी टाइम्स एशियाई एडिसन के कवर पेज पर मोदी जी की फोटो छापी गई थी।
- वर्ष 2014 में मोदी जी का नाम फोर्ब्स मैगजीन में दुनिया के सबसे शक्तिशाली लोगों की सूची में 15 वें स्थान पर रहा। इसी साल टाइम्स ऑफ इंडिया द्वारा दुनिया के 100 सबसे शक्तिशाली लोगों में भी मोदी जी का नाम सूचीबद्ध किया गया था।
- वर्ष 2015 में ब्लूमवर्ग मार्केट मैगजीन में मोदी जी का नाम दुनिया के 13 में सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में था और साथ ही इन्हें इसी साल टाइम मैगजीन द्वारा जारी इण्टरनेट सूची में ट्विटर और फेसबुक पर 30 सबसे प्रभावशाली लोगों में दूसरे सबसे अधिक फॉलो किए जाने वाले राजनेता के रूप में नामित किया गया था।
- वर्ष 2014 एवं 16 में मोदी जी का नाम टाइम मैगजीन की पाठक सर्वे के विजेता के रूप में घोषित किया गया था।
- साल 2016 में ही अप्रैल माह की 3 तारीख को मोदी जी को सऊदी अरबिया का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार अब्दुल्लाजिज अल सऊद के आदेश पर दिया गया था। एवं 4 जून को अफगानिस्तान के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार घाजी आमिर अमानुल्लाह खान के राज्य आदेश पर दिया गया था।
- वर्ष 2014, 2015 एवं 2017 में मोदी जी का नाम टाइम मैगजीन में दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों मे शामिल था एवं वर्ष 2015, 2016 एवं 2018 को फोर्ब्स मैगजीन में दुनिया के 9 सबसे शक्तिशाली लोगों में शामिल था।
- 10 फरवरी 2018 में इन्हें विदेशी डिग्रिटरीस के लिए पलेस्टाइन का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पलेस्टाइन राज्य के ग्रांड कोलार के साथ सम्मानित किया गया था।

- 27 सितम्बर 2018 को नरेन्द्र मोदी जी को चौंपियन ऑफ अर्थ अवार्ड प्रदान किया गया था जोकि यूनाइटेड नेशन का सर्वोच्च पर्यावरण सम्मान है और यह अवार्ड 5 अन्य व्यक्तियों और संगठनों को भी प्रदान किया गया था। जिन्होने अन्तर्राष्ट्रीय सोलर अलायंस की लीडरशिप के लिए और वर्ष 2022 तक प्लास्टिक के उपयोग को खत्म करने के लिए संकलप लिया था।

इस तरह से प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपने मुख्यमंत्री बनने से लेकर प्रधानमंत्री बनने के बाद तक के कार्यकाल मे काफी सारी उपलब्धियों और पुरस्कार एवं सम्मान अपने नाम किए है आगे भी करते रहेंगे।

चतुर्थ अध्याय

शैक्षिक विचारधारा

अध्याय : चतुर्थ

शैक्षिक विचारधारा

विचारधारा, सामाजिक राजनीतिक दर्शन में राजनीतिक, कानूनी, नैतिक, सौन्दर्यात्मक, धार्मिक तथा दार्शनिक विचार चिन्तन और सिद्धान्त प्रतिपादन की व्यवस्थित प्राविधिक प्रक्रिया है। विचारधारा का सामान्य आशय राजनीतिक सिद्धान्त रूप में किसी समाज या समूह में प्रचलित उन विचारों का समुच्चय है जिनके आधार पर वह किसी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संगठन विशेष को उचित या अनुचित ठहराता है। विचारधारा के आलोचक बहुधा इसे एक ऐसे विश्वास के विषय के रूप में व्यवहृत करते हैं जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता। तर्क दिया जाता है कि किसी विचारधारा विशेष के अनुयायी उसे अपने आप में सत्य मानकर उसका अनुसरण करते हैं, उसके सत्यापन की आवश्यकता नहीं समझी जाती। वस्तुतः प्रत्येक विचारधारा के समर्थक उसकी पुष्टि के लिए किंचित सिद्धान्त और तर्क अवश्य प्रस्तुत करते हैं और दूसरे के मन में उसके प्रति आस्था और विश्वास पैदा करने का प्रयत्न करते हैं।

4.1 जड़ी-बूटी है शिक्षा

जीवन बदल रहा है, युग बदल रहा है। गरीबी के सामने लड़ना है तो साधन क्या है? अकाल पड़े, पानी नहीं मिले, पशु दूध नहीं देती हों, खेत सुखी भट्टी से पढ़े हो, घोर गरीबी आ गई, इससे लड़ना है तो साधन क्या? घोर परिस्थिति में कुछ काम आए, ऐसा साधन हों तो वह साधन है शिक्षा। शिक्षा एक ऐसी चीज है, जो तुम्हें तार देती है, बचा लेती है, मुश्किलों में से बाहर निकाल लाती है। किसी भी परिस्थिति के सामने लड़ना है तो अकसीर जड़ी-बूटी है शिक्षा। शिक्षा नहीं हों तो जीवन में कुछ नहीं है। आपके घर में कोई बीमार हो जाए, आप डॉक्टर के पास जाती हो, डॉक्टर आपके कुटुम्ब के बीमा मनुष्य को ठीक कर दे तो डॉक्टर आपको भगवान जैसा लगता है या नहीं। तुम्हें ऐसा लगेगा कि डॉक्टर भगवान है। डॉक्टर जब तुम्हें भगवान जैसा लगे, तब तुम्हारे मन में ऐसा होना चाहिए कि मेरा लड़का डॉक्टर बने तो कितना अच्छा होगा।

किसी को तुम्हारा लड़का भगवान जैसा लगेगा। यदि तुम्हें डॉक्टर में भगवान दिखाई देता है तो आपके लड़के को किस कारण से डॉक्टर नही बनना चाहिए? यह विचार आपको क्यों नहीं आया? गाँव में खाकी कपड़े पहनकर पुलिस इंस्पेक्टर मोटर साइकिल लेकर आए तो सारा गाँव 'साहब आए, साहब आए' कहते हुए इकट्ठा हों जाता है। आपका लड़का पढ़ लिखकर, मोटर साइकिल लेकर, खाकी कपड़े पहनकर रुआब से गाँव में आता हों तो तुम्हें देखने में ही आनन्द आएगा, पर यह सब कब और कैसे सम्भाव हों? आप अपनी सन्तान को पढ़ाए तो ही सम्भव है। सन्तान को पढ़ाओगे नहीं तो यह सम्भव नहीं हों सकता है। आपकी सन्तान पढ़े, इसकी चिन्ता सारा राज्य, पूरी सरकार कर रही है, राज्य का मुख्यमंत्री कर रहा है।

सभी माता पिताओं से मुझे भी कहना है कि आप पढ़ नहीं सके तो ठीक परन्तु किसी दिन आते जाते शाम को स्कूल के मकान में आने का मन नहीं होता है? गाँव के मन्दिर में जाने का समय है, परन्तु गाँव के स्कूल में जाने का समय नहीं होता है, इससे खराब बात दूसरी क्या हो सकती है? जितनी उमंग से मन्दिर जाते हैं, जिनती उमंग से त्योहार मानते है, उतनी ही उमंग से स्कूल की तरफ जाने की हमारी इच्छा क्यों नहीं होती है? जिस पाठशाला रूपी मन्दिर में हमारे नन्हें-नन्हें बच्चों की जिन्दगी बनाई जाती है, वह पाठशाला रूपी मन्दिर घने वृक्षो वाला क्यों नहीं हो? इस पाठशाला के अन्दर जाकर यदि कुछ गन्दगी है तो थोड़ी मेहनत करके उसे साफ क्यों नहीं कर दें? उसकी खिड़की थोड़ी टूटी हुई हो तो गाँव के लोग इकट्ठा होकर गाँव के बढ़ई से दो कीलें क्यों न ठुकवाकार उसे ठीक करा देते हैं। गाँव की पाठशाला सबकी पाठशाला है। ऐसी चिन्ता हम क्यों नहीं करें। यह सब उत्तरदायित्व हम मिलकर उठा लें तो कल को वह पाठशाला कितनी बड़ी हो जाएगी, उसका अंदाज आप कर सकते है।

मैं तो गाँव के लोगो से कहता हूँ कि पाठशाला के ऊपर सारे गाँव का ध्यान होना चाहिए। सारा गाँव मन्दिर का ध्यान रखता है न। इसी प्रकार से पाठशाला में अध्यापक आते है या नहीं, बच्चे पढ़ने में रुचि लेते है या नही। इसका भी ध्यान रखना चाहिए। मैं तो गाँव के लोगों से कहता हूँ कि शिक्षक यदि नियमित नहीं आते हों, शिक्षक बच्चों को पढाने में टाल मटोल करते हों तो मुझे एक पोस्टकार्ड लिखो। मैं आपकी सारी परिस्थिति अपने ऊपर लेकर चिन्ता करूँगा। शिक्षण की चिन्ता हम सबको करनी पड़ेगी। यदि शिक्षण की चिन्ता नहीं करेगे तो हमारी आने वाली पीढ़ी पिछड़ जाएगी। अब तो हमारे घरों मे टी.वी. होता है। टी.वी.

देखकर लगता है, दुनिया कितनी आगे निकाल गई है। लोगों ने कितनी प्रगति की है और हम वहीं के वहीं है तो इस परिस्थिति से बाहर आना पड़ेगा। शिक्षा की ओर ध्यान देगे, शिक्षण की चिन्ता करेगे तो मुझे पूरा विश्वश है कि जो हम चाहेंगे वही परिणाम मिलेगा।

4.2 शिक्षा लाएगी सामाजिक क्रान्ति

मैं अनुमान से कह सकता हूँ, इस विषय में मेरा कोई अध्ययन नहीं है। आज से लगभग 100 वर्ष पूर्व चौधरी समाज को निश्चित रूप से कोई योग्य नेतृत्व मिला होगा। निश्चित रूप से विशेष नेतृत्व मिला होगा, जिन्होने इस समाज को पशुपालन के बारे में नई दिशा दिखाई, जो आज 100 वर्ष बाद भी समाज को टिकाए रखने के काम आ रही है। उस समय के नेतृत्व को पता होगा कि हमारे उत्तर गुजरात में चौधरी समाज कि सविशेष प्रजा है और इस उत्तर गुजरात में पानी की बहुत कमी रहती है।

खेती करने के लिए जमीन चाहे जितनी भी हो, उस जमाने में यह प्रश्न हमेशा रहता था कि घर को सुख से चलाने के लिए परिवार को जितना चाहिए उतना अन्न उत्पन्न होगा या नहीं और यह प्रश्न समाज के नेतृत्व को भी हमेशा खटकता होगा। उन्हें भी लगा होगा कि इस प्रकार की स्थिति में हम कब तक रह पाएगें? इस चिन्ता में उन्होने पशुपालन की ओर अपना ध्यान दौड़ाया, अन्यथा जातिगत रचना में पशुपालन और समाज के बीच कुछ भी औचित्यपूर्ण सम्बन्ध नहीं हैं। उस समय की परिस्थिति के मध्य में नेतृत्व करने वाले को यह सूझा होगा कि यदि हमारा यह समाज खेती बाड़ी के साथ पशुपालन को भी अपना ले तो पूरक आमदनी होगी, पूरक आमदनी होगी तो मान सम्मान भरा जीवन जी सकेंगे और देश व समाज में अपना सिर ऊँचा करके जी सकेंगे। हमने देखा भी है कि इस चौधरी समाज ने पशुपालन के क्षेत्र में एक बड़ी सफलता प्राप्त की है। यह खेती से भी सवाया पशुपालन का पूरक रोजगार बन गया है। इसके माध्यम से बनासकांठा और मेहसाणा में दूध की डेरियाँ बनीं। यह एक बहुत ही बड़ा योगदान है इस समाज का।

4.3 सामाजिक उत्थान

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से पूरे देश के उज्जवला योजना लाभार्थियों के साथ संवाद किया। प्रधानमंत्री के साथ संवाद के लिए देशभर में 600 से अधिक केंदों में प्रत्येक केन्द्र पर तीन उज्जवला योजना लाभार्थी उपस्थित थे।

नरेन्द्र मोदी ऐप तथा विभिन्न समाचार चैनल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म सहित विभिन्न प्लेटफॉर्मों के माध्यम से 10 लाख लोगों ने इस संवाद कार्यक्रम को देखा। योजना के लाभार्थियों के साथ संवाद करने और टेक्नोलॉजी के माध्यम से उनके अनुभवों को साझा करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि उज्जवला योजना प्रगति का प्रतीक बन गई है। उन्होंने कहा कि योजना उत्कृष्ट सामाजिक परिवर्तन ला रही है और इस परिवर्तन से देश का समग्र विकास प्रभावित हो रहा है।

उज्जवला योजना के माध्यम से अब तक ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग 4 करोड़ महिलाएँ एलपीजी कनेक्शन प्राप्त कर चुकी हैं। 2014 से चार वर्षों में कुल मिलाकर लगभग 10 करोड़ नए एलपीजी कनेक्शन जारी किए गए हैं जबकि वर्ष 1955 से 2014 के बीच लगभग 6 दशकों में केवल 13 करोड़ एलपीजी कनेक्शन जारी किए गए थे।

अपने प्रारम्भिक सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने 1933 में लिखित मुंशी प्रेमचन्द की कहानी का उदाहरण देते हुए गृहिणियों की जिन्दगी को सहज बनाने के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उज्जवला से अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं। स्वास्थ्य बेहतर हुआ है, जहरीले धुंए से मुक्ति मिली है और स्वच्छ ईंधन प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के पास अब अतिरिक्त आय अर्जित करने का बड़ा अवसर है क्योंकि रसोई में लगने वाले समय में कमी हुई है।

प्रधानमंत्री ने बल देते हुए कहा कि केन्द्र सरकार यह सुनिश्चित करने पर ध्यान दे रही है कि इस योजना में कोई बिचौलिया शामिल न हो और पारदर्शिता के साथ लाभार्थियों का चयन हो। उन्होंने कहा कि भारत में अब 69 प्रतिशत गाँव में एलपीजी पहुँच गई है जबकि 81 प्रतिशत गाँवों में एलपीजी की पहुँच 75 प्रतिशत से अधिक है।

प्रधानमंत्री के साथ संवाद में लाभार्थियों ने बताया कि कैसे एलपीजी कनेक्शन ने खाना पकाने में लगने वाले समय को घटा दिया है और कैसे पूरे परिवार के लिए जीवन की गुणवत्ता बढ़ा दी है।

सामाजिक उत्थान और सतत विकास का बड़ा स्त्रोत बन चुकी है उज्ज्वला योजना।

-प्रधानमंत्री

4.4 दिव्यांग : करुणा नहीं, कर्तव्य भाव

कई लोगों को विचार आता है कि किसी दिव्यांग की सेवा करनी चाहिए। मेरा अनुभव ऐसा है कि दिव्यांग का स्वभाव ऐसा होता है और ईश्वर ने उसे ऐसी शक्ति दी है कि कोई उसका हाथ पकड़कर चलाने का प्रयत्न करें तो वह झटककर अपना हाथ छुड़ा लेता है। उसे ऐसा लगता है कि भाई, तेरा सहारा लेना पड़े, यह मुझे स्वीकार नहीं है। उसका आशय होता है कि जिस बल पर ईश्वर ने जिस अवस्था में मुझे जीने के लिए बाध्य किया है मैं उसमें भी श्रेष्ठ रीति से जीऊ और किसी के लिए भी बोझ नहीं बनूँ, किसी की सहायता नहीं लूँ। जहाँ तक सम्भव हो, जितना भी हो सके, स्वयं ही काम करना। यह एक स्वाभिमान है, शायद हमें ईश्वर ने सब कुछ दिया है, फिर भी इस स्वाभिमान की कमी हमारे अन्दर है, ऐसा मुझे लगता है।

कई बार समाज के लोगों को ऐसा लगता है कि दिव्यांग के प्रति दया भाव से देखना चाहिए। मैं मानता हूँ दिव्यांगों का इससे बड़ा अपमान कोई नहीं हो सकता है। दया और करुणा स्वस्थ समाज के स्वस्थ मन का विचार नहीं है। वास्तव में इन भाइयों की और कर्तव्य भाव से देखना चाहिए। किसी एक परिवार में यदि कोई सन्तान दिव्यांग है तो उसका उत्तरदायित्व उस कुटुम्ब का नहीं, बल्कि समग्र समाज का होना चाहिए। यद्यपि ईश्वर ने किसी एक घर में उसे जन्म दिया हो। इसका समस्त उत्तरदायित्व उस घर का नहीं, बल्कि समस्त समाज, राज्य और देश का है। यह वातावरण हमें बनाना पड़ेगा। हमारे यहाँ इस प्रकार का वातावरण सदियों से था, परन्तु कालक्रम में इसमें कमी आ गई है। उसे फिर से जीवित करने की आवश्यकता है। यदि ऐसा नहीं होता है तो मुझे ऐसा लगता है कि वह व्यक्ति दिव्यांग नहीं, बल्कि समाज दिव्यांग है दिव्यांग को समाज कि पूँजी मानता है।

समस्त भारत में हमने प्रयोग किया है। वैसे तो यह प्रयोग है, इस पर ध्यान देना चाहिए। उसकी चर्चा हो और जो संवेदनशीलता बची हो तो इस पर ढेरों लेख लिखे जाएँ, ऐसा निर्माण गुजरात सरकार ने किया है। देश का दुर्भाग्य है कि संवेदनाओं को लगभग देश निकाला दे दिया गया है। परिणाम स्वरूप ऐसी प्रेरक घटनाओं की जानकारी भी नहीं होती है इसकी सबको जानकारी हो, ऐसा इस राज्य में निर्णय लिया है। राज्य में दिव्यांगों की सेवा के लिए एक आयोग है।

सामान्य रूप से सरकार में एक ऐसी प्रवृत्ति बनी हुई है कि इस आयोग में किसी को नौकरी दो तो उसे सजा के रूप में नियुक्ति माना जाता था। वह भाई कुछ नहीं करते हैं तो उन्हें वहाँ भेज दो। कोई अच्छा आदमी भी वहाँ जाए तो भी लोग उसे इस प्रकार से देखते हैं, मानो उसने कोई गुनाह किया है। इसलिए यह भाई यहाँ आए हुए लगते हैं। सामने से माँगकर भी गए हो तो भी उसे देखने का दृष्टिकोण ऐसा ही बन गया है। ऐसी इसकी छवि है। इस परिस्थिति को मुझे बदलना है। पर मुझे ऐसा लगता था कि शायद एक नया प्रयोग करें तो सफलता मिले और पहली बार इस राज के अन्दर दिव्यांगों की सेवा में आयोग के अध्यक्ष के रूप में हमने एक प्रज्ञाचक्षु भाई का साक्षात्कार लेकर उन्हें नियुक्त किया है। वे स्वयं कॉलेज में अध्यापक थे। मैंने कहा है कि आप ने नौकरी छोड़कर यहाँ आ जाएँ। वे आए और इस कारण एक संवेदना खड़ी हुई है, एक अलग दृष्टिकोण खड़ा हुआ है। जो स्वयं दुखी हो, उसे पता होता है कि शेष लोगों का दु:ख कैसा होगा।

एक दूसरा निर्णय भी लिया है। इस राज्य में दिव्यांग और मन्द बुद्दि बालक भूतकाल में परीक्षा देता था तो उसे 35 प्रतिशत अंको के साथ उत्तीर्ण होना पड़ता था। एक स्वस्थ बालक को पुस्तक लेनी हो तो वह जितनी जल्दी ले सकता है, उतनी जल्दी दिव्यांग बालक पुस्तक नहीं ले सकता है। यह भेद हमें समझना पड़ेगा। इस कारण इस राज्य सरकार ने समग्र भारत में पहली बार निर्णय लिया है कि परीक्षा देने वाला दिव्यांग बालक यदि 20 अंक भी लाएगा तो उसे उत्तीर्ण माना जाएगा। बात बहुत छोटी हो सकती है, परन्तु सामान्य मानव को तकलीफ कि अनुभूति होती है तो ईश्वर ऐसा निर्णय करने कि प्रेरणा देता है। ईश्वर सुझाता है कि यह करने योग्य काम है और इस प्रकार से ऐसे निर्णय लिए जाते है।

राज्य के अन्दर बहुत से ऐसे निजी उद्योगपतियों को देखा है, जो आग्रहपूर्वक अपने यहाँ के कुछ विशेष प्रकार के कामों के लिए दिव्यांगों को ढूँढ लाते है। उन्हे गौरव होता होगा कि मैं चाहे जितना कमाता हूँ, परन्तु मैं किसी के उपयोग में तो आता हूँ। जीवन में एक सन्तोष होता हैं। सेवा स्वतः सुखाय होती है। ऐसे अनेक लोग राज्य में होगें। वे पुरस्कार लेने के लिए कोई प्रार्थना पत्र या निवेदन भी सरकार में नहीं करते होगें। ये सारे काम मात्र सरकारों द्वारा परिपूर्ण हों, ऐसा नहीं है। यह राज्य सरकार पुरस्कार वितरण द्वारा जो लोग ऐसी सेवा कर रहें है, उनका सम्मान करने का एक छोटा सा प्रयास कर रही है। हम सबकुछ करते है, ऐसा हमारा दावा नहीं हैं परन्तु जो श्रेष्ठ हो रहा है, उसका समाज में ध्यान दिया जाए बस हमारा इतना ही प्रयत्न हैं।

4.5 बेटा-बेटी सब पढ़े

मैं लोगों के पास से कुछ माँगता हूँ। गाँधीनगर में कितनी ही बातों से मुझे पीड़ा होती है। मेरा यह दु:ख लोग दूर कर सकेंगे, ऐसी आशा है। यह मेरी आशा निष्फल तो नहीं जाएगी? मुझे दु:ख इस बात का है कि आजादी के 60 वर्ष हो गए और सन 2010 में गुजरात निर्माण को 50 वर्ष हो जाएँगे। पाठशालाओं में सैकड़ों कमरे बने होगें। हजारों शिक्षकों की नियुक्ति हुई होगी, इतने सारे शिक्षक सहायक नियुक्त हुए होंगे। उन्हें देखने के लिए साहब लोगों की बड़ी फौज खड़ी कर दी होगी, रुपयों की धुआंधार बरसात होती होगी। यह सब होने के बाद भी गाँव में 100 महिलाओं में से 80 महिलाएँ अशिक्षित है तो मुझे दु:ख होना स्वाभाविक है। गाँव में 100 में से 55 पुरुषों ने विद्यालय का दरवाजा भी नहीं देखा है। ऐसी परिस्थिति से दु:ख होता है, यह स्वाभाविक है। भूतकाल के मुख्यमंत्रियों को दु:ख हुआ था या नहीं, इसका पता मुझे नहीं है।

भूतकाल की सरकार को पीड़ा होती थी या नहीं, इसका मुझे पता नहीं है। भूतकाल में सरकारी तंत्र को इसकी चिन्ता थी या नहीं थी, यह मेरा विषय नहीं है, परन्तु मुझे चिन्ता होती है। इस चिन्ता को दूर करने के लिए मुझे लोगों की मदद चाहिए। इसी कारण मैं साला प्रवेशोत्सव के अवसर पर गाँव-गाँव घूमता हूँ। आज के युग में भी माता पिता सन्तान को नहीं पढ़ते है, इससे बड़ी दु:ख की कोई बात नहीं हो सकती है। कई लोग अपनी सन्तान को कहते होंगे कि हमारी सारी जिन्दगी पूरी हो गई और कुछ भी पढ़े नहीं तो तुझे पढ़कर क्या करना है? पढ़े नहीं तो भी सुख से रोटी खाई है न। ऐसे भाइयों बहनों से मेरा कहना है तुम्हारा तो बिगड़ा, शो बिगड़ा, पर इनका भविष्य क्यों बिगाड़ रहे हो? तुम्हें तो अच्छा और बुरा देखने का सौभाग्य नहीं मिला, इस कारण तुम्हें ऐसा लगता है कि हम तो 75-80 वर्ष के हो गए, पढ़े नहीं तो भी जीवन बीत ही गया। अत: बच्चों को नहीं पढ़ाएँगे तो उनकी गाड़ी भी हमारे जैसे निकल ही जाएगी। अब जमाना बदल गया है, अब इस प्रकार से गाड़ी नहीं चल पाएगी। तुम्हारे दिन तो बीत गए, तुम्हारे बेटे व बेटी के नहीं बीतेंगे। तुम जिस जमाने में थे, उस जमाने का वातावरण दूसरे प्रकार का था, अब जो जमाना है, उसमें परिस्थिति नहीं चलेगी और इसलिए यह सब देखकर अपनी पीड़ा को दूर करने के लिए गाँव के लोगों के पास गया हूँ। मेरा दु:ख दूर करने की इच्छा बस यही है। इस गाँव में शिक्षण कैसे बढें, आपका बेटा पढें तो आपको आनन्द होगा। आपका बच्चा

पढ़कर पहला नम्बर प्राप्त करें तो उसका आनन्द आएगा। परन्तु यहाँ तो बात ही दूसरी है। आपका बच्चा पढें तो मुझे आनन्द आता है। आपका बच्चा पहले नम्बर पर आता है तो मुझे आनन्द होता है। मैं महिलाओं से पूछता हूँ कि जो अनपढ़ है, वे महिला अपना हाथ ऊँचा करें तो कैसा लगेगा? सबको शर्म आएगी। सबका सिर शर्म नीचा हो जाएगा। आप विचार करो कि आज से 25 वर्ष बाद आपकी सन्तानों से कोई पूछे कि भाई, आप पढ़े लिखे हो या नहीं? वह बेचारा तो धरती फटे और उसमें समा जाए, ऐसी स्थिति हो जाएगी। आपको अनपढ़ होने से कितनी शर्म आती है तो आपकी सन्तानों को आने वाले कल में कितनी ज्यादा शर्म आएगी, इसका थोड़ा सा हिसाब लगाओ। इसी कारण कहता हूँ, अपनी सन्तानों को शिक्षा दो।

4.6 कन्यादान से पहले विद्यादान

कई बार हम कहते है कि बेटी को पढ़ाओ, तो माँ कहती है अब इसको पढ़ाकर क्या करना है? दूसरे घर भेजनी है, वहाँ जाकर जो भी करना होगा, करेगी। अरे आपने अपनी बेटी को कितने प्यार से बड़ा किया है, वह कभी बीमार हो जाती है तो माँ को नींद नहीं आती है। यह तुम्हारी लाड़ली बेटी है और आप यह कहकर छोड़ देते है कि दूसरों के घर भेजनी है, उसे पढ़ने कि कोई जरूरत नहीं है। अरे, बेटी को चाहे जिस घर में भेजें, परन्तु बेटी है तो हमारे जिगर का टुकड़ा। उसे ऐसे ही निराधार नहीं रख सकते है। दूसरों के घर जाना है तो बस सबकुछ समाप्त हो गया? हमारे यहाँ कन्यादान करने का पुण्य होता है। ऐसा कहते है कि कन्यादान करें तो पुण्य मिलता है। कन्यादान का जीवन में बड़ा पुण्य है। आज के जमाने में मुझे लगता है, ऐसा रूखा सूखा कन्यादान करो तो पुण्य नहीं मिलता। भगवान भी तो समझदार है। कन्यादान का पुण्य तभी मिलेगा, जब तुमने विद्यादान किया हो, नहीं तो तुम्हारा किया हुआ कन्यादान बेकार ही जाता है। पहले विद्यादान करें। बेटी पढ़ लिखकर ससुराल जाएगी तो कभी भी किसी मुश्किल में नहीं पड़ेगी। मानो उसका विवाह कर उसे ससुराल भेजा हो, सुखी संसार हो और ईश्वर न करें, कोई मुसीबत आ गई, दुखों का पहाड़ बेटी पर टूट पड़ा हो तो यदि बेटी पढ़ी लिखी होगी तो चाहे जैसे दुखों का पहाड़ टूट पड़ा हो, तो भी वह सारे कुटुम्ब को सम्भाल लेगी। आपने माँ बाप को आर्शीवाद देगी कि माँ बाप ने मुझे पढ़ाया लिखाया और बाद में विवाह किया तो आज मैं इस मुसीबत का सामना कर सकी, नहीं तो कुटुम्ब का क्या होता?

दोष ढूढ़ने वाले बहुत से लोग आज भी अनपढ़ रह गए लोगों के कारण से मुझे गाली देते है। अब गाँव में 100 में से 80 पढ़े लिखे है, गाँव में आज 50 वर्ष की उम्र के है और पढ़े नहीं है तो इसमें मेरा क्या अपराध है। मेरे से भी बड़ी उम्र के है और पढ़े लिखे नहीं है तो उसमें मेरा क्या गुनाह? गालियाँ मुझे मिलती है कि मोदी के राज्य में इतने लोग अनपढ़ हैं। ये गलियाँ खाकर भी मुझे आने वाली पीढ़ी को पढ़ाना है। गर्मी के मौसम में झुलसाती गर्मी में गुजरात की सरकार सारे गाँव में घूम रही है। धूल के गुबारों के बीच, मुख्यमंत्री, मंत्रीगण, सरकार के अधिकारी सभी गुजरात के गाँव की धूल छान रहे है। इसलिए की गुजरात की आनेवाली पीढ़ियाँ शिक्षित हों, गुजरात का आनेवाला कल समृद्धि से भरा हो, गुजरात का आनेवाला कल सक्षम हो, इसके लिए ही परिश्रम यज्ञ कर रहे है। लड़कियाँ गाँव में पढ़कर आगे पढ़ने के लिए जाए, इसके लिए सरकार ने बस का किराया माफ कर दिया। लड़की को पढ़ाना है तो बस का किराया मुफ्त–जाओ बेटा पढ़ो। उसे एक रुपए का भी खर्च नहीं करना पड़ेगा, इसकी चिन्ता हम करते है। इतना सब करने के बाद भी हमारे बच्चे पढे नहीं तो गुनहगार कौन? बच्चों को पढ़ाने का उत्तरदायित्व समाज और माँ बाप उठाए तो ही यह परिस्थिति बदली जा सकती है हमारे यहाँ बैल बीमार होता है तो हम कितना प्रयत्न करते है। गाँव-गाँव का चक्कर मारकर अच्छा डॉक्टर ढुढ़ते है और चाहे जीतने रुपए खर्च हो, खर्च कर बैल को ठीक कर लेते है। एक बैल के लिए इतनी चिन्ता करते है, परन्तु अपनी प्यारी सन्तान की पढ़ाई की चिन्ता नहीं करे, इससे अधिक खराब बात क्या हो सकती है?

4.7 शिक्षा ऐसी जिससे मानव निर्माण हो

प्रधानमंत्री ने शिक्षा के पुनर्जीवन पर अकादमिक नेतृत्व सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद कहा कि समय की माँग है कि शिक्षा में इनोवेशन होना चाहिए। सरकार आज शिक्षा को लक्ष्य देने और उसे समाज के विकास से जोड़ने का लगातार प्रयास कर रही है। आज देश में 900 विश्वविद्यालय और 40,000 कॉलेज हैं। उन्होंने कहा कि अगर हम अपनी समस्याओं से निपटने के लिए इन संस्थाओं की मदद लें तो सन्तुलित समाधान मिलेगा। शिक्षा के पुनर्जीवन की बात होती है, तो उसमें बिना इनोवेशन के कुछ नहीं हो सकता है। बाबा साहब ने कहा था कि शिक्षा से अधिक महत्व चरित्र का होता है साथ ही सन्तुलित विकास के लिए हमेशा नए इनोवेशन की जरूरत होती है। पीएम मोदी ने कहा, हमें एक

और वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि आज दुनिया में कोई भी देश, समाज या व्यक्ति अलग होकर नहीं रह सकता। हमें ग्लोबल सिटीजन और ग्लोबल विलेज के दर्शन पर सोचना ही होगा और ये दर्शन तो हमारे संस्कारों में प्राचीन काल से ही मौजूद हैं। विज्ञान भवन में आयोजित इस सम्मेलन में कई विश्वविद्यालयों के कुलपति और निदेशकों ने हिस्सा लिया। इसका आयोजन यूजीसी, एआईसीटीई, आईसीएसएसआर, आईजीएनसीए, जेएनयू और एसजीटी विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से कर रहे हैं। इस सम्मेलन के विषयों में भारतीय शिक्षा प्रणाली के समक्ष चुनौतियाँ और शिक्षा के क्षेत्र में हासिल किए जाने योग्य परिणाम और शिक्षा का नियमन शामिल है। इस सम्मेलन को आठ सत्रों में बाँटा गया है। सम्मेलन में भारत की जरूरतों के अनुरूप शोध की गुणवत्ता को बेहतर बनाना, अकादमिक संसाधनों को साझा करते हुए शैक्षणिक संस्थाओं में समन्वय बनाना, समावेशी और समन्वित परिसर बनाना, सहभागिता आधारित प्रशासनिक मॉडल, ठोस वित्तीय मॉडल का निर्माण और सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित नैतिक शिक्षा को बढ़ावा देने के विषय पर चर्चा होगी।

4.8 राष्ट्र के लिए शिक्षा और इनोवेशन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एकेडमिक लीडरशिप ऑन एजुकेशन फॉर रिसर्जेंसल का उद्घाटन किया। दिल्ली के विज्ञान भवन में मौजूद हैं। यह कार्यक्रम विज्ञान भवन में आयोजित किया जा रहा है। लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा ज्ञान और शिक्षा सिर्फ किताबी नहीं हो सकते हैं। शिक्षा का मकसद व्यक्ति के हर आयाम का सन्तुलित विकास करना है और सन्तुलित विकास इनोवेशन के बिना सम्भव नहीं है। पीएम ने कहा हमारे प्राचीन तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में ज्ञान के साथ इनोवेशन पर भी जोर दिया जाता था। हमें एक और वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि आज दुनिया में कोई भी देश, समाज या व्यक्ति अकेला होकर नहीं रह सकता। पीएम ने कहा समाज और देश का निर्माण नवोन्मेष के बिना सम्भव नहीं, नवोन्मेष के बिना जिन्दगी ठहर जाती है। प्रधानमंत्री ने कहा उच्च शिक्षा हमें उच्च विचार, उच्च आचार, उच्च संस्कार और उच्च व्यवहार के साथ ही समाज की समस्याओं का उच्च समाधान भी उपलब्ध करती है। सरकार ने हेफा यानि हायर एजुकेशन फंडिंग

एजेंसी की स्थापना भी की है। जो उच्च शिक्षण संस्थाओं के गठन में आर्थिक सहायता मुहैया कराएगी। पीएम मोदी ने कहा, मेरी कोशिश रहती है कि जहाँ कहीं भी मैं कॉन्वोकेशन में जाऊं, तो वहाँ पर 40-50 गरीब बच्चों को भी उस कार्यक्रम में बुलाया जाए। ये बच्चे आते हैं, देखते हैं कि कैसे बड़े भैया, बड़ी दीदी डिग्रियाँ लेकर खुश हो रहे हैं, उनका सम्मान किया जा रहा है, तो उन्हें भी प्रेरणा मिलती है। पीएम ने कहा, हमारी सरकार शिक्षा के क्षेत्र में निवेश करने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही है। शिक्षा के ढाँचे को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा में राइज को लागू किया गया है। हमारा लक्ष्य 2022 तक इस पर एक लाख करोड़ रुपये खर्च करने का है। प्रधानमंत्री ने कहा, हमारे प्राचीन विश्वविद्यालयों जैसे नालन्दा, विक्रमशिला और तक्षशिला में ज्ञान के साथ ही इनोवेशन को बराबर महत्ता दी जाती थी तथा डॉक्टर अम्बेडकर, दीनदयाल उपाध्याय और राम मनोहर लोहिया ने हमेशा साक्षरता के जरिए चरित्र निर्माण पर जोर दिया है। उच्च शिक्षा को मजबूत करने के लिए हमारी सरकार का 1 लाख करोड़ रुपये खर्च करने का इरादा है। ज्ञान योजना के तहत हम शिक्षण संस्थानों में दुनिया भर के बेहतरीन शिक्षकों को आमंत्रित कर रहे हैं। जिससे बदलाव जाया सके। शिक्षा का इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर बनाने के लिए राइज यानि रिवाइटालाइजेशन ऑफ इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सिस्टम्स इन एजुकेशन कार्यक्रम शुरु किया गया है। मेरा आग्रह है कि विद्यार्थियों को कालेज, यूनीविर्सिटी के क्लास रुम में तो ज्ञान दें ही लेकिन उन्हें देश की आकांक्षाओं से भी जोड़ें। शिक्षा और इनोवेशन किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए बहुत जरूरी हैं। उच्च शिक्षा हमें उच्च विचार, उच्च आचार, उच्च संस्कार और उच्च व्यवहार के साथ ही समाज की समस्याओं का उच्च समाधान भी उपलब्ध करती है। प्रधानमंत्री ने कहा, हमें ग्लोबल सिटीजन और ग्लोबल विलेज के दर्शन पर सोचना ही होगा और ये दर्शन तो हमारे संस्कारों में प्राचीन काल से ही मौजूद है। स्वामी विवेकानन्द ने अच्छी शिक्षा पर जोर दिया था जो हमें इन्सान बनाती है। इनोवेशन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना जीवन बोझ की तरह लगता है।

4.9 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज कहा कि आज शिक्षा के विस्तार से ज्यादा महत्वपूर्ण शिक्षा में सुधार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है तथा बच्चों को अच्छी, योग्य शिक्षा मिलनी चाहिए और सरकार का बजट के माध्यम से अच्छी शिक्षा पर बल देने का प्रयास है। आकाशवाणी

पर प्रसारित 'मन की बात' कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने कहा, हमारे देश में सभी सरकारों ने शिक्षा पर बल दिया है और हर किसी सरकार ने अपने-अपने तरीके से प्रयास भी किया है। और ये भी सच्चाई है कि काफी अरसे तक हम लोगों का ध्यान इसी बात पर रहा कि शिक्षा संस्थान खड़े हों। शिक्षा व्यवस्था का विस्तार हो, स्कूल बनें, कालेज बनें, शिक्षकों की भर्ती हो, अधिकतम बच्चे स्कूल आए। एक प्रकार से शिक्षा को चारों तरफ फैलाने का प्रयास हो। ये प्राथमिकता रही और जरूरी भी। उन्होंने कहा, लेकिन अब जितना महत्व विस्तार का है उससे भी ज्यादा महत्व हमारी शिक्षा में सुधार का है। विस्तार का एक बहुत बड़ा काम हम कर चुके हैं। अब हमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना ही होगा। साक्षरता अभियान से अब अच्छी शिक्षा, ये हमारी प्राथमिकता बनानी पड़ेगी। अब तक हिसाब-किताब आवंटन पर होता था अब हमें परिणाम पर ही ध्यान देना पड़ेगा।

मोदी जी ने कहा कि अब तक स्कूल में कितने आये, उस पर बल था, अब स्कूल में आने से ज्यादा सीखने की ओर हमें बल देना होगा। दाखिला, दाखिला, दाखिला- ये मंत्र लगातार गूंजता रहा, लेकिन अब, जो बच्चे स्कूल में पहुँचे हैं, उनको अच्छी शिक्षा, योग्य शिक्षा, इसी पर हमने ध्यान केन्द्रित करना होगा। वर्तमान सरकार का बजट भी आपने देखा होगा। अच्छी शिक्षा पर बल देने का प्रयास हो रहा है। ये बात सही है कि बहुत बड़ा लम्बा सफर काटना है। लेकिन अगर हम सवा-सौ करोड़ देशवासी तय करें तो लम्बा सफर भी कट सकता है। मुम्बई की शर्मिला धरपुरे के सवाल के जवाब में प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षा के बारे में चिन्ता बहुत स्वाभाविक है। आज हर परिवार मे माँ-बाप का अगर पहला कोई सपना रहता है, तो वो रहता है कि बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले। घर-गाड़ी सब बाद में विचार आता है और भारत जैसे देश के लिए जन-मन की ये भावना है।

उन्होंने कहा कि बच्चे को पढ़ाना और अच्छा पढ़ाना। अच्छी शिक्षा मिले, उसकी चिन्ता होना, ये और अधिक बढ़ना चाहिये और अधिक जागरूकता आनी चाहिए। और मैं मानता हूँ जिन परिवारों में ये जागरूकता होती है उसका असर स्कूलों पर भी आता है। शिक्षकों पर भी आता है और बच्चा भी जागरूक होता जाता है कि मैं स्कूल में इस काम के लिए जा रहा हूँ।

मोदी ने कहा इसलिये मैं सभी अभिभावकों से, माँ-बाप से सबसे पहले यह आग्रह करूँगा कि बच्चे के साथ, स्कूल की हो रही गतिविधियों से विस्तार से समय देकर के बात करें और कुछ बात ध्यान में आए, तो खुद स्कूल में जा करके शिक्षकों से बात करें। ये जो सतर्कता है ये भी हमारी शिक्षा व्यवस्था में कई बुराइयों को कम कर सकती है और जन भागीदारी से तो ये होना ही होना है। लोगों से शिक्षा व्यवस्था में सुधार के बारे में सुझाव माँगते हुए प्रधानमंत्री ने कहा इस बार बजट में आपने देखा होगा कि लीक से हटकर के काम किया गया है। बजट के अन्दर दस सरकारी विश्वविद्यालय और दस निजी विश्वविद्यालय उनको सरकारी बन्धनों से मुक्ति देने का और चुनौतिपूर्ण रास्तों पर उनको आने के लिए कहा गया है कि आइये आप शीर्ष विश्वविद्यालय बनने के लिए क्या करना चाहते हैं बताइये। मोदी ने कहा कि जितना महत्व शिक्षा का है, उतना ही महत्व कौशल का है, उसी प्रकार से शिक्षा में प्रौद्योगिकी बहुत बड़ी भूमिका अदा करेगी। दूरस्थ शिक्षा प्रौद्योगिकी ये हमारी शिक्षा को सरल भी बनाएगी और ये बहुत ही निकट भविष्य में इसके परिणाम नजर आयेंगे, ऐसा मुझें विश्वास है।

4.10 शिक्षा के उद्देश्य

विज्ञान भवन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भाषण में शिक्षा के पारम्परिक लक्ष्य को दोहराया गया। एक ऐसे लक्ष्य को दोहराया गया जिसे हासिल करने का तरीका सदियों से तलाशा जा रहा है। लक्ष्य यह कि शिक्षा ऐसी हो जो हमें मनुष्य बना सके, जिससे जीवन का निर्माण हो, मानवता का प्रसार हो और चरित्र का गठन हो। प्रधानमंत्री ने ये लक्ष्य विवेकानन्द के हवाले से कहे। इस दोहराव में बस वह बात फिर रह गई कि ये लक्ष्य हासिल करने का तरीका क्या हो? प्रधानमंत्री के इस भाषण से उस तरीके के बारे में कोई विशिष्ट सुझाव तो नहीं दिखा फिर भी उन्होंने निरन्तर नवोन्मेष की जरूरत बताई। हालांकि अपनी तरफ से उन्होंने नवोन्मेष को देश दुनिया में सन्तुलित विकास से जोड़ा खैर, कुछ भी हो, शिक्षा और ज्ञान की मौजूदा शक्लोसूरत की आलोचना के बहाने से ही सही, कम से कम शिक्षा और ज्ञान के बारे में कुछ सुनने को तो मिला।

प्रधानमंत्री विज्ञान भवन में देश के कुलपतियों और शिक्षा संस्थानों के निदेशकों के एक सम्मेलन में बोल रहे थे। इसका विषय था पुनरुत्थान के लिए शिक्षा पर अकादमिक नेतृत्व हालांकि इस थीम या विषय

को समझने के लिए ऊँचे दर्जे की शिक्षा और ज्ञान की जरूरत जान पड़ती है। फिर भी मोटा-मोटा अंदाजा लगाया जा सकता है कि देश, समाज या व्यक्ति के फिर से उत्थान के लिए अकादमिक क्षेत्र को महत्व देने की बात हो रही है। विद्वानों की जमात में अकादमिक का मतलब है कि जो विद्वत्तापूर्ण हो ग्रीक परम्परा के इस शब्द का उद्भव ही विद्वानों के समागम के रूप में हुआ था। बेशक हुआ यह आयोजन देश के ज्ञान संस्थाओं के कोई 400 प्रशासकों का जमावड़ा था। प्रधानमंत्री उन्हें ही संबोधित कर रहे थे।

स्वामी विवेकानन्द के हवाले प्रधानमंत्री ने कहा कि मस्तिष्क में जानकारी भर देना शिक्षा नहीं है। आज ये सुझाव ठेठ सा लगता है लेकिन बहुत से युवाओं के लिए यह वाक्य वाकई बहुत उत्साह वर्धक होगा। खासकर उनके लिए जिन्हें विश्वविद्यालयों या स्कूलों में पढ़ने का मौका नहीं मिला और जिन्हें औपचारिक शिक्षा पाने का मौका मिला। वे बड़े हतोत्साहित हुए होंगे कि उन्हें मिली जानकारियाँ बड़ी चीज नहीं है। बहरहाल प्रधानमंत्री के इस भाषण से शिक्षा प्रशासकों को यह सन्देश गया होगा कि शासक चाहते हैं मस्तिष्क में जानकारी भरने वाली मौजूदा शिक्षा की बजाए ऐसी नवोन्मेषी शिक्षा दी जाए। जो व्यक्ति को मनुष्य बनाने वाली हो और उसका चरित्र गठन वाली शिक्षा हो।

प्रधानमंत्री के भाषण की यही इच्छा है यही इच्छा दुनिया के तमाम शासक समय-समय पर जताते रहे हैं। सदियों से यह इच्छा जताई जाती रही है और आज भी जताई जा रही है, इसलिए इसका मतलब है कि शिक्षा का वह रूप अभी हमें मिला नहीं है। वैसे एक बात दुनिया में हर जगह तय सी हो गई है कि शिक्षा का एक बड़ा मकसद नैतिकता का विकास करना भी है। इस तरह हर काल और हर भूखण्ड में नैतिकता के विकास की कोशिश होती है। कम से कम नैतिकता के पतन पर चिन्ता तो होती ही होती है। ये अलग बात है कि आज दिन तक कोई भी ऐसी निरापद राजनीतिक विचारधारा ईजाद नहीं हो पाई जो अनैतिकता की वृद्धि को रोक पाए और नैतिकता का विकास कर पाने का दावा कर सके।

ये जटिल विषय है। इसके लिए बुद्धयोत्तेजक सत्र का आयोजन चाहिए। विज्ञान भवन में जो आयोजन हुआ उसमें यह विमर्श हो सकता था हो कि अगर इस बात पर विचार होता तो इस पर गौर जरूरत होता कि शिक्षा से सम्बन्धित हमारा जो मंत्रालय है उसका नाम मानव संसाधन विकास मंत्रालय है यानी हम मानव को एक संसाधन मानते हैं यानी यह मानते हैं कि मानव अच्छे समाज या अच्छे देश या अच्छे राष्ट्र या

अच्छी दुनिया बनाने के लिए एक संसाधन भर है अब ये अलग बात है कि अच्छे देश की परिभाषा अभी हम तय नहीं कर पाए फिलहाल अच्छे देश से हमारा मतलब आर्थिक रूप से विकसित देश से ज्यादा कुछ भी नजर नहीं आता यह सवाल ही नहीं सुनाई देता कि धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर अपने अपने क्षेत्रों के नाम पर अस्मिता यानी मैंपना कितना नैतिक है और कितना अनैतिक है।

प्रधानमंत्री के भाषण में एक बात चरित्र गठन की थी यानी शिक्षा से चरित्र निर्माण की बात यह मसला भी जरा जटिल है फिर भी यह तो तय किया ही जा सकता है कि मानव के खासकर भारतीय मानव के चरित्र में नैतिकता बैठाने वाली शिक्षा कैसी हो यानी वह शिक्षा अस्मिता या मैंपने वाली होगी या सहअस्तित्व में यकीन बढ़ाने वाली होगी अब ये खुद ही देख लें कि आज हम होड़ यानी सिर्फ खुद को आगे रखने वाली शिक्षा दे रहे हैं या मानवता के पक्ष में सहअस्तित्व की भावना बढ़ाने वाली। प्रधानमंत्री के भाषण में किताबी ज्ञान की व्यर्थता का भी इशारा था और यह बात देश के उन अकादमिक प्रशासकों के सामने कही गई जिनका पूरा काम धाम ही किताबी ज्ञान देने की सुव्यवस्था करने का है उनसे कहा गया कि विचार को आचार में बदलने का भी इंतजाम करें विचार को आचार में बदलने का काम विश्वविद्यालयों और दूसरी शिक्षण संस्थाओं का है या किसी और का है, इसे हमें अलग से देखना पड़ेगा यह भी समझना पड़ेगा कि औपचारिक शिक्षा के अलावा राजनीतिक विचारधाराएँ मानव के व्यवहार को कैसे निर्धारित करती हैं बहरहाल, मानवता का प्रसार, चरित्र गठन और मनुष्यत्व के सुझाव सार्वकालिक और सार्वभौमिक सुझाव हैं किसी के लिए भी इन विचारों की हाँ में हाँ नहीं मिलाने का मतलब होगा उसका अनैतिक दिखने लगना ये अलग बात है कि ये विचार ही हैं उन विचारों के आचार में तब्दील करने के तरीके की तलाश आज भी है प्रधानमंत्री के भाषण से भी यही बात निकलती है।

4.11 परीक्षा पर चर्चा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने परीक्षा पर चर्चा की कार्यक्रम में देशभर से बच्चों, शिक्षकों और पैरंट्स की चिन्ताओं पर चर्चा की। कार्यक्रम में पीएम मोदी का शिक्षक, दार्शनिक, कवि से लेकर बहुत हल्का फुल्का अंदाज भी दिखा। उन्होंने परिजनों को भी सलाह ही कि बच्चों पर प्रेशर न बनाएँ, क्योंकि प्रेशर से ही परिस्थिति बिगड़ती है। पीएम ने ऑनलाइन गेम्स से लेकर सोशल मीडिया और परीक्षा में नम्बरों पर

टिप्स दिए। दो घण्टे चले इस कार्यक्रम में पीएम ने परीक्षा से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दिए और उन्हें एग्जाम को बेहतर तरीके से करने के बारे में भी जानकारी दी। इस दौरान एक मौका ऐसा भी आया जब एक माँ ने पीएम से कहा कि इन दिनों मेरा बेटा ऑनलाइन गेम्स काफी खेलता है। मैं उसकी पढ़ाई से चिंतित हूँ। इस पर पीएम ने माँ से पूछा कि ये पब्जी वाला है क्या। इस पर छात्रों ने खूब ठहाके लगाए।

शहर के लगभग हर स्कूल में स्कूल प्रबन्धन द्वारा परीक्षा पर चर्चा कार्यक्रम को लाइव दिखाया गया। सभी स्कूलों ने अपने स्तर पर तैयारियाँ की हुई थी और 8वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को पीएम के भाषण को सुनने के लिए बिठाया गया था। सुबह 11 बजे से शुरू हुआ कार्यक्रम दोपहर करीब 1 बजे तक चला। ज्यादातर स्टूडेंट्स कार्यक्रम के दौरान पीएम की बातों को समझते व तालियाँ बजाते दिखे। कार्यक्रम के बाद स्टूडेंट्स का कहना था कि खुशी की बात है कि देश के पीएम भी उनकी छोटी-छोटी समस्याओं को समझते हैं।

डीएवी स्कूल पठानकोट के छात्र अमित चौहान ने पूछा कि पढ़ाई करने में, एग्जाम देने में फन और इंटरेस्ट कैसे आएगा? इस सवाल के जवाब में प्रधानमंत्री ने कहा कि एग्जाम एक कसौटी हैं परखने का। एग्जाम को एक अवसर मानेंगे तो आनन्द आएगा। वहीं कार्यक्रम में एक माँ ने पूछा कि मेरा बच्चा इन दिनों ऑनलाइन गेम्स काफी खेलता है। मैं उसके मार्क्स और पढ़ाई को लेकर चिंतित हूँ। पीएम ने माँ से पूछा कि ये पब्जी वाला है क्या। इस पर छात्रों ने खूब ठहाके लगाए। पीएम ने पैरेंट्स से कहा इन दिनों तकनीक के कारण बच्चों के पास सूचनाएँ पहुँच सकती हैं। पैरंट्स को चाहिए कि बच्चों को तकनीक और ज्ञान से जोड़ें।

पीएम द्वारा दिए गए 5 टॉप टिप्स -

शब्द भण्डार बढ़ाएँ : छात्रों को नए नए शब्द सीखने चाहिए। इसके ढेर सारे लाभ हैं।

एप से भाषा सीखें : अब कई भाषाओं के मोबाइल ऐप आ गए हैं। उन ऐप की मदद से हिन्दी, इंग्लिश या अन्य भाषाओं पर अपनी पकड़ मजबूत बना सकते हैं।

लक्ष्य है जरूरी : जीवन में सफलता के लिए लक्ष्य का होना जरूरी है। पहले एक लक्ष्य तय कर लें और फिर उसको हासिल करने के लिए रणनीति बनाएँ।

मॉक टेस्ट : आपको ढेरों सारे ऑनलाइन मॉक टेस्ट मिल जाएँगे। मॉक टेस्ट की मदद से आप अपनी तैयारी

का स्तर और कमियों को पता कर सकते हैं।

तकनीक समस्या नहीं, हल : इण्टरनेट का सही इस्तेमाल करें। कई वेबसाइट और ऐप्स हैं जहाँ आप अपने कमजोर टॉपिक को मजबूत बना सकते हैं।

प्रधानमंत्री ने स्ट्रेस फ्री रहने के मंत्र दिए। उन्होंने कहा कि हर स्टूडेंट में अलग-अलग प्रतिभा होती है। ऐसे में कभी भी दूसरे जैसा बनने का प्रयास नहीं करें। इसके अलावा पीएम मोदी जी ने बताया कि हमें लक्ष्य छोटे छोटे रखने चाहिए और उन्हें पूरा करने में जी जान से जुट जाना चाहिए। हमारे अन्दर दूसरों को देखकर उन जैसा बनने की चाह होती है जो गलत है। हमें खुद को इतना काबिल बनाना चाहिए कि दूसरे हमारी नकल करें। हर कोई पढ़ाई में अच्छा नहीं होता और न ही कोई खेलकूद और गाने बजाने में अच्छा होता है। प्रधानमंत्री ने तुलना नहीं करने की जो सलाह दी, वह बहुत अच्छी लगी। पीएम मोदी ने आत्मविश्वास को नहीं टूटने के लिए जो टिप्स दिए वह बहुत बेहतर थे। पीएम ने न सिर्फ हमें सजेशन दिए बल्कि हमारे पेरेंट्स को भी प्रेशर नहीं देने को कहा। पीएम ने बताया कि जिन्दगी का मतलब ठहराव नहीं होता है, जिन्दगी का मतलब ही होता है गति।

4.12 मानव सशक्तिकरण के लिए स्वच्छ पर्यावरण

संयुक्त राष्ट्र ने कल मुझे 'चैम्पियन्स ऑफ द अर्थ अवॉर्ड' से सम्मानित किया। यह सम्मान प्राप्त करके मैं बहुत अभिभूत हूँ लेकिन महसूस करता हूँ कि यह पुरस्कार किसी व्यक्ति के लिए नहीं है। यह भारतीय संस्कृति और मूल्यों की स्वीकृति है जिसने हमेशा प्रकृति के साथ सौहार्द बनाने पर बल दिया है।

जलवायु परिवर्तन में भारत की सक्रिय भूमिका को मान्यता मिलना और संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री एँटोनियो गुटेरस तथा यूएनईपी के कार्यकारी निदेशक श्री इरिक सोलहिम द्वारा भारत की भूमिका की प्रशंसा करना प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण है। मानव और प्रकृति के बीच विशेष सम्बन्ध रहे हैं। प्रारम्भिक सभ्यताएँ नदियों के तट पर स्थापित हुईं। प्रकृति के साथ सौहार्द पूर्ण तरीके से रहने वाले समाज फलते फूलते है और समृद्ध होते है। मानव समाज आज एक महत्वपूर्ण चौराहे पर खड़ा है। हमने जो रास्ता तय किया है वह न केवल हमारा कल्याण निर्धारित करेगा बल्कि हमारे बाद इस ग्रह पर आने वाली

पीढ़ियों को भी खुशहाल रखेगा। लालच और आवश्यकताओं के बीच असन्तुलन ने गम्भीर पर्यावरण असन्तुलन पैदा कर दिया है। हम या तो इसे स्वीकार कर सकते हैं या पहले की तरह ही चल सकते हैं या सुधार के उपाय कर सकते हैं। तीन बातों से यह निर्धारित होगा कि कैसे एक समाज सार्थक परिवर्तन ला सकता है। पहली आन्तरिक चेतना इसके लिए अपने गौरवशाली अतीत को देखने से बेहतर कोई स्थान नहीं हो सकता। प्रकृति के प्रति सम्मान भारत की परम्परा के मूल में है। अथर्ववेद में पृथ्वी सूक्त शामिल है जिसमें प्रकृति और पर्यावरण के बारे में अथाह ज्ञान है।

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।

यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेयेदधातु॥

अर्थात्- माता पृथ्वी अभिनन्दन। उनमें सन्निहित हैं, महासागर और नदियों का जल, उनमें सन्निहित है, भोजन जो भूमि की जुताई द्वारा वे प्रकट करती हैं, उनमें निश्चित रूप सभी जीवन समाहित हैं, वे हमें जीवन प्रदान करें। ऋषियों ने पंचतत्व- पृथ्वी, वायु, जल, अग्नि, आकाश के बारे में यह बताया है कि किस तरह हमारी जीवन प्रणाली इन तत्वों की समरसता पर आधारित है।

महात्मा गाँधी ने ऐसी जीवन शैली को व्यवहार में उतारा जिसमें पर्यावरण के प्रति भावना प्रमुख है। उन्होंने युक्तिसंगत खपत का आह्वान किया ताकि विश्व को संसाधनों की कमी का सामना न करना पड़े। समरस जीवन शैली का पालन करना हमारे लोकाचार का अंग है। जब हमें अनुभव होगा कि हम एक समृद्ध परम्परा के ध्वज-वाहक हैं तब हमारे कार्यकलाप पर अपने आप सकारात्मक प्रभाव पड़ने लगेगा। दूसरा पक्ष जन जागरण का है। हमें पर्यावरण सम्बन्धी प्रश्नों पर यथासम्भव बातचीत करने लिखने चर्चा करने की आवश्यकता है। इसके साथ पर्यावरण सम्बन्धी विषयों पर अनुसन्धान और नवाचार को प्रोत्साहन देना भी महत्वपूर्ण है। जब हम एक समाज के रूप में पर्यावरण संरक्षण से अपने मजबूत रिश्तों के बारे में जागरूक होंगे और उसके बारे में नियमित रूप से चर्चा करेंगे तब सतत पर्यावरण की दिशा में हम स्वयं सक्रिय हो जाएँगे। इसीलिए सकारात्मक बदलाव लाने के लिए मैं सक्रियता को तीसरे पक्ष के रूप में रखता हूँ। इस संदर्भ में मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि भारत के 130 करोड़ लोग स्वच्छ और हरित पर्यावरण की दिशा में सक्रिय हैं और उसके लिए बढ़-चढ़कर काम कर रहे हैं। स्वच्छ भारत मिशन में हम यह अग्र सक्रियता देखते

हैं जो भविष्य में सतत विकास से सीधे जुड़ी है। देशवासियों के आशीर्वाद से 8.5 करोड़ आवासों की पहली बार शौचालयों तक पहुँच बनी है और 40 करोड़ से अधिक भारतीयों को अब खुले में शौच करने की आवश्यकता नहीं है। स्वच्छता का दायरा 39 प्रतिशत से बढ़कर 95 प्रतिशत हो गया है। प्राकृतिक परिवेश पर दबाव कम करने की खोज में यह ऐतिहासिक प्रयास हैं। उज्ज्वला योजना में भी हम यही अग्र सक्रियता देखते हैं जिसकी वजह से घरों में होने वाला वायु प्रदूषण बहुत कम हुआ है।

भारत की जीवन रेखा कही जाने वाली नदी गंगा नदी कई हिस्सों में काफी प्रदूषित हो चुकी थी और नमामि गंगे मिशन इस ऐतिहासिक गलती में परिवर्तन कर रहा है। पर्यावरण क्षेत्र में कौशल भारत में हमने समन्वित उद्देश्य अपनाए हैं और विभिन्न योजनाओं जिनमें हरित कौशल विकास कार्यक्रम शामिल है की शुरुआत की है जिससे पर्यावरण वानिकी, वन्यजीव और जलवायु परिवर्तन के क्षेत्र में वर्ष 2021 तक 70 लाख युवाओं को कुशल बनाना है। इससे पर्यावरण क्षेत्र में कुशल रोजगारों और उद्यमिता के लिए अनेक अवसर पैदा होंगे। हमारा देश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर विशेष ध्यान दे रहा है और पिछले चार वर्षों में इस क्षेत्र काफी सुगम और वहन करने योग्य बन गया है। उजाला योजना के तहत करीब 31 करोड़ एलईडी बल्ब बाँटे गए। इससे जहाँ एक तरफ एलईडी बल्बों की कीमतें कम हुई वहीं बिजली के बिलों और कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आई। भारत की पहल अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखी जा रही है। मुझे गर्व है कि भारत पेरिस में 2015 में हुई सीओपी-21 वार्ता में आगे रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबन्धन की शुरुआत के मौके पर मार्च 2018 में दुनिया के कई देशों के नेता नई दिल्ली में इकट्ठा हुए। यह गठबन्धन सौर ऊर्जा की क्षमताओं का बेहतर इस्तेमाल करने की एक पहल है। इसके जरिये उन देशों को साथ लाने का प्रयास किया गया है जहाँ सूरज की ऊर्जा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ऐसे समय में जबकि दुनिया में जलवायु परिवर्तन की बात हो रही है। भारत से जलवायु न्याय का आह्वान किया गया है। जलवायु न्याय का अर्थ समाज के उन गरीब और हाशिये पर खड़े लोगों के अधिकारों और हितों से जुड़ा है जो जलवायु परिवर्तन से सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

जैसा कि मैंने पहले भी लिखा है हमारी आज की गतिविधियों का प्रभाव आने वाले समय की मानव सभ्यता पर भी पड़ेगा और यह अब हम पर निर्भर करता है कि सतत भविष्य के लिए वैश्विक जिम्मेदारी की शुरुआत हम ही करें। विश्व को पर्यावरण के क्षेत्र में एक ऐसी मिसाल की तरफ बढ़ने की आवश्यकता है

जो सिर्फ सरकारी नियमों तथा कानूनों तक ही न हो बल्कि इसमें पर्यावरण जागरूकता भी हो। इस दिशा में जो व्यक्ति और संगठन लगातार मेहनत कर रहे हैं मैं उन्हें बधाई देना चाहूँगा क्योंकि वे हमारे समाज में चिरस्मरणीय बदलाव के अग्रदूत बन चुके है। इस दिशा में उनके प्रयत्नों के लिए मैं सरकार की ओर से हर तरह की मदद का आश्वासन देता हूँ। हम सब मिलकर एक स्वच्छ पर्यावरण बनाएँगे जो मानव सशक्तीकरण की दिशा में आधारशिला होगी।

4.13 नारी शक्ति : सामाजिक जीवन की संजीवनी

कुछ समय पहले राज्य में महिलाओं द्वारा स्व शक्ति मण्डल और इसके विकास के लिए किए गए प्रयासों को अद्भुत सफलता मिली है। सरकार की योजना में कोई 'मसाला' शब्द लिखा हुआ नहीं है। परन्तु सावर कांठा की महिलाओं को लगा कि हम लोग घर का मसाला बनाते हैं तो गाँव के लिए क्यों नहीं बनाएँ? यदि गाँव के लिए मसाले बना सकते हैं तो जिले की आवश्यकतानुसार मसाला हम ही क्यों न बनाएँ? हम लोग टीवी पर लिज्जत पापड़ का विज्ञापन देखते हैं। सारे भारत में बड़े से बड़ा होटल हो तो वह भी लिखता है कि हमारे भोजन में लिज्जत पापड़ परोसा जाता है। पता है, यह लिज्जत पापड़ किसने तैयार किया है? दक्षिण भारत की सहकारी मण्डली में लिज्जत पापड़ बनाने की शुरुआत हुई। उसमें अधिक से अधिक आदिवासी बहनें काम करती हैं। उन बहनों के बनाए हुए पापड़ सारे हिन्दुस्तान में पहुँच गए हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि बहने निश्चय कर ले तो कितना विराट काम खड़ा कर सकती हैं। इसका यह जीता जागता उदाहरण है। हमारे यहाँ अमूल का नाम सभी ने सुना है। इस अमूल की सम्पूर्ण सफलता के मूल में गाँवों में बैठी हमारी बहनें है। ये बहनें पशुपालन करती हैं और प्रातः काल उठकर सिर पर दूध से भरे बर्तन लेकर डेयरी पर दूध पहुँचती हैं, हिसाब किताब रखती हैं। इन बहनों की कुशलता का परिणाम है कि आज हिन्दुस्तान में अमूल का नाम जगमगा रहा है। छोटी इकाई हो या बड़ी, बहनों के द्वारा संगठित प्रयास किया जाए तो समाज को उसके गुणात्मक लाभ मिलते रहते हैं। इसीलिए हमारा आग्रह स्वशक्ति संस्थाओं के लिए गाँव की बहनों को इकट्ठा कर काम करने का है। इस व्यक्तिगत शक्ति को सामाजिक शक्ति में परिवर्तित करने का एक प्रमाणिक प्रयास है।

दुनिया के देशों में ऐसी हवा फैलाई जा रही है कि पश्चिमी देशों में तो महिलाएँ बहुत आगे है। वहाँ तो महिलाएँ जो भी चाहे करती है। कई बार हमारे लोग, जिन्हों इस धरती कि सुगन्ध का पता नहीं है, जिन्हों इस देश की सही शक्ति का परिचय नहीं है, वे लोग इस प्रवाह में बहकर ऐसा मानते है कि भारत में नारी का स्थान बहुत नीचे है। अमेरिका में आज तक कोई महिला प्रमुख नहीं बन सकी है। उनके यहाँ तो बहुत समय के बाद महिलाओं को मताधिकार मिला। हमारे यहाँ बहने सरपंच बन सकती है, जिला पंचायत प्रमुख बन सकती है। एक-तिहाई बहने ग्राम पंचायत में जाकर, जिला पंचायत में जाकर, तहसील पंचायत में जाकर प्रशासन में सहयोगी बन सकती है। 33 प्रतिशत महिला आरक्षण दुनिया के किसी भी देश में नहीं मिलता है। मात्र और मात्र हिन्दुस्तान में मिला है। कितने ही लोग ऐसा मानते हैं कि यह सब तो अभी-अभी शुरू हुआ है, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। हमारे देश में आज भी आर्थिक विकास के अन्दर भागीदार में किसी का भी इस सबसे अधिक हाथ है तो इस देश की मातृशक्ति का है। कई बार लगता है कि बहनें कारखाने में जाकर कुर्सी नहीं सम्भाल सकती है। अतः उनका कोई आर्थिक योगदान नहीं है। यह तो पश्चिम की कल्पना है। भारत में आज भी पशुपालन उद्योग में बड़े से बड़ा योगदान बहनों का है और सारा का सारा पशुपालन उद्योग इस देश कि मात्र गाँव कि बहनों सम्भालती है। क्या यह देश के विकास में सहयोग नहीं है? गाँव के किसी पुरुष को आपने देखा है कभी पशुओं को सम्भालते हुए, गाय की चिन्ता करते हुए, भैंस की चिन्ता करते हुए या दूध दुहने के लिए बैठे हुए? भाग्य से ही कभी ऐसा देखने को मिलता है। हमारी बहनें तो अपने बच्चों को रोते हुए छोड़कर पशु को शान्त रखने के लिए दौड़ पड़ती हैं। क्या यह महिलाओं का सहयोग नहीं है? क्या यह सहयोग देश आजाद हुआ, उसके बाद आया है? नहीं। हजारों वर्षों से आर्थिक विकास के अन्दर हमारे यहाँ बहनों का सहयोग सुनिश्चित ही था। हिन्दुस्तान में समस्त खेती की रचना ऐसी है कि बहनों के सहयोग के बिना कृषि क्षेत्र में प्रगति सम्भव नहीं होती है। आज भी बहने दो घण्टे घर का सारा काम करती है, रसोई बनाती है, शेष सारे समय खेती के काम में पति के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करते हैं। सारे परिवार का भरण पोषण का काम आज भी हमारे यहाँ बहनें ही करती है।

हमारे यहाँ भले नारी समानता के बारे में भाषण बाजी नहीं हुई है, हमारे यहाँ नारीवाद को स्थान नहीं मिलता है, पर हमारे यहाँ नारी को मातृशक्ति के रूप में देखा जाता है। हमारे यहाँ अर्धनारीश्वर के आदर्श की

कल्पना है। हमारे यहाँ पुरुष को पूर्ण रूप में समाज ने स्वीकारा नहीं है, नारी को भी पूर्ण रूप में स्वीकारने की कल्पना हुई है और इस कारण कल्पना शक्ति ने उसे भगवान का रूप दिया है। अर्धनारीश्वर आधा शरीर पुरुष का और आधा शरीर नारी का और दोनों के मिलने पर परमात्मा रूप के दर्शन होते हैं। यह कल्पना इसी भूमि पर की गई।

सारे विश्व को एक बड़ी चिन्ता सता रही है कि परिवार प्रथा को कैसे जीवित रखा जाए? आपको यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अमेरिका में चुनाव होते हैं, तब वहाँ के समस्त राजनीतिक दल अपने अपने चुनाव भाषण में बोलते है कि यदि हम सत्ता में आए तो परिवार प्रथा को पुनः जीवित करेंगे। परिवार को कैसे बचाना है, यह एक मुख्य मुद्दा बन गया है। हजारों वर्ष पुराने इस देश में दृढ़ कुटुम्ब प्रथा विकसित है और यह कुटुम्ब प्रथा विकसित रही है, इसका कारण पुरुष नहीं है। सारी की सारी कुटुम्ब प्रथा की सफलता का कारण इस देश की मातृशक्ति है, इस देश की नारी शक्ति है। इन बहनों ने कुटुम्ब को सम्भालकर रखा हुआ है, कुटुम्ब को बनाए रखा है। नहीं तो परिवारों के परिवार कभी के बिखर गए होते। बहनों की सहनशक्ति, बहनों की उदारता, बहनों की कष्ट सहन करने की मन: स्थिति और सबको साथ लेकर चलने की वृत्ति के कारण ही हमारे यहाँ कुटुम्ब प्रथा सजीव रही है। इस कुटुम्ब प्रथा ने हमारे समाज के अन्दर दूषणों का प्रवेश रोकने के लिए एक बड़ी शक्ति का काम किया है। आज भी हमारे यहाँ लड़का इतने खराब वातावरण में रहने के बाद भी जल्दी बगड़ नहीं जाता है। इसका कारण एकमात्र कौटुंबिक रचना है। सारे विश्व को भारत की मातृशक्ति का अध्ययन करना पड़े, यह इतनी बड़ी ताकत है।

केवल खेतों में ही बहने काम करती हैं, ऐसा भी नहीं है। आप कुम्हार के घर जाएँ, वहाँ बहन केवल रोटी ही नहीं बनाती है, बल्कि पति के काम में, धन्धे में सहयोगी होती है। कुम्हार मटका बनाता है तो वह माटी को खोददी है, आदमी आवा तैयार करता हो तो बहन आवे के लिए आग तैयार करती है। कोई मछिआरा है तो बहन मछली पकड़ने भले ही नहीं जाती, पर मछिआरा जो मछली छोड़ जाता है, वह मछलियों को बाजार में बेचने के लिए पहुँचकर व्यापार का सारा काम करती है और देखती है। आज भी सब्जी बेचने का काम अधिकतर बहनें ही करती हैं।

भारत में नारी शक्ति सामाजिक जीवन की एक बड़ी ताकत बनी हुई है। आने वाले दिनों में इस शक्ति को सामाजिक रूप में परिवर्तित करना है। बहने कुटुम्ब में शक्ति बने, यह बहुत अच्छी बात है, पर वे वहीं तक सीमित रहें, यह अच्छी बात नहीं है। आवश्यकता है कि यह बहनों की शक्ति सामाजिक जीवन में उपयोगी हो और उपयोग करना होगा तो बहनों को निर्णय में सहयोगी बनाना पड़ेगा। राज्य सरकार इस स्वशक्ति संस्था द्वारा गाँव-गाँव में एक मातृ शक्ति का आन्दोलन खड़ा करना चाहती है। एक ऐसी जन चेतना को प्रकट करना चाहती है, जिसके कारण समाज को लाभ, समाज के सुख का लाभ समग्र समाज को मिले इसकी चिन्ता करने का एक परिबल बने। इस शक्ति संस्था की बहनों से आग्रह है कि ग्राम सभाओं में आप सक्रिय बनो। ग्रामसभा जहाँ होती है वहाँ जाकर बैठो, गाँव के प्रश्नों की सूची बनाकर प्रश्न पूछो, सरकारी अधिकारी भी संकोच में पड़ जाएँ, ऐसे प्रश्नों को पूछो जब तक समाधान नहीं आए तब तक आप उनके पीछे पड़े रहो। मैं आपके साथ हूँ। हम एकदम नीचे से परिवर्तन लाना चाहते हैं, गाँव गाँव में सारे वातावरण को बदल देना चाहते है। यह चेतना और जागृति सबको सीधे रास्ते पर चलने को मजबूर करेगी।

मैं मानता हूँ कि यही एक बड़ी ताकत है। इस ताकत को खड़ी करने की हमारी इच्छा है। हम चाहते हैं कि इस ताकत का निर्माण हो। पग-पग पर सरकार से हिसाब माँगना है। समाज में जागृति आनी चाहिए। समाज की आशा आकांक्षा की पूर्ति करने समाज आगे आता है तो राज्य सरकार भी साथ में दो कदम आगे चलने की तैयारी के साथ काम करें। इस भूमिका में हम कार्य योजना को सौंपने से पहले परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हैं।

4.14 नारी सशक्तिकरण : परिवार की शक्ति

आजकल नारी सशक्तिकरण की खूब चर्चा चल रही है। कई बार मेरे मन में प्रश्न उठता है कि क्या सच में नारी सशक्त नहीं है? मुझे तो लगता है कि नारी सबसे अधिक सशक्त है। मुसीबत यही है कि उसे अनेक लोग बारम्बार कहते हैं कि अबला है, तू तो अबला है, इस अबला, अबला शब्द के आवरण इतने ज्यादा चढ़े कि वह स्वयं ही भूल गई कि वह सबला है। हमारा प्रयत्न इतना ही है कि उसे याद आ जाए- बहन, तू तो सशक्त है, सबला है। उसे इस बात का एहसास होना चाहिए और उसे यदि इस बात का एहसास हो जाए तो सब समस्याओं का निराकरण अपने आप हो जाएगा।

नारी सशक्तिकरण का क्या कोई इंजेक्शन आता है कि सब बहनों को इंजेक्शन लगा दो तो वे सब सशक्त हो जाएँ? नारी सशक्त होती ही है। प्रत्येक अध्ययन यही बात कहता है। पुरुष विधुर हो जाएँ तो अधिकतर वह टीका नहीं रह सकता है। एक नारी विधवा हो जाए, समस्त उत्तरदायित्व उसके सिर पर आ जाए, उस पर आसमान ही टूट पड़ा हो, ऐसी स्थिति में भी वह कभी भी परिस्थिति से डरती नहीं है। सभी उत्तरदायित्व जब तक पूर्ण नहीं हो जाते है, तब तक मृत्यु को भी रोककर रखने की सामर्थ नारी में होती है। परन्तु इस शक्ति को स्वीकार करने का स्वभाव लोगों में नहीं है। इसे स्वीकार करने की आवश्यकता है। अनेक परिवार ऐसे होंगे, जो माता के कारण ही प्रकाश मान बने होंगे।

दुनिया के किसी भी महापुरुष की आत्मकथा पढ़े। 99% महापुरुषों की कथा में दो बातें का उल्लेख अवश्य आता है। मेरी प्रगति में मेरी माता का बहुत बड़ा योगदान है। आप विचार करो कि माँ का कितना बड़ा योगदान है। दूसरी बात आती है कि मेरे विकास में मेरे शिक्षक का योगदान है।

संसार में जितने भी लोग महान हुए हैं, उन्हें महान बनाने में शिक्षक और माता दोनों का अद्भुत योगदान रहा है। इससे परे कुछ नहीं है। भाग्य से शायद एकाध किस्सा थोड़ा अलग हो तो भी उसमें आप गहराई से देखोगे तो कहीं न कहीं इनका योगदान होगा ही, भले ही वे उसको स्वीकार न करते हो।

सोचने की आवश्यकता है कि नारी की शक्ति परिवार की शक्ति किस प्रकार बने? परिवार की शक्ति समाज की शक्ति किस प्रकार बने? समाज की शक्ति राष्ट्र की शक्ति किस प्रकार बने? इस सारे क्रम का विकास करना है और यह सारे प्रयास इसी हेतु ही है। इससे मैं एक ही मंत्र देने के पक्ष में हूँ कि प्रगति करनी है तो 'सशक्त नारी, 'सशक्त परिवार।' नारी जितनी सशक्त होगी, उतना ही परिवार सशक्त होगा। यह बात सही है कि आसपास के वातावरण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसके कारण ही हजारों वर्षों के संस्कार की विरासत हमारे पास है और उसे जाने अनजाने हम छोड़ते जा रहे हैं। यह है अपनी परिवार संस्था। हिन्दुस्तान आज भी इतनी आंधियों के बाद टिका हुआ है, इतने अधिक सांस्कृतिक आक्रमणों के बीच खड़ा हुआ है। अगर इसका कोई एक कारण, महत्वपूर्ण कड़ी है तो वह है अपनी परिवार संस्था, कुटुम्ब व्यवस्था। ये टूटते हुए परिवार, टूटते हुए कुटुम्ब व्यवस्था यह एक बड़ा संकट है। इस परिवार संस्था को यदि बचाना है तो इसे नारी शक्ति ही बचा सकती है। पुरुष किसी भी दिन परिवार नहीं बचा सकता है। मैं पुरुषों का विरोध नहीं हूँ, परन्तु

इन सब शब्दों को स्वीकारना ही पड़ेगा। परिवार व्यवस्था मूल में नारी संस्कार, नारी की त्याग भावना है। एक बड़ी शक्ति है। शक्ति सामाजिक शक्ति कैसे बने, इसी दिशा में हमारा प्रयास है।

कई बार लोगों को लगता है कि आँगनवाड़ी का क्या काम है? आँगनबाड़ी का काम आनेवाली पूरी सदी का भला करने का है। शिक्षा से शायद एक पीढ़ी सुधारी जा सकती है, परन्तु आँगनबाड़ी के काम से एक पूरी सदी सुधरती हैं। आँगनवाड़ी का काम कोई छोटा काम नहीं है। केवल बच्चों को बुला कर ले जाना और उन्हें दो घण्टे रोके रखना ही काम नहीं है। दुनिया की सभी संशोधको, मनोवैज्ञानिकों और विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास की नींव 3-4 वर्ष की उम्र में बनती है। हमारे यहाँ आदिकाल से ऋषि मुनि यही बात कर कहते आए हैं। हम सब ऐसा मानते हैं कि पाठशाला में गया, इस कारण से आगे बढ़ सका, कॉलेज गया, इससे आगे बढ़ा, वे शिक्षक पढ़ाते थे, इस कारण से आगे बढ़ा। यह सब सम्पूर्ण सत्य नहीं है। उसका व्यक्तित्व जैसे भी बनने वाला होगा, उसका आधार 3-4 वर्ष की आयु तक वह कैसे संस्कार प्राप्त करता है, 3-4 वर्ष की आयु तक उसे कैसी बातों का परिचय कराया गया है, उस पर आधारित होता है। उसी समय उसका मस्तिष्क इन सब बातों को पकड़ता है, उसके मन में पसन्द नापसन्द चार वर्ष की आयु में ही निश्चित हो जाती है। यह किस दिशा में जाने वाला है, यह चार वर्ष की आयु निश्चित हो जाता है। इसके बाद जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है। वैसे वैसे संस्कार के आधार पर सब चीजें पकड़ता जाता है, उसमें जोड़ता जाता है। उसे चार वर्ष की आयु में जो नहीं मिला, ऐसी एक भी चीज वह जिन्दगी की किसी भी उम्र में पा नहीं सकता है। यह सब वैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार की हुई बातें हैं। हमारे यहाँ शब्द आई.क्यू. शब्द है। यह आई.क्यू. क्या है? सरल भाषा में समझाते हुए मैं कहूँगा कि एक बालक को पालने में रख दो और पालने के ऊपर एक झुनझुना बांध दो, फिर उस झुनझुना इधर उधर हिला दो, बालक उसे देखेगा। फिर आप देखेंगे कि वह बालक हर प्रकार का प्रयत्न कर हाथ ऊँचा करके, पाँव ऊँचा करके झुनझुना हिलाने का प्रयत्न कर रहा है। यही उसका बुद्धि अंक है। यदि वह झुनझुना जल्दी पकड़ता है तो समझना कि उसका स्तर खूब उच्चा है। इस समय उसके जीवन में प्रवेश करती है आँगनवाड़ी। इस समय प्रवेश करती आँगनवाड़ी कि कार्यकारी बहनें। वे यदि यह भूल करेंगी तो किस प्रकार के समाज की रचना होगी? तब जो समाज रचना होगी, वह सारी सदी के लिए कितना कुप्रभाव या सुप्रभात पैदा करेगी, इसका निर्णय होना है। आँगनवाड़ी की बहनें कितनी सजग हैं,

वह इस पर आधारित है। उस बहन के हृदय में यह भाव होना चाहिए कि यह नन्हे-नन्हे बच्चे, ये नन्ही नन्ही कलियाँ मेरे पास है। ये पुष्पा बनें, इससे पहले मन से स्वस्थ बने, इनकी ग्रहणशक्ति तीव्र बनें। उसे रोज नया नया देखने का अवसर मिले। इसमें से ईश्वर ने जितना दिया होगा उतना बालक पकड़ेगा। हम उसे सुन्दर वातावरण के बीच ले जाएँ, आप देखना, परिस्थिति एकदम पलट जाएगी, पर हम क्या कर रहे हैं? आँगनबाड़ी सुबह 10 से 12 के बीच ही चलानी है। सुबह का मौसम हो तो हम सुबह की फलियाँ ले जाते हैं, शाम को घर में कचोरी बनानी है। अतः हम फलियाँ छीलकर दाने निकालेंगे। बच्चे एक तरफ खेलते रहेंगे। इससे तुम्हारे घर में कचोरी बने या नहीं, परन्तु बालक की जिन्दगी को कचूमर बन जाती है। हमें इन सबकी चिन्ता करनी है। पाठशाला में विद्या सहायक बनने के बाद आनन्द तो आता है, परन्तु चिन्ता क्या होती है? चाहे जो भी हो, दिवाली के पहले यह स्वेटर पूरा करना है। अरे, उसे स्वेटर दो या नहीं दो, परन्तु उस बच्चे की जिन्दगी कैसे गूँथी जा रही है, इसकी तो चिन्ता करो। यहाँ बस यही मुसीबत है। इस उत्तरदायित्व का भाव कैसे आए? ये बालक हमारी आने वाली पीढ़ी है। कोई बहन 15 वर्ष से आँगनवाड़ी का काम करती है और आँगनवाड़ी में रहा हुआ बालक दसवीं कक्षा में ज्यादा से ज्यादा अंक लाकर पेड़े खिलाने क्या वहाँ आया है? दसवीं कक्षा में अधिक अंक प्राप्त करके किसी बालक ने आपको पेड़े देकर कहा है कि बहन, आप मुझे आँगनबाड़ी में खेल खिलाती थी, तब मुझमें आपने जो संस्कार दिए, इस कारण से दसवीं कक्षा में मुझे अच्छा स्थान प्राप्त हुआ है। लीजिए, ये पेड़े, भाग्य से ही ऐसी कोई बहन होगी, जिसके यहाँ दसवीं या बारहवीं कक्षा का विद्यार्थी आया होगा। यदि नहीं आया है तो हमें विचार करना पड़ेगा कि कहीं कुछ कमी है। हम ऐसा काम करें कि बालक बड़ा होकर अच्छा काम करें तो भी उसे मेरी याद आए? जब हम कोई मोटरगाड़ी किराए पर ली हो और किसी सम्भावित दुर्घटना से ड्राईवर हमें बचा ले तो सारी जिन्दगी हमे वह ड्राइवर याद आता है। हम शुभ प्रसंग पर उसे बुलाते हैं और कहते हैं घर में विवाह है तुम अवश्य आना। उस दिन मोटरगाड़ी किराए पर ली थी और तुम नहीं होते तो हम तो वहीं समाप्त हो गए होते। एक दुर्घटना से बचाने वाला ड्राइवर सारी जिन्दगी याद आता है तो चार वर्ष अपने पास समय बताने वाले हमारे आँगनवाड़ी के कार्यकर्ता बहन उस बालक को क्यों याद नहीं आएँगी? यदि याद आए तो यह समझना कि आप सफल रही है और बालक भूल गया तो यह मानना कि आपने मुक्त की ही नौकरी की थी। यह स्थिति भारत का भला नहीं करेगी। जीवन में

कुछ काम किया है, उसका सन्तोष मिलना चाहिए। प्रत्येक माह मिलने वाला वेतन वह सन्तोष नहीं देगा, परन्तु एकाध नन्ना बच्चा तुम्हारे हाथों के नीचे पला पोसा है और उसकी जिन्दगी बन गई है तो आपको जीवन में सन्तोष रहेगा। आप कहेंगे कि मैं अमुक भाई को बचपन में खिलाती थी। दिल्ली में मुशर्रफ आए हुए थे। उस समय दो वृद्धों के बीच लड़ाई हो रही थी। एक वृद्धा कह रही थी, जब छोटा था तो इसे मैं खिलाती थी। दूसरी ने कहा, नहीं, मैं खिलाती थी। इसके बाद मुशर्रफ ने दोनों को सॉल भेंट में दी और कहा कि मैं तो छोटा था, अतः मुझे कुछ याद नहीं, परन्तु मैं आज जो भी हूँ, उसमें आपका कहीं न कहीं योगदान है।

आँगनबाड़ी एक संस्कार मन्दिर है। इस संस्कार मन्दिर में आने वाला प्रत्येक बालक भगवान है। हम इनके पुजारी हैं। ऐसे भक्ति भाव से पूजा करें, जिससे इन बालकों का जीवन पुलकित हो। इसके लिए प्रयास करें तो मैं मानता हूँ कि यह प्रयास एक बड़ी शक्ति बनेगा? इस सशक्तीकरण से प्राप्त होने वाली नारी की शक्ति परिवार की शक्ति बने, यह इसकी पहली शर्त होनी चाहिए। परिवार की शक्ति नहीं बने तो हजारों वर्षों की दुनिया कि इस महान परम्परा को जंग लग जाएगी। अकल्पनीय आघात लगेगा और उससे बचाने की ताकत किसी में है तो वह नारी में है।

4.15 आतंकवाद पर विचार

आतंकवाद पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में कई प्रश्न उठाए, कुछ देशों में देश की सरकारों द्वारा समर्थित आतंकवाद उनकी विदेशी नीति का मूल मंत्र है। वह आतंकवाद के पोषण भी है। चार दशकों से भारत आतंकवाद की मार झेल रहे हैं। बिना नाम लिए प्रधानमंत्री मोदी जी ने बराक ओबामा द्वारा दिए गए आतंकवाद के दो शब्द गुड टेररिज्म और बेड टेररिज्म क्या होता है? आतंकवाद तो आतंकवाद ही है। हमारे देश में पाकिस्तान द्वारा आधुनिक हथियारों से लैस आतंकवादी लगातार भेजें जाते हैं। कश्मीर घाटी में बर्फ पड़ने से पहले बॉर्डर पर तोपें गरजने लगती है इनकी आड़ में आतंकवादियों को देश में बम धमाकों के जरिए दहशत फैलाने के लिए भेजा जाता है और भी कई रास्ते हैं जहाँ से आतंकवादियों को भारतीय सीमाओं में प्रवेश कराया जाता है। भारत के नौजवानों को धर्म, जेहाद में यदि शहीद हो गए इस शहादत से जन्नत के नाम पर बरगलाया जाता है। उन्हें सीमा पार कराकर पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे तबाही का खेल खेला

जाए। भारतीय मुजाहिद्दीन का पूरा नेटवर्क तैयार किया गया है। जिससे आतंकवाद का एक विशाल जाल देश में फैल जाए। यह नौजवान यदि विकास के मार्ग पर चलते देश तरक्की करता लेकिन पाकिस्तान अपने मंसूबे पूरे करने के लिए मुस्लिम जवानों को गुमराह करता रहता है। कई आतंकवादी घटनाओं में निर्दोष जाने गई। जानमाल के नुकसान के साथ दहशत का माहौल फैला, लेकिन 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला भारत के सम्मान पर हमला था। जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। देश की व्यवस्थापिका पर हमला प्रजातांत्रिक व्यवस्था पर किया गया हमला था। 26/11 को मुंबई में आतंकवाद का नंगा नाच देश क्या पूरे विश्व में देखा। समुद्र के रास्ते पाकिस्तानी आतंकवादियों ने भारत की भूमि में प्रवेश किया इसमें कई जाने गई। एक समुदाय विशेष (यहूदी) को विशेष रूप से निशाना बनाया गया यह पूर्णतया इस्लामिक आतंकवाद का उदाहरण था। हमले में जान पर खेलकर पाकिस्तानी आतंकवादी कसाब को पकड़ा गया परन्तु क्या हुआ हाफिज सईद जो इस मामले का इस हमले का मास्टर माइण्ड था। पाकिस्तान में हीरो बना बनकर आजाद घूम रहा है।

भारत अहिंसा और विश्व बन्धुत्व पर चलने वाला देश है। विश्व शान्ति चाहता है परन्तु थोपे गए आतंकवाद का क्या करें? पहले आतंकवाद को विश्व समुदाय उस देश की समस्या माना जाता था। अब यह पूरे विश्व की समस्या बन गया है कोई भी देश इससे अछूता नहीं है। तानाशाही में ताकत से आप आतंकवादियों को दवा लेने पर प्रजातांत्रिक देश क्या करें? उनके यहाँ पूरी न्यायिक प्रक्रिया है कुछ देशों ने आतंकवाद से निपटने के लिए विशेष कानून बना लिए है। वहाँ भी मानवाधिकार दखल देते हैं। उन्हें मानवता के इन दुश्मनों की चिन्ता है परन्तु इनके शिकारों की नहीं।

ISIS का कहर आज इराक झेल रहा है। सद्दाम हुसैन के बाद इराक का शक्ति सन्तुलन बिगड़ गया। अमेरिका के इस प्रदेश को छोड़ने के बाद शिया और सुन्नी लड़ने लगे खुर्द भी एक शक्ति बनकर उभरे इसी बीच बगदादी, जिसे कैंप बुक्का में पाँच वर्ष पूर्व बन्दी बनाया गया था। परन्तु फिर भी उसे छोड़ दिया गया था। इस इस्लामिक लीडर ने अपने आप को खलीफा घोषित कर इराक और सीरिया में इस्लामिक स्टेट बनाने की घोषणा कर दी। दुनिया के मुस्लिम युवकों को जेहाद में भाग लेने के लिए इराक आने के लिए उत्साहित किया

जा रहा है। उसकी अपील का असर पड़ रहा है जिससे सभी विकसित राष्ट्र परेशान है। उनके यहाँ के जवान इस जेहाद की अपील पर ISIS में सम्मिलित होने को तैयार है और जा रहे हैं।

अमेरिका स्वयं आतंकवाद का सताया हुआ है। 9/11 की घटना उसके वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला किया गया। दुनिया में ताकत का दम भरने वाला अमेरिका अलकायदा के आगे लाचार हो गया। अमेरिका ने पाकिस्तान में छिपे ओसामा को मार कर अपने अपमान का बदला ले लिया। क्या हम पाकिस्तान द्वारा पी.ओ.के. में चलाए जाने वाले आतंकवादी संगठनों को जो हमारे लिए आतंक की वर्कशॉप है नष्ट कर सकते हैं।

UN में नवाज शरीफ ने फिर कश्मीर का राग अलापा और जनमत संग्रह की बात की। जब भी पाकिस्तान में संकट आया है। आजकल नवाज शरीफ की चुनी सरकार का विरोध हो रहा है। वह राजनैतिक संकट में है, उनकी सत्ता सेना के सहारे सुरक्षित है इसलिए उन्हें कश्मीर राग याद आ रहा आ गया। मोदी जी ने साफ कर दिया आतंक और वार्ता साथ-साथ नहीं चल सकती है। पाकिस्तान के साथ वार्ता दो तरफी होगी। भारत वार्ता करने को तैयार है परन्तु उचित माहौल में विश्व मंच पर आतंकवाद की समस्या को उठाना और उसे समाप्त करने के लिए देशों का आहन करना प्रधानमंत्री मोदी जी का सराहनीय कदम है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने राष्ट्रपति ओबामा से आतंकवाद पर सीधी बात की अमेरिका के साथ एक समझौता हुआ ISIS बगदादी का संगठन सीरिया में इस्लामिक सरकार बनाना चाहता था। अब उसका कार्य क्षेत्र बन गया है। वहाँ बगदादी आतंक की सीमाएँ पार कर दी, लश्कर ए तय्यब, जैशे मुहम्मद, तालिबान और डी कंपनी की फंडिंग पर रोक लगाने का समझौता किया है। इन संगठनों को मुस्लिम जो विदेशों में रहता है। जकात के रूप में मदद करता है, पाकिस्तान द्वारा भेजे जाने वाले नकली नोटों की खेप की खेप, सऊदी अरब द्वारा भेजे जाने वाले धन, जिसे मदरसों और मस्जिदों के निर्माण के नाम पर भेजा जाता है। सऊदी अरब का तो यह कहना है उन्हे चैन से जीने दो विश्व में जो चाहे करो और अफगानिस्तान में तथा नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर में अफीम की खेती की जाती है जिसे कैमिकल बादल कर हशीश और हीरोइन बनाकर भारत, यूरोप और अमेरिकी देशों में बेचा जाता है। आज की जवान पीढ़ी पार्टियों में इनका खुल कर सेवन कर रहें है यदि कोई इनका अपना व्यक्ति सेवन करता है उसको जान से मार देते देते हैं।

4.16 सूचना प्रौद्योगिकी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने टैक्नोलॉजी को खोजने, सीखने, विकसित करने और कार्यान्वयन के जरिए के रूप में वर्णन किया है। उन्होंने डिजिटल डायलॉग के दौरान अपने विचार साझा किये, जिसमें हमने उनके साथ टैक्नोलॉजी पर व्यापक चर्चा की। प्रधानमंत्री ने डिजिटल इण्डिया सप्ताह के अवसर पर प्रौद्योगिकी से जुड़ें विभिन्न पहलुओं पर बात की।

'प्रौद्योगिकी खोजने, सीखने, निर्माण करने एवं लागू करने का एक साधन है'- प्रधानमंत्री मोदी

'प्रौद्योगिकी कम सशक्त लोगों को सशक्त करती है। यह एक ऐसी मजबूत ताकत है जो लाभ से वंचित लोगों के जीवन में परिवर्तन लाती है'- प्रधानमंत्री मोदी

'पूरा देश डिजिटल भारत के सपने को सच करने के लिए एकजुट हो गया है'- प्रधानमंत्री मोदी

'हम भारत को एक ऐसे इनोवेशन हब के रूप में उभरता हुआ देखना चाहते है जहाँ नए नए एवं उत्कृष्ट विचार प्रौद्योगिकी से प्रेरित हो'- प्रधानमंत्री मोदी

टैक्नोलॉजी पर अन्य विचार

इसमें 3 एस रफ्तार, सरलता और सेवा शामिल है। टैक्नोलॉजी तेज है, टैक्नोलॉजी सरल है और टैक्नोलॉजी लोगों को सेवा प्रदान करने का बेहतरीन जरिया है। ये एक कुशल शिक्षक भी है। जितना अधिक हम टैक्नोलॉजी के बारे में सीखते हैं और जितना अधिक हम टैक्नोलॉजी के जरिए सीखते हैं, वह बेहतर है।

टैक्नोलॉजी कम सशक्त लोगों को सशक्त करती है। सीमान्त लोगों के जीवन में बदलाव लाने में, अगर कोई मजबूत बल है, तो वह है टैक्नोलॉजी।

डिजिटल इण्डिया पहल पर उन्होंने कहा

डिजिटल इण्डिया के सपने को साकार करने में पूरा राष्ट्र एकजुट है। युवा उत्साही हैं, उद्योग जगत सहायक है और सरकार अति सक्रिय है। देश डिजिटल क्रान्ति के लिए लालायित है।

डिजिटल इण्डिया की ओर उद्योग जगत द्वारा निवेश की प्रतिबद्धता से उनके आशावादी होने का पता चलता है और इसका सकारात्मक असर पीढ़ियों तक महसूस किया जाएगा। सबसे अधिक ध्यान देने वाली बात यह है कि हमारे लोगों के लिए रोजगार के कई अवसर पैदा होंगे।

सोशल मीडिया पर प्रधानमंत्री के विचार

भविष्य सोशल मीडिया का होगा। यह समानाधिकार युक्त और मिला जुला है। सोशल मीडिया किसी देश, किसी भाषा, किसी रंग, किसी समुदाय के बारे में नही है, बल्कि यह मानव मूल्यों के बारे में है और यही मानवता को बांधने का मौलिक सन्धि है।

मोबाइल गवर्नेंस पर प्रधानमंत्री के विचार

विकास को असल में समेंकित बनाने और व्यापक जन आन्दोलन की सम्भावना है। इसने शासन को प्रत्येक की पहुँच में ला दिया है। इसने शासन को चौबीस घण्टे सातों दिन आपकी पहुँच में ला दिया है।

शुरूआतों पर

शुरूआत शानदार वृद्धि और नवाचार की शक्ति की अभिव्यक्ति का इंजन होते हैं। जो नवाचार की शक्ति की अभिव्यक्ति है। आज की कई बड़ी कम्पनियाँ कल की शुरूआती दौर में थी। हम भारत को नवाचार के केन्द्र के रूप में उभरता हुआ देखना चाहते हैं, जहाँ टेक्नोलॉजी से संचालित नये बड़े विचारों का आविर्भाव हो।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ट्वीट किया कि वे टेक्नोलॉजी उत्साहियों के साथ डिजिटल डायलॉग करेंगे। उन्होंने लोगों से उनके विचार डिजिटल डायलॉग पर साझा करने की अपील की। उनके ट्वीट पर असाधारण प्रतिक्रिया मिली। कई ट्वीट्स और पोस्ट साझा किये गए। साथ ही टेक्नोलॉजी और डिजिटल इण्डिया पर पहली हुई मन की बात कार्यक्रम के पत्रों का जिक्र भी किया गया।

4.17 डिजिटल इण्डिया

अंकीय भारत या डिजिटल भारत (डिजिटल इण्डिया) एवं भारत के लोगों सरकारी विभागों को एक दूसरे के पास लाने कि भारत सरकार की पहल है।

डिजिटल इण्डिया भारत सरकार की एक पहल है जिसके तहत सरकारी विभागों को देश की जनता से जोड़ना है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि बिना कागज के इस्तेमाल के सरकारी सेवाएँ इलेक्ट्रॉनिक रूप से जनता तक पहुँच सकें। इस योजना का एक उद्देश्य ग्रामीण इलाकों को हाई स्पीड इण्टरनेट के माध्यम से जोड़ना भी है। डिजिटल इण्डिया के तीन कोर घटक हैं।

- डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना।
- इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुँचना।
- डिजिटल साक्षरता।

इन योजनाओं को 2019 तक कार्यान्वित करने का लक्ष्य है। एक टू निर्माण वे प्लेटफॉर्म का निर्माण किया जाएगा जहाँ दोनों उपभोक्ता को लाभ होगा। यह एक अन्तर मंत्रालयी पहल होगी जहाँ सभी मंत्रालय तथा विभाग अपनी सेवाएँ जनता तक पहुँचाएगें जैसे कि स्वस्थ्य, शिक्षा और न्यायिक सेवा आदि। चयनित रूप से पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल को अपनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सूचना केन्द्र के पुनः निर्माण की भी योजना है। यह योजना मोदी प्रशासन कि टॉप प्राथमिकता वाली परियोजनाओं में से एक है। यह एक सराहनीय और सभी साझेदारों कि पूर्ण समर्थन वाली परियोजना है। जबकि इसमें लीगल फ्रेमवर्क, गोपनीयता का अभाव, डाटा सुरक्षा नियमों कि कमी, नागरिकता स्वायत्तता हनन तथा भारतीय ई सर्विलान्स के लिए संसदीय निगरानी की कमी तथा भारतीय साइबर असुरक्षा जैसी कई महत्वपूर्ण कमियाँ भी है। डिजिटल इण्डिया को कार्यान्वित करने से पहले इन सभी कमियों को दूर करना होगा।

डिजिटल भारत के प्रमुख स्तम्भ

- ब्रॉडबैंड हाईवे
- सबको फोन की उपलब्धता
- इण्टरनेट तक सबकी पहुँच
- ई शासन (टेक्नालॉजी की मदद से शासन)
- ई (इलेक्ट्रोनिक सेवाएँ) क्रान्ति

- सभी के लिए सूचना
- इलेक्ट्रानिक मैन्युफैक्चरिंग
- आई टी के जरिए रोजगार
- भविष्य की तैयारी के कार्यक्रम

डिजिटल इण्डिया के सामने चुनौतिया

भारत सरकार की संस्था भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड नेशनल ऑप्टिकल फाइबल नेटवर्क जैसी परियोजना को कार्यान्वयित करेगी। जो डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की देखरेख करेगा। बीबीएनएल ने यूनाइटेड टेलीकॉम लिमिटेड को 250,000 गाँवों को एफटीटीएच ब्रॉडबैंड आधारित तथा जीपीओएन के द्वारा जोड़ने का आदेश दिया है। यह 2017 तक डिजिटल इण्डिया परियोजना के अंतर्गत सभी को आधारभूत सुविधाएँ मुहैया कराएगी।

डिजिटल इण्डिया भारत सरकार की आश्वासनात्मक योजना है। कई कम्पनियों ने इस योजना में अपनी दिलचस्पी दिखायी है। यह भी माना जा रहा है कि ई कॉमर्स डिजिटल इण्डिया प्रोजेक्ट को सुगम बनाने में मदद करेगा। जबकि इसे कार्यान्वयित करने में कई चुनौतियाँ और कानूनी बढ़ाएँ भी आ सकती है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि देश में डिजिटल इण्डिया सफल तब तक नहीं हो सकता जब तक कि आवश्यक बीसीबी, ई शासन योजना न की जाए तथा एक मात्र राष्ट्रीय ई गवर्नेंस को लागू न करना इस योजना को प्रभावित कर सकता है। निजता सुरक्षा, डाटा सुरक्षा, साइबर कानून, टेलीग्राफ, ई कॉमर्स आदि के क्षेत्र में भारत का कमजोर नियंत्रण है। कई कानूनी विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि साइबर सुरक्षा चलन ने भारतीय प्रशासन और डिजिटल इण्डिया अद्भुत बना दिया है। इन सभी वर्तमान परिस्थिति में महत्वपूर्ण आधारभूत सुरक्षा का प्रबन्धन करना भारत सरकार के लिए कठिन कार्य होगा तथा इस प्रोजेक्ट में उचित ई कचरा प्रबन्धन के प्रावधान कि भी कमी है।

डिजिटल इण्डिया की निगरानी

- प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में बनी कमेटी।
- वित्त मंत्री, आईटी मंत्री, मानव संसाधन मंत्री, शहरी विकास मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री होंगे सदस्य।

- प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव, कैबिनेट सचिव, व्यय, योजना, टेलीकॉम और कार्मिक सचिव विशेष आमंत्रित।
- सूचना सचिव कमेटी के संयोजक।

डिजिटल इण्डिया की निगरानी

- मौजूदा योजनाओं में एक लाख करोड़।
- नई योजनाओं और गतिविधियों में 13 हजार करोड़।
- 2019 तक डिजिटल इण्डिया का असर।
- 2.5 लाख गाँवों में ब्रॉडबैंड और फोन की सुविधा।
- 2020 तक नेट जीरो आयात।
- 4 लाख पब्लिक इण्टरनेट प्वाइंट।
- 2.4 लाख स्कूलों, विश्वविद्यालयों में वाई फाई
- आम लोगों के लिए वाईफाई हॉट स्पॉट।
- 1.7 करोड़ लोगों को आईटी, टेलीकॉम और इलेक्ट्रॉनिक में ट्रेनिंग और रोजगार।
- 8.5 करोड़ लोगों को अप्रत्यक्ष रोजगार।
- सभी सरकारों में ई शासन।

4.18 स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरम्भ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ सुथरा करना और कूढ़ा साफ रखना है। यह अभियान 02 अक्तूबर 2014 को प्रारम्भ किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश को गुलामी से मुक्त कराया, परन्तु स्वच्छ भारत का उनका सपना पूरा नहीं हुआ। महात्मा गाँधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने सम्बन्धी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट सन्देश दिया था।

स्वच्छ भारत का उद्देश्य व्यक्ति, क्लस्टर और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को कम करना या समाप्त करना है। स्वच्छ भारत मिशन विसर्जन उपयोग की

निगरानी के जवाबदेह तंत्र को स्थापित करने की भी एक पहल सरकार ने 2 अक्टूबर 2019, महात्मा गाँधी के जन्म की 150 वीं वर्षगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत के 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा है। भारत के प्रधानमंत्री बनने के बाद 2 अक्तूबर 2014 को नरेन्द्र मोदी जी ने देश में साफ सफाई को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ किया। उसके बाद पिछले साढ़े चार वर्षों में सरकार ने कई ऐसी पहले की जिनकी जनता के बीच खूब चर्चा रही। स्वच्छता भारत अभियान भी ऐसी ही पहलो में से एक है। सरकार ने जागरूकता अभियान के तहत लोगों को सफाई के लिए प्रेरित करने की दिशा में कदम उठाए। देश को खुले में शौच मुक्त करने के लिए भी अभियान के तहत प्रचार किया। साथ ही देश भर में शौचालयों का निर्माण करवाया। सरकार ने देश में साफ सफाई के खर्च को बढ़ाने के लिए स्वच्छ भारत चुंगी की शुरुआत की। स्वच्छ भारत मिशन का प्रतीक गाँधी जी का चश्मा रखा गया और साथ में 'एक कदम स्वच्छता की ओर' टैग लाइन भी रखी गई।

स्वच्छ भारत अभियान के सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। इस अभियान का उद्देश्य पाँच वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना है ताकि बापू की 150वीं जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके। स्वच्छ भारत अभियान सफाई करने की दिशा में प्रतिवर्ष 100 घण्टे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

प्रधानमंत्री ने मृदुला सिन्हा, सचिन तेन्दुलकर, बाबा रामदेव, शशि थरूर, अनिल अम्बानी, कमल हसन, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा और तारक मेहता का उल्टा चश्मा की टीम जैसी नौ नामचीन हस्तियों को आमंत्रित किया कि वे भी स्वच्छ भारत अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें। लोगों से कहा गया कि वे सफाई अभियानों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर साझा करें और अन्य नौ लोगों को भी अपने साथ जोड़ें ताकि यह एक शृंखला बन जाए। आम जनता को भी सोशल मीडिया पर हैश टैग #MyCleanIndia लिखकर अपने सहयोग को साझा करने के लिए कहा गया।

- **एक कदम स्वच्छता की ओर** : मोदी सरकार ने एक ऐसा रचनात्मक और सहयोगात्मक मंच प्रदान किया है जो राष्ट्र व्यापी आन्दोलन की सफलता सुनिश्चित करता है। यह मंच प्रौद्योगिकी के माध्यम

से नागरिकों और संगठनों के अभियान सम्बन्धी प्रयासों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। कोई भी व्यक्ति, सरकारी संस्था या निजी संगठन अभियान में भाग ले सकते हैं। इस अभियान का उद्देश्य लोगों को उनके दैनिक कार्यों में से कुछ घण्टे निकालकर भारत में स्वच्छता सम्बन्धी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

- **स्वच्छता ही सेवा** : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 15 सितम्बर 2018 को स्वच्छता ही सेवा अभियान आरम्भ किया और जनमानस को इससे जुड़ने का आग्रह किया। राष्ट्रपिता गाँधी जी की 150वीं जयंती वर्ष के औपचारिक शुरुआत से पहले 15 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का बड़े पैमाने पर आयोजन किया जा रहा है। इससे पहले मोदी ने समाज के विभिन्न वर्गों के करीब 2000 लोगों को पत्र लिख कर इस सफाई अभियान का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया, ताकि इस अभियान को सफल बनाया जा सके।

पंचम अध्याय

मन की बात



अध्याय : पंचम

मन की बात

5.1 प्रस्तावना

मन की बात आकाशवाणी पर प्रसारित किया जाने वाला एक कार्यक्रम है। जिसके जरिये भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत के नागरिकों को सम्बोधित करते हैं। इस कार्यक्रम का पहला प्रसारण 3 अक्तूबर 2014 को किया गया। जनवरी 2015 में अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भी उनके साथ इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा भारत की जनता के पत्रों के उत्तर दिए।

5.2 एपिसोड- 03 अक्तूबर 2014

मेरे प्यारे देशवासियो, आज विजयदशमी का पावन पर्व है। आप सबको विजयदशमी की अनेक अनेक शुभकामनाएँ।

मैं आज रेडियो के माध्यम से आपसे कुछ मन की बाते बताना चाहता हूँ और मेरे मन में तो ऐसा है कि सिर्फ आज नहीं कि बातचीत का अपना क्रम आगे भी चलता रहे। मैं कोशिश करूँगा हो सके तो महीने में दो बार या तो महीने में एक बार समय निकाल कर के आपसे बाते करूँ। आगे चलकर के मैंने मन में यह भी सोचा है कि जब भी बात करूँगा तो रविवार होगा और समय प्रात: 11 बजे का होगा तो आपको भी सुविधा रहेगी और मुझे भी ये सन्तोष होगा कि मैं मेरे मन की बात आपके मन तक पहुँचाने में सफल हुआ हूँ।

आज जो विजयदशमी का पर्व मनाते हैं। ये विजय दशमी का पर्व बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का पर्व है । लेकिन एक श्रीमान गणेश वेंकटादरी मुंबई के सज्जन उन्होंने मुझे एक मेल भेजा उन्होंने कहा कि विजयदशमी में हम अपने भीतर की दस बुराइयों को खत्म करने का संकल्प करें। मैं उनके इस सुझाव के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूँ। हर कोई जरूर सोचता होगा अपने-अपने भीतर की जितनी ज्यादा बुराइयों को पराजय करके विजय प्राप्त करे लेकिन राष्ट्र के रूप में मुझे लगता है कि आओ विजयदशमी के पावन पर्व पर

हम सब गन्दगी से मुक्ति का संकल्प करें और गन्दगी को खत्म कर के विजय प्राप्त करना विजयदशमी के पर्व पर हम ये संकल्प कर सकते हैं।

2 अक्टूबर पर महात्मा गाँधी की जन्म जयन्ती पर 'स्वच्छ भारत अभियान' सवा सौ करोड़ देशवासियों ने आरम्भ किया है। मुझे विश्वास है कि आप सब इसको आगे बढ़ाएँगे। मैंने कल एक बात कही थी 'स्वच्छ भारत अभियान' में मैं नौ लोगों को निमंत्रित करूँगा और वे खुद सफाई करते हुए अपने वीडियो को सोशल मीडिया में अपलोड करेंगे और वे और नौ लोगों को निमंत्रित करेंगे। आप भी इसमें जुडिय आप सफाई कीजिए आप जिन नौ लोगों का आह्वान करना चाहते हैं उनको कीजिए वे भी सफाई करें आपके साथी मित्रों को कहिए बहुत ऊपर जाने की जरूरत नहीं और नौ लोगों को कहें फिर वो और नौ लोगों को कहें धीरे-धीरे पूरे देश में ये माहौल बन जाएगा। मैं विश्वास करता हूँ कि इस काम को आप आगे बढ़ायेंगे।

हम जब महात्मा गाँधी की बात करते हैं तो खादी की बात बहुत स्वाभाविक ध्यान में आती है। आपके परिवार में अनेक प्रकार के वस्त्र होंगे, अनेक प्रकार के फैब्रिक्स होंगे अनेक कंपनियों के उत्पाद होंगे क्या उसमें एक खादी का नहीं हो सकता क्या मैं आपको खादीधारी बनने के लिए नहीं कह रहा आप पूर्ण खादीधारी होने का व्रत करें ये भी नहीं कह रहा। मैं सिर्फ इतना कहता हूँ कि कम से कम एक चीज भले ही वह हैंडकर चीफ भले घर में नहाने का तौलिया हो भले हो सकता है बैडशीट हो तकिए का कबर हो पर्दा हो कुछ तो भी हो अगर परिवार में हर प्रकार के फैब्रिक्स का शौक है हर प्रकार के कपड़ों का शौक है तो ये नियमित होना चाहिए और ये मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अगर आप खादी का वस्त्र खरीदते हैं तो एक गरीब के घर में दीवाली का दीया जलता है और इसीलिए एकाध चीज और इन दिनों तो 2 अक्टूबर से लेकर करीब महीने भर खादी के बाजार में स्पेशल डिस्काउंट होता है उसका फायदा भी उठा सकते हैं। एक छोटी चीज और आग्रह पूर्वक इसको करिए और आप देखिए गरीब के साथ आपका कैसा जुड़ाव आता है। उस पर आपको कैसी सफलता मिलती है। मैं जब कहता हूँ सवा सौ करोड़ देशवासी अब तक क्या हुआ है हमको लगता है सब कुछ सरकार करेगी और हम कहाँ रह गए हमने देखा है अगर आगे बढ़ना है तो सवा सौ करोड़ देशवासियों को करना पड़ेगा हमें खुद को पहचानना पड़ेगा अपनी शक्ति को जानना पड़ेगा और मैं सच बताता हूँ हम विश्व में अजोड़ लोग हैं। आप जानते हैं हमारे ही वैज्ञानिकों ने कम से कम खर्च में पहुँचने का

सफल प्रयोग सफलता पूर्वक पर कर दिया। हमारी ताकत में कमी नहीं है सिर्फ हम अपनी शक्ति को भूल चुके हैं। अपने आपको भूल चुके हैं। हम जैसे निराश्रित बन गए हैं नहीं मेरे प्यारे भइयों बहनों ऐसा नहीं हो सकता। मुझे स्वामी विवेकानन्द जी जो एक बात कहते थे वो बराबर याद आती है। स्वामी विवेकानन्द अक्सर एक बात हमेशा बताया करते थे। शायद ये बात उन्होंने कई बार लोगों को सुनाई होगी।

विवेकानन्द जी कहते थे कि एक बार एक शेरनी अपने दो छोटे-छोटे बच्चों को ले कर के रास्ते से गुजर रही थी। दूर से उसने भेड़ का झुण्ड देखा तो शिकार करने का मन कर गया तो शेरनी उस तरफ दौड़ पड़ी और उसके साथ उसका एक बच्चा भी दौड़ने लगा। उसका दूसरा बच्चा पीछे छूट गया और शेरनी भेड़ का शिकार करती हुई आगे बढ़ गई। एक बच्चा भी चला गया लेकिन एक बच्चा बिछड़ गया जो बच्चा बिछड़ गया उसको एक माता भेड़ ने उसको पाला-पोसा बड़ा किया और वो शेर भेड़ के बीच में ही बड़ा होने लगा। उसकी बोलचाल आदतें सारी भेड़ की जैसी हो गई। उसका हँसना, खेलना, बैठना सब भेड़ के साथ ही हो गया। एक बार वो जो शेरनी के साथ बच्चा चला गया था वो अब बड़ा हो गया था। उसने उसको एक बार देखा ये क्या बात है। ये तो शेर है और भेड़ के साथ खेल रहा है। भेड़ की तरह बोल रहा है। क्या हो गया है इसको। तो शेर को थोड़ा अपना अहम पर ही संकट आ गया। वो इसके पास गया। वो कहने लगा अरे तुम क्या कर रहे हो। तुम तो शेर हो। कहता नहीं मैं तो भेड़ हूँ। मैं तो इन्हीं के बीच पला-बढ़ा हूँ। उन्होंने मुझे बड़ा किया है। मेरी आवाज देखिए मेरी बातचीत का तरीका देखिए। तो शेर ने कहा कि चलो मैं दिखाता हूँ तुम कौन हो? उसको एक कुएँ के पास ले गया और कुएँ में पानी के अन्दर उसका चेहरा दिखाया और खुद के चेहरे के साथ उसको कहा, देखो हम दोनों का चेहरा एक है। मैं भी शेर हूँ। तुम भी शेर हो और जैसे ही उसके भीतर से आत्म सम्मान जगा उसकी अपनी पहचान हुई तो वो भी उस शेर की तरह भेड़ों के बीच पला शेर भी दहाड़ने लगा। उसके भीतर का सत्व जग गया। स्वामी विवेकानन्द जी यही कहते थे। मेरे देशवासियों सवा सौ करोड़ देशवासियों के भीतर अपार शक्ति है अपार सामर्थ्य है। हमें अपने आपको पहचानने की जरूरत है। हमारे भीतर की ताकत को पहचानने की जरूरत है और फिर जैसा स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा था उस आत्म-सम्मान को ले करके अपनी सही पहचान को ले करके हम चल पड़ेंगे तो विजयी होंगे और हमारा राष्ट्र भी

विजयी होगा सफल होगा। मुझे लगता है हमारे सवा सौ करोड़ देशवासी भी सामर्थ्यवान हैं शक्तिवान हैं और हम भी बहुत विश्वास के साथ खड़े हो सकते हैं।

इन दिनों मुझे ई-मेल के द्वारा सोशल मीडिया के द्वारा फेसबुक के द्वारा कई मित्र मुझे चिट्ठी लिखते हैं। एक गौतम पाल करके व्यक्ति ने एक चिन्ता जताई है उसने कहा है कि जो स्पैशली एबल्ड चाईल्ड होते हैं उन बालकों के लिए नगरपालिका हो, महानगर पालिका, पंचायत हो, उसमें कोई न कोई विशेष योजनाएँ होती रहनी चाहिए। उनका हौसला बुलन्द करना चाहिए। मुझे उनका ये सुझाव अच्छा लगा क्योंकि मेरा अपना अनुभव है कि जब मैं गुजरात में मुख्यामंत्री था तो 2011 में एथेन्स में जो स्पेशल ओलम्पिक होता है उसमें जब गुजरात के बच्चे गये और विजयी होकर आये तो मैंने उन सब बच्चों को स्पेशली एबल्ड बच्चों को मैंने घर बुलाया। मैंने दो घण्टे उनके साथ बिताये शायद वो मेरे जीवन का बहुत ही इमोशनल बड़ा प्रेरक वो घटना थी। क्योंकि मैं मानता हूँ कि किसी परिवार में स्पेशली एबल्ड बालक है तो सिर्फ उनके माँ-बाप का दायित्व नहीं है। ये पूरे समाज का दायित्व है। परमात्मा ने शायद उस परिवार को पसन्द किया है लेकिन वो बालक तो सारे राष्ट्र की जिम्मेसदारी होता है। बाद में इतना मैं इमोशनली टच हो गया था कि मैं गुजरात में स्पेशली एबल्ड बच्चों के लिए अलग ओलम्पिक करता था। हजारों बालक आते थे उनके माँ-बाप आते थे। मैं खुद जाता था। ऐसा एक विश्वास का वातावरण पैदा होता था और इसलिए मैं गौतम पाल के सुझाव जो उन्होंने दिया है। इसके लिये मैं मुझे अच्छा लगा और मेरा मन कर गया कि मैं मुझे जो ये सुझाव आया है मैं आपके साथ शेयर करूँ।

एक कथा मुझे और भी ध्यान आती है। एक बार एक राहगीर रास्ते के किनारे पर बैठा था और आते-आते सबको पूछ रहा था मुझे वहाँ पहुँचना है रास्ता कहाँ है। पहले को पूछा दूसरे को पूछा, चौथे को पूछा। सबको पूछता ही रहता था और उसके बगल में एक सज्जन बेठे थे। वो सारा देख रहे थे। बाद में खड़ा हुआ। खड़ा होकर किसी को पूछने लगा तो वो सज्जन खड़े हो करके उनके पास आये। उसने कहा देखो भाई तुमको जहाँ जाना है उसका रास्ता इस तरफ से जाता है। तो उस राहगीर ने उसको पूछा कि भाई साहब आप इतनी देर से मेरे बगल में बेठे हो मैं इतने लोगों को रास्ता पूछ रहा हूँ कोई मुझे बता नहीं रहा है। आपको पता था तो आप क्यों नहीं बताते थे। बोले मुझे भरोसा नहीं था कि तुम सचमुच में चलकर के जाना चाहते हो या नहीं

चाहते हो। या ऐसे ही जानकारी के लिए पूछते रहते हो। लेकिन जब तुम खड़े हो गये तो मेरा मन कर गया कि हाँ अब तो इस आदमी को जाना है पक्का लगता है। तब जा करके मुझे लगा कि मुझे आपको रास्ता दिखाना चाहिए।

मेरे देशवासियों जब तक हम चलने का संकलप नहीं करते हम खुद खड़े नहीं होते तब रास्ता दिखाने वाले भी नहीं मिलेंगे। हमें उंगली पकड़ कर चलाने वाले नहीं मिलेंगे। चलने की शुरूआत हमें करनी पड़ेगी और मुझे विश्वास है कि सवा सौ करोड़ जरूर चलने के लिए सामर्थ्य वान है चलते रहेंगे।

कुछ दिनों से मेरे पास जो अनेक सुझाव आते हैं बड़े इण्टरेस्टिंग सुझाव लोग भेजते हैं। मैं जानता हूँ कब कैसे कर पायेंगे लेकिन मैं इन सुझावों के लिए भी एक सक्रियता जो है न, देश हम सबका है सरकार का देश थोड़े न है। नागरिकों का देश है। नागरिकों का जुड़ना बहुत जरूरी है। मुझे कुछ लोगों ने कहा है कि जब वो लघु उद्योग शुरू करते हैं तो उसकी पंजीकरण जो प्रक्रिया है वो आसान होनी चाहिए। मैं जरूर सरकार को उसके लिए सूचित करूँगा। कुछ लोगों ने मुझे लिख करके भेजा है। बच्चों को पाँचवीं कक्षा से ही स्किल डेवलेपमेंट सिखाना चाहिए। ताकि वो पढ़ते ही पढ़ते ही कोई न कोई अपना हुनर सीख लें कारीगरी सीख लें। बहुत ही अच्छा सुझाव उन्होंने दिया है। उन्होंने ये भी कहा है कि युवकों को भी स्किल डेवलेपमेंट होना चाहिए उनकी पढ़ाई के अन्दर। किसी ने मुझे लिखा है कि हर सौ मीटर के अन्दर डस्टबीन होना चाहिए सफाई की व्यवस्था करनी है तो। कुछ लोगों ने मुझे लिख करके भेजा है कि पॉलीथिन के पैक पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए। ढेर सारे सुझाव लोग मुझे भेज रहे हैं। मैं आगे से ही आपको कहता हूँ। अगर आप मुझे कहीं पर भी कोई सत्य घटना भेजेंगे जो सकारात्मरक हो जो मुझे भी प्रेरणा दे देशवासियों को प्रेरणा दे अगर ऐसी सत्य घटनाएँ सबूत के साथ मुझे भेजोगे तो मैं जरूर जब मन की बात करूँगा जो चीज मेरे मन को छू गयी है वो बातें मैं जरूर देशवासियों तक पहुँचाऊँगा।

ये सारा मेरा बातचीत करने का इरादा एक ही है आओ, हम सब मिल करके अपनी भारत माता की सेवा करें। हम देश को नयी ऊँचाइयों पर ले जायें। हर कोई एक कदम चले अगर आप एक कदम चलते हैं देश सवा सौ करोड़ कदम आगे चला जाता है और इसी काम के लिए आज विजयदशमी के पावन पर्व पर अपने भीतर की सभी बुराइयों को परास्त करके विजयी होने के संकल्प के साथ कुछ अच्छा करने का निर्णय करने

के साथ हम सब प्रारम्भ करें। आज मेरी शुभ शुरूआत है। जैसा-जैसा मन में आता जायेगा भविष्य में जरूर आपसे बातें करता रहूँगा। आज जो बातें मेरे मन में आई मैंने आपको कही है। फिर जब मिलूँगा रविवार को मिलूँगा। सुबह 11 बजे मिलूँगा लेकिन मुझे विश्वास है कि हमारी यात्रा बनी रहेगी आपका प्यार बना रहेगा।

आप भी मेरी बात सुनने के बाद अगर मुझे कुछ कहना चाहते हैं जरूर मुझे पहुँचा दीजिये मुझे अच्छा लगेगा। मुझे बहुत अच्छा लगा आज आप सबसे बातें करके और रेडियो का ऐसा सरल माध्यम है कि मैं दूर-दूर तक पहुँच पाऊँगा। गरीब से गरीब घर तक पहुँच जाऊँगा क्योंकि मेरा मेरे देश की ताकत गरीब की झोंपडी में है मेरे देश की ताकत गाँव में है मेरे देश की ताकत माताओं, बहनों, नौजवानों में है मेरी देश की ताकत किसानों में है। आपके भरोसे से ही देश आगे बढ़ेगा। मैं विश्वास व्यक्त करता हूँ। आपकी शक्ति में भरोसा है इसलिए मुझे भारत के भविष्य में भरोसा है।

मैं एक बार आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। आपने समय निकाला। फिर एक बार बहुत-बहुत धन्यववाद।

5.3 एपिसोड- 25 फरवरी 2018

आज प्रारम्भ में ही मन की बात एक फोन कॉल से ही शुरू करते है।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी, मैं कोमल त्रिपाठी मेरठ से बोल रही हूँ। 28 तारीख को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस है। भारत की उन्नति और उसका विकास, विज्ञान से पूरी तरह से जुड़ा हुआ है। जितना ही हम इसमें खोज और नवाचार करेंगे उतना ही हम आगे बढ़ेंगे और समृद्व होगे। क्या आप हमारे युवाओं को प्रेरित करने के लिए कुछ ऐसे शब्द कह सकते हैं जिससे कि वो वैज्ञानिक तरीके से अपनी सोच को आगे बढाएँ और हमारे देश को भी आगे बढ़ा सके? धन्यवाद।

आपके फोन कॉल के लिए धन्यवाद, विज्ञान को लेकर ढ़ेर सारे प्रश्न मेरे युवा साथियों द्वारा मुझसे पूछे जाते है, कुछ न कुछ लिखते रहते है। हमने देखा है कि समुन्दर का रंग नीला नजर आता है लेकिन हम अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से जानते हैं कि पानी का कोई रंग नहीं होता है। क्या कभी हमने सोचा है कि नदी हो, समुन्दर हो, पानी रंगीन क्यों हो जाता है? यही प्रश्न 1920 के दशक में एक युवक के मन में आया था। इसी प्रश्न ने आधुनिक भारत के एक महान वैज्ञानिक को जन्म दिया। जब हम विज्ञान की बात करते हैं तो सबसे

पहले भारत रत्न सर सी वी रमन का नाम हमारे सामने आता है। उन्होने प्रकाश के प्रकीर्णन पर उत्कृष्ट कार्य के लिए नोबल पुरस्कार प्रदान किया गया था। उनकी एक खोज ‘रमन प्रभाव’ के नाम से प्रसिद्ध है। हम हर वर्ष 28 फरवरी को ‘राष्ट्रीय विज्ञान दिवस’ मनाते हैं क्योंकि कहा जाता है कि इसी दिन उन्होंने प्रकाश प्रकीर्णन की घटना की खोज की थी। जिसके लिए उन्हें नोबल पुरस्कार दिया गया। इस देश ने विज्ञान के क्षेत्र में कई महान वैज्ञानिकों को जन्म दिया है। एक तरफ महान गणितज्ञ बोधायन, भास्कर, ब्रह्मगुप्त और आर्यभट्ट की परम्परा रही है तो दूसरी तरफ चिकित्सा के क्षेत्र में सुश्रुत और चरक हमारा गौरव हैं। सर जगदीश चन्द्र बोस और हरगोविन्द खुराना से लेकर सत्येन्द्रनाथ बोस जैसे वैज्ञानिक ये भारत के गौरव हैं। सत्येन्द्र नाथ बोस के नाम पर तो प्रसिद्ध कण ‘बोसॉन’ का नामकरण भी किया गया। हाल ही मुझे मुम्बई में एक कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला। वाढवानी इंस्टीट्यूट फॉर आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस के उद्घाटन का। विज्ञान के क्षेत्र में जो चमत्कार हो रहे हैं, उनके बारे में जानना बड़ा दिलचस्प था। आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस के माध्यम से रोबॉट्स, बोट्स और स्पेसिफिक टास्क करने वाली मशीनें बनाने में सहायता मिलती है। आजकल मशीनें सेल्फ लर्निंग से अपने आप के इंटेलिजेंस को और स्मार्ट बनाती जाती हैं। इस प्रौद्योगिकी का उपयोग गरीबों, वंचितों या जरुरतमंदों का जीवन बेहतर करने के काम आ सकता है। आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस के उस कार्यक्रम में मैंने वैज्ञानिक समुदाय से आग्रह किया कि दिव्यांग भाइयों और बहनों का जीवन सुगम बनाने के लिए, किस तरह से आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस से मदद मिल सकती है? क्या हम आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं के बारे में बेहतर अनुमान लगा सकते हैं? किसानों को फसलों की पैदावार को लेकर कोई सहायता कर सकते हैं? क्या आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच को आसान बनाने और आधुनिक तरीके से बीमारियों के इलाज में सहायक हो सकता है?

पिछले दिनों इजराइल के प्रधानमंत्री के साथ मुझे अहमदाबाद में ‘आई क्रिएट’ के उद्घाटन के लिए जाने का अवसर मिला था। वहाँ एक नौजवान ने, एक ऐसा डिजिटल इन्स्ट्रुमेंट डेवलोप किया हुआ बताया उसने कि जिसमें अगर कोई बोल नहीं सकता है तो उस इन्स्ट्रुमेंट के माध्यम से अपनी बात लिखते ही वो वॉइस में कन्वर्ट होती है और आप वैसे ही सम्वाद कर सकते हैं जैसे कि एक बोल सकने वाले व्यक्ति के साथ आप करते हैं। मैं समझता हूँ कि आर्टिफिश्यल इंटेलिजेंस का उपयोग ऐसी कई विधाओं में हम कर

सकते हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी, वैल्यू न्यूट्रल होती हैं। इनमें मूल्य अपने आप नहीं होते हैं। कोई भी मशीन वैसा ही कार्य करेगी जैसा हम चाहेंगे। लेकिन यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम मशीन से क्या काम लेना चाहते हैं। यहाँ पर मानवीय उद्धेश्य महत्वपूर्ण हो जाता है। विज्ञान का मानव मात्र कल्याण के लिए उपयोग, मानव जीवन की सर्वोच्च ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रयोग। लाइट बल्ब का आविष्कार करने वाले थॉमस अल्वा एडीसन अपने प्रयोगों में कई बार असफल रहे। एक बार उनसे जब इस बारे में पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया 'मैंने लाइट बल्ब नहीं बनाने के दस हजार तरीके खोजे है' यानि एडीसन ने अपनी असफलताओं को भी अपनी शक्ति बना लिया। संयोग से सौभाग्य है कि आज मैं महर्षि अरबिन्दो की कर्मभूमि औरोविल्ले में हूँ। एक क्रांतिकारी के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन को चुनौती दी, उनके खिलाफ लड़ाई लड़ी, उनके शासन पर सवाल उठाए। इसी प्रकार उन्होंने एक महान ऋषि के रूप में जीवन के हर पहलू के सामने सवाल रखा। उत्तर खोज निकाला और मानवता को राह दिखाई। वैज्ञानिक खोज के पीछे की असल प्रेरणा भी तो यही है। तब तक चैन से नहीं बैठना चाहिये जब तक क्यों, क्या और कैसे जैसे प्रश्नों का उत्तर न मिल पाए। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर हमारे वैज्ञानिकों विज्ञान से जुड़े सभी लोगों को मैं बधाई देता हूँ। हमारी युवापीढ़ी, सत्य और ज्ञान की खोज के लिए प्रेरित हो, विज्ञान की मदद से समाज की सेवा करने के लिए प्रेरित हो।

साथियो, संकट के समय सुरक्षा, आपदा इन सारे विषयों पर मुझे बहुत बार बहुत कुछ सन्देश आते रहते हैं। लोग मुझे कुछ-कुछ लिखते रहते है। पुणे से श्री मान रवीन्द्र सिंह ने नरेंद्र मोदी मोबाइल अप्प पर अपने कमेंट में व्यावसायिक सुरक्षा पर बात की है। उन्होंने लिखा है कि हमारे देश में फैक्ट्रीज और कन्स्ट्रकशन साइट पर सेफटि स्टैंडर्ड उतने अच्छे नहीं हैं। अगले 4 मार्च को भारत का राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस है, तो प्रधानमंत्री अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में सुरक्षा पर बात करें ताकि लोगों में सुरक्षा को लेकर जागरूकता बढ़े। जब हम पब्लिक सुरक्षा की बात करते हैं तो दो चीजे बहुत महत्वपूर्ण होती हैं प्रोएक्टिवनेस और दूसरा है तत्परता सुरक्षा दो प्रकार की होती है। एक वो जो आपदा के समय जरुरी होती है। आपदा के समय और दूसरी वो जिसकी दैनिक जीवन में आवश्यकता पड़ती है। सुरक्षा प्रतिदिन के जीवन में। अगर हम दैनिक जीवन

में सुरक्षा को लेकर जागरूक नहीं हैं। उसे हासिल नहीं कर पा रहे हैं तो फिर आपदा के दौरान इसे पाना मुश्किल हो जाता है। हम सब बहुत बार रास्तों पर लिखे हुए बोर्ड पढ़ते हैं। उसमें लिखा होता है।

"सतर्कता हटी दुर्घटना घटी"

"एक भूल करे नुकसान, छीने खुशियाँ और मुस्कान"

"इतनी जल्दी न दुनिया छोड़ो, सुरक्षा से अब नाता जोड़ो"

"सुरक्षा से न करो कोई मस्ती, वर्ना जिन्दगी होगी सस्ती"

उससे आगे उन वाक्य का हमारे जीवन में कभी-कभी कोई उपयोग ही नहीं होता है। प्राकृतिक आपदाओं को अगर छोड़ दें तो ज्यादातर दुर्घटनाएँ, हमारी कोई न कोई गलती का परिणाम होती हैं। अगर हम सतर्क रहें, आवश्यक नियमों का पालन करें तो हम अपने जीवन की रक्षा तो कर ही सकते हैं, लेकिन, बहुत बड़ी दुर्घटनाओं से भी हम समाज को बचा सकते हैं। कभी कभी हमने देखा है कि कार्य स्थान पर सुरक्षा को लेकर बहुत सूत्र लिखे गए होते है। लेकिन जब देखते हैं तो कहीं पर उसका पालन नजर नहीं आता है। मेरा तो आग्रह है कि महानगर पालिका, नगर पालिकाएँ जिनके पास फायर दल होते हैं उन्हें हफ्ते में एक बार या महीने में एक बार अलग अलग स्कूलों में जा करके स्कूल के बच्चों के सामने मोक ड्रिल करना चाहिये। उससे दो फायदे होंगे फायर ड्रिल को भी सतर्क रहने की आदत रहती है और नयी पीढ़ी को इसकी शिक्षा भी मिलती है और इसके लिए न कोई अलग खर्चा होता है। एक प्रकार से शिक्षा का ही एक क्रम बन जाता है और मैं हमेशा इस बात का आग्रह करता रहता हूँ। जहाँ तक आपदाओं की बात है, तो भारत भौगोलिक और जलवायु की दृष्टि से विविधताओं से भरा हुआ देश है। इस देश ने कई प्राक्रतिक और मानव निर्मित आपदाए, जैसे रासायनिक एवं औद्योगिक दुर्घटनाओं को झेला है। आज राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन प्राधिकारी यानी NDMA देश में आपदा प्रबन्धन कि अगुवाई कर रहा है। भूकम्प हो, बाढ़ हो, साइकलोन हो, भूस्खलन हो जैसे विभिन्न आपदाओं को बचाव ऑपरेशन हो, NDMA तुरन्त पहुँचता है। उन्होंने मार्गदर्शन भी जारी किये हैं, साथ साथ वो क्षमता बिल्डिंग के लिए लगातार ट्रेनिंग के काम भी करते रहते हैं। बाढ़, साइक्लोन के खतरे में होने वाले जिलों में स्वयंसेवक के प्रशिक्षण के लिए भी आपदा मित्र नाम की पहल की गई है। प्रशिक्षण और जागरूकता का बहुत महत्वपूर्ण रोल है। आज से दो तीन साल पहले लू, गर्म तरंग से प्रतिवर्ष

हजारों लोग अपनी जान गवाँ देते थे। इसके बाद NDMA ने गर्म तरंग के प्रबन्धन के लिए कार्यशाला आयोजित किये, लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए अभियान चलाया। मौसम विभाग ने सटीक पूर्वानुमान लगाये। सबकी भागीदारी से एक अच्छा परिणाम सामने आया। 2017 में लू से होने वाली मौतों की संख्या अप्रत्याशित रूप से घटकर करीब करीब 220 पर आ गई। इससे पता चलता है कि अगर हम सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं, हम सुरक्षा प्राप्त कर सकते हैं। समाज में इस प्रकार से काम करने वाले अनगिनत लोग हों, सामाजिक संगठन हों, जागरूक नागरिक हों। मैं उन सब की सराहना करना चाहता हूँ, जो कहीं पर भी आपदा हो मिनटों के अन्दर राहत और बचाव कार्य में जुट जाते हैं। और ऐसे गुमनाम नायकों की संख्या कोई कम नहीं है। हमारी Fire and Rescue Services, National Disaster Response Forces, सशस्त्र सेनाएँ, Paramilitary Forces, ये भी संकट के समय पहुँचने वाले वीर बहादुर अपनी जान की परवाह किये बिना लोगों की मदद करते हैं। NCC, Scouts जैसे संगठन भी इन कामों को आजकल कर भी रहे हैं, प्रशिक्षण भी कर रहे हैं। पिछले दिनों हमने एक प्रयास ये भी शुरू किया है कि जैसे दुनिया के देशों में जाइंट मिलिटरी एक्सर्साइज होती है तो क्यों न दुनिया के देश आपदा प्रबन्धन के लिए भी जाइंट अभ्यास करें। भारत ने इसको नेतृत्व किया है BIMSTEC, बांग्लादेश, भारत, म्यांमार, श्रीलंका, थाईलैंड, भूटान और नेपाल, इन देशों की एक जाइंट आपदा प्रबन्धन अभ्यास भी की गई, ये अपने आप में एक पहला और बड़ा मानवीय प्रयोग था। हमें एक खतरा जागरूक समाज बनना होगा। अपनी संस्कृति में हम मूल्यों की रक्षा, सुरक्षा की मान्यता के बारे में तो अक्सर बातें करते हैं, लेकिन हमें सुरक्षा की मान्यता, सुरक्षा के मूल्यों को भी समझना होगा। हमें उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना होगा। हमारे सामान्य जीवन में हमने देखा है कि हम सैकड़ों बार हवाई जहाज में यात्रा करते हैं और हवाई जहाज के अन्दर एयर होस्टेस्स प्रारम्भ में सुरक्षा के सम्बन्ध में सूचनाएँ देती है। हम सब ने सौ बार इसको सुना होगा लेकिन आज हमें कोई हवाई जहाज में ले जा करके खड़ा करे और पूछे कि बताइये कौन सी चीज कहाँ है? लाइफ जैकेट कहाँ है? कैसे उपयोग करना चाहिए? मैं दावे से कहता हूँ हममें से कोई नहीं बता पायेगा। मतलब ये हुआ कि क्या जानकारी देने की व्यवस्था थी? प्रत्यक्ष उस तरफ नजर करके देखने के लिए सम्भावना थी। लेकिन हमने किया नहीं क्यों? क्योंकि हम स्वभाव से जागरूक नहीं हैं और इसलिए हमारे कान, हवाई जहाज बैठने के बाद सुनते तो हैं लेकिन ‘ये सूचना मेरे

लिए है' ऐसा हममें से किसी को लगता ही नहीं है। वैसा ही जीवन के हर क्षेत्र में हमारा अनुभव है। हम ये न सोचें कि सुरक्षा किसी और के लिए है, अगर हम सब अपनी सुरक्षा के लिए सजग हो जाएँ तो समाज की सुरक्षा का भाव भी अन्तर्निहित होता है। मेरे प्यारे देशवासियो, इस बार बजट में 'स्वच्छ भारत' के तहत गाँवों के लिए बायोगैस के माध्यम से waste to wealth और waste to energy बनाने पर जोर दिया गया। इसके लिए पहल शुरू की गई और इसे नाम दिया गया 'GOBAR Dhan' Galvanizing Organic Bio Agro Resources इस 'GOBAR Dhan' योजना का उद्देश्य है गाँवों को स्वच्छ बनाना और पशुओं के गोबर और खेतों के ठोस अपशिष्ट पदार्थों को COMPOST और BIO-GAS में परिवर्तित कर, उससे धन और ऊर्जा उत्पन्न करना। भारत में मवेशियों की आबादी पूरे विश्व में सबसे ज्यादा है। भारत में मवेशियों की आबादी लगभग 30 करोड़ है और गोबर का उत्पादन प्रतिदिन लगभग 30 लाख टन है। कुछ यूरोपीय देश और चीन पशुओं के गोबर और अन्य जैविक अपशिष्ट का उपयोग ऊर्जा के उत्पादन के लिए करते हैं लेकिन भारत में इसकी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं हो रहा था। 'स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण' के अन्तर्गत अब इस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। मवेशियों के गोबर, कृषि से निकलने वाले कचरे, रसोई घर से निकलने वाला कचरा, इन सबको बायोगैस आधारित उर्जा बनाने के लिए इस्तेमाल करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। 'गोबर धन योजना' के तहत ग्रामीण भारत में किसानों, बहनों, भाइयों को प्रोत्साहित किया जाएगा कि वो गोबर और कचरे को सिर्फ अपशिष्ट के रूप में नहीं बल्कि आय के स्रोत के रूप में देखें। 'गोबर धन योजना' से ग्रामीण क्षेत्रों को कई लाभ मिलेंगे। गाँव को स्वच्छ रखने में मदद मिलेगी। पशु आरोग्य होगे और उत्पादकता बढ़ेगी। बायोगैस से खाना पकाने और प्रकाश के लिए ऊर्जा के मामले में आत्मनिर्भरता बढ़ेगी। किसानों एवं पशुपालकों को आमदनी बढ़ाने में मदद मिलेगी। Waste collection, transportation, बायोगैस की बिक्री आदि के लिए नई नौकरियों के अवसर मिलेंगे। 'गोबर धन योजना' के सुचारू व्यवस्था के लिए एक ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लैटफार्म भी बनाया जाएगा जो किसानों को खरीदारों से कनैक्ट करेगा ताकि किसानों को गोबर और एग्रीकल्चर अपशिष्ट का सही दाम मिल सके। मैं उद्यमियों, विशेष रूप से ग्रामीण भारत में रह रही अपनी बहनों से आग्रह करता हूँ कि आप आगे आयें। सेल्फ हेप्ल ग्रुप बनाकर, सहकारी समितियाँ बनाकर इस अवसर का पूरा लाभ उठाएँ। मैं आपको आमंत्रित करता

हूँ क्लीन एनर्जि और ग्रीन जॉब्स के इस आन्दोलन के भागीदार बनें। अपने गाँव में अपशिष्ट को सम्पत्ति में परिवर्तन करने और गोबर से गोबरधन बनाने की दिशा में पहल करें।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज तक हम संगीत त्यौहार, खाद्य त्यौहार, फिल्म त्यौहार न जाने कितने कितने प्रकार के त्यौहार के बारे में सुनते आए हैं। लेकिन छत्तीसगढ़ के रायपुर में एक अनूठा प्रयास करते हुए राज्य का पहला 'कचरा महोत्सव' आयोजित किया गया। रायपुर नगर निगम द्वारा आयोजित इस महोत्सव के पीछे जो उद्देश्य था वह स्वच्छता को लेकर जागरूकता। शहर के अपशिष्ट का रचनात्मक उपयोग करना और कूड़ा को पुनः उपयोग करने के विभिन्न तरीकों के बारे में जागरूकता पैदा करना। इस महोत्सव के दौरान तरह तरह की गतिविधि हुई जिसमें छात्रों से लेकर बड़ों तक, हर कोई शामिल हुआ। कचरे का उपयोग करके अलग-अलग तरह की कलाकृतियाँ बनाई है। अपशिष्ट प्रबन्धन के सभी पहलूओं पर लोगों को शिक्षित करने के लिए कार्यशाला आयोजित किये गए। स्वच्छता के विषय पर संगीत अभिनय हुआ। कला कार्य बनाए गए। रायपुर से प्रेरित होकर अन्य जिलों में भी अलग-अलग तरफ के कचरा उत्सव हुए। अपशिष्ट प्रबन्धन और स्वच्छता के महत्व को जिस अभिनव तरीके से इस महोत्सव में प्रदर्शित किया गया, इसके लिए रायपुर नगर निगम, पूरे छत्तीसगढ़ की जनता और वहाँ की सरकार और प्रशासन को मैं ढ़ेरों बधाईयाँ देता हूँ।

हर वर्ष 8 मार्च को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है। देश और दुनिया में कई सारे कार्यक्रम होते हैं। इस दिन देश में 'नारी शक्ति पुरस्कार' से ऐसी महिलाओं को सत्कार भी किया जाता है जिन्होंने बीते दिनों में भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अनुकरणीय कार्य किया हो। आज देश महिला विकास से आगे महिला विकास की ओर बढ़ रहा है। आज हम महिला विकास से आगे महिला के नेतृत्व में विकास की बात कर रहे हैं। इस अवसर पर मुझे स्वामी विवेकानन्द के वचन याद आते हैं। उन्होंने कहा था 'the idea of perfect womanhood is perfect independence' आज सामाजिक, आर्थिक जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की बराबरी की भागीदारी सुनिश्चित करना यह हम सबका कर्तव्य है, यह हम सबकी जिम्मेदारी है। हम उस परम्परा का हिस्सा है, जहाँ पुरुषों की पहचान नारियों से होती थी। यशोदा नन्दन, कौशल्या नन्दन, गांधारी पुत्र, यही पहचान होती थी किसी बेटे की। आज हमारी नारी शक्ति ने अपने कार्यों से आत्मबल और आत्मविश्वास का परिचय दिया है। स्वयं को आत्मनिर्भर बनाया है। उन्होंने खुद को तो आगे बढाया ही है,

साथ ही देश और समाज को भी आगे बढ़ाने और एक नए मुकाम पर ले जाने का काम किया है। आखिर हमारा 'नया भारत' का सपना यही तो है जहाँ नारी सशक्त हो, सबल हो, देश के समग्र विकास में बराबर की भागीदार हो। पिछले दिनों मुझे एक बहुत ही बढ़िया सुझाव किसी महाशय ने दिया था। उन्होंने सुझाव दिया था कि 8 मार्च, महिला दिवस मानते है। स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत झारखण्ड में लगभग 15 लाख महिलाओं ने भाग लिया है। 15 लाख महिलाओं ने संगठित होकर एक माह का स्वच्छता अभियान चलाया। 26 जनवरी, 2018 से प्रारम्भ हुए इस अभियान के अन्तर्गत मात्र 20 दिन में इन महिलाओं ने 1 लाख 70 हजार शौचालयों का निर्माण कर एक नई मिसाल कायम की है। इसमें करीब 1 लाख सखी मण्डल सम्मिलित हैं। 14 लाख महिलाएँ, 2 हजार महिला पंचायत प्रतिनिधि, 29 हजार जलसहिया, 10 हजार महिला स्वच्छा ग्रही तथा 50 हजार महिला राज मिस्त्री। स्वच्छ भारत अभियान की एक ऐसी शक्ति है, जो सामान्य जीवन में स्वच्छता के अभियान को, स्वच्छता के संस्कार को प्रभावी ढंग से परिवर्तित करके रहेगी।

मेरे प्यारे भाइयों, दो मार्च को पूरा देश होली का उत्सव हर्षोल्लास से मनाएगा। होली में जितना महत्व रंगों का है उतना ही महत्व होलिका दहन का भी है क्योंकि यह दिन बुराइयों को अग्नि में जलाकर नष्ट करने का दिन है।

आप सभी को होली की बहुत बहुत शुभकामनायें। धन्यवाद।

5.4 एपिसोड- 27 मई 2018

नमस्कार, मन की बात के माध्यम से फिर एक बार आप सबसे रूबरू होने का अवसर मिला है। आप लोगों को भली भाँति याद होगा नौसेना की 6 महिला कमाँडरों, ये एक दल पिछले कई महीनों से समुद्र की यात्रा पर था। 'नाविका सागर परिक्रमा' जी मैं उनके विषय में कुछ बात करना चाहता हूँ। भारत की इन 6 बेटियों ने, उनकी इस टीम ने 250 से भी ज्यादा दिन समुद्र के माध्यम से INSV तारिणी में पूरी दुनिया की सैर कर 21 मई को भारत वापस लौटी हैं और पूरे देश ने उनका काफी गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने विभिन्न महासागरों और कई समुद्रों में यात्रा करते हुए लगभग बाईस हजार नॉटिकल माइल्स की दूरी तय की। यह विश्व में अपने आप में एक पहली घटना थी। गत बुधवार को मुझे इन सभी बेटियों से मिलने का, उनके अनुभव सुनने का अवसर मिला। मैं एक बार फिर इन बेटियों को उनके साहसिक कारनामा को और भारत के

मान सम्मान के लिए बधाई देता हूँ। विकास साहसिक की गोद में ही तो जन्म लेता है। कुछ कर गुजरने का इरादा, कुछ लीक से हटकर के करने का मायना, कुछ विशेष करने की बात, मैं भी कुछ कर सकता हूँ ये भाव, करने वाले भले कम हों, लेकिन युगों तक, कोटि-कोटि लोगों को प्रेरणा मिलती रहती है।

16 मई को महाराष्ट्र के चन्द्रपुर के एक आश्रम स्कूल के 5 आदिवासी बच्चों मनीषा धुर्वे, प्रमेश आले, उमाकान्त मडवी, कविदास कातमोड़े, विकास सोयाम, इन हमारे आदिवासी बच्चों के एक दल ने दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ाई की। आश्रम स्कूल के इन छात्रों ने अगस्त 2017 में प्रशिक्षण शुरू की थी। वर्धा, हैदराबाद, दार्जिलिंग, लेह, लद्दाख इनका प्रशिक्षण हुआ। इन युवाओं को 'मिशन शौर्य' के तहत चुना गया था और नाम के ही अनुरूप एवरेस्ट फतह कर उन्होंने पूरे देश को गौरवान्वित किया है। मैं इन सभी बच्चों को बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

अजीत बजाज और उनकी बेटी दीया एवरेस्ट की चढ़ाई करने वाली पहली भारतीय पिता पुत्री की जोड़ी बन गई है। संगीता बहल ने 19 मई को एवरेस्ट की चढ़ाई की और संगीता बहल की आयु 50 से भी अधिक है। एवरेस्ट पर चढ़ाई करने वाले कुछ ऐसे भी हैं, जिन्होंने दिखाया कि उनके पास न केवल स्किल है बल्कि वे सेनसिटिव भी हैं। अभी पिछले दिनों स्वच्छ गंगा अभियान के तहत BSF के एक ग्रुप ने एवरेस्ट की चढ़ाई की, पूरी टीम एवरेस्ट से ढ़ेर सारा कूड़ा अपने साथ नीचे उतार कर लायी। यह कार्य प्रशंसनीय तो है ही, साथ ही साथ यह स्वच्छता के प्रति, पर्यावरण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है। वर्षों से लोग एवरेस्ट की चढ़ाई करते रहे हैं और ऐसे कई लोग हैं, जिन्होंने सफलता पूर्वक इसे पूरा किया है। मैं इस सभी साहसी वीरों को बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो और खासकर के मेरे नौजवान दोस्तो अभी दो महीने पहले जब मैंने फिट इण्डिया की बात की थी तो मैंने नहीं सोचा था कि इस पर इतना अच्छा प्रतिक्रिया आएगा। इतनी भारी संख्या में हर क्षेत्र से लोग इसके सपोर्ट में आगे आएँगे। जब में फिट इण्डिया की बात करता हूँ तो मैं मानता हूँ कि जितना हम खेलेंगे, उतना ही देश खेलेगा। सोशल मीडिया पर लोग फिटनेस चैलेंज की विडियो शेयर कर रहे हैं। फिट इण्डिया के इस अभियान से आज हर कोई जुड़ रहा है। चाहे फिल्म से जुड़े लोग हों, स्पोर्ट्स से जुड़े लोग हों या देश के आमजन, सेना के जवान हों, स्कूल की टीचर हों, चारों तरफ से एक ही गूँज सुनाई दे रही है

‘हम फिट तो इण्डिया फिट’ मेरे लिए खुशी की बात है कि मुझे भी भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली जी ने चैलेंज किया है और मैंने भी उनके चैलेंज को स्वीकार किया है। मैं मानता हूँ कि ये बहुत अच्छी चीज है और इस तरह का चैलेंज हमें फिट रखने और दूसरों को भी फिट रहने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो ‘मन की बात’ में कई बार खेल के सम्बन्ध में, खिलाडियों के सम्बन्ध में, कुछ न कुछ बातें आपने मेरे से सुनी ही हैं और पिछली बार तो कॉमनवैल्थ गेम्स के हमारे नायक, अपनी मन की बातें, इस कार्यक्रम के माध्यम से हमें बता रहे थे।

नमस्कार सर मैं छवि यादव नोएडा से बोल रही हूँ, मैं आपकी ‘मन की बात’ की रेगुलर श्रोता हूँ और आज आपसे अपनी मन की बात करना चाहती हूँ। आजकल गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो गयी हैं और एक माँ होने के नाते मैं देख रही हूँ कि बच्चे ज्यादातर समय इण्टरनेट गेम्स खेलते हुए बिताते हैं, जबकि जब हम छोटे थे तो हम पारम्परिक गेम्स जो कि ज्यादातर आउटडोर गेम्स होते थे, वो खेलते थे, जैसा कि एक गेम था जिसमें 7 पत्थर के टुकड़े एक के ऊपर एक रख के उसे बॉल से मारते थे और ऊँच नीच होता था, खोखो, ये सब गेम जो आजकल खो से गए हैं। मेरा ये निवेदन है कि आप आजकल की पीढ़ी को कुछ पारम्परिक गेम्स के बारे में बताएँ, जिससे उनकी भी रूचि इस तरफ बढ़े, धन्यवाद।

छवि यादव जी, आपके फोन कॉल के लिए आपका बहुत धन्यवाद। ये बात सही है कि जो खेल कभी गली गली हर बच्चे के जीवन का हिस्सा होते थे। वे आज कम होते जा रहे हैं। ये खेल खासकर गर्मी की छुट्टियों का विशेष हिस्सा होते थे। कभी भरी दोपहरी में तो कभी रात में खाने के बाद बिना किसी चिन्ता के बिल्कुल बेफिक्र होकर के बच्चे खेलते थे। जो पूरा परिवार साथ में खेला करता था पिट्ठू हो या कंचे हो, खोखो हो, लट्टू हो या गिल्ली डण्डा हो, न जाने अनगिनत खेल कश्मीर से कन्याकुमारी, कच्छ से कामरूप तक हर किसी के बचपन का हिस्सा हुआ करते थे। हाँ यह हो सकता है कि अलग-अलग नामों से जाने जाते थे जैसे अब पिट्ठू ही यह खेल कई नामों से जाना जाता है। हमारे देश की विविधता के पीछे छिपी एकता इन खेलों में भी देखी जा सकती है। एक ही खेल अलग अलग जगह अलग नाम से जाना जाता है है। गुजरात में एक खेल है जिसे चोमल इस्तो कहते है। ये कोड़ियों या इमली के बीज या डाइस के साथ और 8×8 के स्कवेर बोर्ड के साथ खेला जाता है। यह खेल लगभग हर राज्य में खेला जाता था। कर्नाटक में इसे चौकाबारा कहते

थे, मध्यप्रदेश में अत्तू। केरल में पकीड़ा काली तो महाराष्ट्र में चम्पल, तो तमिलनाडु में दायाम और थायाम, तो कहीं राजस्थान में चंगापो न जाने कितने नाम थे लेकिन खेलने के बाद पता चलता है, हर राज्य वाले को भाषा भले न जानता हो अरे वाह ये खेल तो हम भी करते थे। कुछ खेलों का अपना एक सीजन होता है। जैसे पतंग उड़ाने का भी एक सीजन होता है। जब हर कोई पतंग उड़ाता है जब हम खेलते हैं, हम में जो यूनिक क्वालिटी होती हैं, हम उन्हें फ्री एक्सप्रेस कर पाते हैं। आपने देखा होगा कई बच्चे, जो शर्मीले स्वभाव के होते हैं लेकिन खेलते समय बहुत ही चंचल हो जाते हैं। खुद को जाहिर करते हैं, बड़े जो गंभीर से दिखते हैं, खेलते समय उनमें जो एक बच्चा छिपा होता है, वो बाहर आता है। पारम्परिक खेल कुछ इस तरह से बने हैं कि शारीरिक क्षमता के साथ साथ वो हमारी लॉजिकल थिंकिंग, एकाग्रता, सजगता, स्फूर्ति को भी बढ़ावा देते है और खेल सिर्फ खेल नहीं होते है वह जीवन के मूल्यों को सिखाते है। लक्ष्य तय करना, दृढ़ता कैसे हासिल करना, टीम स्पिरिट कैसे पैदा होना, परस्पर सहयोग कैसे करना। पिछले दिनों मैं देख रहा था कि बिजनस मैनेजमेंट से जुड़े हुए ट्रेनिंग प्रोग्राम में भी ओवर ऑल पर्स्नालिटी डेव्लपमेंट और इंटेर्पेर्सोनल स्किल के इम्प्रोवेमेंट के लिए भी हमारे जो परम्परागत खेल थे, उसका आजकल उपयोग हो रहा है और बड़ी आसानी से ओवर ऑल डेव्लपमेंट में हमारे खेल काम आ रहे हैं और फिर इन खेलों को खेलने की कोई उम्र तो है ही नहीं। साथ ही साथ हम अपनी संस्कृति और परम्पराओं को भी जानते हैं। कई खेल हमें समाज, पर्यावरण आदि के बारे में भी जागरूक करते हैं। कभी कभी चिन्ता होती है कि हमारे यह खेल खो न जाएँ और सिर्फ खेल ही नहीं खो जाएगा, कहीं बचपन ही खो जाएगा और फिर उस कविताओं को हम सुनते रहेंगे।

यह दौलत भी ले लो
यह शौहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझसे मेरी जवानी
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो कागज की कश्ती, वो बारिश का पानी

यही गीत हम सुनते रह जाएँगे और इसीलिए यह पारम्परिक खेल, इसको खोना नहीं है आज आवश्यकता है कि स्कूल, मौहल्ले, युवा-मण्डल आगे आकर इन खेलों को बढ़ावा दें। इन खेलों के विडियो बनाए जा सकते

हैं, जिनमें खेलों के नियम, खेलने के तरीके के बारे में दिखाया जा सकता है। एनिमेशन फिल्में भी बनाई जा सकती हैं ताकि हमारी जो नई पीढ़ी है, जिनके लिए यह गलियों में खेले जाने वाले खेल कभी-कभी अजूबा होता है। वह देखेंगे, खेलेंगे, खिलेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, आने वाले 5 जून को हमारा देश भारत आधिकारिक तौर पर विश्व पर्यावरण दिवस को भारत होस्ट करेगा। यह भारत के लिए एक बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि है और यह जलवायु परिवर्तन को कम करने की दिशा में विश्व में भारत के बढ़ते नेतृत्व को भी स्वीकृति मिल रही है। इस बार की थीम है ‘Beat Plastic Pollution’ मेरी आप सभी से अपील है, इस थीम के भाव को, इसके महत्व को समझते हुए हम सब यह सुनिश्चित करें कि हम पॉलिथीन, लो ग्रेड प्लास्टिक का उपयोग न करें और प्लास्टिक प्रदूषण का जो एक नेगेटिव इंपेक्ट हमारी प्रकृति पर, वाइल्ड लाइफ पर और हमारे स्वास्थ्य पर पड़ रहा है, उसे कम करने का प्रयास करें। विश्व पर्यावरण दिवस की वैबसाइट wedindia2018 पर जाएँ और वहाँ ढ़ेर सारे सुझाव बड़े ही रोचक ढ़ंग से दिए गए हैं। देखें, जानें और उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन में उतारने का प्रयास करें। जब भयंकर गर्मी होती है, बाढ़ होती है। बारिश थमती नहीं है। असहनीय ठण्ड पड़ जाती है तो हर कोई एक्सपेर्ट बनकर के ग्लोबल वार्मिंग, क्लाइमेट चेंग इसकी बातें करता है लेकिन क्या बातें करने से बात बनती है? प्रकृति के प्रति संवेदनशील होना, प्रकृति की रक्षा करना, यह हमारा सहज स्वभाव होना चाहिए, हमारे संस्कारों में होना चाहिए। हमें प्रकृति के साथ सदभाव से रहना है, प्रकृति के साथ जुड़ करके रहना है। महात्मा गाँधी ने तो जीवन भर हर कदम इस बात की वकालत की थी। जब आज भारत क्लाइमेट जस्टिस की बात करता है। जब भारत ने कोप 21 और पेरिस समझौते में प्रमुख भूमिका निभाई। जब हमने इण्टरनेशनल सोलर अलियन्स के माध्यम से पूरी दुनिया को एकजुट किया तो इन सबके मूल में महात्मा गाँधी के उस सपने को पूरा करने का एक भाव था। इस पर्यावरण दिवस पर हम सब इस बारे में सोचे कि हम अपने ग्रह को स्वच्छ और हरित बनाने के लिए क्या कर सकते हैं? किस तरह इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं? क्या नवीन कर सकते हैं? बारिश का मौसम आने वाला है, हम इस बार रिकॉर्ड वृक्षारोपण का लक्ष्य ले सकते हैं और केवल वृक्ष लगाना ही नहीं बल्कि उसके बड़े होने तक उसके रख रखाव की व्यवस्था करना।

मेरे प्यारे देशवासियो और विशेषकर के मेरे नौजवान साथियो आप 21 जून को बराबर अब याद रखते हैं, आप ही नहीं, हम ही नहीं सारी दुनिया 21 जून को याद रखती है। पूरे विश्व के लिए 21 जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है और ये सर्व स्वीकृत हो चुका है और लोग महीनों पहले तैयारियाँ शुरू कर देते हैं। इन दिनों खबर मिल रही है, सारी दुनिया में 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की भरसक तैयारियाँ चल रही हैं। योगा फॉर यूनिटी और मैत्रीपूर्ण समाज का ये वो सन्देश है।

योग करने से साहस पैदा होता है जो सदा ही पिता की तरह हमारी रक्षा करता है। क्षमा का भाव उत्पन्न होता है जैसा माँ का अपने बच्चों के लिए होता है और मानसिक शान्ति हमारी स्थायी मित्र बन जाती है। भर्तृहरि ने कहा है कि नियमित योग करने से सत्य हमारी सन्तान, दया हमारी बहन, आत्मसंयम हमारा भाई, स्वयं धरती हमारा बिस्तर और ज्ञान हमारी भूख मिटाने वाला बन जाता है। जब इतने सारे गुण किसी के साथी बन जाएँ तो योगी सभी प्रकार के भय पर विजय प्राप्त कर लेता है। एक बार फिर मैं सभी देशवासियों से अपील करता हूँ कि वे योग की अपनी विरासत को आगे बढ़ायें और एक स्वस्थ, खुशहाल और सद्भावपूर्ण राष्ट्र का निर्माण करें।

मेरे प्यारे देशवासियो आज 27 मई है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरु जी की पुण्यतिथि है। मैं पण्डित जी को प्रणाम करता हूँ। इस मई महीने की याद एक और बात से भी जुड़ी है और वो है वीर सावरकर। 1857 में ये मई का ही महीना था। जब भारतवासियों ने अंग्रेजों को अपनी ताकत दिखाई थी। देश के कई हिस्सों में हमारे जवान और किसान अपनी बहादुरी दिखाते हुए अन्याय के विरोध में उठ खड़े हुए थे। दुःख की बात है कि हम बहुत लम्बे समय तक 1857 की घटनाओं को केवल विद्रोह या सिपाही विद्रोह कहते रहे। वास्तव में उस घटना को न केवल कम करके आँका गया बल्कि यह हमारे स्वाभिमान को धक्का पहुँचाने का भी एक प्रयास था। यह वीर सावरकर ही थे, जिन्होंने निर्भीक हो के लिखा कि 1857 में जो कुछ भी हुआ वो कोई विद्रोह नहीं था बल्कि आजादी की पहली लड़ाई थी। सावरकर सहित लंदन के इण्डिया हाउस के वीरों ने इसकी 50वीं वर्षगांठ धूम धाम से मनाई। यह भी एक अद्भुत संयोग है कि जिस महीने में स्वतंत्रता का पहला स्वतंत्र संग्राम आरम्भ हुआ। उसी महीने में वीर सावरकर जी का जन्म हुआ। सावरकर जी का व्यक्तित्व विशेषताओं से भरा था। शस्त्र और शास्त्र दोनों के उपासक थे। आमतौर पर वीर

सावरकर को उनकी बहादुरी और ब्रिटिशराज के खिलाफ उनके संघर्ष के लिए जानते हैं लेकिन इन सबके अलावा वे एक ओजस्वी कवि और समाज सुधारक भी थे। जिन्होंने हमेशा सद्भावना और एकता पर बल दिया। सावरकर जी के बारे में एक अद्भुत वर्णन हमारे प्रिय आदरणीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने किया है। अटल जी ने कहा था। सावरकर माने तेज, सावरकर माने त्याग, सावरकर माने तप, सावरकर माने तत्व, सावरकर माने तर्क, सावरकर माने तारुण्य, सावरकर माने तीर, सावरकर माने तलवार। कितना सटीक चित्रण किया था अटल जी ने। सावरकर कविता और क्रांति दोनों को साथ लेकर चले। वे एक क्रान्तिकरी भी थे।

जून के महीने में इतनी अधिक गर्मी होती है कि लोग बारिश का इंतजार करते हैं और इस उम्मीद में आसमान में बादलों की ओर टकटकी लगाये देखते हैं। अब से कुछ दिनों बाद लोग चाँद की भी प्रतीक्षा करेंगे। चाँद दिखाई देने का अर्थ यह है कि ईद मनाई जा सकती है। रमजान के दौरान एक महीने के उपवास के बाद ईद का पर्व जश्न की शुरुआत का प्रतीक है। मुझे विश्वास है कि सभी लोग ईद को पूरे उत्साह से मनायेंगे। इस अवसर पर बच्चों को विशेष तौर पर अच्छी ईदी भी मिलेगी। आशा करता हूँ कि ईद का त्योहार हमारे समाज में सद्भाव के बन्धन को और मजबूती प्रदान करेगा। मेरे प्यारे देशवाशियों आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद। नमस्कार

5.5 एपिसोड- 30 सितम्बर 2018

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। शायद ही कोई भारतीय हो सकता है जिसको हमारे सशस्त्र बलों पर, हमारे सेना के जवानों पर गर्व न हो। प्रत्येक भारतीय चाहे वो किसी भी क्षेत्र, जाति, धर्म, पंथ या भाषा का क्यों न हो हमारे सैनिकों के प्रति अपनी खुशी अभिव्यक्त करने और समर्थन दिखाने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। कल भारत के सवा सौ करोड़ देशवासियों ने, पराक्रम पर्व मनाया था। हमने 2016 में हुई उस सर्जिकल स्ट्राइक को याद किया जब हमारे सैनिकों ने हमारे राष्ट्र पर आतंकवाद की आड़ में प्रॉक्सि वार की धृष्टता करने वालों को मुँहतोड़ जवाब दिया था। मैंने भी वीरों की भूमि राजस्थान के जोधपुर में एक कार्यक्रम में भाग लिया। अब यह तय हो चुका है कि हमारे सैनिक उन सबको मुँहतोड़ जवाब देंगे जो हमारे राष्ट्र में शान्ति और उन्नति के माहौल को नष्ट करने का प्रयास करेंगे। हम शान्ति में विश्वास करते हैं और इसे बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं, लेकिन सम्मान से समझौता करके और राष्ट्र की सम्प्रभुता की कीमत पर कतई नहीं।

भारत सदा ही शान्ति के प्रति वचनबद्ध और समर्पित रहा है। 20वीं सदी में दो विश्वयुद्धों में हमारे एक लाख से अधिक सैनिकों ने शान्ति के प्रति अपना सर्वोच्च बलिदान दिया और यह तब, जब हमारा उस युद्ध से कोई वास्ता नहीं था। हमारी नजर किसी और की धरती पर कभी भी नहीं थी। यह तो शान्ति के प्रति हमारी प्रतिबद्धता थी। कुछ दिन पहले ही 23 सितम्बर को हमने इस्राइल में हाइफा की लड़ाई के सौ वर्ष पूरे होने पर मैसूर, हैदराबाद और जोधपुर लेंसर्स के हमारे वीर सैनिकों को याद किया जिन्होंने आक्रान्ताओं से हाइफा को मुक्ति दिलाई थी। यह भी शान्ति की दिशा में हमारे सैनिकों द्वारा किया गया एक पराक्रम था। आज भी यूनाइटेड नेशन्स की अलग-अलग पीस कीपिंग फोर्सेस में भारत सबसे अधिक सैनिक भेजने वाले देशों में से एक है। दशकों से हमारे बहादुर सैनिकों ने ब्लू हेलमेट पहन विश्व में शान्ति कायम रखने में अहम भूमिका निभाई है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आसमान की बातें तो निराली होती ही हैं इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि आसमान में अपनी शक्ति का परिचय देकर के भारतीय वायुसेना ने हर देशवासी का ध्यान अपनी ओर खींचा है। हमें सुरक्षा का अहसास दिलाया है। गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान लोगों को परेड के जिन हिस्सों की सबसे बेसब्री से प्रतीक्षा रहती है उनमें से एक है फ्लाइ पास्ट जिसमें हमारी एयर फोर्स हैरत अंगेज कारनामों के साथ अपनी शक्ति का प्रदर्शन करती है। 8 अक्टूबर को हम वायुसेना दिवस मनाते हैं। 1932 में छह पायलट और 19 वायु सैनिकों के साथ एक छोटी सी शुरुआत से बढ़ते हुए हमारी वायुसेना आज 21वीं सदी की सबसे साहसिक और शक्तिशाली एयर फोर्स में शामिल हो चुकी है। यह अपने आप में एक यादगार यात्रा है। देश के लिए अपनी सेवा देने वाले सभी एयर वर्रिओर्स और उनके परिवारों का मैं अपने ह्रदय की गहराई से अभिनन्दन करता हूँ। 1947 में जब पाकिस्तान के हमलावरों ने एक अप्रत्याशित हमला शुरू किया तो यह वायुसेना ही थी जिसने श्रीनगर को हमलावरों से बचाने के लिए ये सुनिश्चित किया कि भारतीय सैनिक और उपकरण युद्ध के मैदान तक समय पर पहुँच जाएँ। वायुसेना ने 1965 में भी दुश्मनों को मुँहतोड़ जवाब दिया। 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता की लड़ाई कौन नहीं जानता है । 1999 करगिल की घुसपैठियों के कब्ज़े से मुक्त कराने में भी वायुसेना की भूमिका अहम रही है। तूफान, बवंडर, बाढ़ से लेकर जंगल की आग तक की प्राकृतिक आपदा से निपटने और देशवासियों की मदद करने का उनका जज्बा अद्भुत रहा है। देश में जेंडर

इक्वालिटी यानी स्त्री और पुरुष की समानता सुनिश्चित करने में एयर फोर्स ने मिसाल कायम की है और अपने प्रत्येक विभाग के द्वार देश की बेटियों के लिए खोल दिए हैं। अब तो वायुसेना महिलाओं को शॉर्ट सर्विस कमिशन के साथ परमानेंट कमिशन का विकल्प भी दे रही है और जिसकी घोषणा इसी साल 15 अगस्त को मैंने लाल किले से की थी। भारत गर्व से कह सकता है कि भारत की सेना में सशस्त्र बलों में पुरुष शक्ति ही नहीं, स्त्री शक्ति का भी उतना योगदान बनता जा रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, पिछले दिनों नेवी के हमारे एक अधिकारी अभिलाष टोमी वो अपने जीवन और मृत्यु की लड़ाई लड़ रहे थे। पूरा देश चिंतित था कि टोमी को कैसे बचा लिया जाए। आपको पता है अभिलाष टोमी एक बहुत साहसी वीर अधिकारी हैं। वे अकेले कोई भी आधुनिक टेक्नोलोजी बिना की एक छोटी सी नाव ले करके, विश्व भ्रमण करने वाले पहले भारतीय थे। पिछले 80 दिनों से, वे दक्षिण हिन्द महासागर में गोल्डेन ग्लोब रेस में भाग लेने समुन्दर में अपनी गति को बनाये रखते हुए आगे बढ़ रहे थे लेकिन भयानक समुद्री तूफान ने उनके लिए मुसीबत पैदा की लेकिन भारत के नौसेना का ये वीर समुन्दर के बीच अनेक दिनों तक जूझता रहा, जंग करता रहा। वो पानी में बिना खाये पिये लड़ता रहा। जिन्दगी से हार नहीं मानी। साहस, संकल्प शक्ति, पराक्रम एक अद्भुत मिसाल कुछ दिन पहले मैंने जब अभिलाष को समुन्दर से बचा करके बाहर ले आये तो टेलीफोन पर बात की। पहले भी टोमी से मैं मिल चुका था। इतने संकट से बाहर आने के बाद भी उनका जो जज्बा था, उनका जो हौसला था और फिर एक बार ऐसा ही कुछ पराक्रम करने का जो संकल्प उन्होंने मुझे बताया देश की युवा पीढ़ी के लिए वो प्रेरणा है। मैं अभिलाष टोमी के उत्तम स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करता हूँ और उनका ये साहस, उनका पराक्रम, उनकी संकल्प शक्ति जूझने की और जीतने की ताकत, हमारे देश की युवा पीढ़ी को जरूर प्रेरणा देगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, 2 अक्टूबर हमारे राष्ट्र के लिए इस दिन का क्या महत्व है। इसे बच्चा-बच्चा जानता है। इस वर्ष का 2 अक्टूबर का और एक विशेष महत्व है। अब से 2 साल के लिए हम महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के निमित्त विश्वभर में अनेक विविध कार्यक्रम करने वाले हैं। महात्मा गाँधी के विचार ने पूरी दुनिया को प्रेरित किया है। डॉ मार्टिन लूथर किंग जूनियर हों या नेल्सन मंडेला जैसी महान विभूतियाँ, हर किसी ने गाँधी जी के विचारों से शक्ति पाई और अपने लोगों को समानता और सम्मान का हक दिलाने के लिए लम्बी

लड़ाई लड़ सके। आज की 'मन की बात' में मैं आपके साथ पूज्य बापू के एक और महत्वपूर्ण कार्य की चर्चा करना चाहता हूँ, जिसे अधिक से अधिक देशवासियों को जानना चाहिए। 1941 में महात्मा गाँधी ने रचनात्मक कार्यक्रम के रूप में कुछ विचारों को लिखना शुरू किया। बाद में 1945 में जब स्वतंत्रता संग्राम ने जोर पकड़ा तब उन्होंने, उस विचार की संशोधित प्रति तैयार की। पूज्य बापू ने किसानों, गाँवों, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा, स्वच्छता, शिक्षा के प्रसार जैसे अनेक विषयों पर अपने विचारों को देशवासियों के सामने रखा है। इसे गाँधी चार्टर भी कहते हैं। पूज्य बापू लोक संग्राहक थे। लोगों से जुड़ जाना और उन्हें जोड़ लेना बापू की विशेषता थी, ये उनके स्वभाव में था। यह उनके व्यक्तित्व की सबसे अनूठी विशेषता के रूप में हर किसी ने अनुभव किया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को ये अनुभव कराया कि वह देश के लिए सबसे महत्वपूर्ण और नितान्त आवश्यक है। स्वतंत्रता संग्राम में उनका सबसे बड़ा योगदान ये रहा कि उन्होंने इसे एक व्यापक जन आन्दोलन बना दिया। स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन में महात्मा गाँधी के आह्वान पर समाज के हर क्षेत्र, हर वर्ग के लोगों ने स्वयं को समर्पित कर दिया। बापू ने हम सब को एक प्रेरणादायक मंत्र दिया था जिसे अक्सर, गाँधी जी का तलिस्मान के नाम से जाना जाता है। उसमें गाँधी जी ने कहा था। मैं आपको एक जन्तर देता हूँ, जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे तो यह कसौटी आजमाओ, जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे, उसे कुछ लाभ पहुँचेगा। क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है। तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त हो रहा है।

मेरे प्यारे देशवासियो, गाँधी जी का एक जंतर आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है। आज देश में बढ़ता हुआ मध्यम वर्ग बढ़ती हुई उसकी आर्थिक शक्ति, बढ़ता हुआ पर्चेजिंग पावर, क्या हम कुछ भी खरीदारी के लिए जाएँ तो पल भर के लिए पूज्य बापू को स्मरण कर सकते हैं। पूज्य बापू के उस जंतर का स्मरण कर सकते हैं। क्या हम खरीदारी करते समय सोच सकते हैं कि मैं जो चीज खरीद रहा हूँ उससे मेरे देश के किस नागरिक का लाभ होगा। किसके चेहरे पर खुशी आएगी। कौन भाग्यशाली होगा जिसका डाइरैक्ट या

इंडिरेक्ट आपकी खरीदी से लाभ होगा और गरीब से गरीब को लाभ होगा। उसके जीवन में आपका एक छोटा सा कदम बहुत बड़ा परिणाम ला सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, जब गाँधी जी ने कहा था कि सफाई करोगे तो स्वतंत्रता मिलेगी। शायद उनको मालूम भी नहीं होगा ये कैसे होगा पर ये हुआ, भारत को स्वतंत्रता मिली। इसी तरह आज हम को लग सकता है कि मेरे इस छोटे से कार्य से भी मेरे देश की आर्थिक उन्नति में, आर्थिक सशक्तिकरण में, गरीब को गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने की ताकत देने में मेरा बहुत बड़ा योगदान हो सकता है और मैं समझता हूँ कि आज के युग की यही सच्ची देशभक्ति है, यही पूज्य बापू को कार्यांजलि है। जैसे विशेष अवसरों पर खादी और हैंडलूम के उत्पाद खरीदने के बारे में सोचें, इससे अनेक बुनकरों को मदद मिलेगी। क्योंकि उसमें किसी का परिश्रम छुपा होता है। वे कहते थे ये सब खादी के कपड़े बड़ी मेहनत से बनाये हैं।दो दिन बाद पूज्य बापू के साथ ही हम शास्त्री जी की भी जयन्ती मनायेंगे। शास्त्री जी का नाम आते ही हम भारतवासियों के मन में एक असीम श्रद्धा का भाव उमड़ पड़ता है। उनका सौम्य व्यक्तित्व हर देशवासी को सदा ही गर्व से भर देता है।

लाल बहादुर शास्त्री जी की ये विशेषता थी कि बाहर से वे अत्यधिक विनम्र दिखते थे परन्तु भीतर से चट्टान की तरह दृढ़ निश्चयी थे। 'जय जवान जय किसान' का उनका नारा उनके इसी विराट व्यक्तित्व की पहचान है। राष्ट्र के प्रति उनकी नि:स्वार्थ तपस्या का ही प्रतिफल था कि लगभग डेढ़ वर्ष के संक्षिप्त कार्यकाल में, वे देश के जवानों और किसानों को सफलता के शिखर पर पहुँचने का मन्त्र दे गए।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज जब हम पूज्य बापू का स्मरण कर रहें हैं तो बहुत स्वाभाविक है कि स्वच्छता की बात के बिना रह नहीं सकते। 15 सितम्बर से 'स्वच्छता ही सेवा' एक अभियान प्रारम्भ हुआ। करोड़ों लोग इस अभियान में जुड़े और मुझे भी सौभाग्य मिला कि मैं दिल्ली के अम्बेडकर स्कूल में बच्चों के साथ स्वच्छता श्रमदान करूँ। मैं उस स्कूल में गया जिनकी नींव खुद पूज्य बाबा साहब ने रखी थी। देशभर में हर तबके के लोग, इस 15 तारीख को इस श्रमदान से जुड़े। संस्थाओं ने भी इसमें बढ़चढ़कर के अपना योगदान दिया। स्कूली बच्चों, कॉलेज के छात्रों, NCC, NSS, युवा संगठन, मीडिया ग्रुप्स, कॉर्पोरेट जगत सभी ने, सभी ने बड़े पैमाने पर स्वच्छता श्रमदान किया। मैं इसके लिए इन सभी स्वच्छता प्रेमी देशवासियों को हृदय पूर्वक बहुत बहुत बधाई देता हूँ।

"नमस्कार। मेरा नाम शैतान सिंह जिला बीकानेर, तहसील पूगल, राजस्थान से बोल रहा हूँ। मैं अंधा व्यक्ति हूँ। दोनों आँखों से मुझे दिखाई नहीं देता मैं पूरी तरह अंधा हूँ तो मैं ये कहना चाहता हूँ 'मन की बात' में जो स्वच्छ भारत का जो मोदी जी ने कदम उठाया था बहुत ही बढ़िया है। हम अन्धे लोग शौच में जाने के लिए परेशान होते थे। अभी क्या है हर घर में शौचालय बन चुका है तो हमारा बहुत बढ़िया फायदा हुआ है उसमें। ये कदम बहुत ही बढ़िया उठाया था और आगे चलता रहे ये काम। बहुत बहुत धन्यवाद

आपने बहुत बड़ी बात कही हर किसी के जीवन में स्वच्छता का अपना महत्व है और 'स्वच्छ भारत अभियान' के तहत आपके घर में शौचालय बना और उससे अब आपको सुविधा हो रही है हम सब के लिए इससे ज्यादा खुशी की बात और क्या हो सकती है और शायद इस अभियान से जुड़े लोगों को भी अंदाजा नहीं होगा एक प्रज्ञाचक्षु होने के नाते आप देख नहीं सकते हैं, लेकिन शौचालय न होने के पहले आप कितनी दिक्कतों से जीवन गुजारते थे और शौचालय होने के बाद आप के लिए कितना बड़ा वरदान बन गया, शायद आपने भी इस पहलू को जोड़ते हुए फोन न किया होता तो शायद स्वच्छता के इस अभियान से जुड़े लोगों के ध्यान में भी ऐसा संवेदनशील पहलू ध्यान न आता। मैं आपके फोन के लिए विशेष रूप से आपका धन्यवाद करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, स्वच्छ भारत मिशन केवल देश में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में एक सफल कहानी बन चुका है जिसके बारे में हर कोई बात कर रहा है। इस बार भारत इतिहास में दुनिया का सबसे बड़ा स्वच्छता सम्मेलन आयोजित कर रहा है। 'महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय स्वच्छता सम्मेलन' यानी 'Mahatma Gandhi International Sanitation Convention' दुनिया भर के Sanitation Ministers और इस क्षेत्र के विशेषज्ञ एक साथ आकर स्वच्छता से जुड़े अपने प्रयोग और अनुभव साझा कर रहे हैं। 'Mahatma Gandhi International Sanitation Convention' का समापन 2 अक्तूबर 2018 को बापू के 150वीं जयन्ती समारोह के शुभारम्भ के साथ होगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, संस्कृत की एक उक्ति है 'न्यायमूलं स्वराज्यं स्यात्' अर्थात् स्वराज के मूल में न्याय होता है जब न्याय की चर्चा होती है, तो मानव अधिकार का भाव उसमें पूरी तरह से समाहित रहता है। शोषित, पीड़ित और वंचित जनों की स्वतन्त्रता, शान्ति और उन्हें न्याय सुनिश्चित कराने के लिए ये विशेष रूप

से अनिवार्य है। डॉ० बाबा साहब अम्बेडकर द्वारा दिए गए संविधान में गरीबों के मूल अधिकारों की रक्षा के लिए कई प्रावधान किये गए हैं। उन्हीं के विजन से प्रेरित होकर 12 अक्तूबर 1993 को 'राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग (NHRC) का गठन किया गया था। कुछ ही दिनों बाद NHRC के 25 वर्ष पूरे होने वाले हैं। NHRC ने न सिर्फ मानव अधिकारों की रक्षा की बल्कि मानवीय गरिमा को भी बढ़ाने का काम किया है। हमारे राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के प्रतीक चिन्ह में वैदिक काल का आदर्श सूत्र सर्वे भवन्तु सुखिनःअंकित है। NHRC ने मानव अधिकारों को लेकर व्यापक जागरूकता पैदा की है, साथ ही इसके दुरुपयोग को रोकने में भी सराहनीय भूमिका निभाई है। 25 साल की इस यात्रा में उसने देशवासियों में एक आशा, एक विश्वास का वातावरण पैदा किया है। एक स्वस्थ समाज के लिए, उत्तम लोकतान्त्रिक मूल्यों के लिए मैं समझता हूँ एक बहुत बड़ी आशास्पद घटना है। एक समाज के रूप में हमें मानव अधिकारों के महत्व को समझने और आचरण में लाने की आवश्यकता है ये ही 'सब का साथ–सब का विकास' का आधार है।

मेरे प्यारे देशवासियो, अक्तूबर महीना हो, जय प्रकाश नारायण जी की जन्मजयन्ती हो, राजमाता विजयाराजे सिंधिया जी की जन्म शताब्दी वर्ष का प्रारम्भ होता हो। ये सभी महापुरुष हम सब को प्रेरणा देते रहे हैं उनको हम नमन करते हैं और 31 अक्तूबर सरदार साहब की जयन्ती है, मैं अगली 'मन की बात' में विस्तार से बात करूँगा लेकिन आज मैं जरुर इसलिए उल्लेख करना चाहता हूँ कि कुछ वर्षों से सरदार साहब की जन्म जयन्ती पर 31 अक्तूबर को 'Run for Unity' हिन्दुस्तान के हर छोटेमोटे शहर में, कस्बों में, गाँवों में 'एकता के लिए दौड़' इसका आयोजन होता है। इस वर्ष भी हम प्रयत्नपूर्वक अपने गाँव में, कस्बे में, शहर में, महानगर में 'Run for Unity' को आयोजित करें। 'एकता के लिए दौड़' यही तो सरदार साहब का, उनको स्मरण करने का उत्तम मार्ग है। क्योंकि उन्होंने जीवनभर देश की एकता के लिए काम किया। मैं आप सब से आग्रह करता हूँ कि 31 अक्तूबर को 'Run for Unity' के जरिये समाज के हर वर्ग को, देश की हर इकाई को एकता के सूत्र में बांधने के हमारे प्रयासों को हम बल दें और यही उनके लिए अच्छी श्रद्धांजलि होगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, नवरात्रि हो, दुर्गापूजा हो, विजयादशमी हो इस पवित्र पर्वो के लिए मैं आप सब को हृदयपूर्वक शुभकामनायें देता हूँ। धन्यवाद।

5.6 एपिसोड- 29 जनवरी 2017

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सबको नमस्कार 26 जनवरी, हमारा गणतंत्र दिवस देश के कोने कोने में मनाया गया। भारत का संविधान में उमंग और उत्साह के साथ सबने मनाया। नागरिकों के कर्तव्य, नागरिकों के अधिकार, लोकतंत्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता, एक प्रकार से ये संस्कार उत्सव भी है, जो आने वाली पीढ़ियों को लोकतंत्र के प्रति, लोकतान्त्रिक जिम्मेदारियों के प्रति, जागरूक भी करता है, संस्कारित भी करता है। लेकिन अभी भी हमारे देश में, नागरिकों के कर्तव्य और नागरिकों के अधिकार उस पर जितनी बहस होनी चाहिए, जितनी गहराई से बहस होनी चाहिए, जितनी व्यापक रूप में चर्चा होनी चाहिए, वो अभी नहीं हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि हर स्तर पर, हर वक्त, जितना बल अधिकारों पर दिया जाता है, उतना ही बल कर्तव्यों पर भी दिया जाए। अधिकार और कर्तव्य की दो पटरी पर ही, भारत के लोकतंत्र की गाड़ी तेज गति से आगे बढ़ सकती है।

कल 30 जनवरी है, हमारे पूज्य बापू की पुण्य तिथि है। 30 जनवरी को हम सब सुबह 11 बजे, 2 मिनट मौन रख करके, देश के लिए प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि देते हैं। एक समाज के रूप में, एक देश के रूप में, 30 जनवरी, 11 बजे 2 मिनट श्रद्धांजलि, यह सहज स्वभाव बनना चाहिए। 2 मिनट क्यों न हो, लेकिन उसमें सामूहिकता भी, संकल्प भी और शहीदों के प्रति श्रद्धा भी अभिव्यक्त होती है।

हमारे देश में सेना के प्रति, सुरक्षा बलों के प्रति, एक सहज आदर भाव प्रकट होता रहता है। इस गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर, विभिन्न वीरता पुरस्कारों से, जो वीर जवान सम्मानित हुए, उनको उनके परिवारजनों को, मैं बधाई देता हूँ। इन पुरस्कारों में, 'कीर्ति चक्र', 'शौर्य चक्र', 'परम विशिष्ट सेवा मेडल', 'विशिष्ट सेवा मेडल' अनेक श्रेणियाँ हैं। मैं खास करके नौजवानों से आग्रह करना चाहता हूँ। जब उनके साहस की, वीरता की, पराक्रम की बात को गहराई से जानते हैं, तो हमें आश्चर्य भी होता है, गर्व भी होता है, प्रेरणा भी मिलती है।

एक तरफ हम सब 26 जनवरी की उमंग और उत्साह की खबरों से आनंदित थे, तो उसी समय कश्मीर में हमारे जो सेना के जवान देश की रक्षा में डटे हुए हैं, वे हिम स्खलन के कारण वीर गति को प्राप्त हुए। मैं इन सभी वीर जवानों को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ। नमन करता हूँ।

मेरे युवा साथियो, आप तो भली भाँति जानते हैं कि मैं मन की बात लगातार करता रहता हूँ। जनवरी, फरवरी, मार्च, अप्रैल ये सारे महीने हर परिवार में, कसौटी के महीने होते हैं। घर में एकधा, दो बच्चों की एक्जाम होती हैं, लेकिन पूरा परिवार एक्जाम के बोझ में दबा हुआ होता है। तो मेरा मन कर गया कि ये सही समय है कि मैं विद्यार्थी दोस्तों से बातें करूँ, उनके अभिवावकों से बातें करूँ, उनके शिक्षकों से बातें करूँ। क्योंकि कई वर्षों से, मैं जहाँ गया, जिसे मिला, परीक्षा एक बहुत बड़ा परेशानी का कारण नजर आया। परिवार परेशान, विद्यार्थी परेशान, शिक्षक परेशान, एक बड़ा विचित्र सा मनोवैज्ञानिक वातावरण हर घर में नजर आता है और मुझे हमेशा ये लगा है कि इसमें से बाहर आना चाहिये और इसलिये मैं आज युवा साथियों के साथ कुछ विस्तार से बातें करना चाहता हूँ। जब ये विषय मैंने घोषित किया, तो अनेक शिक्षकों ने, अभिभावकों ने, विद्यार्थियों ने मुझे मैसेज भेजे, सवाल भेजे, सुझाव भेजे, पीड़ा भी व्यक्त की, परेशानियों का भी जिक्र किया और उसको देखने के बाद जो मेरे मन में विचार आए, वो मैं आज आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। मुझे एक टेलीफोन सन्देश मिला सृष्टि का। आप भी सुनिए, सृष्टि क्या कह रही है।

सर, मैं आपसे इतना कहना चाहती हूँ कि एक्जाम के टाइम पे अक्सर ऐसा होता है कि हमारे घर में, आसपड़ोस में, हमारी समाज में बहुत ही खौफनाक और डरावना माहौल बन जाता है। इस वजह से विद्यार्थी इन्सपिरेशन तो कम, लेकिन डाउन बहुत हो जाते है। तो मैं आपसे इतना पूछना चाहती हूँ कि क्या ये माहौल खुशनुमा नहीं हो सकता?

खैर, सवाल तो सृष्टि ने पूछा है, लेकिन ये सवाल आप सबके मन में होगा। परीक्षा अपने आप में एक खुशी का अवसर होना चाहिये। साल भर मेहनत की है, अब बताने का अवसर आया है, ऐसा उमंग उत्साह का ये पर्व होना चाहिए। बहुत कम लोग हैं, जिनके लिए एक्जाम में खुशी होती है, ज्यादातर लोगों के लिए एक्जाम एक दबाव होती है। निर्णय आपको करना है कि इसे आप खुशी मानेंगे कि दबाव मानेंगे। जो खुशी मानेगा, वो पायेगा जो दबाव मानेगा, वो पछताएगा। और इसलिये मेरा मत है कि परीक्षा एक उत्सव है, परीक्षा को ऐसे लीजिए, जैसे मानो त्योहार है। और जब त्योहार होता है, जब उत्सव होता है, तो हमारे भीतर जो सबसे बेस्ट होता है, वही बाहर निकल कर के आता है। समाज की भी ताकत की अनुभूति उत्सव के समय होती है। जो उत्तम से उत्तम है, वो प्रकट होता है। सामान्य रूप से हमको लगता है कि हम लोग कितने

अनुशासनहीन हैं, लेकिन जब 40-45 दिन चलने वाले कुम्भ के मेलों की व्यवस्था देखें, तो पता चलता है कि ये मेक शिफ्ट अरेंजमेंट और क्या अनुशासन है लोगों में। ये उत्सव की ताकत है। एक्जाम में भी पूरे परिवार में, मित्रों के बीच उत्साह होता है। उत्सवपूर्ण वातावरण बोझ मुक्त बना देगा।

मैं इसमें माता पिता को ज्यदा आग्रह से कहता हूँ कि आप इन तीन चार महीने एक उत्सव का वातावरण बनाइए। पूरा परिवार एक टीम के रूप में इस उत्सव को सफल करने के लिए अपनी-अपनी भूमिका उत्साह से निभाए। देखिए, देखते ही देखते बदलाव आ जाएगा। हकीकत तो ये है कि कन्याकुमारी से कश्मीर तक और कच्छ से ले करके कामरूप तक, अमरेली से ले करके अरुणाचल प्रदेश तक, ये तीनचार महीने परीक्षा ही - चार मही-परीक्षायें होती हैं। ये हम सब का दायित्व है कि हम हर वर्ष इन तीननों को अपनेअपने तरी-केसे , अपनी अपनी-परम्पराको लेते हुए , अपनेवातावरण को लेते हुए अपने परिवार के-, उत्सव में परिवर्तित करें और इसलिए मैं तो आपसे कहूँगा 'Smile More Score More' जितनी ज्या दा खुशी से इस समय को बिताओगे, उतने ही ज्या दा नम्बर पाओगे, करके देखिए और आपने देखा होगा कि जब आप खुश होते हैं, मुस्कुराते हैं, तो आप आराम अपने को पाते हैं। आप सहज रूप से आप-आराम हो जाते हैं और जब आप खुश होते हैं, तो आपकी वर्षों पुरानी बातें भी सहज रूप से आपको याद आ जाती हैं। एक साल पहले क्लासरूम में टीचर ने क्या कहा, पूरा दृश्य याद आ जाता है। और आपको ये पता होना चाहिए, मेमोरी को रिकॉल करने का जो पावर है, वो शिथिलता में सबसे ज्या दा होता है। अगर आप तनाव में है तो सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं, बाहर का अन्दर नहीं जाता, अन्दर का बाहर नहीं आता है। विचार प्रक्रिया में ठहराव आ जाता है, वो अपने आप में एक बोझ बन जाता है।-एक्जाम में भी आपने देखा होगा, आपको सब याद आता है। किताब याद आती है, चैप्टर याद आता है, पेज नम्बर याद आता है, पेज में ऊपर की तरफ लिखा है कि नीचे की तरफ, वो भी याद आता है, लेकिन वो पर्टिकुलर शब्द याद नहीं आता है। लेकिन जैसे ही एक्जाम दे करके बाहर निकलते हो और थोड़ा सा कमरे के बाहर आए, अचानक आपको याद आ जाता है हाँ यार, यही शब्द था। अन्दर क्यों याद नहीं आया, दबाव था। बाहर कैसे याद आया? आप ही तो थे, किसी ने बताया तो नहीं था। लेकिन जो अन्दर था, तुरन्त बाहर आ गया और बाहर इसलिये आया, क्योंकि आप तनाव मुक्त हो गए। और इसलिये मेमोरी रिकॉल करने की सबसे बड़ी अगर कोई औषधि है, तो वो तनाव मुक्ति है। और ये मैं

अपने स्वानुभव से कहता हूँ कि अगर दबाव है, तो अपनी चीजें हम भूल जाते हैं और सुस्त हैं, तो कभी हम कल्पना नहीं कर सकते, वो बहुत काम आ जाती हैं। और ऐसा नहीं है कि आप के पास ज्ञान नहीं है, ऐसा नहीं है कि आप के पास सूचना नहीं है, ऐसा नहीं है कि आपने मेहनत नहीं की है। लेकिन जब मानसिक तनाव होता है, तब आपका ज्ञान, आपकी जानकारी नीचे दब जाती हैं और आपका मानसिक तनाव उस पर सवार हो जाता है। और इसलिये आवश्यक है 'A Happy Mind is the Secret for a Good Marksheet' कभी कभी ये भी लगता है कि हम उचित दृष्टिकोण में परीक्षा को देख नहीं पाते हैं। ऐसा लगता है कि वो जीवन मरण का जैसे सवाल है। आप जो एक्जाम देने जा रहे हैं, वो साल भर में आपने जो पढ़ाई की है, उसी का एक्जाम है। ये आपके जीवन की कसौटी नहीं है। आपने कैसा जीवन जिया, कैसा जीवन जी रहे हो, कैसा जीवन जीना चाहते हो, उसकी एक्जाम नहीं है। आपके जीवन में क्लासरूम में, नोटबुक ले करके दी गई परीक्षा के सिवाय भी कई कसौटियों से गुजरने के अवसर आए होंगे और इसलिये, परीक्षा को जीवन की सफलता विफलता से कोई लेना देना है, ऐसे बोझ से मुक्त हो जाइए। मान लीजिए उस विफलता के कारण अगर वो मायूस हो जाते, जिन्दगी से हार जाते, तो क्या भारत को इतना बड़ा वैज्ञानिक मिलता, इतने बड़े राष्ट्रपति मिलते, नहीं मिलते। कोई ऋचा आनन्द जी ने मुझे एक सवाल भेजा है।

'आज के इस दौर में शिक्षा के सामने जो सबसे बड़ी चुनौती देख पाती हूँ, वो यह कि शिक्षा परीक्षा केन्द्रित हो कर रह गयी है। अंक सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। इसकी वजह से प्रतिस्पर्द्धा तो बहुत बढ़ी ही है, साथ में विद्यार्थियों में तनाव भी बहुत बढ़ गया है। तो शिक्षा की इस वर्तमान दिशा और इसके भविष्य को ले करके आपके विचारों से अवगत होना चाहूँगी।'

वैसे उन्होंने खुद ने ही जवाब दे ही दिया है, लेकिन ऋचा जी चाहती हैं कि मैं भी इसमें कुछ अपनी बात रखूँ। मार्क्स और मार्क्सशीट इसका एक सीमित उपयोग है। जिन्दगी में वही सब कुछ नहीं होता है। जिन्दगी तो चलती है कि आपने कितना ज्ञान अर्जित किया है। जिन्दगी तो चलती है कि आपने जो जाना है, उसको जीने का प्रयास किया है क्या? जिन्दगी तो चलती है कि आपको जो एक सैन्स ऑफ मिशन मिला है और जो आपका सैन्स ऑफ एँबिसन है, ये आपके मिशन और अभिलाषा के बीच में कोई तालमेल हो रहा है क्या? अगर आप इन चीजों में भरोसा करोगे, तो मार्क्स पूँछ दबाते हुए आपके पीछे आ जाएँगे। आपको मार्क्स के

पीछे भागने की कभी जरुरत नहीं पड़ेगी। जीवन में आपको ज्ञान काम आने वाला है, स्किल काम आने वाली है, आत्मविश्वास काम आने वाला है, संकल्प शक्ति काम आने वाली है। आप ही मुझे बताइए आपके परिवार के कोई डॉक्टर होंगे और परिवार के सब लोग उन्हीं के पास जाते होंगे, फॅमिली डॉक्टर होते हैं। आप में से कोई ऐसा नहीं होगा जिसने अपने फॅमिली डॉक्टर को कभी, वो कितने नम्बर से पास हुआ था, पूछा होगा। किसी ने नहीं पूछा होगा। बस, आपको लगा कि भाई एक डॉक्टर के नाते अच्छे हैं, आप लोगो को लाभ हो रहा है, आप उसकी सेवाएँ लेना शुरू किए। आप कोई बड़ा से बड़ा केस लड़ने के लिए किसी वकील के पास जाते हैं, तो क्या उस वकील की मार्क्सशीट देखते हैं क्या? आप उसके अनुभव को, उसके ज्ञान को, उसकी सफलता की यात्रा को देखते हैं। और इसलिये ये जो अंक का बोझ है, वो भी कभीकभी हमें सही दिशा में जाने से रोक देता है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मैं ये कहूँ कि बस, पढ़ना ही नहीं है। अपनी कसौटी के लिए उसका उपयोग जरुर है। लेकिन आपने जिन चीजों पर हाथ लगाया था, उसके बाहर की कोई चीज आ गई, आपने जो सवाल तैयार किए थे, उससे बाहर का सवाल आ गया, तो आप एकदम से नीचे आ जाएँगे। अगर आप ज्ञान को केंद्र में रखते हैं, तो बहुत चीजों को अपने में समेटने का प्रयास करते हो। लेकिन अंक पर केन्द्रित करते हो, मार्क्स पर केन्द्रित करते हो, तो आप धीरे धीरे अपने-आप को सिकुड़ते जाते हो और एक निश्चित क्षेत्र तक अपने आपको सीमित करके सिर्फ मार्क्स पाने के लिये। तो हो सकता है कि एक्जाम में होनहार बनने के बावजूद भी जीवन में कभी कभी विफल हो जाते है।

ऋचा जी ने एक बात ये भी कही है प्रतिस्पर्द्धा। ये एक बहुत बड़ी मनोवैज्ञानिक लड़ाई है। सचमुच में जीवन को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्द्धा काम नहीं आती है। जीवन को आगे बढ़ाने के लिए अनुस्पर्द्धा काम आती है और जब हम अनुस्पर्द्धा मैं कहता हूँ, तो उसका मतलब है, स्वयं से स्पर्द्धा करना। बीते हुए कल से आने वाला कल बेहतर कैसे हो? बीते हुए परिणाम से आने वाला अवसर अधिक बेहतर कैसे हो? अक्सर आपने खेल जगत में देखा होगा। क्योंकि उसमें तुरन्त समझ आता है, इसलिए मैं खेल जगत का उदहारण देता हूँ। ज्या दातर सफल खिलाड़ियों के जीवन की एक विशेषता है कि वो अनुस्पर्द्धा करते हैं। अगर हम श्रीमान सचिन तेंदुलकर जी का ही उदहारण ले लें। बीस साल लगातार अपने ही रिकॉर्ड तोड़ते जाना, खुद को ही हर

बार पराजित करना और आगे बढ़ना। बड़ी अदभुत जीवन यात्रा है उनकी, क्योंकि उन्होंने प्रतिस्पर्द्धा से ज्यादा अनुस्पर्द्धा का रास्ता अपनाया।

जीवन के हर क्षेत्र में दोस्तो और जब आप एक्जाम देने जा रहे हैं तब पहले अगर दो घण्टे पढ़ पाते थे शान्ति से वो तीन घण्टे कर पाते हो क्या? पहले जितने बजे सुबह उठना तय करते थे देर हो जाती थी। क्या अब समय पर उठ पाते हो क्या? पहले परीक्षा की टेंशन में नींद नहीं आती थी अब नींद आती है क्या? खुद को ही आप कसौटी पर कस लीजिए और आपको ध्यान में आएगा। प्रतिस्पर्द्धा में पराजय, हताशा, निराशा और ईर्ष्या को जन्म देती है, लेकिन अनुस्पर्द्धा आत्मंथन, आत्मचिन्तन का कारण बनती है। संकल्प शक्ति को दृढ़ बनाती है और जब खुद को पराजित करते हैं, तो और अधिक आगे बढ़ने का उत्साह अपने आप पैदा होता है बाहर से कोई एक्सट्रा ऊर्जा की जरूरत नहीं पड़ती है। भीतर से ही वो ऊर्जा अपने आप पैदा होती है। अगर सरल भाषा में मुझे कहना है तो मैं कहूँगा जब आप किसी से प्रतिस्पर्द्धा करते हैं, तो तीन संभावनायें मोटी-मोटी नजर आती हैं। आप उससे बहुत बेहतर हैं। दूसरा आप उससे बहुत खराब हैं या आप उसके बराबर के हैं। अगर आप बेहतर हैं तो बेपरवाह हो जाएँगे, अतिविश्वास से भर जाएँगे। अगर आप उसके मुकाबले खराब करते हैं, तब दुखी और निराश हो जाएँगे, ईर्ष्या से भर जाएँगे, जो ईर्ष्या आपको, अपने आप को खाती जाएगी और अगर बराबरी के हैं, तो सुधार की आवश्यकता आप कभी महसूस ही नहीं करोगे। जैसी गाड़ी चलती है, चलते रहोगे। तो मेरा आपसे आग्रह है। अनुस्पर्द्धा का खुद से स्पर्द्धा करने का। पहले क्या किया था उससे आगे कैसे करूँगा, अच्छा कैसे करूँगा। बस, इसी पर ध्यान केन्द्रित कीजिए। आप देखिए, आपको बहुत परिवर्तन महसूस होगा।

श्रीमान एस सुन्दर जी ने अभिभावकों की भूमिका के सम्बन्ध में अपनी भावना व्यक्त की है। उनका कहना है कि परीक्षा में अभिभावकों की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने आगे लिखा है "मेरी माँ पढ़ी लिखी नहीं थी, फिर भी वह मेरे पास बैठा करती थी और मुझसे गणित के सवाल हल करने के लिये कहती थी। वह उत्तर मिलाती और इस तरह से वो मेरी मदद करती थी। गलतियाँ ठीक करती थी। मेरी माँ ने दसवीं की परीक्षा पास नहीं की, लेकिन बिना उनके सहयोग के मेरे लिये C.B.S.E. के एक्जाम पास करना नामुमकिन था।"

सुन्दर जी आपकी बात सही है और आज भी देखा होगा आपने मुझे सवाल पूछने वाले, सुझाव देने वालों में महिलाओं की संख्या ज्यादा है क्योंकि घर में बालकों के भविष्य के सम्बन्ध में मातायें जो सजग होती हैं, सक्रिय होती हैं, वे बहुत चीजे सरल कर देती हैं। मैं अभिभावकों से इतना ही कहना चाहूँगा तीन बातों पर हम बल दें। स्वीकारना, सिखाना, समय देना। जो है उसे स्वीकार कीजिए। आपके पास जितनी क्षमता है, आप मैंटर कीजिए, आप कितने ही व्यस्त क्यों न हों, समय निकालिए, टाइम दीजिए। एक बार आप स्वीकार करना सीख लेंगे, अधिकतम समस्या तो वही समाप्त हो जाएगी। हर अभिभावक इस बात को अनुभव करता होगा, अभिभावकों का, टीचरों का उम्मीद समस्या की जड़ में होता है। स्वीकार्यता समस्याओं के समाधान का रास्ता खोलता है। अपेक्षायें राह कठिन कर देती हैं। अवस्था को स्वीकार करना, नए रास्ते खोलने का अवसर देती है और इसलिए जो है, उसे स्वीकार कीजिए। आप भी बोझ मुक्त हो जाएँगे। हम लोग छोटे बच्चों के स्कूल बैग के वजन की चर्चा करते रहते हैं, लेकिन कभी-कभी तो मुझे लगता है कि अभिभावकों की जो अपेक्षायें होती हैं, उम्मीदें होती हैं, वो बच्चे के स्कूल बैग से भी जरा ज्यादा भारी हो जाती हैं।

एक बड़ा कमाल का मुझे फोन कॉल आया है। वे सज्जन अपना नाम बताना नहीं चाहते हैं। फोन सुन कर के आपको पता चलेगा कि वो अपना नाम क्यों नहीं बताना चाहते हैं?

नमस्कार, प्रधानमंत्री जी, मैं अपना नाम तो नहीं बता सकता, क्योंकि मैंने काम ही कुछ ऐसा किया था अपने बचपन में। मैंने बचपन में एक बार नकल करने की कोशिश की थी, उसके लिये मैंने बहुत तैयारी करना शुरू किया कि मैं कैसे नकल कर सकता हूँ, उसके तरीकों को ढूँढ़ने की कोशिश की, जिसकी वजह से मेरा बहुत सारा टाइम बर्बाद हो गया। उस टाइम में मैं पढ़ करके भी उतने ही नम्बर ला सकता था, जितना मैंने नकल करने के लिए दिमाग लगाने में खर्च किया। और जब मैंने नकल करके पास होने की कोशिश की, तो मैं उसमें पकड़ा भी गया और मेरी वजह से मेरे आसपास के कई दोस्तों को काफी परेशानी हुई।

आपकी बात सही है। ये जो शॉर्ट कट वाले रास्ते होते हैं वो नकल करने के लिये कारण बन जाते हैं। कभी कभार-खुद पर विश्वास नहीं होने के कारण मन करता है कि बगल वाले से जरा देख लूँ, कम्फर्म कर लूँ, मैंने जो लिखा है, सही है कि नहीं है और कभीकभी तो हमने सही लिखा होता है, लेकिन बगल वाले ने झूठा लिखा होता है, तो उसी झूठ को हम कभी स्वीकार कर लेते हैं और हम भी मर जाते हैं। तो नकल कभी

फायदा नहीं करती है। 'To cheats to be cheap, so please, do not cheat'। नकल आपको बुरा बनाती है, इसलिये नकल न करें। आपने कई बार और बार गा किबार ये सुना हो-नकल मत करना, नकल मत करना। मैं भी आपको वही बात दोबारा कह रहा हूँ। नकल को आप हर रूप में देख लीजिए, वो जीवन को विफल बनाने के रास्ते की ओर आपको घसीट के ले जा रही है और एक्जाम में ही अगर निरीक्षक ने पकड़ लिया, तो आपका तो सबएकुछ बर्बाद हो जाएगा और मान लीजि-, किसी ने नहीं पकड़ा, तो जीवन पर आपके मन पर एक बोझ तो रहेगा कि आपने ऐसा किया था और जब कभी आपको अपने बच्चों को समझाना होगा, तो आप आँख में आँख मिला कर के नहीं समझा पाओगे। और एक बार नकल की आदत लग गई, तो जीवन में कभी कुछ सीखने की इच्छा ही नहीं रहेगी। फिर तो आप कहाँ पहुँच पाओगे?

मान लीजिए आप भी अपने रास्तों को गड्ढे में परिवर्तित कर रहे हो और मैंने तो देखा है। कुछ लोग ऐसे होते हैं कि नकल के तौर तरीके ढूँढ़ने में इतनी प्रतिभा का उपयोग कर देते हैं, इतना निवेश कर देते हैं, अपनी पूरी सर्जनात्मकता जो है, वो नकल करने के तौर-तरीकों में खपा देते हैं। अगर वही सर्जनात्मकता, यही टाइम आप अपने टाइम के मुद्दों पर देते, तो शायद नकल की ही जरुरत नहीं पड़ती। अपनी खुद की मेहनत से जो परिणाम प्राप्त होगा, उससे जो आत्मविश्वास बढ़ेगा, वो अद्भुत होगा।

एक फोन कॉल आया है।

नमस्कार, प्रधानमंत्री जी। My name is Monica and since I am a class 12th student, I wanted to ask you a couple of questions regarding the Board Exams. My first question is, what can we do to reduce the stress that builds up during our exams and my second question is, why exams all about work and no play are. Thank you.

अगर परीक्षा के दिनों में, मैं आपको खेलकूद की बात करूँगा, तो आपके टीचर, आपके पैरेंट्स ये मुझ पर गुस्सा करेंगे, वो नाराज हो जाएँगे कि ये कैसा प्रधानमंत्री है, बच्चों को एक्जाम के समय में कह रहा है, खेलो। क्योंकि आम तौर पर धारणा ऐसी है कि अगर विद्यार्थी खेलकूद में ध्यान देते हैं, तो शिक्षा से बेध्यान हो जाते हैं। ये मूलभूत धारणा ही गलत है, समस्या की जड़ वो ही है। सर्वांगीण विकास करना है, तो किताबों के बाहर भी एक जिन्दगी होती है और वो बहुत बड़ी विशाल होती है। उसको भी जीने का सीखने का यही

समय होता है। कोई ये कहे कि मैं पहले सारी परीक्षायें पूर्ण कर लूँ, बाद में खेलूँगा, बाद में ये करूँगा, तो असंभव है। जीवन का यही तो ढलाई का समय होता है। इसी को तो परवरिश कहते हैं। दर असल परीक्षा में मेरी दृष्टि से तीन बातें बहुत जरुरी हैं उचित आराम, दूसरा जितनी आवश्यक है शरीर के लिये, उतनी नींद और तीसरा दिमागी गतिविधि के सिवाय भी शरीर एक बहुत बड़ा हिस्सा है। तो शरीर के बाकी हिस्सों को भी शारीरिक गतिविधि मिलनी चाहिए। क्या कभी सोचा है कि जब इतना सारा सामने हो, तो दो पल बाहर निकल कर जरा आसमान में देखें, आप देखिए, एक ताजगी के साथ फिर से आप अपने कमरे में, अपनी किताबों के बीच आएँगे। आप जो भी कर रहे हों, थोड़ा आराम लीजिए, उठ करके बाहर जाइए, रसोई में जाइए, अपनी पसन्द की कोई चीज है, जरा खोजिए, अपनी पसन्द का बिसकुट मिल जाए तो खाइए, थोड़ी हँसी मजाक कीजिये भले ही 5 मिनट क्यों न, लेकिन आप आराम दीजिए। आपको महसूस होगा कि आपका काम सरल होता जा रहा है। सबको ये पसन्द है कि नहीं, मुझे मालूम नहीं, लेकिन मेरा तो अनुभव है। ऐसे समय गहरी सांस करते हैं, तो बहुत फायदा होता है। गहरी साँस आप लीजिये बहुत आराम हो जाता है। गहरी साँस भी लेने के लिये कोई कमरे में फिट रहने की जरुरत नहीं है। जरा खुले आसमान के नीचे आएँ, छत पर चले जाएँ, पाँच मिनट गहरी साँस ले करके फिर अपने पढ़ने के लिए बैठ जाएँ, आप देखिए, शरीर एक दम से आराम हो जाएगा और शरीर का जो शिथिलता आप अनुभव करते हैं न, वो दिमागी अंगों का भी उतना ही तनाव मुक्त कर देता है। कुछ लोगों को लगता है, रात को देर तक जागेंगे, शरीर को जितनी नींद की आवश्यकता है, वो अवश्य लीजिए, उससे आपका पढ़ने का समय बर्बाद नहीं होगा, वो पढ़ने की ताकत में इजाफा करेगा। आपका एकाग्रता बढ़ेगा, आपकी ताजगी आएगी, ताजगी होगी। आपकी क्षमता में बहुत बड़ी बढ़ोत्तरी होगी। मैं जब चुनाव में सभायें करता हूँ, तो कभी-कभी मेरी आवाज बैठ जाती है। तो मुझे एक लोक गायक मिलने आए। उन्होंने मुझे आकर के पूछा आप कितने घण्टे सोते हैं। मैंने कहा क्यों भाई, आप डॉक्टर हैं क्या? नहीं-नहीं, बोले ये आपका आवाज जो चुनाव के समय भाषण करते करतेखराब हो जाता है, उसका इसके साथ सम्बन्ध है। आप पूरी नींद लेंगे, तभी आपके ध्वनिक तन्तु को पूरा आराम मिलेगा। अब मैंने नींद को और मेरे भाषण को और मेरी आवाज को कभी सोचा ही नहीं था, उन्होंने मुझे एक जड़ीबूटी दे दी। तो सचमुच में में हम इन चीजों का महत्व समझे, आप देखिये आपको फायदा मिलेगा। लेकिन इसका मतलब ये

नहीं कि बस सोते ही रहें, लेकिन कुछ कहेंगे कि प्रधानमंत्री जी ने कह दिया है, अब बस जागने की जरुरत नहीं है, सोते रहना है। तो ऐसा मत करना, वरना आपके परिवार के लोग मेरे से नाराज हो जाएँगे। और आपकी अगर मार्क्स शीट जिस दिन आएगी, तो उनको आप नहीं दिखाई दोगे, मैं ही दिखाई दूँगा। तो ऐसा मत करना। और इसलिये मैं तो कहूँगा ‘P for Prepared and P for Play’, जो खेले वो खिले, ‘the person who plays, shines’ मन, बुद्धि, शरीर उसको सचेत रखने के लिये ये एक बहुत बड़ी औषधि है। खैर, युवा दोस्तो, आप परीक्षा की तैयारी में हैं और मैं आपको मन की बातों में जकड़ कर बैठा हूँ। हो सकता है ये आज की मेरी बातें भी तो आपके लिये आराम का तो काम करेंगी ही करेंगी। लेकिन मैं साथ साथ ये भी कहूँगा। मैंने जो बातें बताई हैं उसको भी बोझ मत बनने दीजिए। हो सकता है तो करिए, नहीं हो सकता तो मत कीजिए, वरना ये भी एक बोझ बन जाएगा। तो जैसे मैं आपके परिवार के माता पिता को बोझ न बनने देने की सलाह-देता हूँ, वो मुझ पर भी लागू होती हैं। अपने संकल्प को याद करते हुए, अपने पर विश्वास रखते हुए, परीक्षा के लिये जाइए, मेरी बहुत शुभकामनायें हैं । हर कसौटी से पार उतरने के लिये कसौटी को उत्सव बना दीजिए। फिर कभी कसौटी ही नहीं रहेगी। इस मंत्र को ले करके आगे बढ़ें।

प्यारे देशवासियो, 1 फरवरी 2017 इंडियन कोस्ट गार्ड के 40 वर्ष पूरे हो रहे हैं। इस अवसर पर मैं कोस्ट गार्ड के सभी अधिकारियों एवं जवानों को राष्ट्र के प्रति उनकी सेवा के लिये धन्यवाद देता हूँ। ये गर्व की बात है कि कोस्ट गार्ड देश में निर्मित अपने सभी 126 जहाज और 62 एयरक्राफ्ट के साथ विश्व के चार सबसे बड़े कोस्ट गार्ड के बीच अपना स्थान बनाए हुए है। कोस्ट गार्ड का मंत्र है वयम् रक्षामः। अपने इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करते हुए, देश की समुद्री सीमाओं और समुद्री परिवेश को सुरक्षित करने के लिये कोस्ट गार्ड के जवान प्रतिकूल परिस्थितियों में भी दिन त्पर रहते हैं। पिछले वर्षरात त-कोस्ट गार्ड के लोगों ने अपनी जिम्मेदारियों के साथ बड़ा अभियान हमारे देश के समुद्र तट को स्वच्छ करने के लिए चलाया। तटस्थ सुरक्षा के साथ-साथ तटस्थ साफ इसकी भी चिन्ता की उन्होने, ये सचमुच में बधाई के पात्र हैं। और बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि हमारे देश में कोस्ट गार्ड में सिर्फ पुरुष नहीं हैं, महिलायें भी कन्धे से कन्धा मिला कर समान रूप से अपनी जिम्मेदारियाँ निभा रहीं हैं और सफलतापूर्वक निभा रहीं हैं। कोस्ट गार्ड की हमारी महिला अफसर पायलट हों, पर्यवेक्षक के रूप में काम हों, इतना ही नहीं, हवरक्राफ्ट की कमान भी संभालती

हैं। भारत के तटीय सुरक्षा में लगे हुए और सामुद्रिक सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय आज विश्व का बना हुआ है तब मैं इंडियन कोस्ट गार्ड के 40वीं वर्षगांठ पर उनको बहुतई देता हूँ।बहुत बधा

1 फरवरी को वसन्त पंचमी का त्यौहार है वसन्त ये सर्वश्रेष्ठ ऋतु के रूप में उसको स्वीकृति मिली हुई है। वसन्त ये ऋतुओं का राजा है। हमारे देश में वसन्त पंचमी सरस्वती पूजा का एक बहुत बड़ा त्योहार होता है। विद्या की आराधना का अवसर माना जाता है। इतना ही नहीं वीरों के लिए प्रेरणा का भी पर्व होता है। 'मेरा रंग दे बसंती चोला' ये वही तो प्रेरणा है। इस वसन्त पंचमी के पावन त्योहार पर मेरी देशवासियों को बहुत बहुत शुभकामनायें। धन्यवाद

5.7 एपिसोड- 24 फरवरी 2019

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार, मन की बात शुरू करते हुए आज मन भरा हुआ है। 10 दिन पूर्व भारत माता ने अपने वीर सपूतों को खो दिया। इन पराक्रमी वीरों ने हम सवा सौ करोड़ भारतीयों की रक्षा में खुद को खपा दिया। देशवासी चैन की नींद सो सकें इसलिए इन हमारे वीर सपूतों ने रात दिन एक करके रखा था। पुलवामाआतंकी हमले में वीर जवानों की शहादत के बाद देशभर में लोगों को और लोगों के मन में आघात और आक्रोश है। शहीदों और उनके परिवारों के प्रति चारों तरफ संवेदनाएँ उमड़ पड़ी हैं। इस आतंकी हिंसा के विरोध में जो आवेग आपके और मेरे मन में है वही भाव हर देशवासी के अन्तर्मन में है और मानवता में विश्वास करने वाले विश्व के भी मानवतावादी समुदायों में है। भारत माता की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर करने वाले देश के सभी वीर सपूतों को मैं नमन करता हूँ। यह शहादत आतंक को समूल नष्ट करने के लिए हमें निरन्तर प्रेरित करेगी हमारे संकल्प को और मजबूत करेगी। देश के सामने आयी इस चुनौती का सामना हम सबको जातिवाद, सम्प्रदायवाद, क्षेत्रवाद और बाकि सभी मतभेदों को भुलाकर करना है ताकि आतंक के खिलाफ हमारे कदम पहले से कहीं अधिक दृढ़ हों, सशक्त हों और निर्णायक हों। हमारे सशस्त्र बल हमेशा ही अद्वितीय साहस और पराक्रम का परिचय देते आये हैं। शान्ति की स्थापना के लिए जहाँ उन्होंने अद्भुत क्षमता दिखायी है वही हमलावरों को भी उन्हीं की भाषा में जबाव देने का काम किया है। आपने देखा होगा कि हमले के 100 घण्टे के भीतर ही किस प्रकार से कदम उठाये गये हैं। सेना ने आतंकवादियों और उनके मददगारों के समूल नाश का संकल्प ले लिया है। वीर सैनिकों की शहादत के बाद

मीडिया के माध्यम से उनके परिजनों की जो प्रेरणादायी बातें सामने आयी हैं उसने पूरे देश के हौंसले को और बल दिया है। बिहार के भागलपुर के शहीद रतन ठाकुर के पिता रामनिरंजन जी ने दुःख की इस घड़ी में भी जिस जज्बे का परिचय दिया है, वह हम सबको प्रेरित करता है। उन्होंने कहा कि वे अपने दूसरे बेटे को भी दुश्मनों से लड़ने के लिए भेजेंगे और जरुरत पड़ी तो खुद भी लड़ने जाएँगे। ओड़िशा के जगतसिंह पुर के शहीद प्रसन्ना साहू की पत्नी मीना जी के अदम्य साहस को पूरा देश सलाम कर रहा है। उन्होंने अपने इकलौते बेटे को भी सीआरपीएफ जॉइन कराने का प्रण लिया है। जब तिरंगे में लिपटे शहीद विजय शोरेन का शव झारखण्ड के गुमला पहुँचा तो मासूम बेटे ने यही कहा कि मैं भी फौज में जाऊँगा। इस मासूम का जज्बा आज भारतवर्ष के बच्चे बच्चे की भावना को व्यक्त करता है। ऐसी ही भावनाएँ हमारे वीर, पराक्रमी शहीदों के घर घर में देखने को मिल रही हैं। हमारा एक भी वीर शहीद इसमें अपवाद नहीं है, उनका परिवार अपवाद नहीं है। चाहे वो देवरिया के शहीद विजय मौर्य का परिवार हो, कांगड़ा के शहीद तिलकराज के माता पिता हों या फिर कोटा के शहीद हेमराज का छः साल का बेटा हो। शहीदों के हर परिवार की कहानी प्रेरणा से भरी हुई हैं। मैं युवा पीढ़ी से अनुरोध करूँगा कि वो इन परिवारों ने जो जज्बा दिखाया है जो भावना दिखायी है उसको जानें, समझने का प्रयास करें। देशभक्ति क्या होती है, त्याग तपस्या क्या होती है? उसके लिए हमें इतिहास की पुरानी घटनाओं की ओर जाने की जरुरत नहीं पड़ेगी। हमारी आँखों के सामने ये जीते जागते उदाहरण हैं और यही भविष्य के लिए प्रेरणा का कारण हैं। उज्ज्वल भारत के

मेरे प्यारे देशवासियो, आजादी के इतने लम्बे समय तक हम सबको जिस वार मेमोरियल का इन्तजार था। वह अब खत्म होने जा रहा है। इसके बारे में देशवासियों की जिज्ञासा, उत्सुकता बहुत स्वाभाविक है। Narendra Modi App पर उडुपी कर्नाटक के श्री ओंकार शेट्टी जी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक तैयार होने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की है। मुझे आश्चर्य भी होता था और पीड़ा भी कि भारत में कोई राष्ट्रीय युद्ध स्मारक नहीं था। एक ऐसा मेमोरियल जहाँ राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले वीर जवानों की शौर्य गाथाओं को संजो कर रखा जा सके। मैंने निश्चय किया कि देश में एक ऐसा स्मारक अवश्य होना चाहिये। हमने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के निर्माण का निर्णय लिया और मुझे खुशी है कि यह स्मारक इतने कम समय में

बनकर तैयार हो चुका है। यानि 25 फरवरी को हम करोड़ों देशवासी इस राष्ट्रीय सैनिक स्मारक को हमारी सेना को सुपुर्द करेंगे। देश अपना कर्ज चुकाने का एक छोटा सा प्रयास करेगा।

दिल्ली के दिल यानि वो जगह जहाँ पर इण्डिया गेट और अमर जवान ज्योति मौजूद है बस उसके ठीक नजदीक में ये एक नया स्मारक बनाया गया है। मुझे विश्वास है ये देशवासियों के लिए राष्ट्रीय सैनिक स्मारक जाना किसी तीर्थ स्थल जाने के समान होगा। राष्ट्रीय सैनिक स्मारक स्वतंत्रता के बाद सर्वोच्च बलिदान देने वाले जवानों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का प्रतीक है। स्मारक का डिजाइन हमारे अमर सैनिकों के अदम्य साहस को प्रदर्शित करता है। राष्ट्रीय सैनिक स्मारक का अवधारणा चार चक्रों पर केन्द्रित है जहाँ एक सैनिक के जन्म से लेकर शहादत तक की यात्रा का चित्रण है। अमर चक्र की लौ शहीद सैनिक की अमरता का प्रतीक है। दूसरा चक्र वीरता चक्र का है जो सैनिकों के साहस और बहादुरी को प्रदर्शित करता है। यह एक ऐसी वीथिका है जहाँ दीवारों पर सैनिकों की बहादुरी के कारनामों को उकेरा गया है। इसके बाद त्याग चक्र है यह चक्र सैनिकों के बलिदान को प्रदर्शित करता है। इसमें देश के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले सैनिकों के नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखे गए हैं। इसके बाद रक्षक चक्र सुरक्षा को प्रदर्शित करता है। इस चक्र में घने पेड़ों की पंक्ति है। ये पेड़ सैनिकों के प्रतीक हैं और देश के नागरिकों को यह विश्वास दिलाते हुए सन्देश दे रहे हैं कि हर पहर सैनिक सीमा पर तैनात है और देशवासी सुरक्षित है। कुल मिला कर देखें तो राष्ट्रीय सैनिक स्मारक की पहचान एक ऐसे स्थान के रूप में बनेगी जहाँ लोग देश के महान शहीदों के बारे में जानकारी लेने अपनी कृतज्ञता प्रकट करने उन पर शोध करने के उद्देश्य से आयेंगे। यहाँ उन बलिदानियों की कहानी है जिन्होंने देश के लिए अपने प्राण नयौछावर कर दिए हैं ताकि हम जीवित रह सकें ताकि देश सुरक्षित रहे और विकास कर सके। देश के विकास में हमारे सशस्त्र बलों पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के महान योगदान को शब्दों में अभिव्यक्त करना संभव नहीं है। पिछले साल अक्टूबर में मुझे राष्ट्रीय पुलिस स्मारक को भी देश को समर्पित करने का सौभाग्य मिला था। वह भी हमारे उस विचार का प्रतिबिम्ब था जिसके तहत हम मानते हैं कि देश को उन पुरुष और महिला पुलिसकर्मियों के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए जो अनवरत हमारी सुरक्षा में जुटे रहते हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप राष्ट्रीय सैनिक स्मारक और राष्ट्रीय पुलिस स्मारक को देखने जरुर जायेंगे। आप जब

भी जाएँ वहाँ ली गयी अपनी तस्वीरों को सोशल मीडिया पर अवश्य शेयर करें ताकि दूसरें लोगों को भी इससे प्रेरणा मिले और वे भी इस पवित्र स्थल, इस स्मारक को देखने के लिए उत्सुक हों।

मेरे प्यारे देशवासियो 'मन की बात' के लिए आपके हजारों पत्र और टिप्पणी मुझे अलग अलग माध्यमों से पढ़ने को मिलते रहते हैं। इस बार जब मैं आपके टिप्पणी पढ़ रहा था तब मुझे आतिश मुखोपाध्याय जी की एक बहुत ही रोचक टिप्पणी मेरे ध्यान में आई। उन्होंने लिखा है कि वर्ष 1900 में 3 मार्च को अंग्रेजों ने बिरसा मुंडा को गिरफ्तार किया था तब उनकी उम्र सिर्फ 25 साल की थी ये संयोग ही है कि 3 मार्च को ही जमशेद जी टाटा की जयन्ती भी है। और वे आगे लिखते हैं ये दोनों व्यक्तित्व पूरी तरह से दो अलग-अलग की विरासतपारिवारिक पृष्ठभूमि से हैं जिन्होंने झारखण्ड और इतिहास को समृद्ध किया। 'मन की बात' में बिरसा मुंडा और जमशेद जी टाटा को श्रद्धांजलि देने का एक प्रकार से झारखण्ड के गौरवशाली इतिहास और विरासत को नमन करने जैसा है। आतिश जी मैं आपसे सहमत हूँ। इन दो महान विभूतियों ने झारखण्ड का नहीं पूरे देश का नाम बढ़ाया है। पूरा देश उनके योगदान के लिए कृतज्ञ है। आज अगर हमारे नौजवानों को मार्गदर्शन के लिए किसी प्रेरणादायी व्यक्तित्व की जरुरत है तो वह है भगवान बिरसा मुंडा। अंग्रेजों ने छिप कर बड़ी ही चालाकी से उन्हें उस वक्त पकड़ा था जब वे सो रहे थे। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने ऐसी कायरतापूर्ण कार्यवाही का सहारा क्यों लिया? क्योंकि इतना बड़ा साम्राज्य खड़ा करने वाले अंग्रेज भी उनसे भयभीत रहते थे। भगवान बिरसा मुंडा ने सिर्फ अपने पारम्परिक तीरकमान से ही बन्दूकों और तोपों से लैस अंग्रेजी शासन को हिलाकर रख दिया था। दरअसल जब लोगों को एक प्रेरणादायी नेतृत्व मिलता है तो फिर हथियारों की शक्ति पर लोगों की सामूहिक इच्छाशक्ति भारी पड़ती है। भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों से ना केवल राजनीतिक आजादी के लिए संघर्ष किया बल्कि आदिवासियों के सामाजिक और आर्थिक अधिकारों के लिए भी लड़ाई लड़ी। अपने छोटे से जीवन में उन्होंने ये सब कर दिखाया। वंचितों और शोषितों के अन्धेरे से भरे जीवन में सूरज की तरह चमक बिखेरी। भगवान बिरसा मुंडा ने 25 वर्ष की अल्प आयु में ही अपना बलिदान दे दिया। बिरसा मुंडा जैसे भारत माँ के सपूत देश के हर भाग में हुए है। शायद हिन्दुस्तान का कोई कोना ऐसा होगा कि सदियों तक चली हुई आजादी की इस जंग में किसी ने योगदान ना दिया हो। लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इनके त्याग, शौर्य और बलिदान की कहानियाँ नई पीढ़ी तक पहुँची ही

नहीं। अगर भगवान बिरसा मुंडा जैसे व्यक्तित्व ने हमें अपने अस्तित्व का बोध कराया तो जमशेद जी टाटा जैसी शख्सियत ने देश को बड़े बड़े संस्थान दिए। जमशेदजी टाटा सही मायने में एक दूर दृष्टा थे जिन्होंने ना केवल भारत के भविष्य को देखा बल्कि उसकी मजबूत नींव भी रखी। वे भलीभाँति जानते थे कि भारत को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग का केंद्र बनाना भविष्य के लिए आवश्यक है। ये उनका ही दूरदर्शिता था जिसके परिणामस्वरूप टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स की स्थापना हुई जिसे अब इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स कहा जाता है। यही नहीं उन्होंने टाटा स्टील जैसे कई विश्वस्तरीय संस्थानों को और उद्योगों की भी स्थापना की। जमशेद जी टाटा और स्वामी विवेकानन्द जी की मुलाकात अमेरिकी यात्रा के दौरान शिप में हुई थी। तब उन दोनों की चर्चा में एक महत्वपूर्ण विषय भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रचार प्रसार से जुड़ा हुआ था। कहते है इसी चर्चा से इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स की नींव पड़ी।

मेरे प्यारे देशवासियो हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी भाई देसाई का जन्म 29 फरवरी को हुआ था। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि यह दिन 4 वर्ष में एक बार ही आता है। सहज शान्तिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी मोरारजी भाई देश के सबसे अनुशासित नेताओं में से थे। स्वतंत्र भारत में संसद में सबसे अधिक बजट पेश करने का रिकॉर्ड मोरारजी भाई देसाई के ही नाम है। मोरारजी देसाई ने उस कठिन समय में भारत का कुशल नेतृत्व किया। जब देश के लोकतान्त्रिक ताने बाने को खतरा था। इसके लिए हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी उनकी आभारी रहेंगी। मोरारजी भाई देसाई ने लोकतंत्र की रक्षा के लिए आपातकाल के खिलाफ आन्दोलन में खुद को झोंक दिया। इसके लिए उन्हें वृद्धावस्था में भी भारी कीमत चुकानी पड़ी। उस समय की सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया। लेकिन 1977 में जब जनता पार्टी चुनाव जीती तो वे देश के प्रधानमंत्री बने। उनके कार्यकाल के दौरान ही 44वाँ संविधान संशोधन लाया गया। यह महत्वपूर्ण इसलिए है क्योंकि आपातकाल के दौरान जो 42वाँ संशोधन लाया गया था जिसमें सुप्रीम कोर्ट की शक्तियों को कम करने और दूसरे ऐसे प्रावधान थे जो हमारे लोकतान्त्रिक मूल्यों का हनन करते थे। उनको वापिस किया गया। जैसे 44वें संशोधन के जरिये संसद और विधानसभाओं की कार्यवाही का समाचार पत्रों में प्रकाशन का प्रावधान किया गया। इसी के तहत सुप्रीमकोर्ट की कुछ शक्तियों को बहाल किया गया। इसी संशोधन में यह भी प्रावधान किया गया कि संविधान के अनुछेद 20 और 21 के तहत मिले मौलिक अधिकारों का

आपातकाल के दौरान भी हनन नहीं किया जा सकता है। पहली बार ऐसी व्यवस्था की गई कि मंत्रिमण्डल की लिखित अनुशंसा पर ही राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा करेंगे साथ ही यह भी तय किया गया कि आपातकाल की अवधि को एक बार में छः महीने से अधिक नहीं बढ़ाया जा सकता है। इस तरह से मोरारजी भाई ने यह सुनिश्चित किया कि आपातकाल लागू कर 1975 में जिस प्रकार लोकतंत्र की हत्या की गई थी। वह भविष्य में फिर दोहराया ना जा सके। भारतीय लोकतंत्र के महात्म्य को बनाए रखने में उनके अमूल्य योगदान को आने वाली पीढ़ियाँ हमेशा याद रखेंगी। एक बार फिर ऐसे महान नेता को मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो हर साल की तरह इस बार भी पद्म अवार्ड को लेकर लोगों में बड़ी उत्सुकता थी। आज हम एक न्यू इण्डिया की ओर अग्रसर हैं। इसमें हम उन लोगों का सम्मान करना चाहते हैं जो मूलभूत स्तर पर अपना काम निष्काम भाव से कर रहे हैं। अपने परिश्रम के बल पर अलग अलग तरीके से दूसरों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। दरअसल वे सच्चे कर्मयोगी हैं जो जनसेवा, समाजसेवा और इन सबसे से बढ़कर राष्ट्रसेवा में निःस्वार्थ जुटे रहते हैं। आपने देखा होगा जब पद्म अवार्ड की घोषणा होती है तो लोग पूछते हैं कि ये कौन है? एक तरह से इसे मैं बहुत बड़ी सफलता मानता हूँ क्योंकि ये वो लोग हैं जो टी.वी. मैगज़ीन या अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर नहीं हैं। ये चका चौंध की दुनिया से दूर हैं। लेकिन ये ऐसे लोग हैं जो अपने नाम की परवाह नहीं करते बस जमीनी स्तर पर काम करने में विश्वास रखते हैं। ‘योगः कर्मसु कौशलम्’ गीता के सन्देश को वो एक प्रकार से जीते हैं। मैं ऐसे ही कुछ लोगों के बारे में आपको बताना चाहता हूँ। ओडिशा के दैतारी नायक के बारे में आपने जरुर सुना होगा उन्हें ‘Canal Man of the Odisha’ यूँ ही नहीं कहा जाताहै। दैतारी नायक ने अपने गाँव में अपने हाथों से पहाड़ काटकर तीन किलोमीटर तक नहर का रास्ता बना दिया। अपने परिश्रम से सिंचाई और पानी की समस्या हमेशा के लिए खत्म कर दी। गुजरात के अब्दुल गफूर खत्री जी को ही लीजिए। उन्होंने कच्छ के पारम्परिक रोगन पेंटिंग को पुनर्जीवित करने का अद्भुत कार्य किया। वे इस दुर्लभ चित्रकारी को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का बड़ा कार्य कर रहे हैं। अब्दुल गफूर द्वारा बनाई गई ‘Tree of Life’ कलाकृति को ही मैंने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा को उपहार में दिया था। पद्म पुरस्कार पाने वालों में मराठवाड़ा के शब्बीर सैय्यद गौमाता के सेवक के

रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने जिस प्रकार अपना पूरा जीवन गौमाता की सेवा में खपा दिया ये अपने आप में अनूठा है। मदुरै चिन्ना पिल्लई वही शख्सियत हैं जिन्होंने सबसे पहले तमिलनाडु में कलन्जियम आन्दोलन के जरिए पीड़ितों और शोषितों को सशक्त करने का प्रयास किया। साथ ही समुदाय आधारित लघु वित्तीय व्यवस्था की शुरुआत की। अमेरिका की Tao Porchon Lynch के बारे में सुनकर आप सुखद आश्चर्य से भर जाएँगे। Lynch आज योग की जीती जागती संस्था बन गई है। सौ वर्ष की उम्र में भी वे दुनिया भर के लोगों को योग का प्रशिक्षण दे रही हैं और अब तक डेढ़ हजार लोगों को योग शिक्षक बना चुकी हैं। झारखण्ड में 'Lady Tarzan' के नाम से विख्यात जमुना टुडू ने टिम्बर माफिया और नक्सलियों से लोहा लेने का साहसिक काम किया उन्होंने न केवल 50 हेक्टेयर जंगल को उजड़ने से बचाया बल्कि दस हजार महिलाओं को एकजुट कर पेड़ों और वन्यजीवों की सुरक्षा के लिए प्रेरित किया। ये जमुना जी के परिश्रम का ही प्रताप है कि आज गाँव वाले हर बच्चे के जन्म पर 18 पेड़ और लड़की की शादी पर 10 पेड़ लगाते हैं। गुजरात की मुक्ताबेन पंकज कुमार दगली की कहानी आपको प्रेरणा से भर देगी खुद दिव्यांग होते हुए भी उन्होंने दिव्यांग महिलाओं के उत्थान के लिए जो कार्य किए ऐसा उदाहरण मिलना मुश्किल है। चक्षु महिला सेवा कुन्ज नाम की संस्था की स्थापना कर वे नेत्रहीन बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने के पुनीत कार्य में जुटी हैं। बिहार के मुजफ्फरपुर की किसान चाची यानि राजकुमारी देवी की कहानी बहुत ही प्रेरक है। महिला सशक्तिकरण और खेती को लाभकारी बनाने की दिशा में उन्होंने एक मिसाल पेश की है। किसान चाची ने अपने इलाके की 300 महिलाओं को 'Self Help Group' से जोड़ा और आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने गाँव की महिलाओं को खेती के साथ ही रोजगार के अन्य साधनों का प्रशिक्षण दिया। खास बात यह है कि उन्होंने खेती के साथ प्रौद्योगिकी को जोड़ने का काम किया और मेरे देशवासियों शायद पहली बार ऐसा हुआ है कि इस वर्ष जो पद्म पुरस्कार दिए गए उसमें 12 किसानों को पद्म पुरस्कार मिले हैं। आमतौर पर कृषि जगत से जुड़े हुए बहुत ही कम लोग और प्रत्यक्ष किसानी करने वाले बहुत ही कम लोग पद्मश्री की सूची में आये हैं। ये अपने आप में ये बदलते हुए हिन्दुस्तान की जीती जागती तस्वीर है।

मेरे प्यारे देशवासियो मैं आज आप सब के साथ एक ऐसे दिल को छूने वाले अनुभव के बारे में बात करना चाहता हूँ जो पिछले कुछ दिनों से मैं महसूस कर रहा हूँ। आजकल देश में जहाँ भी जा रहा हूँ। मेरा

प्रयास रहता है कि आयुष्मान भारत की योजना PM-JAY यानि PM जन आरोग्य योजना के कुछ लाभार्थियों से मिलूँ। कुछ लोगों से बातचीत करने का अवसर मिला है। अकेली माँ उसके छोटे बच्चे पैसों के अभाव में इलाज नहीं करवा पा रही थी। इस योजना से उसका इलाज हुआ और वो स्वस्थ हो गई। घर का मुखिया, मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार की देखभाल करने वाला दुर्घटना का शिकार हो गया। काम नहीं कर पा रहा था इस योजना से उसको लाभ मिला और वो पुनः स्वस्थ हुआ नई जिन्दगी जीने लगा।

भाइयों बहनों पिछले पाँच महीनों में लगभग बारह लाख गरीब परिवार इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। मैंने पाया कि गरीब के जीवन में इससे कितना बड़ा परिवर्तन आ रहा है। आप सब भी यदि किसी भी ऐसे गरीब व्यक्ति को जानते है जो पैसों के अभाव में इलाज नहीं करा पा रहा हो। तो उसे इस योजना के बारे में अवश्य बताइये। यह योजना हर ऐसे गरीब व्यक्ति के लिए ही है।

कुछ दिन पहले दिल्ली में परीक्षा पे चर्चा का एक बहुत बड़ा आयोजन टाउन हाल के सामने में हुआ। इस टाउन हाल कार्यक्रम में मुझे प्रौद्योगिकी के माध्यम से देश विदेश के करोड़ों विद्यार्थी के साथ उनके अभिभावकों के साथ टीचर के साथ बात करने का अवसर मिला। 'परीक्षा पे चर्चा' इसकी एक विशेषता यह रही कि परीक्षा से जुड़ें विभिन्न विषयों पर खुल कर बातचीत हुई। कई ऐसे पहलू सामने आए जो निश्चित रूप से विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हो सकते हैं। सभी विद्यार्थी, उनके शिक्षक, माता पिता यूट्यूब पर इस पूरे कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग देख सकते हैं तो आने वाली परीक्षा के लिए मेरे सभी एक्जाम वर्रिओर्स को ढ़ेरो शुभकामनाएँ।

मेरे प्यारे देशवासियो भारत की बात हो और त्यौहार की बात न हो। ऐसा हो ही नहीं सकता। शायद ही हमारे देश में कोई दिन ऐसा नहीं होता है जिसका महत्व ही न हो जिसका कोई त्यौहार न हो। क्योंकि हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति की ये विरासत हमारे पास है। कुछ दिन बाद महाशिवरात्रि का पर्व आने वाला है और इस बार तो शिवरात्रि सोमवार को है और जब शिवरात्रि सोमवार को हो तो उसका एक विशेष महत्व हमारे मन मंदिर में छा जाता है। इस शिवरात्रि के पावन पर्व पर मेरी आप सब को बहुत- बहुत शुभकामनाएँ हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो कुछ दिन पहले मैं काशी गया था। वहाँ मुझे दिव्यांग भाई बहनों के साथ समय बिताने का मौका मिला। उनसे कई विषयों पर चर्चा हुई और उनका आत्मविश्वास वाकई प्रभावित करने वाला

था। बातचीत के दौरान उनमें से एक प्रज्ञाचक्षु नौजवान से जब मैं बात कर रहा था तो उसने कहा मैं तो स्टेज आर्टिस्ट हूँ। मैं मनोरंजन के कार्यक्रमों में मिमिक्रि करता हूँ तो मैंने ऐसे ही पूछ लिया आप किसकी मिमिक्रि करते हो? तो उसने बताया कि मैं प्रधानमंत्री की मिमिक्रि करता हूँ। तो मैंने उनसे कहा जरा कर के दिखाइये और मेरे लिए बड़ा सुखद आश्चर्य था तो उन्होंने ‘मन की बात’ में जिस प्रकार से मैं बात करता हूँ उसी की पूरी मिमिक्रि की और ‘मन की बात’ की ही मिमिक्रि की। मुझे ये सुनकर बहुत अच्छा लगा कि लोग न सिर्फ ‘मन की बात’ सुनते हैं बल्कि उसे कई अवसरों पर याद भी करते हैं। मैं सचमुच में उस दिव्यांग नौजवान की शक्ति से बहुत ही प्रभावित हुआ।

मेरे प्यारे देशवासियो ‘मन की बात’ कार्यक्रम के माध्यम से आप सब से जुड़ना मेरे लिए एक अनोखा अनुभव रहा है। रेडियो के माध्यम से मैं एक तरह से करोड़ों परिवारों से हर महीने रूबरू होता हूँ। कई बार तो आप सब से बात करते आपकी चिठ्ठियाँ पढ़ते या आपके फोन पर भेजे गए विचार सुनते मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आपने मुझे अपने परिवार का ही हिस्सा मान लिया है। यह मेरे लिए एक बहुत ही सुखद अनुभूति रही है।

दोस्तों चुनाव लोकतंत्र का सबसे बड़ा उत्सव होता है। अगले दो महीने हम सभी चुनाव की गहमा गहमी में व्यस्त होगें। मैं स्वयं भी इस चुनाव में एक प्रत्याशी रहूँगा। स्वस्थ लोक तांत्रिक परम्परा का सम्मान करते हुए अगली ‘मन की बात’ मई महीने के आखरी रविवार को होगी। यानि कि मार्च महीना अप्रैल महीना और पूरा मई महीना ये तीन महीने की सारी हमारी जो भावनाएँ हैं उन सबको मैं चुनाव के बाद एक नए विश्वास के साथ आपके आशीर्वाद की ताकत के साथ फिर एक बार ‘मन की बात’ के माध्यम से हमारी बातचीत के सिलसिले का आरम्भ करूँगा और सालों तक आपसे ‘मन की बात’ करता रहूँगा। फिर एक बार आप सबका हृदय से बहुत बहुत धन्यवाद करता हूँ।

षष्ठ अध्याय

शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता



अध्याय : षष्ठ

शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

6.1 शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन का विषय **"माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की शैक्षिक विचार धारा का अध्ययन"** यह इसलिए समीचीन प्रतीत होता है। प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचारों को वर्तमान शिक्षा के परिदृश्य में विश्लेषित किया जाए। इसलिए शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्याय में जहाँ एक ओर उनकी शैक्षिक विचारधारा को संक्षिप्त रूप से वर्णित किया है वही दूसरी ओर वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में उनकी उपयोगिता एवं सारगर्भिता के रूप में विचारों की प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रधानमंत्री मोदी का उपरोक्त व्यक्तव्य शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित कर रहा है। शिक्षा के माध्यम से हमें ज्ञान तो मिल रहा है परन्तु उस ज्ञानधारा का ठीक प्रकार से उपयोग करना न सीख पाना, वर्तमान शिक्षा प्रणाली की एक बहुत बड़ी कमजोरी है। वर्तमान में शिक्षा प्राप्त करने का एकमात्र उपयोग शिक्षा स्तर सम्बन्धी प्रवीणता का प्रमाण पत्र प्राप्त करना रह गया है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति ज्ञान तो प्राप्त कर रहा है, परन्तु समय आने पर उस ज्ञान का उपयोग करने में वह अपने आप को सक्षम नहीं बना पाता है। ज्ञान पाकर व्यक्ति में वास्तव में सामर्थ्य एवं शक्ति का विकास होना चाहिए परन्तु ऐसा नहीं हो पा रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इसे एक दृष्टांत के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है। वे कहते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा पाकर हमारी हालत उस कबूतर की भाँति हो गई है जो पेड़ पर बैठा हुआ है और नीचे बिल्ली को देख अपना होश हवास खो देता है। अपने पंखों की शक्ति को भूलकर वह स्वयं घबराकर उस बिल्ली के समक्ष गिर जाता है। प्रधानमंत्री मोदी कहते हैं कि हमारी आत्मा में अनन्त शक्ति है। आज उसे प्रकट करने और सही दिशा देने की अत्यन्त आवश्यकता है। आज हम ज्ञान को महत्व नहीं दे रहे बल्कि जो ज्ञान द्वारा जाना जाता है उसे ज्ञेय पदार्थों को महत्व दे रहे है। ऐसे में उनका मानना है कि हम मूल स्रोतों से जुड़े और

अपनी संज्ञानात्मक प्रवृत्ति को समृद्ध करें। साथ ही अपने आपको पहचाने और आवश्यकता के अनुसार क्रिया करने वाले बने।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षा को शब्द ज्ञान या पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा है। उनका मानना है की किताबों की सूचनाएँ विद्यार्थी को एक दिशा तो दे सकती है पर उनसे प्राप्त सूचनाओं को ही अन्तिम सत्य मानकर सीमित नहीं रहा जा सकता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी किताबों में इतने डूब गए है कि अनुभव करने का समय बच्चे से लेकर पीएचडी तक के शोध छात्र और यहाँ तक की अध्यापकों के पास भी नहीं होता है । वर्तमान में इण्टरनेट व ई लर्निंग के माध्यम से विद्यार्थी बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त कर रहे है परन्तु इस ज्ञान को अपने व्यावहारिक जीवन में उतारने में अपने आपको असमर्थ पा रहे है।

वर्तमान में शिक्षा मात्र सूचना संसाधन बनकर रह गई है। प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि हम पुस्तक से जुड़े लेकिन पुस्तकों तक सीमित न रहे हैं। जैसे मन्दिर में भगवान की मूर्ति से कुछ क्षण के लिए हम जुड़कर अगले ही क्षण उस मूर्ति से अलग होकर भगवदभाव से जुड़ जाते हैं। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते हैं तो दर्शन पत्थर के होते हैं, भगवान के नहीं। उनकी अवधारणा ने शिक्षा को भाषात्मक से भावात्मक बना दिया है, साथ ही शिक्षक के महत्व व उनके अनुभव को उन्होंने महत्वपूर्ण बना दिया है।

शिक्षा की संकल्पना स्पष्ट करते हुए कोठारी आयोग 1964 ने लिखा है कि "भारतीय परम्परा के अनुसार शिक्षा केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं है और न तो विचारों कि उदगमस्थली है न तो नागरिकता कि विचारधारा व आध्यात्मिक जीवन कि शिक्षा है, वह सत्य के मार्ग का अनुसरण तथा सदगुणों का प्रशिक्षण है। शिक्षा बालक का द्वितीय जन्म है। शिक्षा मुक्ति प्रदान करती है।" वर्तमान शिक्षा ने वसु कुटुंबकम की भावना को पीछे द्वापर युग में ढकेल दिया है। भौतिकवादी दर्शन से प्रभावित होकर व्यक्ति आज मानवता विहीन, संस्कार रहित, संवेदना शून्य, आत्मीयता से पृथक यंत्र बनकर रह गया है, जिसमें रिश्तों के प्रति कोई संवेदना, लगाव, दर्द नहीं है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 के अनुसार "वह शिक्षा कहलाने योग्य नहीं है जो व्यक्तियों को उनके साथियों के साथ गरिमा, सामंजस्य तथा कुशलता के साथ रहने के आवश्यक गुणों का विकास नहीं करती है।" वर्तमान की तकनीकी शिक्षा, आत्मशान्ति, आत्मसन्तुष्टि जैसे शब्दों को नहीं छु पा रही है। आज

के अर्थ प्रधानी व्यक्ति ने नौकरी को शिक्षा का एकमात्र लक्ष्य मान लिया है। अर्थ की ओर दृष्टिपात होने से मानव पतन की ओर जा रहा है। पैसा कमाने की धुन में वह अपना स्वास्थ्य खो रहा है और फिर स्वास्थ्य पाने के लिए पैसा। अन्ततः उसके पास न पैसा शेष रह पाता है और न ही स्वास्थ्य। अप्रत्यक्ष रूप से इसे शिक्षा की अवनति के रूप में लिया जा सकता है। शिक्षा की इस अवनति से प्रधानमंत्री मोदी जी व्यवस्थित है। उनका मत है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो कि मनुष्य को मानव बनाए उसके आन्तरिक चेतना में सदगुणों का विकास करें, जिससे वह असीम सन्तोष व शान्ति से भर जाए।

उनका मानना है कि शिक्षित वह नहीं है जो संवेदना शून्य व सूचनाओं का संचित कोश है, अपितु शिक्षित वह है जो मानवीय गुणों से समन्वित, संवेदना से युक्त व भावभारित है। इसलिए उन्होने शिक्षा को जीवन का एक पवित्र संस्कार माना है जो मानवतावादी सिद्धान्तों पर चलना सिखलाती है। उन्होने कर्तव्य, नैतिकता, उदारता, सेवा एवं समर्पण को शिक्षा के संस्कारों का परिवार माना है। प्रधानमंत्री मोदी ने शिक्षा में संस्कार व मानवतावाद को लाकर उसके बिखरे परिवार को जोड़ने का एक सार्थक प्रयास किया है। उनका यह प्रयास स्वार्थ की आँधी में प्रबल वेग से उड़ रहे मनुष्य को मानव बनाने का है। उनके सार्थक एवं सफल प्रयासों से भारत खोई संस्कृति व संस्कार को पुनर्जन्म देकर जगत गुरु बन सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षा को हित का सृजन और अहित विसर्जन के साथ जुड़ा है। हित सृजन शिक्षा का एक ऐसा सशक्त लक्षण है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास समाहित है। यह विकास हित अर्जन में ऐसे समाहित है। जैसे माँ के गर्भ में शिशु। इन विचारों से आत्मिक प्रेरणा प्राप्त कर व्यक्ति हित अहित का भेद कर इंसानियत से परिचय पाकर प्रत्येक परिस्थितियों में सामंजस्य करने में सक्षम बन सकता है। हित का सृजन नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों का प्रतीक है जिसे पाकर विद्यार्थी उच्चतम ऊँचाई व अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त कर सकता है।

वर्तमान की यह अवधारणा है कि शिक्षा व्यक्ति को जीवन निर्वाह के लिए तैयार करती है परन्तु प्रधानमंत्री मोदी जी का मानना है कि मनुष्य में विकास की अनन्त सम्भावना है इसलिए शिक्षा वास्तविक अर्थ में जीवन निर्माण न होकर जीवन निर्माण होना चाहिए। जिससे विद्यार्थी अपनी शक्ति को उच्चतम बिंदु तक विकसित कर शिक्षा के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

कोठारी आयोग ने शिक्षा को आध्यात्मिकता से जुड़कर सदगुणों का प्रशिक्षण बताकर नैतिक मूल्यों की बात की है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी शिक्षा के सन्दर्भ में किसी धर्म विशेष की बात न करके मानवतावादी सिद्धान्तों पर जोर दिया है। उनके यह विचार भारत जैसे धर्म निरपेक्ष राष्ट्र के लिए अति प्रासंगिक है। उनकी इस विचारधारा को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सन्निहित करने से शिक्षा के स्वरूप एवं प्रगति निश्चित रूप से प्रभावित होगी जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा की अवधारणा को परिमार्जित कर शिक्षा को पुनः जीवन प्रदान करेगा।

भारत अपनी शिक्षा, संस्कृति तथा दर्शन के लिए प्रसिद्ध है। भारतीय शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर यह संस्कृति सारे संसार का पथ प्रदर्शन करती है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य मुक्ति प्राप्त करना, मध्यकाल में धार्मिक प्रचार करना तथा ब्रिटिश काल में सरकारी नौकरी प्राप्त करना था। इस क्लर्क तैयार करने वाली शिक्षा ने बेकारी को जन्म दिया है। लोग पैतृक व्यवसाय से दूर होकर हाथ से कार्य करने में लज्जा महसूस करते करने लगे है। अंग्रेजों से विरासत में मिली यह शिक्षा पुस्तकीय एवं सैद्धांतिक ही रही है। इस शिक्षा पद्धति ने जीवन के लिए कोई नए द्वार तो नहीं खोले।

स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा की दिशा एवं दशा में बदलाव हेतु भारत सरकार ने भारत विभिन्न आयोगों की नियुक्ति की गयी। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 ने नेतृत्व के विकास पर बहुत अधिक बल दिया। इस उद्देश्य पर बल इसलिए दिया गया कि स्वतंत्र हुए हमें कुछ ही दिन हुए थे। प्रत्येक क्षेत्र में कुशल मार्गदर्शन की नितांत आवश्यकता थी। माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 तथा कोठारी आयोग 1964 द्वारा निर्दिष्ट शिक्षा के उद्देश्य समानता को लिए हुए है। कोठारी आयोग ने शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ा है तो मुदलियार आयोग ने व्यावसायिक क्षमता के विकास की बात की। कोठारी आयोग ने शिक्षा द्वारा सामाजिक राष्ट्रीय एकता को सिद्ध करना चाहा तो मुदालियर आयोग ने जन नागरिक भावना के विकास की सिफारिश की। दोनों एक दूसरे के पूरक है।

वर्तमान शिक्षा भौतिक प्रगति तो कर रही है, साथ ही भविष्य में अनेक आशाएँ भी की जा रही है जिनकी पूर्ति में कोई शंका प्रतीत होती है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को मानव बनाने में कहाँ तक सफल हुआ यह विचारणीय प्रश्न है। आज मनुष्य मानव नहीं बन पा रहा है और न ही उसे स्व का ज्ञान है। शिक्षा एक

जीवन दृष्टि है जो बालक सुप्त शक्तियों को जाग्रत कर उसे नई चेतना प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है। अपने आप को जाने बिना हम पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकते और आज की शिक्षा स्व ज्ञान के अलावा सभी ज्ञान का प्रशिक्षण दे रहीं हैं। इसीलिए आज व्यक्ति के पास सब कुछ होते हुये भी वह सन्तुष्टि नहीं मिल पा रही हैं जो उसे शिक्षा प्राप्त करके मिलनी चाहिए। सम्भवत: इसलिए प्रधानमंत्री मोदी जी ने अर्थ से परमार्थ, नश्वर से अविनश्वर तथा निर्वाह से निर्वाण को शिक्षा का उद्देश्य माना है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने मात्र बुद्धि के विकास को शिक्षा नहीं माना, बल्कि पूर्णता लाने के लिए गुण व संस्कार को शिक्षा में सम्मिलित किया है जो वर्तमान परिस्थिति में अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान सन्दर्भ में देखें तो लादेन, सद्दाम जैसे अनेक व्यक्तियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि उनकी प्राप्त शिक्षा में समीचीनता नहीं थी। उनके व्यक्तित्व का विकास सम्यक नहीं था। अत: महत्वपूर्ण है कि शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम के निर्धारण में सम्यकता लाना। यह सम्यक शब्द शिक्षा पद्धति एवं प्रणाली कि कसौटी एवं इनका पालन होना अनिवार्य होना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने अपने शिक्षा के उद्देश्यों के अन्तर्गत सबके लिये शिक्षा, लोगों का सर्वतोन्मुखी विकास, समाजवाद, धर्म निरपेक्षता तथा लोकतन्त्र का विकास, मानवशक्ति का विकास, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व, नैतिक एवं अचरणात्मक मूल्यों का विकास, जीवन पर्यन्त एवं सतत शिक्षा की व्यवस्था, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था, शैक्षिक अवसरों की समानता को सम्मिलित किया। विद्यार्थी विकारों पर विजय प्राप्त कर अपने वास्तविक स्वरूप को पा सकें। इस हेतु प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षा के आधार बताए है- स्वस्थ तन, स्वस्थ वचन, स्वस्थ मन, स्वस्थ वतन, स्वस्थ चेतन आदि। इन आधार में स्वस्थ तन को पहले रखें क्योंकि इसे स्वस्थ रखकर ही आगे बढ़ा जा सकता है। क्रोध आदि विकारों को दूर करने हेतु प्रधानमंत्री मोदी जी ने जो सूत्र बताए उसे अपनाकर विद्यार्थी उत्तम स्वास्थ्य और स्मरण शक्ति बढ़ा सकता है। उन्होंने अहंकार को विद्याध्ययन की सबसे बड़ी बाधा माना है। विनय, मन का प्रतिकार है, जो मन को स्वस्थ रखता है। अतः स्वस्थ मन के माध्यम से विद्यार्थियों में विनय गुण जो विद्यार्जन में सहायक है का प्रादुर्भाव किया जा सकता है। उन्होंने स्वस्थ तन मन के साथ-साथ वचन की सत्यता पर भी जोर दिया है मन, वचन, कार्य की सरलता अर्जित की है। शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी इसे

अपने जीवन में उतारकर कथनी करनी के भेद को दूर कर विश्वास वह ईमानदारी जैसे गुणों को ग्रहण कर सकता है।

भ्रष्टाचार का मूल कारण लोभ प्रवृत्ति है जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के विकास की सबसे बड़ी बाधा माना है। इसे उन्होने स्वस्थ धन के माध्यम से दूर कर यह समझाने का प्रयास किया है कि स्वस्थ धन क्या है? इसका अर्जन और उपयोग कैसे करना है? इसे अपनाकर ही विद्यार्थियों में सन्तोष गुण का प्रादुर्भाव किया जा सकता है क्योंकि इनका अभाव ही वर्तमान में हो रहे घोटालों को रोका जा सकता है। अनावश्यक वृत्तियों पर अंकुश व आचरण को परिमार्जित करना शिक्षा का एक अन्य मुख्य उद्देश्य है जिसका साधन संयम है यह पर्यावरण का सबसे बड़ा साधन है जिसकी शिक्षा स्वस्थ वन के माध्यम से लेकर विद्यार्थी अपनी इंद्रियों व मन को संयमित व अनुशासित कर अनावश्यक संग्रह का त्याग के साथ स्वस्थ वतन का निर्माण कर सकता है।

वर्तमान में शिक्षा की सार्थकता तभी है जब कि वह स्वस्थ चेतना को प्राप्त करे। प्रधानमंत्री मोदी जी का मानना है कि तप अकिंचन्य एवं ब्रह्मचर्य कि अवधारणा का पालन करके हम स्वस्थ चेतन का निर्माण कर सकते है। जिसके माध्यम से निश्चित रूप से देश को ऐसे विद्यार्थी मिलेंगे जिस पर सारा देश गर्व कर सकेगा क्योंकि इनके माध्यम से व्यक्ति को आध्यात्मिक संपूर्णता प्राप्त होगी जो प्रधानमंत्री मोदी जी कि शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

मुदालियार आयोग ने जहाँ एक ओर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्वाचन व्यक्तिवादी रूप में किया है वहीं कोठारी आयोग ने सामाजिक रूप में। इन आयोगों ने जहाँ ब्रह्म जीवन से जुड़े उद्देश्यों को शिक्षा में सम्मिलित करने की बात कहीं, वहीं प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षा में स्व ज्ञान को जोड़ा। जिस प्रकार अच्छाई से अज्ञान का समन्वय निरर्थक होगा उसी प्रकार स्व को जाने बिना शिक्षा का पूरा नहीं हो सकता है।

वर्तमान पाठयक्रम का अध्ययन करने से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि हमारे देश का पाठ्यक्रम अंग्रेजों ने प्रारम्भ किया था जो उनकी स्वार्थपूर्ति में सहायक था। वर्तमान पाठ्यक्रम उसी परम्परा की एक कड़ी है। यह पाठ्यक्रम श्रेष्ठ निर्माणकर्ता के निर्माण में सहायक न होकर बस्ते के बोझ व चिन्ता को बढ़ाने वाला प्रतीत होता है। वर्तमान पाठ्यक्रम परीक्षा प्रधान है जिसका उद्देश्य सीखने के बजाय रटकर परीक्षा

उत्तीर्ण कर नौकरी प्राप्त करना है। यह पाठ्यक्रम परीक्षा न तो विद्यार्थी के पिछले जीवन पर विचार करता है और न ही वर्तमान जीवन को स्पर्श करता है। ऐसे अव्यवहारिक पाठ्यक्रम से जहाँ एक ओर जीवन की समस्याओं को सुलझाने तथा उनका मुकाबला करने की शक्ति प्राप्त नहीं होती है, वहीं दूसरी ओर शिक्षा का माध्यम मात्र भाषा में न होने के कारण पाठ्यक्रम के प्रति छात्रों के ह्रदय में आत्मीयता के भाव नहीं आते है। इन सबका प्रत्यक्ष दोष यह है कि इसमें भारतीय संस्कृति का बोध न कराकर पाश्चात्य आदर्शों व विचारों को पोषित किया जा रहा है। जिसके कारण हम अपनी संस्कृति से पूर्णतया दूर होते जा रहे है। परिणामत: विद्यार्थी में एक अनुचित सा दृष्टिकोण विकसित हो गया है। वे शारीरिक श्रम को हेय और परम्परागत व्यवसाय स्वीकार नहीं करते है। उनकी दृष्टि में शिक्षित होने का अर्थ नौकरी से है उनका ध्यान पैकेज की ओर अधिक रहता है। स्व की ओर उनकी दृष्टि ही नहीं जाती है।

वर्तमान पाठ्यक्रम में ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों में सन्तुलन व सामंजस्य नहीं है। आज ज्ञानात्मक पक्ष के साथ भौतिक विषयों को बहुत अधिक महत्ता दी जा रही है। ये विषय मन व बुद्धि का परिष्कार तो करते है किन्तु ह्रदय को समुन्नत नहीं बनाते। ह्रदय का परिष्कार धर्म, अध्यात्म, प्रेम, सत्य, अहिंसा से होता है। जो व्यक्ति के भावात्मक एवं क्रियात्मक विकास को पुष्ट करते है। अत: आज आवश्यकता है पाठ्यक्रम में इन्हें उचित स्थान देने की इससे न केवल विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होगा वरन विश्व में सुख शान्ति एवं मानवता का विकास भी होगा। प्रधानमंत्री मोदी की मान्यता है कि पाठ्यक्रम में ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों में सन्तुलन अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा तभी अपनी सार्थकता सिद्ध कर पाएगी अन्यथा उपाधियाँ तो वितरित हो रही है और होती रहेंगी पर शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य कभी पूरा न हो पाएगा।

अंग्रेजों की दी इस नौकरी के लिए शिक्षा पाठ्यक्रम के दोष माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 ने अनुभव किए और कहा कि प्राय: सभी प्रान्तों की माध्यमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम अव्यवहारिक है। इसका बच्चों के जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह संकीर्ण एवं एकांगी है। यह बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक नहीं है क्योकि इसमें व्यावहारिकता का अभाव है और क्रियाओं को महत्व नहीं दिया गया। किशोरों की विभिन्न आवश्यताओं की पूर्ति करने में यह पाठ्यक्रम असमर्थ है। पाठ्यक्रम में अनेक विषयों को

सम्मिलित तो कर लिया गया परन्तु उन्हें उपयोगी नहीं बनाया गया और न ही इसमें तकनीकी और व्यावसायिक विषयों का समावेश किया गया। माध्यमिक शिक्षा 1952-53 ने शिक्षा के पाठ्यक्रम के दोषों को दूर करने के लिए अपने सुझाव में कहा कि विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम बनाया जाए जो छात्रों के जीवन को स्पर्श करें और उसके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायक बने। साथ ही पाठ्यक्रम में पर्याप्त भिन्नता और लचीलापन होना चाहिए जिससे कि वैयक्तिक विभिन्नताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जा सके तथा पाठ्यक्रम की रचना इस प्रकार की जाए कि विद्यार्थी केवल कार्य करना ही न सीखें अपितु अवकाश के समय का सदुपयोग करना भी सीखें। यह भी महत्वपूर्ण है कि पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में आपसी सम्बन्ध हो।

शिक्षा आयोग 1964 ने भी अनुभव किया और पाठ्यक्रम में अपेक्षित सुधार करने के लिए एक ओर जहाँ पाठ्यक्रम में प्राविधिक एवं व्यावसायिक विषयों के समावेश का सुझाव दिया गया और पाठ्यक्रम में नए नए विषयों का समावेश किया ताकि विभिन्न रुचियों और क्षमता के छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। इस आयोग ने विद्यालयीन पाठ्यक्रम का निर्माण बेसिक शिक्षा के सिद्धान्तों के आधार पर किया।

प्रधानमंत्री मोदी जी के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचारों के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि देश भौतिक दृष्टि से जितना अधिक विकास करता जा रहा है उसमें उतनी ही दोष आते जा रहे हैं आवश्यकता है भौतिकवादी एवं आध्यात्मिकवादी संस्कृति में समन्वय की और भोगवादी और त्यागवादी संस्कृति में समन्वय करने की। किसी भी राष्ट्र के पतन का मुख्य कारण मूल्यों का ह्रास होना है। अत: आवश्यकता है कि प्रारम्भ से बच्चों में सामाजिक, नैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का विकास किया जाए। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में भाषा, कला, साहित्य, इतिहास, गणित, भूगोल, विज्ञान आदि सबका समावेश किया जाए तथा व्यावहारिक एवं जीवन उपयोगी बनाया जाए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53 के अनुसार पाठ्यक्रम का विशाखन एवं विशेषीकरण कक्षा 9 से शुरू होता है वहीं कोठारी आयोग 1964 का मानना था कि किसी विशेषीकरण जल्दी शुरू नहीं होना चाहिए। नवीं कक्षा में आए बच्चों को पूर्व इंजीनियरी या पूर्व डॉक्टरी वर्गों में बाँटना अनुचित है। माध्यमिक शिक्षा के सम्बन्ध में विश्व के अन्य देशों में भी यह प्रवृत्ति है कि सामान्य शिक्षा की अवधि को बढ़ाया गया और

विशाखन एवं विशेषीकरण को माध्यमिक शिक्षा की उच्च अवस्था के लिए छोड़ दिया गया। इस प्रवृत्ति को स्वीकार करते हुए कोठारी आयोग ने भी सिफारिश की कि कक्षा 10 तक सबके लिए समान्य शिक्षा होने चाहिए। विशाखन एवं विशेषीकरण कक्षा 11 से शुरू करना चाहिए। वहीं प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि विशाखन एवं विशेषीकरण वर्तमान समय में सही है जिससे इस आयु तक के बच्चों में परिपक्वता आ जाती है। प्रधानमंत्री मोदी ने विद्यार्थियों को चयनित क्षेत्र में जाने के लिए अधिक अनुभवी और परिपक्व होने पर जो दिया है। उनके अनुसार शासन यह मानता है कि व्यक्ति की परिपक्वता 18 वर्ष की आयु के उपरांत आती है। सम्भवत: इसलिए मताधिकार की न्यूनतम आयु 18 वर्ष निर्धारित की गई है। ऐसी स्थिति में प्रधानमंत्री मोदी जी का मानना है कि भविष्य निर्धारण के लिए चयनित विषय के सभी विषयों का अध्ययन इण्टरमीडिएट स्तर पर उसे न केवल ज्ञानर्जन के लिए वरन व्यवहारिक उपयोग के निमित्त से होना चाहिए जिससे वे अपने क्षेत्र में सफलता अर्जित कर सकते है।

शिक्षा का माध्यम क्या है इस समस्या का उदगम वस्तुतः वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा के पितामह की शिक्षा सम्बन्धी नीति का प्रतिफल है। इसलिए इसे ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा छोड़ी गई वसीयत का प्रथम खंड कहा जा सकता है। मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा की सिफारिश के बावजूद भी वुड्स डिस्पैच 1854 ने अंग्रेजी भाषा के साथ भारतीय भाषा को भी यूरोपीय ज्ञान के माध्यम के रूप में सिद्धांतत: स्वीकार किया। भारतीय शिक्षा आयोग ने मातृभाषा के महत्व को स्वीकार करते हुए सुझाव दिया कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम स्थानीय भाषा ही हो। सैडलर आयोग इससे थोड़ा और आगे बढ़ गया और उसने स्वीकार किया कि भारतीय भाषाएँ हाई स्कूल तक शिक्षा का माध्यम हो, पर इण्टरमीडिएट से माध्यम अंग्रेजी ही हो। एवं वुड रिपोर्ट 1935-36 एवं सार्जेंट योजना 1944 ने भी इस सुझाव का समर्थन किया। महात्मा गाँधी ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाषा का प्रश्न उठाया और इसे जन आन्दोलन से जोड़ दिया। मुदालियर आयोग 1952 ने माध्यमिक स्तर तक माध्यम सामान्यता मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा होना चाहिए। ताराचन्द्र समिति 1948 ने कहा है कि उच्चस्तरीय शिक्षा में अंग्रेजी का स्थान किसी भारतीय भाषा को ले लेना चाहिए। निजी क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थ ने इन सुझावों को क्रियान्वित नहीं होने दिया।

विश्वविद्यालय आयोग 1948 में किसी विदेशी भाषा को ज्ञान प्राप्ति का साधन बनाना शैक्षिक दृष्टि से अस्वस्थकार मानकर सुझाव दिया था कि विश्वविद्यालय स्तर पर क्षेत्रीय भाषा की शिक्षा का माध्यम हो। शिक्षा आयोग 1964-66 ने यह स्वीकार किया कि शिक्षा का माध्यम प्राथमिक कक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक एक सा होना चाहिए। इसलिए भारतीय भाषा को ही उच्च स्तर की शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1979, 1986 ने इन आयोगों की सिफारिशों पर विचार करने के बाद भारत सरकार ने शिक्षा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्धारित की और प्रादेशिक भाषाओं को ही उच्च शिक्षा का माध्यम बनाए जाने पर जोर दिया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सभी समितियों और आयोगों ने एक स्वर में स्वीकार किया कि भारतीय भाषा ही उच्च शिक्षा का माध्यम हो, परन्तु सामाजिक प्रतिष्ठा के केंद्रों में विराजमान, सरकारी ऊँचे पदों पर आसीन लोगों ने इसे लागू नहीं होने दिया कि आधुनिक युग में अंग्रेजी शिक्षा के बिना काम नहीं चल सकता। विश्वविद्यालयीन शिक्षा सबके लिए नहीं है नि:संदेह तेज विद्यार्थी अंग्रेजी सरलता से सीख लेंगे और उच्च शिक्षा में अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम बन गई।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी का मत है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में ही होना चाहिए। विदेशी भाषा के माध्यम से सच्ची शिक्षा नहीं दी जा सकती। इन विदेशी भाषा ने राष्ट्रीय चरित्र को कमजोर बना दिया है। उनका मानना है कि सामान्य रूप से प्रयोग की जाने वाली भाषा के चयन से विद्यार्थी सरलता से ज्ञान ग्रहण कर सकता है। स्पष्टता के साथ अपने को अभिव्यक्त कर सकता है और बारीकी से यथार्थ रूप से सोच सकता है। देश की लुप्त प्रतिभा प्रकाश में आ सके, सुप्त प्रतिभा जाग सके इसके लिए आवश्यक है शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषा में हो। उन्होंने अपने इस विचार को मात्र कागजों तक सीमित न रखकर उसे क्रियान्वित भी किया।

इस प्रकार से ज्ञात होता है कि आयोगों के सुझाव व प्रधानमंत्री मोदी जी के विचारों को वर्तमान पाठ्यक्रम में समन्वित किया जाए तो हमें न केवल सुशिक्षित नागरिक प्राप्त होंगे वरन भारत सही अर्थों में पुनः सोने की चिड़िया बन सकता है।

वर्तमान में अनेक शिक्षण विधियाँ प्रचलित है परन्तु अधिकांश विधियाँ मात्र सैद्धांतिक बनकर रह गयी है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से ये विधियाँ अधिक सफल नहीं हो प रही है। प्रधानमंत्री मोदी जी का कहना है कि जीवन में शिक्षा का प्रयोजन मात्र ज्ञान कि वृद्धि नहीं वरन विवेक की जाग्रति है। वर्तमान शिक्षण विधियाँ न तो विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करती है न उन्हें ज्ञान प्राप्ति में सक्षम बनाती है। फलस्वरूप आज छात्र समस्या समाधान, वातावरण से समायोजन, स्वानुभव द्वारा यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति करने में असफल है। बालक की मानसिक क्षमताओं जैसे चिन्तन, तर्क, शक्ति, सृजनात्मकता एवं आत्म मूल्यांकन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जबकि आज हम परिवर्तन के ऐसे दौर से गुजर रहे है जिसमें प्रत्येक बालक को ऐसा शिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे उसके अन्दर निहित शक्तियों और क्षमताओं का पूर्ण विकास हो। आज आध्यात्मिकता के अभाव में विद्यार्थी अपने मार्ग से विचलित हो रहे हैं।

पराधीन भारत में प्रारम्भ की गई पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य सीमित था। सामान्य ज्ञान देना और अंग्रेजी माध्यम से अभिव्यक्ति सीखना। जोर इस बात पर था कि जो कुछ भी पढ़ाया जाए, विद्यार्थी उसे रट लें और अपने गुरु से प्रश्न न करें। प्रश्न अनुकरण का मार्ग है। अंग्रेज गुलाम बनाना चाहते थे। उन्हें प्रश्न करने वाले और विकल्पों में रत व्यक्ति से परेशानी होती थी। दुर्भाग्य यह है कि अंग्रेजों के जाने के बाद भी आज तक वही शिक्षा प्रणाली और शिक्षण विधि चल रही है जबकि विभिन्न आयोगों की अनुशंसाओं एवं चिंतकों का विचार इसमें परिवर्तन करने का था।

मुदालियार आयोग ने उस समय प्रयोग की जाने वाली शिक्षण विधियों की कटु आलोचना की। अपने सुझाव में आयोग ने कहा कि शिक्षण में रटने पर बल न देकर समझने पर बल देना चाहिए और इसके लिए छात्रों को स्वयं कार्य करने और स्वयं निर्णय निकालने के अवसर देने चाहिए। सामूहिक क्रियाओं को आगे बढ़ाना चाहिए। ऐसी विधि का प्रयोग जो सभी छात्रों के लिए उपयोगी हो। स्वाध्याय को प्रोत्साहन देना चाहिए। सीखे हुए ज्ञान एवं क्रियाओं के प्रयोग के अवसर दिए जाएँ जिससे सीखा हुआ ज्ञान स्थायी हो सके। प्रधानमंत्री मोदी जी भी प्रयोग विधि पर बल देते हैं।

कोठारी आयोग ने विद्यालयीन शिक्षा की शिक्षण विधि के अभिनवन पर बल दिया है। उनका कहना है कि शिक्षण में रटने की पद्धति को समाप्त कर चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास किया जाए। शिक्षण विधियाँ

लचीली, गतिशील, क्रिया प्रधान एवं रोचक होनी चाहिए। नवीन विधियों को प्रोत्साहन दिया एवं सहायक सामग्री पर जोर दिया।

प्रधानमंत्री मोदी जी की मान्यता है की उद्देश्यों की स्पष्टता पूर्ण होनी चाहिए। विधि तो साधन है साध्यनहीं। साध्य की प्रकृति के अनुरूप साधन का निर्धारण किया जाता है। शिक्षक, सन्त व पूर्वज प्राचीन शिक्षण विधि के प्रमुख प्रदाता रहे है। आज आधुनिक तकनीक में इनका स्थान रेडियो, टेलिविजन, मोबाइल, इण्टरनेट आदि ने ले लिया है। ये सभी साधन शिक्षण को व्यापक स्तर से प्रभावित तो करते है किन्तु मूल भावना को विद्यार्थी ह्रदयगम कर सकें ऐसा कम ही हो पता है। मोदी जी का मानना है कि चिन्तन मनन जितना गुरु प्रदाता के रूप से प्रभावित एवं संचालित होता है उतना इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से नहीं हो पता है। वे रटने की अपेक्षा चिन्तन मनन में ज्यादा जोर देते है।

प्रधानमंत्री मोदी जी का मत है कि शिक्षण विधि समस्या समाधान मूलक होनी चाहिए। विद्यार्थी यथार्थ ज्ञान के माध्यम से विभिन्न समस्याओं का समाधान स्वानुभव द्वारा प्राप्त करें। यथार्थ ज्ञान कि पिपासा उन्हें मार्गच्युत होने से बचाएगी तथा व्यावहारिक ज्ञान से वे भावी जीवन के प्रति निराशापूर्ण दृष्टि नहीं अपनाएगे। उनके अनुसार शिक्षण विधियों का उद्देश्य केवल ज्ञान देना ही नहीं अपितु अपेक्षित गुणों का विकास कर विवेक जाग्रत करना होना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी जी ने अपनी विधियों में दार्शनिक एवं बौद्धिक पक्ष के साथ साथ व्यावहारिक पक्ष को भी महत्व दिया है। जो सर्व साधारण के मानस को प्रभावित और सन्तुष्ट कर सकते है तथा सभी स्तर के बच्चों को लाभ मिल सकता है। आधुनिक विधियाँ सीखने पर बल देती है परन्तु प्रधानमंत्री मोदी जी स्किल होने पर जोर देते है।

इस प्रकार मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग ने रटने की प्रवृति को दोषपूर्ण मानकर उसे दूर करने की बात कही और प्रयोग विधि पर जोर दिया है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने भी रटने की अपेक्षा चिन्तन मनन में ज्यादा जोर दिया है। उनके अनुसार छात्रों को सीखे हुए ज्ञान एवं क्रियाओं को प्रयोग के अवसर प्रदान किए जाएँ जिससे सीखा हुआ ज्ञान स्थायी हो। प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि ज्ञान इलेक्ट्रोनिक माध्यम के साथ साथ गुरु प्रदाता के रूप में अधिक प्रभावित एवं संचालित होता है। गुरु के व्यक्तित्व का प्रभाव विद्यार्थी के

व्यक्तित्व विकास पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। अतः शिक्षक गुरु के रूप में आदर्श प्रस्तुत करें। गुरु की उपस्थिति ही ज्ञान अर्जन में उत्प्रेरक का काम करती है।

सामाजिक परिवर्तन के साथ साथ आज विद्यालय का बाह्य स्वरूप ही नहीं अपितु आन्तरिक रूप भी परिवर्तित हो गया है। आज विद्यालय ज्ञान बेचने के केन्द्र बन गए है ज्ञान के विक्रेता और विद्यार्थी क्रेता। आज विद्यालय का कार्य मात्र पाठ्यक्रम पूरा कराना, परीक्षा लेना और प्रमाण पत्र देने तक ही सीमित रह गया है, जो पतन का कारण सिद्ध हो रही है। अतः प्रधानमंत्री मोदी ने इसकी उपयोगिता को वर्तमान में अनुभव किया और विद्यालयों को उपाश्रम की संज्ञा दी, जो सार्थकता, सक्रियता तथा स्वाधीनता का प्रतीक है। उनका मानना है कि विद्यालय मात्र पत्थर, सीमेन्ट से बनी इमारत नहीं है जो मात्र प्रमाण पत्र वितरित करें, विद्यालय कोई बाजार नहीं जिसमें क्रेता विक्रेता हो और न ही विद्यालय कोई कठोर सुधारगृह है जहाँ किशोर अपराधियों पर कड़ी निगरानी रखी जाए। वरन वे उसे एक पवित्र स्थान मानते है जिसका अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व है वह एक आध्यात्मिक केन्द्र है जहाँ विद्यार्थी स्व का ज्ञान प्राप्त करता है। प्रधानमंत्री मोदी जी विद्यालय को निर्माणशाला मानते है, जहाँ आदर्श शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों कि सुषप्त शक्तियों को जाग्रत कर उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास किया जाता है। वर्तमान में शिक्षालय पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के केन्द्र बन गए है जहाँ विद्यार्थी पूर्ण स्वतंत्र ही नहीं स्वच्छंद भी बन रहा है। इसमें पब्लिक स्कूल कि भूमिका संदिग्ध प्रतीत होती है जहाँ हर जगह अंग्रेजी एवं अंग्रेजी सभ्यता को महत्व दिया जाता है।

पाश्चात्य सभ्यता के स्कूलों में आज अभिभावक अपने पालकों को सुरक्षित नहीं पा रहे है उन्हे उनके बिगड़ जाने का भय प्रतिपल सताता रहता है। बालिका की शिक्षा को लेकर अभिभावक ज्यादा चिन्तित है। उन्हें वर्तमान में सुरक्षा के साथ शिक्षा व संस्कार देने वाले विद्यालय कहीं नजर नहीं आ रहे है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने अभिभावकों की इस समस्या को समझते हुए और स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता को महसूस किया है तथा उनके सर्वांगीण विकास पर जोर दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के उपरोक्त विचार विद्यालय की उपादेयता के सम्बन्ध में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। तपोवन की परम्परा जो गुरुकुल में पनपी थी आज विलीन सी हो गयी है क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता के स्कूलों में आज अभिभावक अपने पाल्यों को सुरक्षित नहीं पा रहे है उन्हें बिगड़ जाने का भय प्रतिपल सताता रहता है।

बालिकाओं की शिक्षा को लेकर अभिभावक ज्यादा चिन्तित है। उन्हें वर्तमान में सुरक्षा के साथ शिक्षा व संस्कार देने वाले विद्यालय कहीं नजर नहीं आ रहे है। ज्ञान, चरित्र और संस्कृति की त्रिवेणी में सराबोर आजीवन ब्रह्मचर्य को धारण कर विद्यालय को परिवार मानकर उसे मन्दिर की तरह पूजती है। उनकी भावना के अनुरूप प्रत्येक कार्य को बहनें स्वतः करती है। छोटी छोटी मासूम बच्चियां जब घर से आती है तब एक नहीं अनेक माँ की ममता इन पर बरसती है। हर शिक्षिका में माँ का रूप दिखाई देता है। उसी ममता की छांव में उनका रहना, खाना पीना, सोना खेलना, पढ़ना होता है। वही गुरु के रूप में पढ़ाती है, वह मित्र बनकर खेलती है, माँ बनकर खिलाती व सुलाती है। यहाँ अपने पराए का भेद नहीं है। सभी अनुशासन की प्रतिमूर्ति है। बालिका उनके आचरण से शिक्षित होती है। घर पर माँ की परवरिश में कुछ कमी रह जाए पर यहाँ इनका एक लक्ष्य, एक ही उद्देश्य है कि इन अनपढ़ पत्थरों को तराशना है। वे सभी तन्मयता से इस कार्य को साकार कर रही है।

प्रधानमंत्री मोदी जी का कहना है कि यहाँ जीवन निर्वाह कि नहीं जीवन निर्माण की शिक्षा दी जाती है। मन, वचन, काय के दोषों को दूर किया जाता है। जीवन के साधनों के अर्जन के साथ-साथ आन्तरिक चेतना के परिष्कार की भी शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार की शिक्षा व्यक्तित्व को समग्र रूप से विकसित करती है। ज्ञानोपार्जन के साथ मानवीय मूल्यों की स्थापना करना इस विद्यालय का मूलमंत्र है। यहाँ उज्ज्वल चरित्र, श्रेष्ठ चिन्तन एवं शालीन व्यवहार सिखाया जाता है। मानवीय गुणों व मानवीय संवेदनाओं का विकास इस भाँति किया जाता है कि सहारा लेने वाला सहारा देने वाला बन जाता है। सादा वेश, सात्विक एवं उत्प्रेरक विचारों का सृजन करता है। सादे स्वच्छ वस्त्र भारतीयता के अनुकूल है। उनकी सीख इस विद्यालय में देखने को मिलती है। समस्त शिक्षिका संस्कृति को अपनाए सिर पर पल्ला लिए शान्ति व पवित्रता के प्रतीक श्वेत रंग की हरी नीली किनार वाली साड़ी को मर्यादित रूप से पहनती है। परिधान ही नहीं उनके भाव को लिए एक नहीं अनेक मदर टेरेसा यहाँ सेवारत है। सेवाभाव जाग्रत करता हुआ विद्यार्थी का परिवेश तथा संस्कारक्षम वातावरण विद्यालय परिवार के मन मस्तिष्क को प्रभावित करता है। विद्यार्थी में प्रारम्भ से ही सेवा भावना व देश रक्षा के भाव मन में उत्पन्न हो। अतः इसको यूनिफार्म का रंग देश रक्षक का प्रतीक खाकी रंग रखा गया है जिसकी बनावट भी सैनिकों जैसी है। यह विद्यार्थी की भावनाओं व इच्छाओं को उच्च तथा सशक्त बनाता है।

संस्कार विद्यालय की सुरभि है। यहाँ शिक्षा के साथ संस्कार दिये जाते है जो वर्तमान परिस्थिति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यहाँ के संस्कारित बच्चे अपने आस पास के वातावरण को महकाते है। इनके सुपास सुवास से समाज सराबोर होता है जिससे बड़े बुजुर्ग भी शिक्षा पते है। बड़ो के लिए विनय भाव व छोटे के प्रति वात्सल्य भाव यहाँ की विशेषता है।

यहाँ दी जाने वाली शिक्षा विद्यार्थियों को शारीरिक दृष्टि से सबल, प्राणिक दृष्टि से सदविचरी, बौद्धिक दृष्टि से सत्यान्वेषी तथा आत्मिक दृष्टि से सेवाभावी बनाती है जो वास्तव में शिक्षा का लक्ष्य है। समय व परिस्थिति ने आज गुरुकुल की पावन परम्परा को छिन्न-भिन्न कर दिया है। प्रधानमंत्री जी ने इसकी उपयोगिता को वर्तमान में महसूस किया है।

वर्तमान में शिक्षा प्रणाली में शैक्षिक उपलब्धि का इतना अधिक महत्व हो गया कि न केवल विद्यार्थी वरन शिक्षक भी केवल ज्ञानार्जन पर ही ध्यान देते है क्योंकि उनके मन में यह भ्रम है कि केवल शैक्षिक उपलब्धि ही उनका भविष्य संवार सकती है। कक्षा कक्ष में प्राप्त ज्ञान को विद्यार्थी जीवन में उतार सकें। इस अवधारणा को पूरी तरह विस्मृत कर दिया गया है। संस्कार विहीन विद्यालय मात्र डिग्री प्रदान करने वाले केन्द्र बनकर रह गए। सरकार अरबों रुपयों की धन राशि खर्च करने के बाद हर प्रकार की सुविधा प्रदान करने के बाद भी इन विद्यालयों से गाँधी, विवेकानन्द, सुभाषचन्द्र बोस जैसे एक भी व्यक्ति का निर्माण नहीं कर पा रही है। यदि प्रधानमंत्री जी की विद्यालय अवधारणा के साथ में शिक्षा की वास्तविक आवश्यकता को जोड़ दिया जाए तो वह हमें न केवल आदर्श विद्यार्थी देगी वरन शिक्षक भी आदर्श मिलेंगे। इस सम्बन्ध में प्रधानमंत्री मोदी जी की विद्यालय अवधारणा जीवन्त हो उठेगी। विद्यालय, भवन एवं अन्य साज-सज्जा से नहीं बनता, विद्यालय सही अर्थों में अपना स्वरूप तभी पाएगा, जब वहाँ प्रधानमंत्री जी की अवधारणा वाले आदर्श शिक्षक होगें जो विद्यार्थी के ज्ञानार्जन के साथ सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए प्रयत्नशील हों। ऐसे में यह अवधारणा जाग्रत हो उठती है कि विद्यालय शिक्षक शिक्षार्थी सम्बन्धों पर ही नहीं वरन शिक्षक शिक्षार्थी के सकारात्मक सम्बन्धों पर आधारित होता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी शिक्षक को राष्ट्र निर्माण की नींव का पत्थर और चेतन कृति का मूर्तिकार मानते है। परन्तु आज शिक्षक मूर्तिकार न होकर मूर्ति बना हुआ लोकतन्त्र को मजबूत करने के बजाय लोभतन्त्र को

मजबूत कर रहा है। आज शिक्षक में न वे आदर्श रहे न वे उच्च मूल्य, उनमें न विषय का गहरा ज्ञान है, न अध्यापन कुशलता। इसलिए उनका अध्यापन प्रभावहीन तथा निर्जीव है। वे विद्यार्थियों में नई चेतना भरने में तथा समाज की आशा एवं आकांक्षा की पूर्ति में भी असफल है। वे विद्यार्थियों के मस्तिष्क में विकृत जीवन मूल्य को पोषण कर रहे है। आज के शिक्षक अपना विषय पढ़ाने की जिम्मेदारी तो येन केन प्रकरण पूरा कर लेते है पर विद्यार्थी के चरित्र एवं संस्कार की शिक्षा देना अपना उत्तरदायित्व नहीं समझते और न ही इस कार्य को कर्तव्य मानकर रुचिपूर्वक करते है। आज का शिक्षक धन प्रधानी हो गया है। उनकी दृष्टि मात्र अर्थ लाभ की ओर बनी रहती है। यह सत्य है कि आज अनेक लोग अध्यापन व्यवसाय को विवशता में अपनाते है और अध्यापन के प्रति उनके मन में कोई रुचि जाग्रत नहीं होती है। उनकी रुचि बस इतनी है कि नौकरी बनी रहे, इसलिए कक्षा में जाना और पढ़ाना आवश्यक है। अतः उनके अपने अध्ययन की सीमा भी पाठ्य पुस्तकें और उससे अनिवार्य रूप से संबद्ध सामग्री ही होती है। सिखाए वही जो कभी सीखना बन्द न करे, यह आदर्श वाक्य उनके सामने नहीं होते है। परिणाम उनका व्यावसायिक स्तर ऊँचा नहीं उठ पा रहा है। दूसरी ओर अगर कुछ अच्छे लोग इस व्यवसाय में आ गए तो कुछ तो अंधों में काने राजा बनकर उस अच्छेपन में ही आत्मसन्तुष्टि कर लेते है, कुछ किसी दूसरे व्यवसाय में भागने की तैयारी करते रहते है। उधर नेतागण इन उपेक्षित लोगों को राष्ट्र निर्माता की उपाधि दिया करते है। सामान्य शिक्षक सत्य से साक्षात्कार करता है कि राष्ट्र निर्माता मैं नहीं, ये विधायक और संसद सदस्य है। सामाजिक और राजनीतिक मोहभंग के अपने व्यावसायिक अनुभव के कारण अध्यापक की महानता उन्हें मोहित नहीं करती है। अतः शिक्षक का व्यावसायिक स्तर ऊँचा नहीं उठ पा रहा है। वर्तमान अध्यापक की यही स्थिति है। आज जहाँ एक ओर योग्यता व समर्पण की कमी शिक्षकों में देखी जा रही है, वही दूसरी ओर अर्थ दृष्टि ने शिक्षक के प्रति आदर भाव को कम कर दिया है।

कोठारी आयोग 1964 ने शिक्षक की बदलती हुई भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें पूर्ण विश्वश है कि शिक्षक के व्यक्तिगत गुण, उसकी शैक्षणिक योग्यता, व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा विद्यालय एवं समाज में उसका स्थान शैक्षणिक पुनर्रचना में महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने शिक्षक को शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्रबिन्दु कहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी शिक्षक को चेतनकृति का निर्माणकर्ता मानते है। वे शिक्षक

को अल्प आरम्भी, अल्प परिग्रही, चरित्रवान, उच्च आदर्शों वाला मानते है। उनके विचारानुसार शिक्षण कार्य एक तपस्या है, अतः शिक्षक को इस कार्य के प्रति गहरा अनुराग होना चाहिए। धन वैभव की लालसा वालों को इस व्यवसाय से दूर रहना चाहिए, तभी वह पूर्ण समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठ के साथ अपनी भूमिका का निर्वहन कर पाएगा। इस उद्देश्य को पूर्ण करने में शिक्षक को जो आत्म सन्तुष्टि मिलती है, वह अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगी और इस आत्म सन्तुष्टि को उन्होने शिक्षक की सबसे बड़ी पूँजी माना है। वे शिक्षण कार्य को सेवा तथा दान की प्रक्रिया मानते है।

अध्यापकों कि आचार संहिता के सम्बन्ध में नेशनल एजुकेशन एसोसिएशन नामक शैक्षिक संगठन ने शिक्षकों के लिए 6 सूत्री आचार संहिता बनाई है। यह आचार संहिता सभी देशों के सभी शिक्षकों को मानना चाहिए और इसका पूर्णत: पालन करना चाहिए। अमेरिकी शिक्षकों कि आचार संहिता में शिक्षक का अर्थ ज्ञान संक्रमण का दायित्व लेने वाला एक कार्यकर्ता है। अपनी योग्यतानुसार सभी छात्रों को ज्ञानामृत पिलाने वाला शिक्षक एक सागर है। उसका अध्ययन गहरा और व्यापक होना चाहिए। अमेरिका में शिक्षक की नौकरी अनुबन्ध से मिलती है। दो य तीन वर्ष का अनुबन्ध रहता है। इसी अनुबन्ध के अनुसार शिक्षक के कार्य का मूल्यांकन किया जाता है और उसकी भावी नौकरी पक्की कि जाती है। इस संहिता में शिक्षक के अध्यापन कार्य को सेवा माना है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुसार एक आदर्श शिक्षक को प्राज्ञ: प्रास्ताशः, निरपेक्ष बंधु, गंभीर, कर्तव्यनिष्ठ एवं प्रसन्नचित्त होना चाहिए। प्रधानमंत्री जी की शिक्षा की अवधारणा उनके शिक्षक सम्बन्धी दृष्टिकोण से और अधिक स्पष्ट हो जाती है क्योंकि उन्होने शिक्षा को संस्कार से जोड़ा है। अतः शिक्षक को संस्कारवान होना अपरिहार्य है। इसी सन्दर्भ में डॉ राधाकृष्णन का कथन बहुत मार्मिक है संकुचित मन के व्यक्ति देश को महान नहीं बना सकते है। मन की सम्पन्न शिक्षा के द्वारा निर्माण की जा सकती है। इसके लिए शिक्षक को बहुत महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में शिक्षक के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि किसी समाज में अध्यापक का दर्जा उसके सामाजिक सांस्कृतिक लोकाचार को प्रतिबिम्बित करता है। कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता है।

सभी ने शिक्षक के महत्व को स्वीकार किया है और शिक्षकों के गिरते स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उनके वेतन व सुविधाओं और प्रशिक्षण कालेजों के बढ़ाने की माँग के परिणामस्वरूप आज बिना अनुभव के डिग्री प्रदान करने वाले अनेक प्रशिक्षण कॉलेज तो खुल गए और उसमें ऐसे शिक्षक भी तैयार हो रहे जिनका उद्देश्य मात्र धन अर्जन करना है। वही प्रधानमंत्री जी ने शिक्षक को चेतनकृति का निर्माणकर्ता माना है। वे ऐसे शिक्षक की कल्पना करते है जो अल्प आरम्भी, अल्प परिग्रही, चरित्रवान, उच्च आदर्शों वाले हो। वह शिक्षण कार्य को एक सेवा, कर्तव्य माने न कि धन अर्जन का साधन। आज इस विचार को अपनाने वाले लोगों कि कमी नहीं है, पर सही दिशा का बोध नहीं मिल पा रहा है।

वर्तमान में प्रधानमंत्री मोदी जी के उच्च विचारों को अपनाकर शिक्षा के इस व्यवसायिकरण को रोका जा सकता है और साथ ही आयोगों की संस्तुति से शिक्षा व शिक्षक के गिरते स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। जैसा कि एक छोटा सा जलता दीप ही अन्धकार का विनाश कर वातावरण को आलोकित करता है उसी प्रकार प्रधानमंत्री मोदी जी के द्वारा शिक्षा रूपी ज्योति इस अन्धकार से मुक्ति दिलाने में सहायक हो सकती है।

यह सर्वमान्य सत्य है कि श्रेष्ठ शिक्षक के बिना श्रेष्ठ विद्यार्थी का और श्रेष्ठ विद्यार्थी के बिना श्रेष्ठ राष्ट्र कि कल्पना सम्भव नहीं है। देश को योग्य नागरिक प्रदान करना शिक्षा का कार्य है। वर्तमान शिक्षा हमें सुयोग्य विद्यार्थी उपलब्ध कराने में असमर्थ हो रही है। आज विद्यार्थी में बड़ों के प्रति सम्मान, आदर, श्रद्धा के भाव और राष्ट्रीय सेवा में दिलचस्पी का अभाव लगता है। उनकी कार्य क्षमता भी कम होती जा रही है। वे श्रम को हेय दृष्टि से देखते है फलस्वरूप वे अपना स्वयं का कार्य भी नहीं करना चाहते। वास्तव में होना यह चाहिए था कि शिक्षितों में विनय, आदर, नम्रता, सहनशीलता, कर्तव्यों के प्रति जागरूक, श्रम के प्रति निष्ठा के गुण अपनाना चाहिए थे, जो शिक्षित एवं अशिक्षित के मध्य भेद करता है परन्तु वर्तमान में शिक्षित व्यक्तियों में यह अधिकतर देखा जा रहा है कि वह पढ़ लिखकर भी इन गुणों से वंचित है वे शिक्षा प्राप्त कर रहे है, पर शिक्षित नहीं हो पा रहे है। आज विद्यार्थी पाश्चात्य विकृत संस्कृति को अपनाने में लगे हुए है जो कि पतनोन्मुखी है। एक अच्छे विद्यार्थी में जो गुण होना चाहिए उनके विकास की ओर किसी का भी ध्यान ही नहीं है। मात्र अकादमिक ज्ञान जो उच्च उपलब्धि के लिए सहायक है। उसे ही विद्यार्थियों का चरम लक्ष्य निर्धारित कर

दिया गया है। एक आदर्श विद्यार्थी में जो गुण होना चाहिए वे उन्हें स्पर्श ही नहीं कर पा रहें है। अपने कर्तव्यों से विमुख, मानवीय मूल्यों से दूर वर्तमान विद्यार्थियों के समक्ष कोई उदत्त लक्ष्य नहीं है। उनकी दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य मात्र नौकरी पाना है। उनके इस दृष्टिकोण ने उन्हें शिक्षा के वास्तविक अर्थ से दूर कर दिया है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने विद्यार्थी के सुयोग्य गुणों की न केवल चर्चा की है वरन उसे अपनाने के साधन भी बताए है। प्रधानमंत्री जी ने बताया कि विद्या ही जिसका प्रयोजन और विद्याध्ययनही जिसका लक्ष्य है वह विद्यार्थी है जिसे वे गमले का नहीं धरती का पौधा मानते है। उनका मानना है कि इससे देश को एक दिन बहुत बड़ी छाया मिलेगी। अतः विद्यार्थियों को ऐसे संस्कार दिये जाए जिनसे ये देश का उत्तरदायित्व, समस्याओं और आने वाली विपत्तियों का सामना करने योग्य बनें और अपना सर्वांगीण विकास कर सकें। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 ने उच्च शिक्षा के उद्देश्यों में कहा है कि शिक्षा के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना जो दूरदर्शी, बुद्धिमान और बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ हों और समाज सुधार के कार्यों में सहयोग दे सकें। प्रधानमंत्री मोदी जी विद्यार्थी जीवन को सम्पूर्ण जीवन का स्वर्णिम काल मानते है। उनका मानना है कि इस आयु में दिए गए संस्कार विद्यार्थी के भविष्य का निर्धारण करते है। उनके अनुसार एक आदर्श विद्यार्थी को विनयशील, विवेकशील, कर्तव्यनिष्ठ, चरित्रवान, सतत अभ्यासी व ब्रह्मचर्य के साथ शिक्षा ग्रहण करने वाला होना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952 ने बच्चों के चरित्र निर्माण और अनुशासन की ओर विशेष ध्यान दिया जिसका उत्तरदायित्व सभी शिक्षकों का होना चाहिए। प्रधानमंत्री जी का मानना है कि विद्यार्थी को हिंसा, क्रोध, नशीले पदार्थ के सेवन के त्याग के साथ, आलस्य व विषय भोग से दूर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस भौतिकता के वातावरण में विद्यार्थी को इंद्रिय व मान को नियंत्रित रखने कि शिक्षा अवश्य देनी चाहिए। संयम की यह शिक्षा वर्तमान वातावरण को निश्चित रूप से सुधारात्मक विकास के लिए एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण करेगी।

प्रधानमंत्री जी की विद्यार्थी की अवधारणा को अपनाकर विद्यार्थियों को पाश्चात्य संस्कृति बचाकर भारतीयता का समावेश कर शिक्षा के गिरते मूल्यों को संभालने का सकारात्मक प्रयास किया जा सकता है।

गुरु एवं शिष्य की जो पूर्व अवधारणा थी आज वह मात्र शिक्षक विद्यार्थी के बाहरी सम्बन्धों की होकर रह गई है। इसमें आत्मीयता का पूर्ण अभाव है। शिक्षक और विद्यार्थी में जो स्नेह भाव आत्मीयता, सौहर्द्र, समीपता होनी चाहिए वह आज नहीं दिखाई दे रही है। आज विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों का मूल्यांकन हो रहा है। यही कारण है कि आज विद्यार्थी डिग्री तो प्राप्त कर लेता है, लेकिन व्यावहारिक जीवन में शिक्षक के चरित्र, ज्ञान एवं आदर्श व्यक्तित्व को अपने जीवन में नहीं उतार पाता है, परिणामत: शिक्षक विद्यार्थी के मध्य गुरु शिष्य के सम्बन्ध नहीं बन पाते। केवल कुछ अक्षरीय ज्ञान दे देने, एक निश्चित समय तक कक्षा में कुछ पढ़ा देने के बाद शिक्षक यह मानते है कि उनके कर्तव्य कि इतिश्री हो गयी है तथा पाठ पढ़ने के बाद विद्यार्थी के कार्य की। शिक्षक छात्रों को निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षा देना अपना कर्तव्य मानते है। आज गुरु शिष्य के सम्बन्ध, परीक्षा, पाठ्यक्रम एवं धनार्जन पर आधारित है। उपरोक्त कारणों से उनके आपसी सम्बन्ध घनिष्ठ और एक दूसरे के प्रति उत्तरदायित्व के भाव युक्त नहीं हो पाते है। अतः वे जीवन निर्माण के व्यावहारिक ज्ञान से वंचित रह जाते है।

परिणामत: शिक्षा अपनी दिशा व दशा के सन्दर्भ में भ्रमित और खोखली होती जा रही है। यही कारण है कि अत्यधिक पढ़ लिख जाने के बाद भी विद्यार्थी उदण्ड और असामाजिक दिखाई दे रहे है। इस स्वार्थ केन्द्रित शिक्षा के चलते आत्मीय गुरु शिष्य सम्बन्ध, शिक्षक विद्यार्थी में परिवर्तित, खोखले और औपचारिक होते जा रहे है। प्रधानमंत्री जी का मानना है कि गुरु शिष्य के सम्बन्ध पाठ्यक्रम की सीमाओं में बंधे नही होते है। शिष्य के समर्पण और गुरु की तत्परता व वात्सल्य शिक्षा को अधिक बोधगम्य व जीवन्तता प्रदान करते है। उनके अनुसार यदि गुरु शिष्य सम्बन्ध वात्सल्य व समर्पण पर आधारित होगें तभी विद्यार्थी में संयम, अनुशासन, एकाग्रता जैसे मानवीय गुणों का विकास सम्भव होगा। वे शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास चाहते है जो गुरु शिष्य के आत्मीय सम्बन्धों पर अवलम्बित है।

प्रधानमंत्री मोदी जी की गुरु शिष्य अवधारणा गुरुकुल कालीन पद्धति के सादृश्य है जहाँ गुरु का अधिकतर समय शिष्य को योग्य बनाने में ही लगा रहता है। आदर्श गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्यार्थी ज्ञान व अनुभव प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व को कंचन सा तपाकर सर्वांगीण विकास करता है। विद्यार्थी अपने चरित्र की गहराई व ऊँचाई को विकसित करता था उस व्यवस्था को ज्यों का त्यों पुनः लौटाया तो नहीं जा सकता,

परन्तु जिन आदर्शों के आधार पर यह व्यवस्था संचालित हुई थी उन्हें प्रधानमंत्री मोदी जी की संकल्पना द्वारा पुनः स्थापित करने का प्रयास किया जा सकता है जिससे गुरु शिष्य की अवधारणा न केवल क्षैतिज विकास करने में समर्थ होगी, बल्कि आन्तरिक विकास करने में भी सफल होगी। अतः वर्तमान समय में प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा प्रतिपादित गुरु शिष्य सम्बन्ध अत्यन्त प्रासंगिक है।

समान्यतः विद्यार्थी द्वारा शिक्षण संस्थाओं के नियमों का पालन न करना अनुशासनहीनता माना जाता है, परन्तु अपने वास्तविक अर्थ में इसके अन्तर्गत व्यवहार मानदण्डों और शासन के नियम कानून का न मानना भी सम्मिलित होता है। आज अधिकतर शिक्षण संस्थाओं में छात्र संस्थाओं के नियमों का पालन करना अपना धर्म एवं कर्तव्य नहीं समझते है। कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित न होना, शिक्षकों के साथ अभद्र व्यवहार, छात्राओं के साथ छेड़ छाड़, परीक्षा में नकल, आए दिन प्रदर्शन, अनशन, हड़ताल और तोड़ फोड़, छात्रों की आपसी दलबन्दी, रैगिंग और बीड़ी सिगरेट पीना आम बात हो गई है।

वर्तमान शिक्षा से मिल रहे संस्कारों को देख प्रधानमंत्री मोदी जी को कहना पड़ा कि आज युवकों के मुख से जब पढ़ाई के स्थान पर परीक्षा बढ़ाने के लिए हड़ताल की बात सुनता हूँ तो दंग रह जाता हूँ कि ये संस्कार इनमें कहाँ और कैसे आये। अब लोग परिश्रम से डरते है, पुरुषार्थ करने से डरते है और यह बिना प्रयास सब पा लेने की नीति हमें रसातल की ओर ले जाएगी। ऐसी स्थिति में विकास चाहते हुए भी विनाश ही होगा। आज अनुशासनहीनता के इतने रूप हो गए कि समय रहते इस समस्या का समाधान न किया गया तो देश में और अधिक अराजकता फैलाने की सम्भावना है।

ऐसी अनेक समस्या के कारण और निदान पर बहुत पहले से विचार होता आ रहा है परन्तु जीतने भी प्रयास किए गए वे सब विफल रहे। स्वतंत्रता पश्चात इस समस्या पर सर्वप्रथम विचार विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 ने किया। उन्होने उच्च शिक्षा स्तर पर अनुशासनहीनता के कारणों को चार वर्गों में अंकित किया- सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और शैक्षणिक। इसे रोकने के चार उपाय सुझाए- संस्थाओं में शिक्षक शिक्षार्थियों के बीच निकट सम्बन्ध स्थापित करना, पढ़ाई एवं खेल-कूद की उत्तम व्यवस्था रखना, छात्रों को दलगत राजनीति से अलग रखना एवं छात्रों में आत्मसम्मान की भावना विकसित करना। इन सबमें अभिभावकों, नेताओं और प्रेस का सहयोग लेना। मुदालियार आयोग 1952 ने भी अनुशासन का महत्व

बताते हुए कहा कि जनतंत्र सफलतापूर्वक कार्य उस समय तक नहीं कर सकता, जब तक सभी व्यक्तियों को अपना उत्तरदायित्व निभाने का प्रशिक्षण न दिया जाए इसके लिए अनुशासन के प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इसके बाद मुदालियार आयोग और कोठारी आयोग ने भी इस समस्या पर विस्तार से विचार किया। इस बीच राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर इस समस्या के कारणों और निदान हेतु अनेक समितियों का गठन किया गया। इन सबने शिक्षा संस्थाओं में अनुशासनहीनता के कारण व उसे दूर करने के अनेक उपाय बताए।

इसी सन्दर्भ में प्रधानमंत्री मोदी जी ने अनुशासनहीनता का मुख्य कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली को माना है। उनका कहना है कि आज किताब का तो अध्ययन कोई करता नहीं और कुंजियों के द्वारा पास होने वाले विद्यार्थी बहुत है। उन विद्यार्थियों को देखकर ऐसा लगता है कि जब ताला नहीं मिलेगा तो कुंजियों का उपयोग कहाँ करेंगे? उनका मानना है कि विद्यार्थियों के सामने आज कोई उदत्त लक्ष्य नहीं है कोई आदर्श नहीं है और न ही कोई प्रेरणा। उनका एकमात्र उद्देश्य है- किसी प्रकार डिग्री प्राप्त कर उसके बल पर नौकरी प्राप्त कर ऐशो आराम की जिंदगी बिताना। आखिर समाज में भी तो बस इसी कि इज्जत है समाज सेवा, राष्ट्र निर्माण, मानवता कि पूजा, सत्य, अहिंसा, प्रेम, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य और सन्तोष जैसे आदर्शों को प्रेरित करने वाली शिक्षा वर्तमान पाठ्यक्रम से नहीं मिल पा रही है क्योंकि उद्देश्य मात्र शिक्षा देना रहा गया है, जिसमें अधिकतम उपलब्धि हो सके एवं शिक्षा के वास्तविक उद्देश्य व्यक्तित्व का पूर्ण विकास को लगभग विस्मृत कर दिया गया है। यदि इस पर ध्यान दिया गया होता तो पूर्ण अनुशासित विद्यार्थी मिल सकते थे। राधाकृष्णन, मुदालियार और कोठारी सभी आयोगों ने छात्र अनुशासनहीनता का एक प्रमुख कारण धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का अभाव बताया और इसे दूर करने के लिए इसकी शिक्षा पर बल दिया।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने अनुशासन को शिक्षालय तक सीमित न रखकर उसे जीवन की वास्तविक गहराई से जोड़ा है। उनका मानना है कि विवेक द्वारा नियमित स्वतंत्रता में ही अनुशासन का सार निहित है। जो व्यक्ति कि उच्छृखंलता को रोकता है। उनका कथन है कि बाह्व अनुशासन क्षणिक एवं अस्थायी होता है। अतः वे आन्तरिक चेतना को जाग्रत करने वाले आत्मानुशासन को महत्व देते है, क्योंकि यह स्वतः प्रेरित होता है और जो स्व की पहचान कराता है। अतः आज आन्तरिक अनुशासन की अत्यधिक आवश्यकता है जिसमें विद्यार्थी अपनी आत्मशक्ति का विकास एवं व्यवहार का विश्लेषण करके अपना विवेक जाग्रत कर सके।

उसका यही विवेक उसकी समाज विरोधी क्रियाओं पर रोक लगाकर उसके सर्वांगीण विकास में सहायक होगा। वर्तमान में विभिन्न आयोगों के सुझावों से बाह्य अनुशासन और प्रधानमंत्री मोदी जी की आत्मानुशासन की संकल्पना से अनुशासनहीनता की विभीषिका को दूर करने का प्रयास किया जा सकता है।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 के ये ऐतिहासिक शब्द ध्यान देने योग्य है कि शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पुरुष हो ही नहीं सकता। यदि स्त्री और पुरुष में से केवल किसी एक के लिए सामान्य शिक्षा का प्रावधान करना हो तो यह अवसर स्त्रियों को दिया जाना चाहिए, क्योंकि तब तक वह शिक्षा स्वयं अगली पीढ़ी को प्राप्त हो जाएगी। सन 1963 में श्री नेहरू जी ने भी इसी तथ्य को दोहराया था कि लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है, परन्तु एक लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा होती है। महात्मा गाँधी ने TRUE EDUCATION नामक पुस्तक में कहा है की बालकों को शिक्षा देने का प्रश्न तब तक हल नहीं हो सकता, जब तक स्त्रियों को शिक्षित नहीं किया जाए। प्रधानमंत्री मोदी जी भी स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक है। उनका मानना है लड़के की शिक्षा केवल एक व्यक्ति की शिक्षा है जबकि लड़की की शिक्षा सम्पूर्ण परिवार की शिक्षा है। इसलिए स्त्री की शिक्षा आवश्यक है। वे कहते है कि एक नारी पिता के कुल को, विवाह के बाद पति के कुल को और अगर धर्म मार्ग में आगे बढ़ती है तो गुरु के कुल को रोशन करती है। एक नारी अनेक भूमिकाओं का निर्वहन करती है। अतः सभी भूमिकाओं में सफलता पाने के लिए उसका शिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है।

स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में प्रधानमंत्री मोदी जी के विचार गूढ रहस्य को समाहित किए हुए है, जिससे उनकी दूरगामी दृष्टि का परिचय मिलता है। वे स्त्री को सुशिक्षित एवं सुगृहिणी बनने कि शिक्षा पर जोर देते है। उनका मानना है कि एक सुशिक्षित सुगृहिणी अपने परिवार के प्रति उत्तरदायित्व का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सकती है। स्त्री शिक्षा से उनका अभिप्राय स्त्रियों को उनकी क्षमताओं से परिचित कराकर उसे विकसित करने से है। उनका यह विचार स्त्री शिक्षा के सच्चे स्वरूप व आदर्श को निर्धारित करता है। साथ ही स्त्री को उनके कर्तव्य के प्रति और अधिक जागरूक बनाता है। प्रधानमंत्री मोदी जी का मानना है कि घर स्त्री से ही बनाता है। रिश्तों को एक सूत्र में बांधने, उसे मजबूत बनाए रखने एवं बच्चों में संस्कार देने का कार्य स्त्रियॉं कुशलतापूर्वक निभाती है।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1947-48 ने स्त्री शिक्षा के महत्व और आवश्यकता पर पर्याप्त बल दिया और कहा कि स्त्रियों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा प्राप्त हो ताकि वे अच्छी गृहणी बन सकें। स्वामी विवेकानन्द भी स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए उन्होने कहा कि पहले अपनी नारियों को शिक्षित करो, फिर वे आपको बताएगी कि उनके लिए किन सुधारों की आवश्यकता है। वे कुछ ब्रह्मचारियों को प्रशिक्षित कर उन्हें नारी शिक्षा का कार्य सौपता चाहते थे। उनका विचार था कि नारी शिक्षा के लिए केन्द्र स्थापित किए जाने चाहिए। जहाँ वे आदर्शों की शिक्षा प्रदान करें। प्रधानमंत्री मोदी जी का यही मानना है कि ब्रह्मचारी बहनें शिक्षा के साथ संस्कार देने का कार्य कुशलतापूर्वक कर सकती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्त्री शिक्षा का अर्थ ही बदल गया है। शिक्षा का सीधा अर्थ नौकरी ने ले लिया है। स्वतंत्रता व शौक के लिए नौकरी करना आज फैशन बन गया है जिसके परिणामस्वरूप अनेक विसंगतियाँ हमारे द्वार पर दस्तक दे रही हैं। नौकरी की ओर बढ़ते कदमों ने रिश्तों के मध्य दूरी उत्पन्न कर दी है। आज की शिक्षा ने स्त्री को नौकरी के उच्चतम शिखर पर तो पहुँचा दिया है परन्तु उसे उसके मूल लक्ष्य से भटका दिया है जिससे वह अपने दायित्वों से विमुख होती जा रही है। वर्तमान की शिक्षा में स्वतंत्रता व समानता के नाम पर स्वच्छंदता ज्यादा दिखाई दे रही है। अतः यह आवश्यक है कि हम तत्काल ही महिलाओं के लिए एक अलग शिक्षा प्रणाली का निर्माण करें जो राष्ट्रीय परम्परा के अनुसार अपनी बौद्धिक उन्नति सुनिश्चित कर सके। प्रधानमंत्री जी कहते हैं कि स्त्री शिक्षा की योजना बनाते समय विदेशी भावों साथ आदर्शों के साथ समझौता करना घातक सिद्ध हो सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का मानना है कि है सब सहशिक्षा, सहनौकरी व अप्रासंगिक मित्रता का परिणाम है जिसका भी विरोध करते हैं। उनके अनुसार भारतीय नारी की शोभा उसके शील और सदाचार से हैं। इनकी रक्षा का उसे ध्यान रखना चाहिए। वे मानते हैं कि स्त्री आर्थिक समस्या में सहयोग की अधिकारिणी है परन्तु वे स्वच्छंदता का विरोध करते हैं। वे चाहते हैं कि स्त्रीयाँ अपने परिवार की देखभाल करें, जो उनका प्रथम कर्तव्य है के साथ शिक्षा के क्षेत्र में आए या व्यवसाय अपनाएँ और अन्य महिलाओं को भी रोजगार प्रदान करें। अतः उनके आशीर्वाद से पूरी मैत्री एक योजना प्रारम्भ की गई जिसमें स्त्रियों को स्वरोजगार प्रदान

किया जाता है। शिक्षा आयोग 1964 ने भी अपने सुझाव में कहा है कि स्त्रियों के अंशकालीन रोजगार की विशेष व्यवस्था हो ताकि वे पारिवारिक दायित्व संभालते हुए अपनी शिक्षा का लाभ उठा सकें।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का मानना है कि माँ, सन्तान की सुषुप्त शक्ति को जाग्रत करने में अपनी सार्थकता मानती है। प्रकृति ने स्त्री को सहनशीलता, परिश्रम, व्यवहार कुशलता, गम्भीरता, वात्सल एवं कर्तव्य परायणता आदि अलंकारों से सराबोर किया है। अतः स्त्री अपनी प्रकृति के कारण बच्चों के शिक्षण कार्य व संस्कार देने की सर्वोत्तम योग्यता रखती है। उसे अपनी इस योग्यता का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में करना चाहिए। इससे न केवल एक अच्छी शिक्षिका मिलेगी वरन देश को भी सुयोग्य नागरिक प्राप्त होंगे। स्त्री के शिक्षिका के रूप में दायित्व पर बल देते हुए गाँधी जी ने यह तक कहा है कि जब तक हमारे देश में सच्ची शिक्षिकाएँ नहीं होंगी जो कि बच्चों को सफलतापूर्वक सच्ची शिक्षा न दे सकें तब तक वे बच्चे अशिक्षित ही माने जाएँगे, भले ही वे शालाओं में भर्ती हो गये हों। भारत के महान क्रान्तिकारी नेता सुभाषचन्द्र बोस भी श्रेष्ठ के लिए उत्कृष्ट माता की आवश्यकता को सर्वोपरि मानते थे। उनका कहना था कि A GOOD MOTHER IS BETTER THAN HUNDRED TEACHERS अर्थात एक उत्तम माता सौ शिक्षकों से भी उत्कृष्टतर है और उन्होंने कहा है कि IF YOU GIVE ME HUNDRED GOOD MOTHER I WILL GIVE YOU A GOOD NATION अर्थात आप मुझे सौ उत्तम माताएँ दें, मैं आपको एक उत्तम राष्ट्र दूँगा। भावार्थ यह है कि उत्तम व्यक्तियों का निर्माण सुसंस्कृत उत्तम माताओं से होता है। संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने भी प्राइमरी स्कूल में नियुक्त शिक्षकों के 50 प्रतिशत महिला शिक्षिकाओं की नियुक्ति की बात कही। विभिन्न आयोगों व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्त्री शिक्षा के महत्व को स्वीकारा है और स्त्री की शिक्षा को पुरुष की शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण बताया है। शिक्षित स्त्री को शिक्षा प्राप्त कर अपने कर्तव्य के प्रति और अधिक जागरूक बनने पर जोर दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी मानते हैं कि स्त्री आर्थिक समस्या में सहयोग की अधिकारिणी है परन्तु वे स्वच्छंदता का विरोध करते हैं। प्रधानमंत्री जी की स्त्री शिक्षा संकल्पना के परिशीलन से जो तथ्य दृष्टिगोचर होता है वे निश्चित ही आज के पतनोन्मुख समाज के उत्थान में सहायक होंगे। स्त्री शिक्षा न केवल एकादमी ज्ञानवर्धन होगी, वरन जीवन मूल्य संस्कारवान बनाने की शिक्षा

प्राप्त होगी और यदि स्त्रियाँ इस तरह अपने चरित्र को अक्षुण्ण रखकर आत्मबल को जागृत करती है तो उनका जीवन तो सुधरेगा ही साथ में उनकी आगामी पीढ़ी भी इन गुणों से ओतप्रोत होगी।

सम्पूर्ण जगत पर्यावरण एवं पारिस्थिकी असन्तुलन के भयंकर परिणाम से चिन्तित है और विश्व मंच पर मात्र एक ही चेतावनी, एक ही चिन्तन और एक ही चेतना का दौर चल रहा है। पर्यावरण, पर्यावरण प्रदूषण और उसका संरक्षण है। इसके लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिखर वार्ताएँ आयोजित हो रही है और सभी ने एक ही विषय पर गहन चिन्ता व्यक्त की है कि जीवन और जगत को प्रदूषण से कैसे बचाया जाए। आज की इस भौतिकवादी नई सभ्यता ने पर्यावरण एवं पारिस्थिकी में असन्तुलन उत्पन्न कर दिया है जबकि पर्यावरण ऐसी प्राकृतिक सुधा है जिसके बिना जीवन कि कल्पना नहीं की जा सकती। प्रकृति सभी जीव व जगत का संरक्षण व पोषण करती हुई उसे विकास की राह पर प्रेरित करती रही है किन्तु विकास की अन्धी दौड़ में मानव, प्रकृति का अन्धाधुन्ध दोहन कर रहा है। नई सभ्यता आधुनिक विज्ञान और तकनीकी पर आधारित भोगवादी संस्कृति की प्रणेता है।

पर्यावरण के सम्बन्ध में प्रधानमंत्री मोदी जी ने विचार दिये है वे अत्यन्त गूढ़ रहस्य को समाहित किए हुए है। उनके विचारानुसार जीव एवं जगत के समन्वित आचरण का नाम ही पर्यावरण है और उसके मध्य सम्बन्धों की मधुरता का नाम पर्यावरण संरक्षण है। प्रधानमंत्री जी ने प्राणी व जगत की जिस सूक्ष्मता से व्याख्या की है वह अत्यन्त गूढ़ एवं महत्वपूर्ण है। जहाँ सभी चिंतकों विचारकों ने पर्यावरण के बाह्य वातावरण के कारणों व निवारण पर प्रकाश डाला है वही मोदी जी ने बाह्य के साथ आन्तरिक शुद्धता पर प्रकाश डालकर इसके मूल कारण वैचारिक प्रदूषण को स्पष्ट किया है। उन्होने इसे सभी प्रदूषणों का जनक एवं सम्वर्धक माना है। उनके यह विचार पर्यावरण शिक्षा का न केवल सच्चा स्वरूप है वरन् यह सुख शान्ति व विकास का द्योतक भी है। उनके इस दृष्टिकोण से वैचारिक प्रदूषण को दूर किए बिना पर्यावरण संरक्षण व सम्वर्धन सम्भव नहीं है। क्योंकि जहाँ एक ओर वर्तमान भोगवादी सभ्यता दूसरे के सुख पर धावा बोलकर सुख से रहने की दोहनपूर्ण प्रवृत्ति पर आधारित है वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी की विचारधारा आध्यात्मिक है जो दूसरे के सुख और संवेदना की सहभागिता के साथ अल्प आरंभ परिग्रह व अहिंसा को अपनाते हुए संतोषी जीवन जीने का महामंत्र देती है। उनका यह मंत्र जहाँ विद्यार्थियों में विवेक जागृत कर

सकारात्मक सोच को विकसित करता है वही नकारात्मक सोच से मुक्ति दिला सकता है। यह महत्वपूर्ण है कि यदि वैचारिक प्रदूषण को दूर करने का प्रयास किया जाए तो सभ्यता के विकास में दूरगामी सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। इस प्रकृति पुरुष ने पर्यावरण को मात्र शब्दों से ही नहीं सजाया वरन इसे अपने जीवन में उतारा भी है। उनकी चर्या पर्यावरण संरक्षण के अकल्पनीय उत्कर्ष की घोतक है। अतः उनके पर्यावरण सम्बन्धी विचार से न केवल परिवार, समाज, देश वरन संपूर्ण विश्व में शान्ति का वातावरण निर्मित हो सकता है और इस विभीषिका से बचा जा सकता है। प्रधानमंत्री मोदी जी के पर्यावरण सम्बन्धी विचारों का यदि समावेश किया जाता है तो निश्चित रूप से पर्यावरण संरक्षण के बारे में विद्यार्थियों में नई चेतना का विकास होगा।

बदलते परिदृश्य में शिक्षा के अर्थ में विविध परिवर्तन आए हैं। देशकाल के अनुसार ये परिवर्तन स्वाभाविक भी है। विचारणीय तथ्य यह है कि शिक्षा हमारे देश, समाज की अपेक्षाओं में खरी उतर रही है अथवा नहीं। शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्य एवं लक्ष्यों को साथ लेकर चल रही है अथवा नहीं। देखना यह है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के नए प्रतिमान स्थापित हो रहे हैं। वे हमारे देश की सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्ति के अनुकूल हैं अथवा नहीं। इन कक्षाओं में ही देश का भविष्य बन रहा है। इसलिए इसे यूं ही दांव पर नहीं लगाया जा सकता। हमारी शिक्षा प्रणाली में जो न्यूनताएँ हैं। वे हमें स्वीकार करनी ही पड़ेगी। इस दिशा में अनेक क्रान्तिकारी कदम उठाए जा रहे हैं जिससे शिक्षा में संख्यात्मक एवं गुणात्मक सुधार हो। शिक्षा का इस प्रकार पुनर्गठन हो कि बालक उत्तरदायित्वों को वहन करने एवं नई चुनौतियों का सामना करने में समर्थ हो। इस दिशा में सफलता प्राप्त करने के लिए हमें आदर्श एवं सजग चेतनशील शिक्षकों की आवश्यकता है क्योंकि शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा प्रकिया की धुरी है। इस दृष्टि से शिक्षक शिक्षा में परिवर्तन तथा पुनर्गठन की आवश्यकता है। सन 1968 की शिक्षा नीति ने शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया है तथा साथ ही अध्यापक शिक्षा में भी परिवर्तन की सिफारिश की। शिक्षक प्रशिक्षण के साथ ही साथ सम्पूर्ण शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की जा रही है। आज सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में शिक्षा पर विचार करना आवश्यक है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रासंगिक है। प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुसार शिक्षा जीवनदायिनी होना चाहिए एवं उनके द्वारा सुझाया गया मार्ग निश्चित रूप से विद्यार्थी जीवन के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त करेगा। जो अकादमिक ज्ञान के साथ साथ उनका व्यक्तित्व एक प्रकाश पुंज की तरह विकसित होगा जो समस्त समाज एवं देश को प्रकाशित कर सकेगा।

यदि शिक्षाविद शिक्षानीति निर्धारक उपयुक्त विवेचित आयामों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में ठोस कार्य करते है तो निश्चित रूप से बदले हुए शिक्षा के स्वरूप से एक नया सुसंस्कारित समाज देखने को मिलेगा। यह बात निश्चित एवं सर्वमान्य है कि एक बार परिस्थितियों के बिगड़ जाने पर उसे सुधारना एक दुष्कर कार्य है पर इस दिशा में एक प्रयास प्रधानमंत्री मोदी जी के शिक्षा की संकल्पना के माध्यम से जरूर किया जा सकता है इसलिए कहा भी गया है ‘रसरी आवत जात ही शिल पर होत निशान’ अर्थात जिस प्रकार रस्सी के कई बार एक ही स्थान पर चलने से वहाँ कठोर वस्तु पर निशान पड़ जाते है उसी प्रकार यदि ईमानदारी, लगन, तन्मयता एवं मजबूत तन्मयता संकल्प के साथ काम किया जाए तो निश्चित रूप से सुधार सम्भव है। प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकते है।

सप्तम अध्याय

शोध निष्कर्ष, निहितार्थ एवं सुझाव



अध्याय : सप्तम

शोध निष्कर्ष, निहितार्थ एवं सुझाव

7.1 निष्कर्ष

किसी भी शोध का मुख्य ध्येय शोध उद्देश्य से सम्बन्धित निष्कर्ष प्राप्त करना होता है। निष्कर्ष वास्तव में शोध के परिणाम है जिसे शोध अध्ययन के उद्देश्यानुरूप विचारों के प्रस्तुतीकरण के पश्चात विश्लेषण कर चिन्तन मनन द्वारा प्राप्त किए जाते है। प्रस्तुत लघु शोध में प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचारों का तार्किक विश्लेषण किया गया।

- **शिक्षा की संकल्पना-** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की शिक्षा की संकल्पना सम्बन्धी विचार अत्यन्त ही प्रभावशाली हैं क्योंकि उन्होंने शिक्षा के गुढ़ अर्थों की ओर इशारा किया है। उनके अनुसार शिक्षा जीवन का वह पवित्र संस्कार है जो मनुष्य को मानवतावादी सिद्धान्तों पर चलना सिखलाती है। कर्तव्य, नैतिकता, उदारता, सेवा, त्याग एवं समर्पण यह सब शिक्षा के संस्कारों का एक परिवार है। जो व्यक्ति के विचारों को शुद्ध कर उसे हित-अहित का ज्ञान करा उसे कर्तव्यनिष्ठ बनाती है। वे शिक्षा को जानकारी या तथ्यों का संग्रह नहीं वरन अन्तस चेतना में सदगुणों का विकास, कषयों की हानि, राग-द्वेष को कम करके आचरण रूप धारण करना मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षा जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षा को ज्ञान से बढ़कर उस ज्ञान को सच्चे अर्थो में जीवन में उतारने पर बल दिया और उन्होंने शिक्षा को इंद्रिय ज्ञान से लेकर अतींद्रिय ज्ञान व भौतिक जगत से अभौतिक जगत तक विस्तृत कर दिया है। यही पूर्ण मानव के विकास की चरम सीमा है जो उसे स्व की पहचान कराती है। इस संकल्पना को सफलीभूत बनाने के लिए प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षा में आध्यात्मिकता का मूल मंत्र दिया है
- **शिक्षा के उद्देश्य-** प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मात्र बुद्धि का विकास कर नौकरी की तलाश में लगे व्यक्तियों का निर्माण करना नहीं वरन मनुष्य को गुण व संस्कार से युक्त

मानव का निर्माण करना है। जिससे विद्यार्थी विकारों पर विजय प्राप्त कर अपने वास्तविक स्वरूप को पा सके। अतः प्रधानमंत्री जी ने अर्थ से परमार्थ की ओर, नश्वर से अनश्वर की ओर तथा निर्माण से निर्माण की ओर जाना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य माना है। जिसकी प्राप्ति के लिए उन्होंने स्वस्थ तन, स्वस्थ वचन, स्वस्थ मन, स्वस्थ धन, स्वस्थ वन, स्वस्थ वतन और स्वस्थ चेतन जैसे सात आधारभूत सिद्धान्त निर्धारित किए है। जिसे प्राप्त कर विद्यार्थी शारीरक दृष्टि से सबल, प्राणिक दृष्टि से सदविचारी, बौद्धिक दृष्टि से सत्यन्वेषी तथा आध्यात्मिक दृष्टि से सेवाभावी बन सकता है।

- **शिक्षा का पाठ्यक्रम-** शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रधानमंत्री मोदी जी ने व्यापक पाठ्यक्रम की आवश्यकता पर बल दिया है। उनके विचार अनुसार पाठ्यक्रम इतना व्यापक होना चाहिए कि उससे विद्यार्थी के सभी पक्षों का विकास सम्भव हो सके। वे चाहते हैं शिक्षा जीवनोन्मुखी हो, इसीलिए उन्होंने मात्र सीखने पर ही नहीं बल्कि क्रियाओं पर जोर देते हुए श्रम के महत्व को स्वीकार किया है। पाठ्यक्रम में जीव और जगत को केन्द्र मानकर सम्पूर्ण प्राणीमात्र को और जगत के विषयों को समाहित किया गया है। इसमें लौकिक के साथ पारलौकिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए भौतिक विषयों के साथ धर्म, दर्शन और संस्कार प्रदान करने वाली नैतिक शिक्षा को प्रमुख स्थान दिया गया है। वस्तुत: इनके समन्वय से ही सन्तुलित व्यक्ति का विकास होता है। उनके अनुसार शिक्षा मातृभाषा में होनी चाहिए।

- **शिक्षण विधियाँ-** प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षण विधि को मात्र विषयवस्तु प्रदान करने का साधन या पाठ्यक्रम की प्रक्रिया ना मानकर उसे एक कला मानते हैं। जिससे अर्थ की गहराई का वास्तविक ज्ञान होता है। उन्होंने उस विधि को प्राथमिकता दी जो पाठ्यक्रम को सरलता से बोधगम्य कराने में सहायक हो। उनकी विधियाँ लौकिक ज्ञान के साथ पारलौकिक ज्ञान तथा विद्यार्थी के आध्यात्मिक विकास में सहायक सिद्ध होती हैं। वे प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों विधियों को मान्यता देते हैं। उन्होंने प्रत्यक्ष विधि, कथा प्रणाली, सूत्र प्रणाली और स्वाध्याय विधि को प्रमुखता दी है। ये विधियाँ अन्तर्मानवीय सम्बन्धों को श्रेष्ठ बनाने व लोकतान्त्रिक मनोवृत्तियों के विकास में सहायक सिद्ध होती हैं।

- **विद्यालय सम्बन्धी प्रत्यय-** प्रधानमंत्री मोदी जी ने विद्यालय को उपाश्रम की उपमा दी है जो कि स्वाधीनता, सक्रियता, सार्थकता और पवित्रता का प्रतीक है। संस्कार व संस्कृति के पूँजीभूत इस उपाश्रम में विद्यार्थी, जीवन के शाश्वत मूल्यों को प्राप्तकर अपना उच्चतम विकास करता है। वे उसे मन्दिर की भाँति एक पवित्र स्थान व आध्यात्मिक केन्द्र मानते हैं। उनका कहना है कि विद्यालय का निर्माण शहर की भौतिकता से दूर, सुन्दर, शान्त, मनोरम एवं प्राकृतिक स्थान में होना चाहिए। उनके अनुसार कक्षा तो वृक्ष के नीचे भी लग सकती हैं। अतः भवन एवं साज सज्जा नहीं वरन शिक्षक शिक्षार्थी के सकारात्मक सम्बन्ध ही श्रेष्ठ विद्यालय की विशेषता है। यह एक प्रयोगशाला है जिसमें पाठ्यपुस्तकों के सूत्रों एवं नियमों को रटकर परीक्षा देने तक सीमित नहीं रखा जाता है बल्कि उन्हें व्यवहार में उतारने की शिक्षा दी जाती है। तपोवन की परंपरा जो गुरुकुल में पनपी थी जो आज विलीन हो गई है जिसे वे रुको अब लौट चलें की परंपरा में पुनः प्रतिष्ठा दे रहे हैं।
- **शिक्षक का प्रत्यय-** प्रधानमंत्री मोदी जी ने शिक्षक को चेतन कृति का निर्माणकर्ता मानते हैं। अत: शिक्षक का आचरण शुद्ध, पवित्र व अनुकरणीय होना चाहिए। उसे ज्ञान, कौशल, उत्साह, देशभक्ति, सशक्त चरित्र जैसे गुणों से समन्वित होकर शिक्षण कार्य के प्रति मनसा, वाचा व कर्मणा पूर्णता समर्पित होना चाहिए। शिक्षण कार्य उसके लिए अर्थोपार्जन या व्यवसायिक कर्म न होकर ज्ञानदान का सात्विक कर्म होना चाहिए। प्रधानमंत्री जी के अनुसार शिक्षक को अल्प आरम्भी, अल्प परिग्रही, शान्त, प्रसन्न, गम्भीर, प्रश्नसहा, चरित्रनिष्ठ व निष्पक्ष होना चाहिए। इन आदर्श गुणों में ढला एक श्रेष्ठ शिक्षक ही शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक तथा अपने कार्य के प्रति सन्तुष्ट होता है।
- **विद्यार्थी की अवधारणा-** प्रधानमंत्री मोदी जी के अनुसार विद्या ही जिसका प्रयोजन है वह विद्यार्थी है। जिसे वे गमले का नहीं धरती का पौधा मानते हैं। जिसके संस्कारों की जड़ें इतनी गहरी हो की भौतिकता की प्रबल आन्धी उसे विचलित न कर सके और वह एक दिन विशाल वटवृक्ष के रूप में परिणत होकर सबको छाया प्रदान करने वाला बने। उनके अनुसार विद्यार्थी जीवन के संस्कार भविष्य का निर्धारण करते हैं। अतः एक आदर्श विद्यार्थी को विनयवान, विवेकवान, कर्तव्यनिष्ठ, चरित्रनिष्ठ, अनुशासित, सतत अभ्यासी एवं व्यसनमुक्त होकर ब्रह्मचर्य के साथ शिक्षा ग्रहण करने

वाला होना चाहिए। विद्यार्थी को शिक्षा को मात्र जीवकोपार्जन का साधन न मानकर सर्वांगीण विकास सहायक मानना चाहिए। वे चाहते हैं कि विद्यार्थी को श्रम के द्वारा विद्यार्जन करना चाहिए साथ ही उसे अपने अन्दर गुणों का विकास करना चाहिए, जिसके माध्यम से वह भविष्य में आने वाली विपत्तियों का हिम्मत से सामना कर सकें।

- **गुरु-शिष्य सम्बन्ध-** प्रधानमंत्री मोदी जी ने गुरु-शिष्य सम्बन्ध को गहराई से अनुभव किया है इसीलिए गुरु-शिष्य के सम्बन्ध में उनकी अवधारणा अत्यन्त उच्च स्तरीय है। उन्होंने इस सम्बन्ध को शब्दों या पुस्तकों तक सीमित नहीं रखा वरन प्रतिक्षण जिया है शिष्य बनकर भी और गुरु बनकर भी। उनका मानना है कि ये पवित्र सम्बन्ध पाठ्यक्रम से बंधे नहीं होते अपितु जीवन्त होते हैं। उन्होंने गुरु को सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हुए कहा है कि गुरु गोविंद तक पहुँचने का मार्ग ही नहीं बताते वरन गोविंद ही बना देते हैं। वे गुरु-शिष्य सम्बन्ध को दोनों ओर से चलने वाली प्रक्रिया मानते हैं क्योंकि जहाँ एक ओर गुरु अपने ज्ञान के माध्यम से शिष्यों पर उपकार करते हैं वही शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन कर अप्रत्यक्ष रूप से गुरु पर उपकार करता है। यही गुरु शिष्य सम्बन्ध की चरम सार्थकता है जो शिष्य को अंतिम लक्ष्य तक पहुँचाती है।
- **अनुशासन की संकल्पना-** अनुशासन ही जीवन की शान है के उदघोषक प्रधानमंत्री मोदी जी ने अनुशासन को जीवन का अभिन्न अंग माना है। जिसका पालन विद्यार्थी को ही नहीं वरन शिक्षक के लिए भी अनिवार्य बताया है। उनका मानना है कि दोनों के अनुशासित रहने पर ही शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी होगी। उनके अनुसार अनुशासन का अर्थ मात्र नियमों के अनुकूल चलना ही नहीं वरन कर्तव्य पालन, आज्ञा पालन, आत्म संयम आदि गुणों को भी वे अनुशासन मानते हैं। उन्होंने आत्म अनुशासन के लिए संयम व नियम को प्रधान तत्व माना है। उनके अनुसार अनुशासन अन्दर से प्रकट होना चाहिए। जो इंद्रिय व मन को लगाम दे सके। उनका मानना है कि इस अनुशासन से विद्यार्थी अपने व्यवहार का विश्लेषण कर सही दिशा में अपना विकास कर सकता। प्रधानमंत्री मोदी जी की विचारधारा लोकतांत्रिक प्रणाली को मान्यता देती है।

- **स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी विचार-** प्रधानमंत्री मोदी जी के स्त्री-शिक्षा सम्बन्धी विचार अत्यन्त सारगर्भित तथा व्यावहारिक है। उन्होंने स्त्री-शिक्षा के सच्चे स्वरूप और आदर्श का निर्धारण कर स्त्रियों को अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया है। उनका मानना है कि एक स्त्री की शिक्षा पूरे परिवार व समाज की शिक्षा है। स्त्री-शिक्षा के बिना शिक्षित समाज का अस्तित्व नहीं हो सकता। स्त्री अपनी प्रकृति के कारण छोटे बच्चों के शिक्षण कार्य एवं संस्कार के लिए सर्वोत्तम योग्यता रखती है। अतः उसे शिक्षण कार्य को अपनाना चाहिए। स्त्री शिक्षा से उनका अभिप्राय स्वतंत्रता या नौकरी नहीं वरन एक अच्छी सुगृहणी के रूप में अपने परिवार के उत्तरदायित्व के निर्वहन से हैं। वे सह शिक्षा, सह नौकरी, अप्रासंगिक मित्रता व स्वच्छंदता का विरोध करते हैं। नौकरी की अपेक्षा स्वरोजगार पर ज्यादा जोर देते हैं। ऐसा करने पर स्त्री अपने परिवार के कर्तव्यों का पालन जो उसका प्रमुख कार्य है के साथ आर्थिक सहयोग भी प्रदान कर अन्य महिलाओं को सुरक्षित रोजगार दे सकती हैं।
- **पर्यावरण शिक्षा सम्बन्धी विचार-** प्रधानमंत्री मोदी जी की पर्यावरण सम्बन्धी विचारधारा अत्यन्त गूढ़ रहस्य को समाहित किए हुए हैं। जहाँ सभी चिन्तकों, विचारकों ने पर्यावरण के अन्तर्गत बाह्य वातावरण के कारणों पर प्रकाश डाला। वहीं प्रधानमंत्री मोदी जी ने बाह्य के साथ-साथ आंतरिक शुद्धता पर प्रकाश डालकर इसके मूल कारण अर्थात वैचारिक प्रदूषण को स्पष्ट किया है। उन्होंने इसे सभी प्रदूषण जनक व संवर्धक माना है। उनका यह विचार पर्यावरण शिक्षा का न केवल सच्चा स्वरूप है वरन सुख शान्ति का घोतक भी है। जहाँ एक ओर वर्तमान भोगवादी सभ्यता दूसरे के सुख पर धावा बोलकर सुख से रहने की दोहनपूर्ण प्रवृत्ति पर आधारित है। वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री मोदी जी के विचार आध्यात्मिक हैं जो दूसरों के सुख और संवेदना की सहभागिता के साथ अल्प आरंभ परिग्रह व अहिंसा को अपनाते हुए सन्तोषी जीवन जीने का महामंत्र देती है। उनका यह मंत्र जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में विवेक जागृत कर सकारात्मक सोच को विकसित करता है वही दूसरी ओर नकारात्मक सोच से मुक्ति दिलाता है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचारों ने एक सार्वकालिक, सार्वभौमिक महत्ता युक्त अत्यन्त विकसित शिक्षा प्रणाली विकसित की है। जिसके अपने विशिष्ट उद्देश्य दृष्टिगोचर होते हैं। जिसमें

शिक्षा की अत्यन्त व्यापक अवधारणा समाविष्ट है। जिसमें शिक्षा का तात्पर्य मात्र साक्षरता से नहीं अपितु समीचीन ज्ञान व अवबोध से हैं इसका उद्देश्य सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चरित्र द्वारा व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। शिक्षा के विषयों में जीव और जगत को केन्द्र बनाकर सम्पूर्ण प्राणीमात्र को और जगत के सभी विषयों को समाहित किया गया है। इसमें लौकिक के साथ पारलौकिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए भौतिक विषयों के साथ धर्म, दर्शन और संस्कार प्रदान कराने वाली नैतिक शिक्षा को भी स्थान दिया है। वस्तुतः इनके समन्वय से ही सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास होता है। शिक्षण विधियाँ अत्यन्त समृद्ध और प्रसांगिक है तथा सर्वकालिक एवं सार्वभौमिक महत्ता रखती हैं। यह जरूरी नहीं है कि हर आधुनिक चीज की नकल करना प्रगति की दिशा में सही कदम है अतः शिक्षा प्राप्त स्त्री को अपने कर्तव्य के प्रति और अधिक जागरूक होना चाहिए। इसे ही वे स्त्री शिक्षा की सार्थकता मानते हैं। इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना होगा कि अधिकारों पर अत्यधिक जोर कहीं हमारे कर्तव्यबोध को धूमिल न कर दे।

प्रधानमंत्री मोदी जी विद्यालय को उपाश्रम मानते है जहाँ संस्कार और संस्कृति का संरक्षण होता है और जहाँ अल्प आरम्भी, अल्प परिग्रही, शान्त, प्रसन्नचित, गम्भीर, चरित्रनिष्ठ शिक्षक अपने कार्य को कर्तव्य मानता है। एक आदर्श गुणों में ढला शिक्षक ही शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक एवं अपने कार्य के प्रति सन्तुष्ट होता है। उन्होने विद्या से प्रयोजन रखने वाले को विद्यार्थी मानते हुए उसे गमले का नहीं धरती का पौधा कहा है। जिसे भौतिकता की आधी विचलित न कर सके। उन्होने गुरु शिष्य सम्बंध को दोनों ओर से चलने वाली प्रक्रिया मानते हुए आत्मानुशासन को सर्वोपरि माना है।

शिक्षा के स्वरूप, तत्व और विशिष्ट आयामों का विस्तृत विस्तृत विवेचन शोध प्रबन्ध के अध्ययन तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अध्याय में किया गया है। शैक्षिक विचारों की प्रसंगिकता अध्याय षष्ठ में की गई है। इन सब से स्पष्ट होता है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों में देश की समस्याओं एवं चुनौतियों का निदान व उपचार सम्भव है। अतः कहा जा सकता है कि यह एक आदर्श शिक्षा पद्धति हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवन प्रदान करने की योग्यता रखती है। यह एक निश्चित, तनाव रहित, शान्त और समरस पूर्ण जीवन जीने की सही दिशा निर्धारित करती है।

वास्तव में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों को उनकी उदार परिधि को सीमित करना है। यह तो मानव मात्र के कल्याण की एक सुसिद्ध कृति है। जिसमें निखिल राष्ट्र और अखिल विश्व को सुख, शान्ति और समृद्धि की ओर ले जाने की शुभकामनाएँ प्रतिपल प्रतिपग स्पंदित है अर्थात शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा के अन्तर्गत शोधकर्ता का अनुमान है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा रचित साहित्य एवं पुस्तकें आदि में शैक्षिक तत्व विद्यमान हैं। अतः सत्य सिद्ध होता है।

7.2 शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी सोद्देश्य कार्य के निहितार्थ अवश्य होते है। उस कार्य की सार्थकता उसके निहितार्थ में होती है। अर्थात किसी भी शैक्षिक उद्देश्य का महत्व तभी निर्धारित होता है जब उसकी शैक्षिक परिवेश में उपयोगिता स्थापित की जा सके। शोध कार्य की उपादेयता शैक्षिक शोध कार्य में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर की जा सकती है। किसी अनुसंधान कार्य के जो परिणाम होते है वे नीति निर्धारण की आधारशिला रखते है। प्रस्तुत लघु शोध की उपयोगिता को निम्नलिखित क्षेत्र में देखा जा सकता है।

- **विद्यार्थी वर्ग के लिए-** प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थी शिक्षा के सही अर्थो को जानकार शैक्षिक जीवन में एक नूतन परिवर्तन कर सकता है। वे शिक्षा को मात्र नौकरी का साधन न मानकर पैकेज की होड़ व धन की दौड़ में शामिल न होकर शिक्षा के सम्यक अर्थ को अपने जीवन में उतार कर इंद्रिय व मन को नियंत्रण कर संयमित जीवन जीना सीख सकेंगे और अपने जीवन के स्वर्ण युग को संस्कारित कर उसका उपयोग विद्या अर्जन में कर सकेंगे।

- **शिक्षक वर्ग के लिए-** प्रधानमंत्री मोदी जी की शिक्षक की अवधारणा से प्रभावित होकर अपने शैक्षिक कार्य के वास्तविक उद्देश्य को जान सकते है और एक आदर्श शिक्षक बनने की प्रेरणा ले सकते है। आधुनिकता व दिखावे से दूर अपने अन्त: एवं बाह्य जगत का परिष्कार करके एक अनुशासित व आचरणनिष्ठ शिक्षक के उदात्त गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में ढ़ाल सकते है तथा शिक्षा को मात्र अर्थ अर्जन का साधन न मानकर ज्ञानदान की एक पवित्र प्रक्रिया बनाकर शिक्षा के क्षेत्र में एक नया बिगुल बजा शिक्षक अपने गिरते स्तर को ऊँचा उठा सकते है।

- **अभिभावकों वर्ग के लिए-** भौतिक संसाधनों के इस युग में अभिभावक बच्चों को पढ़ाते ही इसलिए है कि वह धन कमाने योग्य बन जाए। आज अभिभावकों ने शिक्षा को अर्थ अर्जन तक सीमित रखा है किन्तु प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचारों से प्रेरित होकर अभिभावक शिक्षा को संस्कारों से समन्वित करते हुए रिश्तों के प्रति संवेदनशून्य होते बालकों को मानवता की शिक्षा के लिए प्रेरित कर देश को एक श्रेष्ठ नागरिक प्रदान कर सकते है।
- **प्रशासक वर्ग के लिए-** प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन अधिकारियों के पाठ्यक्रम निर्माण हेतु सहायक सिद्ध हो सकेगा। शिक्षा आज तकनीकी ज्ञान, तथ्यों की जानकारी तथा उसके संग्रह से ऊपर नहीं उठ पा रही है किन्तु प्रधानमंत्री मोदी की शैक्षिक विचारधारा से अभिभूत होकर प्रशासक शिक्षा के माध्यम को मातृभाषा में परिवर्तित कर शिक्षा को जीवनोन्मुखी बना सकते है। पाठ्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी के साहित्य के कुछ अंशों को रखकर उनके विचारों को अपनाकर वर्तमान स्वरूप में गुणवत्ता लाई जा सकती है साथ ही एक सुयोग्य मानव निर्माण की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा का निर्धारण कर सकते है।

7.3 शोध के सुझाव

यह लघुशोध प्रबन्ध कुछ छोटी-छोटी अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में सुझाव देता है जिन पर आप कार्य कर सकते है।अनुसंधान के बारे में पढ़ने और उसे वास्तव में करने में बहुत अन्तर होता है। किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए व्यावहारिक प्रयास करना और सुव्यवस्थित रूप से साक्ष्य इकट्ठा करना एक अत्यन्त उपयोगी अनुभव है। आशा है यह अनुभव आपका अनुसंधान से जुड़ी कुछ कठिनाइयों से नहीं बल्कि इसके उत्साह से भी परिचय कराएगा।

यहाँ जो सुझाव दिये गए है उनमें उन संभावित समस्याओं को ध्यान में रखने का प्रयास किया गया है जो विभिन्न संदर्भों, परिस्थितियों या विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में ऐसे शोध कार्यों के दौरान उपस्थित हो सकती है। इनका अभिप्राय आपके मन में शोध के बारे में एक उत्साह पैदा करना है। एक वास्तविक अनुसंधान कार्य निश्चित रूप से अधिक विस्तृत होगी और उसे सम्पन्न करने के लिए छात्रों को विद्यालय में उपलब्ध समय से कहीं अधिक समय देने एवं प्रयत्न करने की आवश्यकता होगी। यह सिर्फ सुझाव मात्र है

आप अपने अध्यापकों के साथ विचार विमर्श कर अन्य शोध कार्य तैयार कर उन पर कार्य करने के लिए स्वतंत्र है।

संक्षेप में आधुनिक काल में प्रगतिशील कही जाने वाली शिक्षा के अनेक गुण प्रधानमंत्री मोदी जी के शैक्षिक विचारों में विद्यमान है। स्वतंत्रता क्रियाशील, अनुभूति, एकाग्रता, चिन्तन, समाजीकरण, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व, आदर, सर्वांगीण विकास शिक्षक का सम्मानीय स्थान आदि सभी तत्व इसमें है जो शिक्षा के लिए प्रासंगिक है एवं उपयोगी है, सार्थक है व इनमें उच्चतम शिक्षा शास्त्री के रूप में अधिष्ठित करती है।

इस महान शिक्षा दार्शनिक द्वारा निश्चित शिक्षा के सिद्धान्त हमारे देश और इस काल के लिए ही नहीं अपितु हर क्षेत्र के लिए और हर काल में सही उतरने वाले है उन्हें सार्वभौमिक और सार्वजनिक सिद्धान्त कहा जा सकता है।

इनके शैक्षिक विचारों को आधुनिक शिक्षा में अपना कर भारत की उद्देश्य विहीन शिक्षा पद्धति का मार्गदर्शन किया जा सकता है।

भारत एक लोकतंत्रात्मक देश है परन्तु यहाँ की अधिकांश जनता निरक्षर है। लोकतन्त्र की सफलता के लिए जनता का शिक्षित होना अति आवश्यक है। इनके शैक्षिक विचारों को दृष्टि में रखते हुए जनसाधारण की शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। आज आधुनिक शिक्षा में इनके शैक्षिक विचारों के आधार पर एक उत्तम शिक्षा व्यवस्था की जा सकती है। यदि इनके प्रासंगिक शैक्षिक विचारों पर सरकार विचार कर ले और शिक्षा की पुनर्रचना करके एक नवीन शिक्षा प्रणाली का विकास कर ले तो अश्वमेव व्यापक उन्नति दिखाई पड़ेगी। एक कहावत भी है- "एक साधे सब सधै, सब साधे सब जाय"

लेकिन सरकार ने ऐसा नहीं किया है जिसका दुष्परिणाम आज सर्वत्र विद्यमान है। प्रधानमंत्री मोदी जी के विचार अपने जीवन्त रूप में आज भी विद्यमान है तथा उनमें अध्यात्मिकता एवं भौतिकता का सुन्दर समन्वय है। इनके द्वारा बोये गए बीज ही इनके शैक्षिक विचार रूपी फसल के आधार है तथा आधुनिक शिक्षा-जगत के लिए प्रासंगिक है। इनके शैक्षिक विचारों को शिक्षा जगत में अपनाकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है तथा राष्ट्र को विकास के पथ पर अग्रसर किया जा सकता है।

किसी भी शोध कार्य का यह लक्ष्य होना चाहिए कि उसके द्वारा अपेक्षित सुधार हो। प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे है। जो इस प्रकार है-

- आज की परिस्थिति में प्रधानमंत्री मोदी जी के विचारों पर आधारित सन्देश हमारे लिए कितना मूल्यवान है। इसे आकना सहज नहीं है। हमारे राष्ट्रीय जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं, ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका हल हमें उनकी शिक्षाओं में न मिला हो।
- समाज में असमानता न रहे। सभी को समान शिक्षा मिले।
- प्राइमरी स्कूलों, हाईस्कूलों और कॉलेजों के छात्रों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा दी जाए।
- आज शिक्षा में विस्तार से ज्यादा महत्वपूर्ण शिक्षा में सुधार और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा एवं योग्य शिक्षा मिलनी चाहिए।
- शिक्षा को चारों तरफ फैलाने का प्रयास होना चाहिए।
- डिजिटल भारत एवं सर्व शिक्षा अभियान के बीच अधिक से अधिक तालमेल बिठाने चाहिए।
- सभी छात्रों के लिए उपयुक्तता परीक्षा आयोजित किए जाने की बात पर पुनः जोर देते हुए डिजिटल इंडिया कार्यक्रम और सर्व शिक्षा अभियान के बीच बेहतर तालमेल होना चाहिए।
- विभिन्न स्कूलों के बीच स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय प्रतियोगिता आयोजित होना चाहिए।
- शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए सभी सरकारों को लगातार बल देना चाहिए।

7.4 भावी शोध हेतु सुझाव

प्रधानमंत्री मोदी जी की शैक्षिक दृष्टि इतनी वृहद एवं अर्थ गांभीर्य से युक्त है कि इसके प्रत्येक शैक्षिक तत्व एवं आयाम पर एक स्वतंत्र शोध किया जा सकता है। जो भविष्य के अनुसंधान के क्षेत्र को प्रशस्त कर सकते है। भविष्य में दिये जाने वाले शोध कार्य के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत है-

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन के सन्दर्भ में किया जा सकता है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शैक्षिक दर्शन तथा उसका सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के साहित्य में प्रतिपादित शैक्षिक मान्यताओं का वर्तमान सन्दर्भ में परिशीलन भी किया जा सकता है।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के शिक्षा के क्षेत्र में योगदान का आलोचनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का शिक्षा में योगदान मानवतावाद तथा भौतिकतावाद के सन्दर्भ में।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के साहित्य में प्रतिपादित शैक्षिक तत्वों का परिशीलन।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के दार्शनिक एवं शैक्षिक अवदान।
- वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के विचारों का अध्ययन।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का शिक्षा में अवदान।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रतिपादित साहित्य में मूल्य शिक्षा का अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रतिपादित साहित्य का शैक्षिक परिशीलन का अध्ययन किया जा सकता है।
- पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- डॉ एपीजे अब्दुल कलाम तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के सन्दर्भ में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के चिन्तन की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जा सकता है।
- धर्म निरपेक्ष भारत में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की धार्मिक और नैतिक अवधारणा की प्रासंगिकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची



सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

- वालिया, जे. एस. (2011), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, पंजाब : अहम पब्लिशर्स।
- सोनी, रामगोपाल (1998), उदयोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा के नए आयाम, आगरा : एच. पी. भार्गव।
- लाल, रमन बिहारी एवं शर्मा, कृष्णा कान्त (2013), भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, मेरठ : आर लाल बुक डिपो ।
- ओड़, डॉ0 लक्ष्मीकान्त (1973), शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- चौबे, डॉ0 सरयू प्रसाद, डॉ0 अखिलेश (2006), आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- त्यागी, डॉ0 गुरुशरण दास (2008), शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
- निगम, शोभा (1977), पाश्चात्य दर्शन के सम्प्रदाय, दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन।
- पाण्डेय, प्रो0 राम शकल (1986), शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
- मोदी, नरेन्द्र एवं नेने, राजा भाई (2007), सेतुबंध, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड।
- मोदी, नरेन्द्र (2012), सामाजिक समरसता, नई दिल्ली : प्रभात पेपरबैक्स 4/19 आसफ अली रोड।
- मोदी, नरेन्द्र (2008), ज्योतिपुंज, पुणे : उल्हास चिन्तामणि लाटकर अमेय प्रकाशन, 207 बिझनेस गिल्ड, लॉ कॉलेज रोड।

- मोदी, नरेन्द्र (2004), आपातकाल में गुजरात, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड।
- मोदी, नरेन्द्र (2015), साक्षी भाव, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड।
- मोदी, नरेन्द्र (2007), श्री गुरुजी एक स्वयंसेवक, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड।
- कुमार, पंकज (2008), दूरद्रष्टा नरेन्द्र मोदी, नई दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2।
- कामथ, एम. वी. एवं रांदेरी, कालिंदी (2010), विकास-शिल्पी नरेन्द्र मोदी, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड।
- Modi, Narendra (2018), Exam Warriors, Gurgaon : Penguin Random House India Pvt. Ltd., 7th Floor Infinity Tower C, DLF Cyber City.
- Modi, Narendra (2014), A Journey:Poems, New Delhi : Rupa Publications India Pvt. Ltd., 7/16 Ansari Road Daryaganj.
- मोदी, नरेन्द्र (2014), प्रेमतीर्थ, दिल्ली : राजपाल एण्ड सन्ज, 1590 मदरसा रोड कश्मीरी गेट।
- Gokhale, Nitin A. (2017), Securing India The Modi Way, New Delhi : Bloombury Publishing India Pvt. Ltd. DDA Complex LSC building No 4, 2nd Floor Pocket 6 & 7 Sector C Vasant Kunj.
- शर्मा, महेश (2015), मैं नरेन्द्र मोदी बोल रहा हूँ, नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड।

- शुक्ला, संगीता (2016), प्रेरणामूर्ति नरेन्द्र मोदी, नई दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2।

- कुमार, पंकज (2014), महानायक नरेन्द्र मोदी, नई दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि. X-30 ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेज-2।

शोध-प्रबन्ध

- जैन, सपना (2013), आचार्य विद्यासागर के शैक्षिक विचार, पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध, वनस्थली विद्यापीठ, वनस्थली राजस्थान।

  < http://hdl.handle.net/10603/142758 >

- सिंह, श्रीमती अनीता (2011), स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर और गाँधी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं वर्तमान युग में उनके शैक्षिक विचारों की उपादेयता, पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर। < http://hdl.handle.net/10603/230161 >

- शुक्ल, आशुतोष कुमार (2014), पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य की शैक्षिक विचारधारा की वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में सार्थकता एवं मूल्यांकन-एक अध्ययन, पी-एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

  < http://hdl.handle.net/10603/114232 >

- लाल, श्रीकृष्ण (2005), पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन, पी-एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध-प्रबन्ध, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,जौनपुर। < http://hdl.handle.net/10603/178444 >

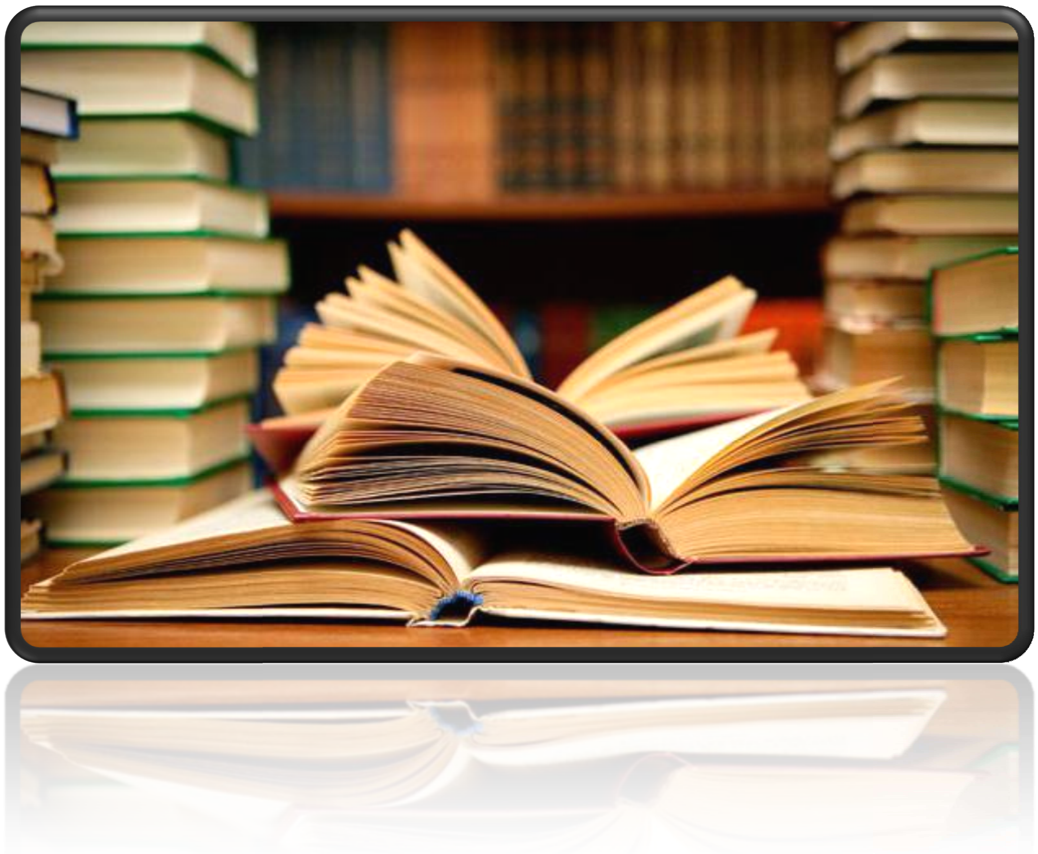
वेब स्रोत

- https://narendramodi.in/hi

- https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0_%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A5%80
- https://www.narendramodi.in/hi/categories/biography
- https://www.narendramodi.in/hi/mann-ki-baat
- https://www.pmindia.gov.in/hi/%E0%A4%AE%E0%A4%A8-%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%AC%E0%A4%BE%E0%A4%A4/
- https://www.pmindia.gov.in/hi/%e0%a4%85%e0%a4%aa%e0%a4%a8%e0%a5%87-%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%a7%e0%a4%be%e0%a4%a8-%e0%a4%ae%e0%a4%82%e0%a4%a4%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a5%8b-%e0%a4%9c%e0%a4%be%e0%a4%a8-2/
- https://www.pmindia.gov.in/hi/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A5%80-%E0%A4%95%E0%A5%87-%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6-%E0%A4%98%E0%A4%B0/
- https://www.deepawali.co.in/narendra-modi-biography.html
- https://www.pmindia.gov.in/hi/%e0%a4%aa%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a4%a7%e0%a4%be%e0%a4%a8%e0%a4%ae%e0%a4%82%e0%a4%a4%e0%a5%8d%e0%a4%b0%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a4%be-%e0%a4%a6%e0%a5%8c%e0%a4%b0%e0%a4%be/page/4/?visittype=international_visit
- https://www.jivaniitihashindi.com/narendra-modi-cast-wife-age-biography-%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A5%80/
- https://www.hindiparichay.com/%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A5%80-%E0%A4%9C%E0%A5%80%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A5%80.html
- https://hindi.starsunfolded.com/narendra-modi-hindi/
- https://www.1hindi.com/narendra-modi-biography-in-hindi-%E0%A4%A8%E0%A4%B0%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0-%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%A6%E0%A5%80-%E0%A4%9C%E0%A5%80%E0%A4%B5%E0%A4%A8%E0%A5%80/

- http://www.elections.in/bhartiya-chunav/political-leaders/narendra-modi.html
- https://hindish.com/narendra-modi-biography-hindi/
- https://gajabinfo.com/narendra-modi-hindi/
- https://www.viralfactsindia.com/narendra-modi-biography-history-story-hindi/
- https://achhigyan.com/narendra-modi-essay-in-hindi/
- http://www.elections.in/bhartiya-chunav/political-leaders/narendra-modi.html
- https://aajtak.intoday.in/story/international-magzine-time-in-its-new-edition-calls-pm-narendra-modi-divider-in-chief-1-1082521.html
- https://www.jagran.com/editorial/apnibaat-the-victory-of-narendra-modi-is-not-only-the-defeat-of-opposition-parties-but-it-is-also-a-defeat-of-intellectuals-jagran-special-19271155.html
- https://www.panchjanya.com/Encyc/2018/6/26/Narendra-modi-during-emergency-doing-work-as-a-undercover-activist.html
- https://hindi.webdunia.com/news-narendra-modi/narendra-modi-swachh-bharat-abhiyan-115051800079_1.html
- https://satyagrah.scroll.in/article/128719/narendra-modi-ki-jeet-par-europe-ke-media-ne-kya-kaha-hai
- https://naisadak.org/i-write-a-letter-to-the-prime-minister-of-india/

परिशिष्ट



परिशिष्ट (1) : अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ







सिर्फ मोदी ही दे सकते हैं राष्ट्र को सशक्त नेतृत्व : कलराज

जागरण संवाददाता, बलिया : भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री कलराज मिश्र ने कहा है कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास संग भारत को सशक्त नेतृत्व देने की क्षमता सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में ही है। पीएम मोदी की सभाओं में उमड़ रहा जनसैलाब बता रहा है कि इस बार भाजपा वर्ष-2014 के चुनाव परिणामों से भी बड़ी और प्रचंड बहुमत हासिल करेगी। वाराणसी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के रोड शो में उमड़े जनसैलाब से यह साबित हो गया है कि इस बार विपक्षी दलों का सूपड़ा साफ हो जाएगा और भाजपा पूर्वांचल की सभी सीटों पर विजयश्री हासिल करेगी।

शुक्रवार को बलिया लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी बीरेंद्र सिंह मस्त व सलेमपुर सीट के प्रत्याशी रवींद्र कुशवाहा के नामांकन के बाद पार्टी कार्यालय पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करने के बाद मीडिया से मुखातिब कलराज ने कहा कि कांग्रेस को जनता पहले ही नकार चुकी है। इस बार पब्लिक सपा-बसपा गठबंधन व कांग्रेस को कड़ी शिकस्त देगी। पीएम मोदी के कुशल नेतृत्व की चर्चा करते हुए कलराज ने कहा कि आज दुनिया भारत का लोहा मान रही है। देश निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। वह दिन दूर नहीं जब भारत महाशक्ति बनकर विससित राष्ट्र की श्रेणी में आ खड़ा होगा। एक सवाल पर कलराज ने कहा कि वंदे मातरम तो हमारा मंत्र है। भारत माता की जय तो हम बोलेंगे। इसे बोलने से कोई रोक नहीं सकता। जनता का विश्वास जबर्दस्त ढंग से पीएम मोदी के प्रति बढ़ा है।

कलराज ने कहा कि देश को मोदी के अलावा कोई दूसरा सुदृढ़ नेतृत्व नहीं दे सकता। यह जनता बोल रही है। कहा कि राष्ट्रवाद हमारी प्राथमिकता है। आतंक के खिलाफ सरकार का अभियान लगातार जारी रहेगा।

भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री कलराज मिश्र ● जागरण

- **देश में सभी सीटों पर लहराएगा भाजपा का परचम : कलराज मिश्र**
- **वंदे मातरम हमारा मंत्र, बोलते रहेंगे भारत माता की जय, पीएम के प्रति जबर्दस्त जन विश्वास**

कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी पर हमला करते हुए कहा कि वह पीएम मोदी के प्रति अमर्यादित भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। जो लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। सुभासपा अध्यक्ष व मंत्री ओम प्रकाश राजभर से जुड़े सवाल पर कलराज ने कहा कि वे प्रदेश के मंत्री हैं। हमारे पार्टी के घटक दल हैं। कलराज ने कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की और पार्टी प्रत्याशी वीरेंद्र मस्त व रवींद्र कुशवाहा की विजयश्री सुनिश्चित करने के लिए उनका उत्साहवर्धन किया। कहा कि इस चुनाव में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका है। ऐसे में अपने दायित्वों का निर्वहन आप सभी निष्ठापूर्वक करें। कमल के फूल को जन-जन तक लेकर जाएं। इस मौके पर जिलाध्यक्ष विनोद शंकर दुबे, मंत्री उपेंद्र तिवारी, पूर्व मंत्री राज धारी सिंह, दयाशंकर सिंह, केतकी सिंह, विनय सिंह आदि रहे।





सीधी सांसद रीती पाठक को रेलवे बोर्ड ने भेजा पत्र

सिंगरौली-कटनी रेलवे मार्ग के लिए 300 करोड़ स्वीकृत

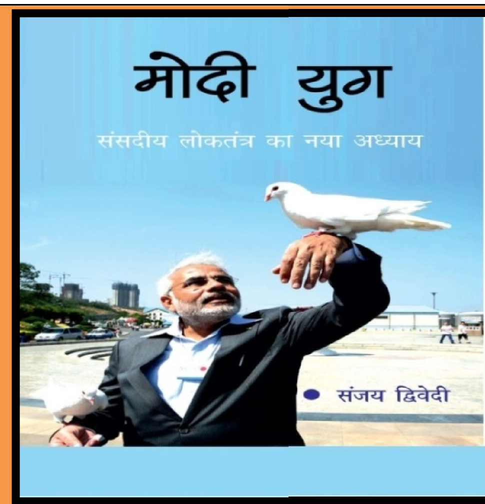
पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

सिंगरौली. आखिरकार ललितपुर-सिंगरौली रेल परियोजना को 380 करोड़ व सिंगरौली-कटनी मार्ग को 300 करोड़ रुपए का बजट रेलवे बोर्ड की ओर से जारी कर दिया गया हैं। बजट जारी होने से संबंधित जानकारी देने के बावत रेलवे बोर्ड ने सीधी सांसद रीती पाठक को पत्र भेजा हैं। सांसद ने 31 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व रेलमंत्री पियूष गोयल से वित्तीय सत्र 2019-20 में दोनों परियोजनाओं के लिए पर्याप्त बजट उपलब्ध कराने की मांग की थी।

सांसद की मांग पर ही बजट में दोनों परियोजनाओं के लिए बजट देने की घोषणा की गई। जिसे अब जारी कर दिया गया है। सांसद रीती पाठक इन रेल परियोजनाओं के लिए लगातार प्रयत्नशील हैं। अभी हाल ही में उन्होंने रेलमंत्री व अध्यक्ष रेलवे बोर्ड से मुलाकात कर बजट जारी कर कार्य में और तीव्रता लाने जाने की मांग की थी। इसके बाद बोर्ड की ओर बजट स्वीकृत कर सांसद को सूचित किया गया है। पत्र प्राप्त होने के बाद सांसद ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, तत्कालीन रेलमंत्री सदानंद गौड़ा व सुरेश प्रभु और वर्तमान रेलमंत्री पियूष गोयल से मुलाकात कर धन्यवाद ज्ञापित किया है।

महिला की हत्या

कोतवाली थाना क्षेत्र के कचनी गांव का मामला





राजस्थान पत्रिका

केंद्र सरकार की रिपोर्ट

ब्रह्माकुमारी संस्थान का 80वां वार्षिकोत्सव

मातृभूमि के लिए करें संकल्प

पीएम नरेन्द्र मोदी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए किया सम्बोधित

यह भी कराए संकल्प




GADKARI CAUGHT IN BUSINESS WEB
AN INTIMATE PORTRAIT OF YASH CHOPRA
SPECIAL INDIA'S EMERGING REAL ESTATE HOTSPOTS
www.indiatoday.in
INDIA TODAY
EXCLUSIVE OPINION POLL
KING MODI
SEEKS DELHI THRONE
AS BJP HEADS FOR A LANDSLIDE VICTORY, GUJARAT WANTS NARENDRA MODI TO BE NEXT PM TOO


सुलभ स्वच्छ भारत
बदलते भारत का स्वर
फिर भी आबाद है किताबों की दुनिया


पण्डित नेहरू
हर वक्त बनी रहेगी जरुरत
गंभीर समाचार
नोटबंदी
के बाद का साल!
₹ 20


सुलभ स्वच्छ भारत
बदलते भारत का स्वर
'स्वच्छता दिवस'
के रूप में मना
पीएम मोदी
का जन्म दिन
HAPPY BIRTHDAY
MODI JI



वर्ष-1 | अंक-24 | 29 मई - 04 जून 2017

सुलभ स्वच्छ भारत

बदलते भारत का स्वर

sulabhswachhbharat.com

06 विशेष — रोशन हुआ पॉवर सेक्टर: सरकार की कारगर नीति से बदली ऊर्जा क्षेत्र की तस्वीर

08 स्वास्थ्य — एक कश का खतरा: विश्व धूम्रपान निषेध दिवस पर विशेष

12 विज्ञान — आठवां महादेश चांद ! चांद और धरती के बीच अब और नजदीकी रिश्ता

गीता की भेंट और प्रधानमंत्री

बिहार की एक ग्रामीण महिला गीता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को एक ऐसा उपहार दिया, जिसे देख प्रधानमंत्री ने कहा कि 'प्लास्टिक के कचरे का इस्तेमाल कर सुंदर उत्पाद बनाने का विचार अद्भुत है। यह 'स्वच्छ भारत' अभियान के लिए उपयोगी है'

चर्चा में आई बिहार की गीता

एक नजर



सुलभ स्वच्छ भारत

बदलते भारत का स्वर

06 विशेष — जिंदगी न मिलेगी दोबारा

10 विचार — 'हिंद स्वराज'

28 गुड न्यूज — नई उड़ान

नरेंद्र दामोदर दास मोदी - द मेकिंग ऑफ अ लीजेंड

'झरनों से मधुर संगीत सुनाई नहीं देता गर राहों में उनके पत्थर ना होता' - डॉ. पाठक

पीएम मोदी के जीवन पर लिखी सुलभ प्रणेता डॉ. पाठक की पुस्तक 'नरेंद्र दामोदर दास मोदी - द मेकिंग ऑफ अ लीजेंड' का गुजरात में लोकार्पण

खास बातें



वर्ष-1 | अंक-36 | 21 - 27 अगस्त 2017

सुलभ स्वच्छ भारत

बदलते भारत का स्वर

06 महात्मा गांधी

09 संत विनोबा भावे

20 डॉ. विन्देश्वर पाठक — स्वच्छता सम्मान 2017

स्वराज की खादी सद्भाव का चरखा

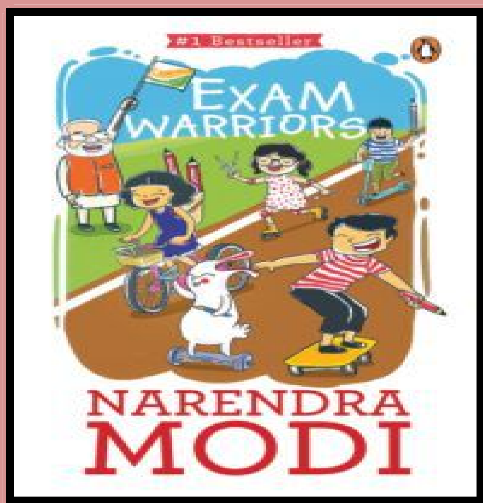


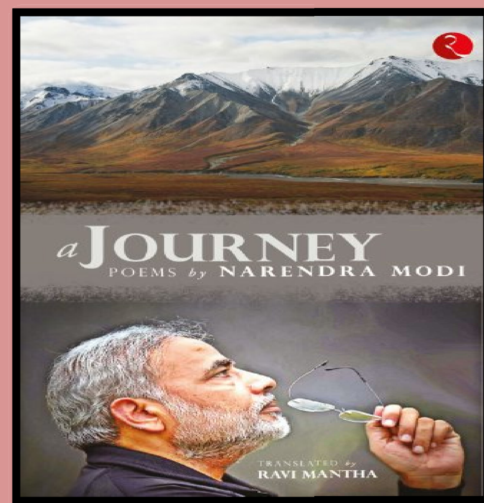
सुलभ स्वच्छ भारत

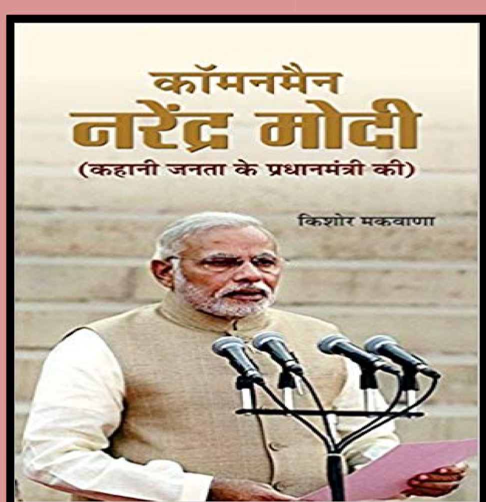
बदलते भारत का स्वर

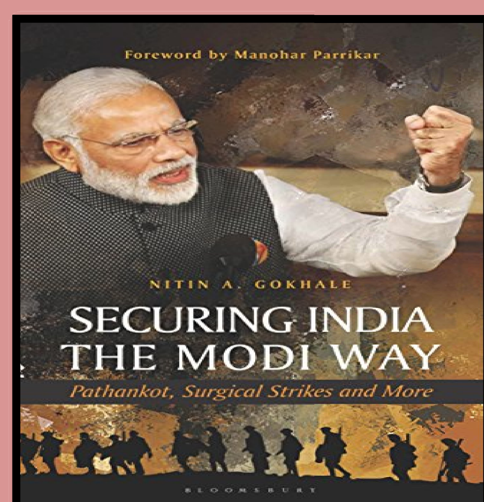
सशक्त हो रही हैं महिलाएं

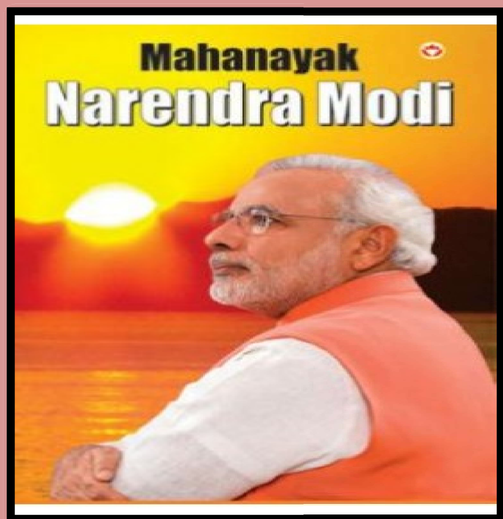
परिशिष्ट (2) : नरेन्द्र मोदी जी द्वारा लिखित पुस्तकें

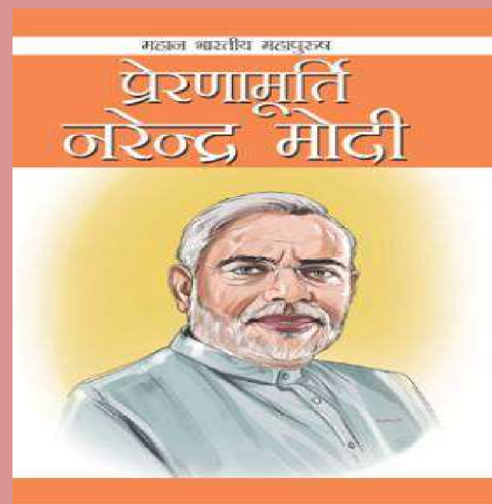


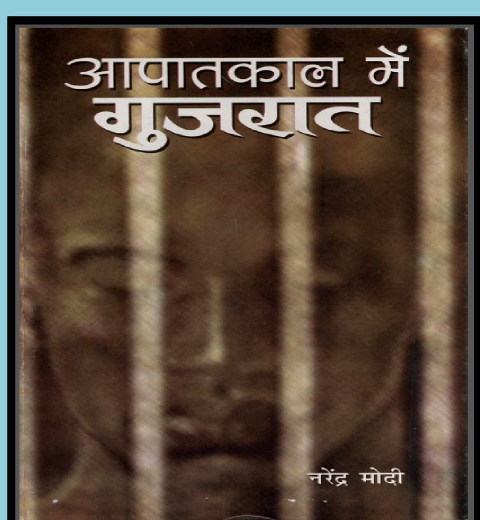


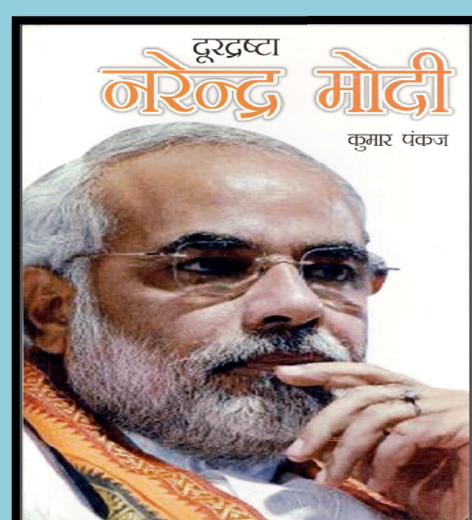


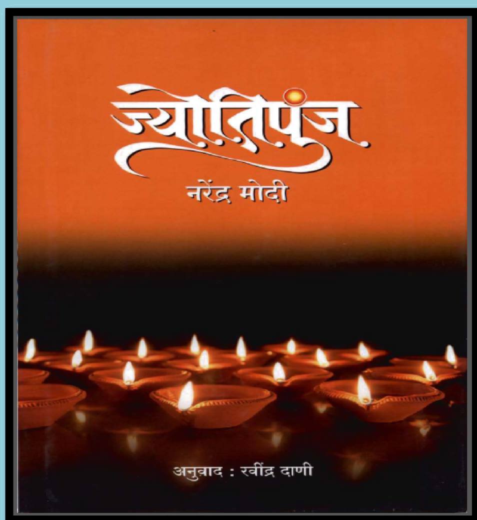



Mahanayak
Narendra Modi

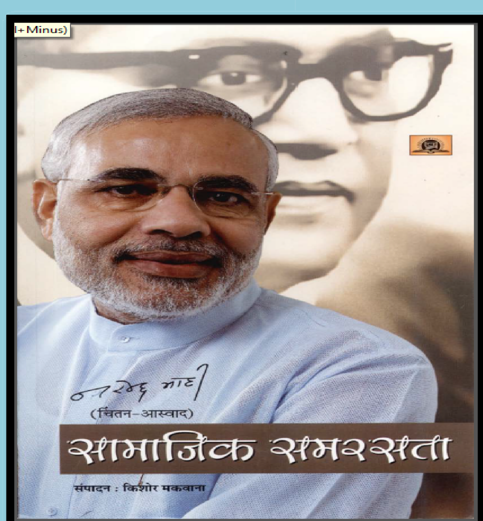

महान भारतीय महापुरुष
प्रेरणामूर्ति
नरेन्द्र मोदी

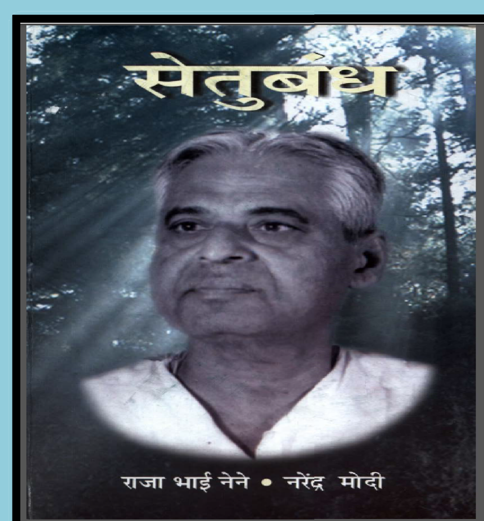

आपातकाल में
गुजरात
नरेंद्र मोदी

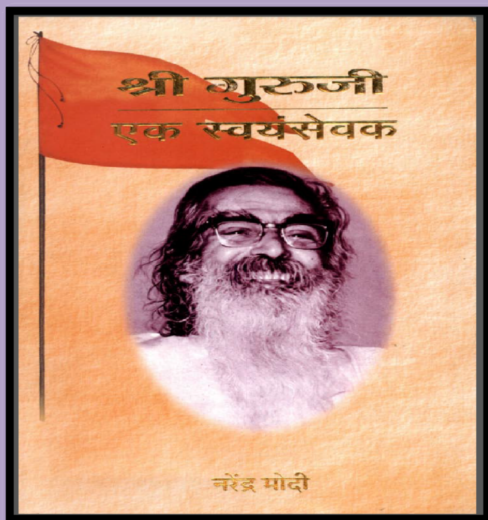

दूरद्रष्टा
नरेन्द्र मोदी
कुमार पंकज

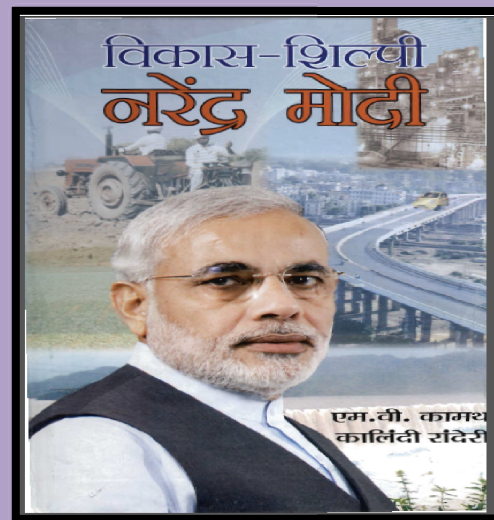

ज्योतिपुंज
नरेंद्र मोदी
अनुवाद : रवींद्र दाणी

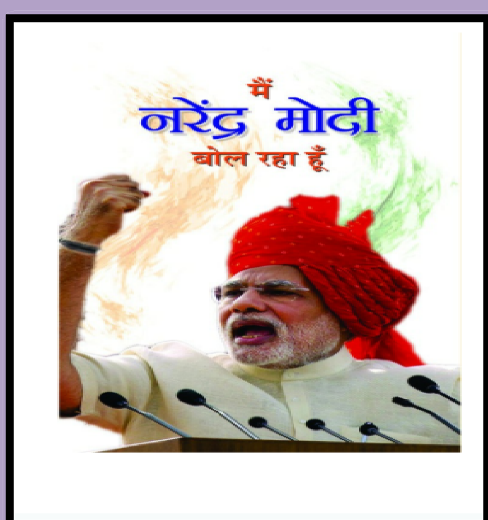

4/4/2019
Sakshi Bhaav (Hindi)
साक्षी भाव
प्रभात प्रकाशन
ISO 9001:2008 प्रकाशक

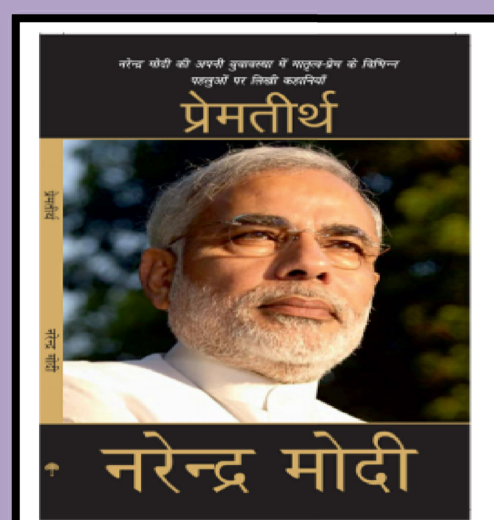

(चिंतन-आस्वाद)
सामाजिक समरसता
संपादन : किशोर मकवाना


सेतुबंध
राजा भाई नेने • नरेंद्र मोदी


श्री गुरुजी
एक स्वयंसेवक
नरेंद्र मोदी


विकास-शिल्पी
नरेंद्र मोदी
एम.वी. कामथ
कालिंदी रांदेरी


मैं
नरेंद्र मोदी
बोल रहा हूँ


प्रेमतीर्थ
नरेन्द्र मोदी

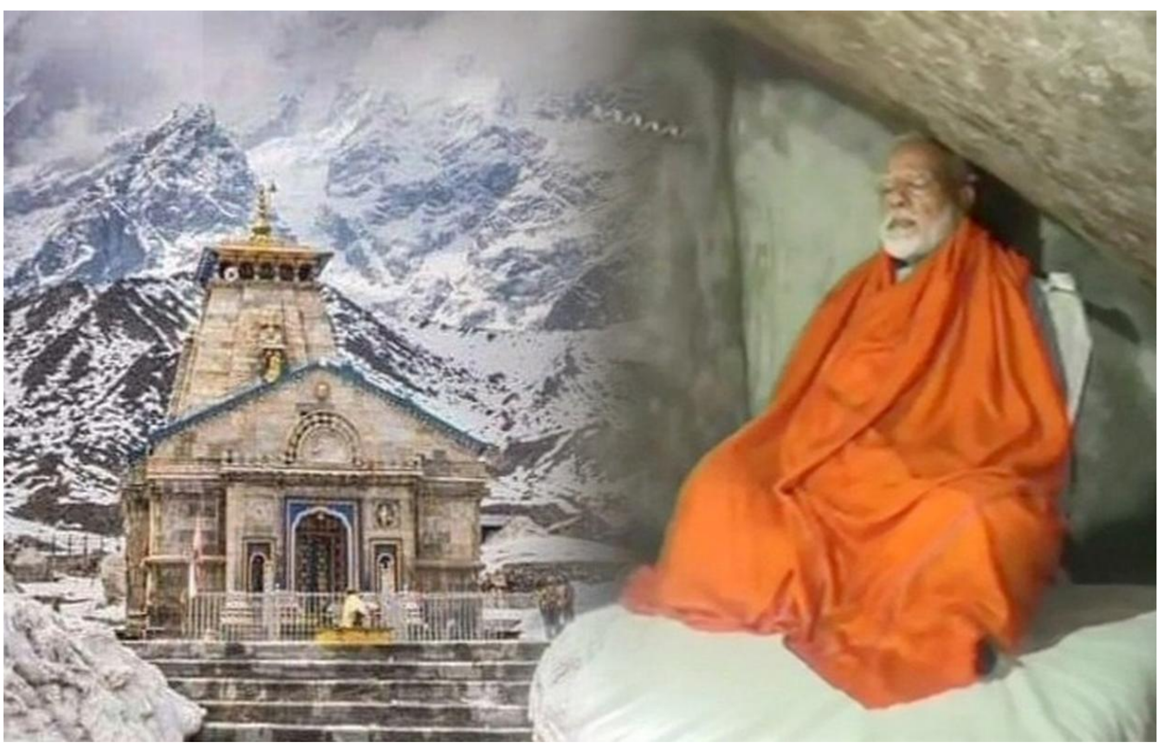
परिशिष्ट (3) : नरेन्द्र मोदी जी द्वारा लिखित कविताएं

(i)

हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
तू धीर है, गंभीर है,
जग को जीवन देता, नीला है नीर तेरा
ये अथाह विस्तार, ये विशालता
तेरा ये रूप निराला
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
सतह पर चलता ये कोलाहल, ये उत्पाद,
कभी ऊपर तो कभी नीचे,
गरजती लहरों का प्रताप,
ये तुम्हारा दर्द है, आक्रोश है
या फिर संताप
तुम न होते विचलित
न आशंकित, न भयभीत
क्योंकि तुम में है गहराई
हे....सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
शक्ति का अपार भंडार समेटे,
असीमित ऊर्जा स्वयं में लपेटे
फिर भी अपनी मर्यादाओं को बांधे,
तुम कभी न अपनी सीमाएं लांघे
हर पल बड़प्पन का बोध दिलाते
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!

तू शिक्षादाता, तू दीक्षादाता
तेरी लहरों में जीवन का
संदेश समाता
न वाह की चाह
न पनाह की आस
बेपरवाह सा ये प्रवास
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
चलते-चलाते जीवन संवारती,
लहरों की दौड़ तेरी
न रुकती, न थकती,
चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति का मंत्र सुनाती
निरंतर सर्वत्र
ये यात्रा अनवरत,
ये संदेश अनवरत
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
लहरों में उभरती नई लहरें
विलय में भी उदय,
जन्म - मरण का क्रम है अनूठा,
ये मिटती - मिटाती, तुम में समाती,
पुनर्जन्म का अहसास कराती
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
सूरज से तुम्हारा नाता पुराना,
तपता - तपाता,
ये जीवंत - जल तुम्हारा।
खुद को मिटाता, आसमान को छूता,

मानो सूरज को चूमता,
बन बादल फिर बरसता,
मधु भाव बिखेरता
सुजलाम - सुफलाम सृष्टि सजाता
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!
जीवन का ये सौंदर्य,
जैसे नीलकंठ का आदर्श,
धरा का विष, खुद में समाया,
खारापन समेट अपने भीतर,
जग को जीवन नया दिलाया,
जीवन जीने का मर्म सिखाया
हे.... सागर!!!
तुम्हें मेरा प्रणाम!



(ii)

जिन क्षणों में मुझे तुम्हारे होने का अहसास हुआ है
मेरे दिमाग के शांत हिमालयी जंगल में
एक वन अग्नि धधक रही है
गंभीरता से उठती हुई
जब मैं अपनी आंखें तुम पर रखता हूँ
मेरे मस्तिष्क की आंख में एक पूर्ण चंद्रमा उदय होता है
और मैं संपूर्ण पुष्पित चंदन के वृक्ष से झरती महक से भर जाता हूँ
और तब जब आखिरी बार हम मिले थे
मेरे होने का पोर - पोर एक अतुलनीय महक से भर गया था
हमारे अलगाव ने
मेरे जीवन के आनंद के सभी शिखरों को पिघला दिया था
जो मेरे देह को झुलसाती है और
मेरे सपनों को राख में बदल देती है



नरेन्द्र मोदी के शैक्षिक विचार

हेमन्त कुमार आर्य एवं राजीव अग्रवाल



अपने मन में एक लक्ष्य लिए
मंजिल अपनी प्रत्यक्ष लिए
हम तोड़ रहें है जंजीरें
हम बदल रहे है तस्वीरें
ये नवयुग है, नव भारत है
खुद लिखेंगे अपनी तक़दीरें
हम निकल पड़े है प्रण करके
अपना तन-मन अर्पण करके
जिद है एक सूर्य उगाना है
अम्बर से ऊँचा जाना है
एक भारत नया बनाना है
एक भारत नया बनाना है

ISBN 978-93-5407-275-8